सांख्यायनमुनिप्रणीतम्

सांख्यायनतन्त्रम्

हिन्दी-व्याख्यासहितम्

हिन्दीभाष्यकार

कपिलदेव नारायण

चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

बिट्ठलदास संस्कृत सीरीज

३०

***

सांख्यायनमुनिप्रणीतम्

सांख्यायनतन्त्रम्

हिन्दी-व्याख्यासहितम्

हिन्दीभाष्यकार
कपिलदेव नारायण

चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

BITTHALDAS SANSKRIT SERIES
30
****

SĀṆKHYĀYANATANTRAM

(With Hindi Commentary)

Translated By
Kapildev Narayan

CHOWKHAMBA KRISHNADAS ACADEMY
VARANASI
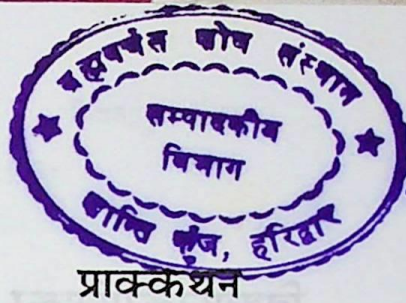
प्राक्कथन

सांख्यायनतन्त्र शिव एवं कार्तिकेय संवाद रूप तन्त्र है । इसमें बगला महाविद्या के विषय में विवेचन है । यह तन्त्र ग्रन्थ छत्तीस पटलों में विभक्त है ।

इस तन्त्र में ब्रह्मास्त्र विद्या का निरूपण है । इसमें अभिषेक आदि का निरूपण, एकाक्षरी विधि का निरूपण तथा महापाशुपत के प्रसंग में बगलामुखी विद्या आदि का प्रयोग वर्णित है । यन्त्र का निर्माण, दूर्वा होम की विधि तथा अन्य शत्रु कृत विद्या भक्षण करने आदि की विधि बतलाई गयी है । बगलास्त्रविधि कथन, अस्त्रविद्या प्रयोगविधि का निरूपण तथा स्तम्भिनी विद्या आदि का प्रयोग इस तन्त्र का मुख्य प्रतिपाद्य है ।

प्रस्तुत संस्करण—इदं प्रथमतया हिन्दी व्याख्या के साथ विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत है । इसके दो मुद्रित संस्करण मूल के प्राप्त हैं । पहला संस्करण पाँच हस्तलेखों पर आधारित श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी द्वारा सम्पादित राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से डॉ० फतहसिंह के निदेशकत्व में १९७० ई० में प्रकाशित है । दूसरा संस्करण कुलभूषण पं० रमादत्त शुक्ल सम्पादित, संक्षिप्त हिन्दी के साथ कल्याण मन्दिर प्रकाशन, अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग से वि० संवत् २०४३ में प्रकाशित है । प्रस्तुत संस्करण जोधपुर से प्रकाशित मूल पर आधारित है ।

इस ग्रन्थ के प्रकाशक कृष्णदास अकादमी के संचालक द्वय श्री सचिन गुप्त एव श्री कौशिक गुप्त को आशीर्वाद है और इनके स्वर्णिम भविष्य की कामना करता हूँ । इसी प्रकार अन्यान्य तन्त्र ग्रन्थ की हिन्दी विद्वानों को उपलब्ध कराकर शास्त्र रक्षा करें ।

स्वरूपावस्थित
कपिलदेव नारायण
पुनाई चक, पटना

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

...❧❀❧...

॥ श्रीः ॥

सांख्यायनतन्त्रम्

अथ प्रथमः पटलः

मन्त्र-वर्णनं

मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेद्यां
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीं
देवीं भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥ १ ॥

सुधा सिन्धु में मणियों से निर्मित मण्डप है । मण्डप के बीच में रत्न से निर्मित वेदी है । वेदी के मध्य में सिंहासन है । सिंहासन पर भगवती श्री बगलामुखी विराजमान हैं । देवी के वस्त्र पीले हैं । आभूषण और पीले पुष्पों की माला से सुशोभित हैं । इसलिए इन्हें पीताम्बरा भी कहते हैं । देवी के दो हाँथ हैं । दाएँ हाथ से शत्रु के जीभ को पकड़े हुई हैं । बाएँ हाथ में गदा है ॥ १ ॥

मायावी राक्षसों को जीतने की इच्छा से कार्तिकेय का जयोपाय जिज्ञासा

कौञ्चभेद उवाच—

कैलाश शिखरासीनं गौरीवामाङ्गसंस्थितम् ।
भारतीपतिवाल्मीकि शेषसंयुतमीश्वरम् ॥ २ ॥
अष्टदिक्पालकोशाष्ट-विघ्नेशाष्टकसेवितम् ।
भैरवाष्टवृतं देवं मातृमण्डलवेष्टितम् ॥ ३ ॥
महापाशुपताक्रान्तं प्रमथैरावृतं प्रभुम् ।
नत्वा स्तुत्वा कुमारश्च इदं वचनमब्रवीत् ॥ ४ ॥
चापचर्यासुनिपुणैर्युद्धचर्याभयङ्करैः ।

नानामायाविनां चैव जेतुमिच्छामि रक्षसाम् ॥ ५ ॥
तस्योपायं च तद्विद्यां वद मे करुणाकर ।
पुत्रोऽहं तव शिष्योऽहं कृपापात्रोऽहमेव च ॥ ६ ॥

क्रौंचभेद ने कहा—कैलाश के शिखर पर शिवजी विराजमान है । उनके बायीं गोदी में गौरी विराजमान् हैं । शिवजी की सेवा में ब्रह्मा, वाल्मकि, शेष, आठो दिक्पाल, आठो गणपति, आठो भैरव, देवता, मातृका-मण्डल लगे हुए हैं। श्रीशिव महापाशुपतो आदि प्रथम गणों से घिरे हैं । ऐसी स्थिति में कुमार कार्तिकेय ने प्रणाम कर स्तुति करके कहा—हे करुणाकर भगवन् शिव! मैं आपका पुत्र और आपका कृपापात्र शिष्य हूँ । मैं उन राक्षसों को जीतना चाहता हूँ जो धनुष चलाने में कुशल, युद्ध करने में भयङ्कर हैं और नाना प्रकार की माया के जानकार हैं। आप मुझे कृपा करके ऐसा उपाय बतलाइये जिससे मैं उन्हें पराजित कर सकूँ ॥ २-६ ॥

राक्षसों को जीतने के लिये शिव कथित ब्रह्मास्त्र विद्या
बगला मन्त्र की प्रशंसा

ईश्वर उवाच—

साधु साधु महाप्राज्ञ क्रौञ्चभेदन कोविद ।
ब्रह्मास्त्रेण विना शत्रुसंहारो न भवेत्कलौ ॥ ७ ॥
तद्विद्यां च प्रवक्ष्यामि त्रिषु लोकेषु दुर्ल्लभाम् ।
पुत्रो देयः शिरो देयं न देया यस्य कस्यचित् ॥ ८ ॥
ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी विद्या स्तब्धमायामनुस्तथा ।
प्रवृत्तिरोधिनी विद्या बगला च कुमारक ॥ ९ ॥
मन्त्रजीवनविद्या च प्राणिप्राणापहारिका ।
षट्कर्माधारविद्या च ये ते पर्य्यायवाचकाः ॥ १० ॥
षट्प्रयोगास्त्रयो विद्या ये विद्यागमभूषिताः ।
तिरस्कृताखिला विद्या त्रिशक्तिमयमेव च ॥ ११ ॥
स्तम्भनेन विना शान्तिर्वश्यञ्चैव तु तद्विना ।
मोहनाकर्षणञ्चैव विद्वेषोच्चाटनन्तथा ॥ १२ ॥
मारणं भ्रान्तिरुद्वेगकारणं च कुमारक ।
विद्या च बगलानाम्नी मुनिगुह्यं सुपावनम् ॥ १३ ॥
विना च स्तम्भिनीविद्यां न विद्या च प्रभासते ।
तस्मादेव महाविद्या कमलासनजीवनम् ॥ १४ ॥

ईश्वर ने कहा—हे महाप्राज्ञ! हे कोविद क्रौंच भेदन कुमार कार्तिकेय! तुम्हारे इस जिज्ञासा के लिये साधुवाद देता हूँ । कलियुग में ब्रह्मास्त्र के बिना शत्रुओं का संहार नहीं होता । तीनों लोकों में दुर्लभ उसी ब्रह्मास्त्र विद्या को मैं तुमसे कहता हूँ । जिसके वीर में कथन है कि पुत्र दे दे, शिर दे दे, पर इस विद्या को ऐरे-गैरे को कदापि नहीं बतलाना चाहिये । हे कुमार! बगलाविद्या ब्रह्मास्त्र को स्तम्भित करने वाली विद्या है । स्तब्ध माया मन्त्र है । यह प्रवृत्तियों का निरोध करने वाली विद्या है। यह मन्त्र जीवन विद्या है । प्राणियों के प्राणों का हरण करने वाली है । यह विद्या षट्कर्मों का आधार है । इसके इतने पर्यावाचक हैं। विद्या आगम के जानकारों ने छह प्रकार के प्रयोगास्त्रों को छोड़कर त्रिशक्तिमय विद्या को अपनाया है । स्तम्भन के बिना शान्ति, वश्य, मोहन, आकर्षण, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण, भ्रान्ति, उद्वेग करना आदि कर्म सम्भव नहीं हो सकते हैं । हे कुमार! मुनिगृह्य सुपावन! बगला नामक स्तम्भिनी विद्या के बिना कोई विद्या फलप्रद नहीं होती है । इसलिये यह महाविद्या कमलासन ब्रह्मा का जीवन है ।। ७-१४ ।।

नारद का सांख्यायन मुनि को ब्रह्मास्त्र विद्या का उपदेश करना और उस विद्या का पृथ्वी पर प्रकाशन का क्रम

पद्मजो नारदो विद्यां सांख्यायनमुनिं प्रति ।
उपदेशक्रमेणैव उक्तवान्मेरुकन्दरे ।। १५ ।।
तेन देवीकटाक्षेण कृतवानागमं भुवि ।
मूलमन्त्रोपविद्याश्च अङ्गमन्त्रांश्च विस्तरात् ।। १६ ।।

श्री ब्रह्मा से प्राप्त ब्रह्मास्त्र विद्या का उपदेश नारद ने मेरु कन्दरा में सांख्यायन मुनि को दिया । देवी की कृपा कटाक्ष से सांख्यायन ने आगम का निर्माण किया । उससे मूलमन्त्र, उपविद्या एवं अङ्ग-मन्त्रों का वर्णन विस्तार से किया ।। १५-१६ ।।

ब्रह्मास्त्र-विद्या मन्त्र वासना के फल और मन्त्र प्राप्ति के लिये कुल गुरु मुख से दीक्षा-ग्रहण का आवश्यकत्व

प्रयोगं चोपसंहारं तदाराधनतद्गुणम् ।
विस्तरेणोक्तवानस्मि वक्ष्ये तत्सर्वमादरात् ।। १७ ।।
स्वमन्त्राक्षरणी विद्या स्वमन्त्रफलदायका ।
स्वकीर्त्तिरक्षिणी विद्या शत्रुसंहारकारिका ।। १८ ।।
परविद्याछेदनं च परयन्त्रविदारणम् ।

परमन्त्रप्रयोगेषु सदा विध्वंसकारकम् ॥ १९ ॥
परानुष्ठानहरणं परकीर्त्तिविनाशनम् ।
परापजयकृद् विद्या परेषां भ्रमकारणम् ॥ २० ॥
ये वा विजयमिच्छन्ति ये वा जेतुं क्षयं कलौ ।
ये वा क्रूरमृगेन्द्राणां क्षयमिच्छन्ति मानवाः ॥ २१ ॥
ये(य इ)च्छन्त्याकर्षशान्त्यादि वश्यं सम्मोहनादिकम् ।
विद्वेषोच्चाटनं प्रीतिं तेनोपास्यस्त्वयं मनुः ॥ २२ ॥
सत्सम्प्रदायविधिना सद्गुरोर्मुखतस्तथा ।
उपदेशक्रमेणैव गृहीत्वा साधयेन्मनुम् ॥ २३ ॥
कुलाचारसमायुक्तः कुलमार्गेण पुत्रक ।
दीक्षा कुलगुरोर्योगात् गृहीतव्या सुबुद्धिना ॥ २४ ॥
साधयेत्कुलमार्गेण तेन मन्त्रेण प्रयोजयेत् ।
उपसंहारणं तेन कर्त्तव्यं कुलयोगिना ॥ २५ ॥
सौभाग्यचर्यासमायुक्तं सदा तर्पणपूर्व्वकम् ।
सदा पूजासमायुक्तं चिन्तितं भवति ध्रुवम् ॥ २६ ॥
ऋषिसिद्धामरैश्चैव विद्याधरमहोरगैः ।
यक्षगन्धर्वनागैश्च पिशाचब्रह्मराक्षसैः ॥ २७ ॥
पञ्चेन्द्रियैश्च सञ्चारं सद्यो नाशकरो मनुः ।
पिण्डजाण्डजजीवैश्च किम्पुनः क्रौञ्चभेदन ॥ २८ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'मन्त्र-वर्णनं'
नाम प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

पहले मैंने इस विद्या के प्रयोग, उपसंहार, आराधन और गुणों का वर्णन विस्तार से किया था । अब उन सबों को फिर से कहता हूँ । यह देवी अपने मन्त्र की रक्षा करने वाली और मन्त्र का फल प्रदान करने वाली हैं । अपनी कीर्ति की रक्षा करने वाली और शत्रुओं का संहार करने वाली हैं । यह परकृत अभिचार की विनाशिनी और परयन्त्र का विदारण करने वाली हैं । पर विद्या-प्रयोगों का विध्वंस करने वाली हैं । दूसरों के अनुष्ठान का हरण करने वाली हैं । दूसरों की कीर्ति का विनाश करने वाली हैं । शत्रुओं को पराजित करने वाली हैं और दूसरों को भ्रमित करने वाली यह विद्या है । जिन्हें विजयश्री की इच्छा हो, जिन्हें जीतने वालों का नाश करने की इच्छा हो, जो मनुष्य क्रूर व्याघ्रसिद्धों का विनाश चाहते हों, जिन्हें आकर्षण, शान्ति, वश्य, सम्मोहन,

विद्वेषण एवं उच्चाटन की इच्छा हो उनके लिये यह मन्त्र परम उपास्य बतलाया गया है ।। १७-२२ ।।

सत्सम्प्रदाय विधि से सद्गुरु के मुख से उपदेश से दीक्षा लेकर इस मन्त्र की साधना करना चाहिये । हे पुत्र कुमार! कुलाचार समायुक्त कुल-गुरु से कुल-मार्ग से बुद्धिमान को दीक्षा ग्रहण करना चाहिये । कुलमार्ग से मन्त्र-साधना करे और कुलमार्ग से उसका प्रयोग करे । कुल-योगियों को उपसंहार भी कुल-मार्ग से ही करना चाहिये । सौभाग्यचर्या से युक्त सर्वदा तर्पण करके सदा पूजन करने से अभीष्ट की प्राप्ति होती है । यह मन्त्र ऋषि, सिद्ध, अमरदेवता, विद्याधर, महोरग, यक्ष, गन्धर्व, नाग, पिशाच एवं ब्रह्मराक्षस का नाश तुरन्त करता है । तब पिण्डजू अण्डज जीवों की क्या हस्ति है ।। २३-२८ ।।

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'मन्त्र-वर्णन' नामक प्रथम पटल समाप्त ॥ १ ॥

अथ द्वितीयः पटलः

गुरु-शिष्य-लक्षणं

द्विभुजा पीताम्बरा ध्यान

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं
वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥ १ ॥

उन दो भुजाओं वाली पीताम्बरा देवी को मैं प्रणाम करता हूँ जो अपने बाएँ हाथ से शत्रु के जीभ को खींचकर और अपने दाएँ हाथ के गदा-घात से शत्रु को पीड़ित कर रही हैं ॥ १ ॥

दीक्षा-विधि जिज्ञासा

क्रौञ्चभेद उवाच—

नमस्ते पार्वतीनाथ नमः पन्नगकङ्कण ।
वद दीक्षाविधिं तात तत्सर्वं स्तम्भनादयः ॥ २ ॥

क्रौञ्चभेद ने कहा—हे पार्वतीनाथ! आपको नमस्कार करता हूँ । सर्पो के कङ्गन धारण करने वाले आपको प्रणाम करता हूँ । हे तात! स्तम्भन आदि सभी की दीक्षा-विधि को कहिये ॥ २ ॥

पुस्तक लिखित मन्त्र जप से सम्भावित हानि होने के कारण कुल-गुरु-मुख से दीक्षा-ग्रहण का प्रतिपादन

ईश्वर उवाच—

पुस्तके लिखितान्मन्त्रानवलोक्य जपेत्तु यः ।
स जीवन्नेव चाण्डालो मृतः श्वानो भविष्यति ॥ ३ ॥
दीक्षामार्गं विना मन्त्रं शैवं शाक्तञ्च वैष्णवम् ।
यो जपेत्तं दहत्याशु देवता च जुगुप्सति ॥ ४ ॥

दीक्षाविधिं विना मन्त्रं यो जपेत्कोटिकोटयः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति सिन्धुसैकतवर्षवत् ॥ ५ ॥
तत्मात्सर्वप्रयत्नेन दीक्षां कुलगुरोर्मुखात् ।
उपदेशक्रमेणैव मन्त्रसंग्रहणं चरेत् ॥ ६ ॥

पुस्तक लिखित मन्त्र को देखकर जो जप करता है वह जीवन में चाण्डाल होता है । मरने पर कुत्ता योनि में जन्म लेता है । विधिवत् दीक्षा लिये बिना जो साधक शैव, शाक्त या वैष्णव मन्त्रों का जप करता है उसे देवता दग्ध कर देते हैं और वह देवता की दृष्टि में जुगुप्सित एवं घृणित हो जाता है । विधिवत् दीक्षा-ग्रहण के बिना जो साधक मन्त्र जप करता है उसे करोड़ो-करोड़ो मन्त्र-जप के बाद भी सागर के बालू-कणों की संख्या के बराबर भी वर्षो तक सिद्धि नहीं मिलती । इसलिये सभी प्रयत्नों से कुलगुरु के मुख से उपदेश-क्रम से मन्त्र की दीक्षा अवश्य लेना चाहिए ॥ ३-६ ॥

सद्‌गुरु के लक्षण

वेदवेदाङ्गपारज्ञं वेदान्तार्थसुनिश्चितम् ।
वैदिकाचारसंयुक्तं कुर्याद् गुरुमतन्द्रितः ॥ ७ ॥
गर्भकौलागमासक्तं नानाकौलपरायणम् ।
अष्टपाशविनिर्मुक्तं कुर्याद् गुरुमतन्द्रितः ॥ ८ ॥
पुरश्चरणकृत्सिद्धमन्त्रागमविशारदम् ।
उद्धर्त्तुं चैव संहर्त्तु समर्थं सत्यवादिनम् ॥ ९ ॥
प्रस्थानज्ञानपारीणं नीतिशास्त्रार्थकोविदम् ।
श्रीविद्यामन्त्रयन्त्रज्ञं कुर्याद् गुरुमतन्द्रितः ॥ १० ॥
चक्रपूजासमायुक्तं(क्तो)न्यासविद्याविशारदम्(दः)।
गुरुर्यत्नाच्च कर्त्तव्यः सततं सिद्धिकांक्षिभिः ॥ ११ ॥

वेद-वेदाङ्ग के ज्ञाता, वेदान्त के निश्चित अर्थ के जानकार और वैदिक-आचारों को करने वाले को अतन्द्रित होकर अपना गुरु बनाना चाहिये। कौलागम के तत्त्वों में आसक्त रहने वाले, विविध कौल-धर्मो को करने वाले, आठ प्रकार के पाशों से मुक्त व्यक्ति को ही गुरु-रूप में ग्रहण करना चाहिये । जो मन्त्र आगम में विशारद हो जिसने पुरश्चरण से मन्त्र सिद्ध किया हो, जो सत्यवादी, उद्धार और संहार करने में समर्थ हो, जो प्रस्थान ज्ञान में पारङ्गत हो, जो नीतिशास्त्र के अर्थ का ज्ञानी हो, जो श्रीविद्या के मन्त्रों और यन्त्रों का जानकार हो उसी से मन्त्र दीक्षा तन्द्रारहित होकर लेनी चाहिये । जो विधिवत् चक्रपूजा करने वाला हो और

जो न्यास-विद्या में विशारद हो, ऐसे गुरु से ही सिद्धि चाहने वालों को दीक्षा ग्रहण करना चाहिये ॥ ७-११ ॥

तीन कारणों से विद्या की उपलब्धि, विद्या के राजस आदि तीन भेद

गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा ।
अथवा विद्यया विद्या चतुर्थं नोपलभ्यते ॥ १२ ॥
शुश्रूषया गुरुं सम्यक् तोषयेच्छिष्य अन्वहम् ।
प्रसन्नचेतसा दत्तं मन्त्रमुत्तममर्भक ॥ १३ ॥
स्वल्पं वा बहुलं चाथ शिष्यद्रव्यं गुरुः स्वयम् ।
गृहीत्वा मन्त्रमादत्ते विक्रीतं तदुदाहृतम् ॥ १४ ॥
राजसं चैव तद्विद्याद् भोगदं भुवि पुत्रक ।
विद्याप्रतिनिधिं विद्या(द्) यद्दत्तं तामसं मतम् ॥ १५ ॥
मोक्षार्थी च गुरुं यत्नात् शुश्रूषेणैव तोषयेत् ।
शुश्रूषेणैव यल्लब्धं तद्विद्यात् सर्वसिद्धिदम् ॥ १६ ॥
नो देयं(या) विद्यया विद्या वित्तकांक्षी तथैव च ।
सच्छिष्याय प्रदातव्यं धनदेहाद्यवञ्चकैः ॥ १७ ॥

गुरु की सेवा से, प्रचुर धन से और विद्या के बदले विद्या देने से विद्या प्राप्ति होती है । इन तीन कारणों के अतिरिक्त कोई चौथा कारण नहीं है, जिसमें विद्या की प्राप्ति होती हो ।

गुरु की सम्यक् सेवा दिन-रात करके शिष्य गुरु को सन्तुष्ट करे तब गुरु प्रसन्न होकर उत्तम-मन्त्र की दीक्षा देता है । इसे सात्विक कहते हैं । गुरु स्वयं शिष्य का थोड़ा या बहुत धन लेकर मन्त्र देता है इसे खरीदा हुआ मन्त्र कहा जाता है । इसे राजासक कहते हैं । इस विद्या से भोग की प्राप्ति होती है । विद्या के बदले जो विद्या प्राप्त होती है उसे तामसी कहते हैं ।

मोक्षार्थी गुरु को सेवा-सुश्रुषा से सन्तुष्ट करे । सुश्रुषा से जो विद्या प्राप्त होती है । उससे सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं । विद्या के बदले विद्या नहीं देना चाहिये । धन लेकर भी विद्या देय नहीं है । उत्तम शिष्य को विद्या देना चाहिये । धन देहादि वञ्चकों को विद्या नहीं देना चाहिये ॥ १२-१७ ॥

शिष्य के लक्षण

दुरालापसमायुक्तं दुर्गुणेन समन्वितम् ।
सर्वथा वर्ज्जयेच्छिष्यं स्वगुरोर्वाभिमानिनम् ॥ १८ ॥

अष्टपाशसमायुक्तं भ्रष्टाचारसमन्वितम् ।
सर्वदा वर्जयेच्छिष्यं गुरुसेवाविवर्ज्जितम् ॥ १९ ॥
निर्मत्सरं निरालम्बं नीतिशास्त्रविशारदम् ।
नित्यानित्यविवेकं च शिष्यत्वेनोपकल्पयेत् ॥ २० ॥
श्रद्धाभक्तिसमोपेतं धनदेहाद्यवञ्चितम् ।
अष्टपाशविनिर्मुक्तं शिष्यत्वेनोपकल्पयेत् ॥ २१ ॥
गुरुशिष्यावुभौ मोहादपरीक्ष्य परस्परम् ।
उपदेशं ददन् गृह्णन् प्राप्नुयात्तौ पिशाचताम् ॥ २२ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'गुरु-शिष्य-लक्षणं' नाम द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

जो अनर्थ वक्ता हो, जो दुर्गुणों से समन्वित हो, जो अपने गरुर में घमण्डी हो ऐसे व्यक्ति को शिष्य के रूप में नहीं ग्रहण करना चाहिये । जो आठ पाशों से युक्त हो, जो भ्रष्ट आचरण वाला हो, जो सेवा न करता हो, ऐसे व्यक्ति को शिष्य के रूप में नहीं ग्रहण करना चाहिये । जो इर्ष्यालु न हो, बिना अवलम्ब का हो, नीति शास्त्र का पूर्ण ज्ञानी हो, जिसमें नित्य अनित्य का विवेक हो, ऐसे व्यक्ति को शिष्य बनाना चाहिये । जो श्रद्धा भक्ति युक्त हो, धन-देहादि से वंचित हो, आठ पाशों से मुक्त हो, उसी का शिष्यत्व स्वीकार करना चाहिये । वे गुरु और शिष्य दोनों जो परस्पर परीक्षा के बिना मोहवश उपदेश देते हैं और लेते हैं, वे पिशाचत्व प्राप्त करते हैं । जो गुरु शिष्य की परीक्षा लिये बिना मन्त्र देता है और जो शिष्य गुरु को जाँचे बिना ही मन्त्र दीक्षा लेता है वे दोनों ही पिशाच हो जाते हैं ॥ १८-२२ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'गुरु-शिष्य लक्षण' नामक द्वितीय पटल समाप्त ॥ २ ॥
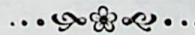
अथ तृतीयः पटलः

दीक्षा-विधिः

वाणी मुख स्तम्भिनी बगलामुखी का ध्यान

चलत्कनककुण्डोल्लसितचारुगण्डस्थलां
लसत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुविम्बाननाम् ।
गदाहतविपक्षकां कलितलोलजिह्वाञ्चलां
स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मुखस्तम्भिनीम् ॥ १ ॥

शत्रुओं की वाणी और मुख को स्तम्भित कर देने वाली बगलामुखी का मैं स्मरण करता हूँ जिनके सुन्दर कपोल डोलते हुए कुण्डलों के लोल से सुशोभित है । जिनका मुखचन्द्र कनक चम्पा की आभा से सुशोभित है । विपक्षी जिनके गदा की चोट से आहत है । जो कलित लोल जिह्वाञ्चला है ॥ १ ॥

अभिषेक विधि की जिज्ञासा

क्रौञ्चभेद उवाच—

पूजाधारणयन्त्रज्ञ सर्वमन्त्रविशारद ।
अभिषेकविधिं तात वद मे करुणाकर ॥ २ ॥

कार्तिकेय ने कहा—हे करुणाकर तात! आप पूजन यन्त्र और धारण यन्त्र के ज्ञानी सभी मन्त्रों के विशारद हैं । अब कृपया मुझे अभिषेक की विधि बतलाइये ॥ २ ॥

मन्त्राभिषेक में काल निर्णय

ईश्वर उवाच—

आश्विने कार्त्तिके चैव चैत्रमासे कुमारक ।
कुर्युस्तमभिषेकं च मानवाः सिद्धिकांक्षिणः ॥ ३ ॥

रवौ गुरौ भृगावब्जवासरे च कुमारक ।
मन्त्राभिषेकं कर्त्तव्यं सततं सिद्धिकांक्षिभि: ॥ ४ ॥
रोहिणीश्रवणे चैव पुष्ये चैव विशाखयो: ।
मन्त्राभिषेकं कर्त्तव्यं सद्य: सिद्धिकरं भुवि ॥ ५ ॥
एवं शुद्धदिने सम्यक् पूर्वेऽह्नि समुपोषितम् ।
स्नापयेत्पञ्चगव्येन ततश्चामलकेन तु ॥ ६ ॥

ईश्वर ने कहा—हे कुमार सिद्धि के इच्छुक मनुष्यों को आश्विन, कार्तिक और चैत के महीनों में अभिषेक करवाना चाहिये । हे कुमार! रविवार, गुरुवार, शुक्रवार और सोमवार में सिद्धि-कामियों को सतत् अभिषेक करवाना चाहिये । रोहिणी, श्रवण, पुष्य, विशाखा नक्षत्रों में मन्त्राभिषेक से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है । इस प्रकार के सिद्धिप्रद दिनों के पूर्वाह्न में उपवास युक्त साधक का अभिषेक पहले पञ्चगव्य से करावे । तब आमला के जल में स्नान करावे ॥ ३-६ ॥

गायत्री जप का आवश्यकत्व

ततः शिष्यं समानीय देवतासन्निधौ पुन: ।
अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं गायत्रीजपमाचरेत् ॥ ७ ॥

स्नान के बाद शिष्य को देवता के निकट लाकर मन्त्र और गायत्री-मन्त्र का दश हजार जप करें ॥ ७ ॥

नव कलश स्थापन विधि

देवस्येशानभागे तु गोमयेनोपलेपितम् ।
रङ्गवल्ल्या लिखेद्यन्त्रं रक्तपीतसितासितैः ॥ ८ ॥
षोडशाङ्गुलमानं तु लिखेद् बिन्दुमनन्यधीः ।
ततो (तदु)परि लिखेद् वृत्तमष्टपत्रं तु शोभनम् ॥ ९ ॥
प्रियङ्गुशालिगोधूमचरणकाटकमाषकैः ।
कुलत्थमुद्गनीवारैः क्रमान्मध्यादि विन्यसेत् ॥ १० ॥
प्रस्थं चैव चतुर्विंशं प्रत्येकं धान्यमेव च ।
अव्रणं स्थूलकलशं मध्ये संस्थाप्य बुद्धिमान् ॥ ११ ॥
अष्टपत्रे न्यसेत्पुत्र कलशाष्टकमादरात् ।
क्षालितं वासितं शुद्धं कलशं च समर्पयेत् ॥ १२ ॥
षोडशैरुपचारैश्च धूपाद्येनैव विन्यसेत् ।
आपो वानेन पूर्येत नदीजलमकल्मषम् ॥ १३ ॥

निःक्षिपेन्नवभाण्डेषु नवरत्नान् कुमार ।
कस्तूरीचन्दनोपेतान् नवभाण्डेषु निःक्षिपेत् ॥ १४ ॥
मध्ये देवीं समावाह्य चिन्मयीं बगलामुखीम् ।
प्राणस्थापनमार्गेण केरलोक्तविधानतः ॥ १५ ॥
वाणी चैव रमा गौरी शची स्वाहा रतिस्तथा ।
दुर्गा छाया समभ्यर्च्य पूर्वाद्यष्टकपत्रयोः ॥ १६ ॥
अर्चयेत्पूर्ववत्पुत्र केरलोक्तविधानतः ।
नवीननवसंख्याकवस्त्रेणैव तु वेष्टयेत् ॥ १७ ॥

देवता से ईशान दिशा में गोबर से लिपी भूमि में लाल, पीले, उजले, काले रंगों से यन्त्र अंकित करे । यन्त्र का मान सोलह अङ्गुल रखना चाहिए । मध्य में बिन्दु लिखे । उसके बाहर सुन्दर वृत्त और अष्टदल कमल बनावे । यन्त्र में क्रम से चौबिस प्रस्थ, प्रियङ्गु, शालि, गेहूँ, चना अर्द्धमात्रा अर्थात् बारह प्रस्थ, कुल्थी, मूँग, नीवार को भरे । उसके मध्य में कलश को स्थापित करके उसकी पूजा करे ।

अष्टपत्र के प्रत्येक पत्र में एक-एक कलश अर्थात् कुल आठ कलशों को धोकर, उन्हें सुवासित करे । उन्हें स्थापित करके धूपादि एवं षोडशोपचारों से पूजा करे । उनमें निर्मल नदी का जल भरे । हे कुमार! उनमें नवरत्नों को डाले । नवों कलशों में कस्तूरी और चन्दन डाले । मध्य कलश में चिन्मयी देवी बगलामुखी का आवाहन करे । केरल सम्प्रदाय के उक्त विधान से प्राण-प्रतिष्ठा करे । पूर्वादि आठ पत्रों में पूर्वादि-क्रम में सरस्वती, लक्ष्मी, गौरी, शची, स्वाहा, रति, दुर्गा का अर्चन करेलोक्त विधान से पूर्ववत् करे । नये नव-वस्त्रों को कलशों में लपेटे ॥ ८-१७ ॥

ऋत्विक् वरणविधि और कलश-मार्जन विधि

सुगन्धपत्रपुष्पादीन् विन्यसेत्कलशान्तरे ।
तत्र शिष्यं समानीत्वा(य)ऋत्विग्वरणमाचरेत् ॥ १८ ॥
वेदवेदाङ्गपारीणमष्टौ ब्राह्मणमादरात् ।
प्रार्थयेद्युग्मसंयुक्तमर्चयेद् वस्त्रभूषणैः ॥ १९ ॥
शाकुनादिषु मन्त्रेषु प्रथमं कलशमार्जनम् ।
लक्ष्मीसूक्तेन श्रीयुक्तं द्वितीयं कलशन्तथा ॥ २० ॥
पौरुषेणैव सूक्तेन तृतीयं कलशं तथा ।
नारायणानुवाकेन चतुर्थं रुद्रसूक्तकैः ॥ २१ ॥

पञ्चब्रह्ममयैर्मन्त्रैः पञ्चमं कलशं तथा ।
षष्ठं चाम्भस्यवारेण ब्रह्मपल्ल्या च सप्तमम् ॥ २२ ॥
अष्टमं कठवल्ल्या च मार्जयेन् मन्त्रकोविदः ।
मध्यमं पूर्वकलशं मूलमन्त्रेण मार्जयेत् ॥ २३ ॥
एवञ्च मार्जनं कृत्वा नवीनैर्वस्त्रभूषणैः ।
अलंकृत्वा तु शिष्यं तमानीय मण्डपान्तरे ॥ २४ ॥

कलश में सुगन्ध पत्र- पुष्पादि डाले । वहीं पर शिष्य को लाकर ऋत्विकों का वरण करावे । वेद-वेदाङ्ग में पारङ्गत आठ ब्राह्मणों को प्रार्थना करके वस्त्र आभूषण आदि प्रदान करे । शाकुनादि मन्त्रों से प्रथम कलश का मार्जन करे । दूसरे कलश का मार्जन लक्ष्मी सूक्त और श्रीसूक्त से करे । तीसरे कलश का मार्जन पुरुष सूक्त से करे । चौथे कलश का मार्जन नारायण अनुवाक और रुद्र सूक्त से करे । पाँचवें कलश का मार्जन पञ्च ब्रह्म-मन्त्रों से करे । छठे कलश का मार्जन 'चाम्भस्य वरिण' मन्त्र से करे । सातवें कलश का मार्जन ब्रह्मवल्ली से करे । आठवें कलश का मार्जन कठवल्ली से करे । मध्य में स्थित पूर्व कलश का मार्जन मूल-मन्त्र से करे । इस प्रकार के मार्जन के बाद नये वस्त्राभूषणों से अलंकृत शिष्य को मण्डप में ले आये ॥ १८-२४ ॥

विद्या मन्त्रोपदेश की विधि

वामोरूपरि विन्यस्य मूर्द्धनि चाघ्राय सादरात् ।
एकैकं च पुरश्चर्यामूलमन्त्रं कुमारक ॥ २५ ॥
स हिरण्योदके पूर्वं दद्याच्छिष्याय पुत्रक ।
स्वहृत्कमलमध्यस्था विद्यां ज्योतिर्मयीं पुनः ॥ २६ ॥
शिष्यस्य हृदयं चैव प्रविशन्तीति भावयेत् ।
तद्वच्छिष्यस्तु सम्भाव्य गुरुं यत्नेन तोषयेत् ॥ २७ ॥
एवं मन्त्राभिषेकञ्च कुर्याद् ब्रह्मास्त्रविद्यया ।
सद्यः सिद्धिर्भवेत्पुत्र पुरश्चर्यां विना भुवि ॥ २८ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'दीक्षा-विधिः' नाम तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥
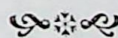
शिष्य के बाएँ जंघे पर न्यास करके उसके माथे को सूँघे । पुरश्चरण के मूल-मन्त्र को एक-एक करके स्वर्णोदक से शिष्य को देवे । तब अपने हृदय में स्थित ज्योतिर्मयी विद्या को शिष्य के हृदय में प्रवेश करते हुए भावना से

देखे। तब शिष्य भी गुरु को अपने यत्न से सन्तुष्ट करे। इस प्रकार का अभिषेक ब्रह्मास्त्र-विद्या से करने पर पुरश्चरण के बिना ही मन्त्र शीघ्र सिद्ध हो जाता है ॥ २५-२८ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'दीक्षा-विधि' नामक तृतीय पटल समाप्त ॥ ३ ॥

...๑๑...

अथ चतुर्थः पटलः

सन्ध्या-विधिः

प्रेतासना बगलामुखी का ध्यान

पीयूषोदधिमध्यचारुविलसद्रत्नोज्ज्वले मण्डपे
श्रीसिंहासनमौलिपातितरिपुप्रेतासनाध्यासिनीम् ।
स्वर्णाभां करपीडितारिरसानां भ्राम्यद्गदां बिभ्रतीं
स्वप्ने पश्यति तस्य यांति विलयं सद्योऽम्ब सर्वापदः ॥ १ ॥

अमृत-सागर के मध्य में सुशोभित रत्नोज्ज्वल मण्डप में श्री सिंहासन मौलि पातित शत्रु प्रेत के आसन पर विराजमान स्वर्णाभा देवी को, शत्रु के जीभ को खींचती हुई और गदा भाँजती हुई रूप को जो स्वप्न में देखता है उसकी सभी आपदाओं का नाश हो जाता है ॥ १ ॥

ब्रह्मास्त्र मन्त्र सन्ध्या जिज्ञासा

क्रौञ्चभेद उवाच—

गङ्गाधर नमस्तेऽस्तु गौरीपति नमो नमः ।
ब्रह्मास्त्रमन्त्रसन्ध्यां च वद मे करुणाकर ॥ २ ॥

कार्तिकेय ने कहा—हे गङ्गाधर! आपको नमस्कार है, हे गौरीपति! आपको दो बार प्रणाम है । हे करुणाकर! अब ब्रह्मास्त्र-मन्त्र की सन्ध्या-विधि को मुझे बतलाइये ॥ २ ॥

मन्त्र-सन्ध्या की विधि

ईश्वर उवाच—

मन्त्रमध्यापयेत् सम्यक् शिष्यस्य गुरुरादरात् ।
तदारब्धं तु तन्मन्त्रं मन्त्रसन्ध्यां समाचरेत् ॥ ३ ॥
तन्मन्त्रसन्ध्यां वक्ष्यामि शरजन्मन् समासतः ।

मन्त्रसन्ध्याविहीनस्य सर्वं तन्निष्फलं भवेत् ॥ ४ ॥
पञ्चाङ्गविधिना स्नात्वा मन्त्रस्नानमनन्तरम् ।
ततः स्नायादङ्गमन्त्रैर्मूलेनैव तु मार्जयेत् ॥ ५ ॥
धौतवस्त्रं परीधाय स्वगृह्योक्तविधानतः ।
नित्यकर्म समाप्याथ मन्त्रसंध्यां समाचरेत् ॥ ६ ॥
अङ्कुशेनैव मुद्रायाः सूर्यमण्डलगं जलम् ।
आनयेत्तोयमध्ये तु ध्यानयोगेन बुद्धिमान् ॥ ७ ॥
आवाहिनी स्थापनी च सन्निधानमतः परम् ।
सन्निरोधनमुद्रा च सम्मुखी प्रार्थनी तथा ॥ ८ ॥
एता मुद्राश्च ततो संदर्शयेत्साधकोत्तमः ।
शोधयेदङ्कुशेनादौ चामृतीकरणं ततः ॥ ९ ॥
तज्जलं वामचुलुके गृहीत्वा साधकोत्तमः ।
मूलेनैव त्रिधामन्त्र्य अष्टपत्राम्बुजं लिखेत् ॥ १० ॥
मध्ये एकाक्षरीमन्त्रं बगलानाम्नि पुत्रक ।
वेदसंख्यामन्त्रवर्णान् सप्तपत्रं क्रमाल्लिखेत् ॥ ११ ॥
अन्त्यपत्रे चाष्टवर्णा ल्लिखेन्मूलमनुं तथा ।
पुनरेकाक्षरं मन्त्रं त्रिसप्तमभिमन्त्रयेत् ॥ १२ ॥
तेन मूलेन सम्मार्ज्य मार्जनक्रमतोऽर्भक ।
तन्मार्जनविधिं वक्ष्ये ऐहिकामुष्मिकेषु च ॥ १३ ॥
त्रिधो मूर्द्धनि द्विधा बाह्वोस्त्रिधा हृन्नाभिदेशयोः ।
द्विधा पादेषु सम्मार्ज्य सौम्यकर्मस्वयं क्रमः ॥ १४ ॥
एवञ्च मार्जनं कृत्वा गायत्र्या बगलाह्वया ।
अर्घ्यत्रयञ्च निक्षिप्य हृदि सम्भाव्य देवताम् ॥ १५ ॥
मूलेन मन्त्रितं तोयं त्रिवारञ्च त्रिधा क्षिपेत् ।
एवमेव त्रिकालञ्च मन्त्रसन्ध्यां समाचरेत् ॥ १६ ॥

शिष्य को गुरु आदर सहित मन्त्र-सन्ध्या सम्यक् रूप से बतलावे । तब शिष्य उस मन्त्र से मन्त्र-सन्ध्या करने का प्रारम्भ करे । हे षडानन! उस मन्त्र-सन्ध्या को मैं समासतः कहता हूँ । मन्त्र-सन्ध्या न करने वालों के सभी कर्म निष्फल होते हैं । पञ्चाङ्ग-विधि से स्नान करके मन्त्र-स्नान करे । तदनन्तर स्नान किये हुए अङ्गों का मार्जन मूल मन्त्र से करे । तब धुले वस्त्र पहन कर गृह्योक्त-विधान से नित्य कर्म समाप्त करके मन्त्र-सन्ध्या करे ।

अंकुश-मुद्रा से सूर्यमण्डल से जल लाकर बुद्धिमान साधक ध्यान-योग से जल में मिला दे । आवाहनी, स्थापिनी, सन्निधापिनी, सन्निरोधनी, सम्मुखी और प्रार्थनी मुद्राओं को क्रमशः जल में दिखलावे । अंकुश-मुद्रा से दिखलाने के बाद अमृतीकरण करे । उस जल को बाएँ चुल्लू में लेकर मूल-मन्त्र के तीन जप से अभिमन्त्रित करके उससे अष्टपत्र कमल बनावे । हे पुत्र! यन्त्र के मध्य में बगला के एकाक्षरी मन्त्र 'ह्लीं' को लिखे ।

मूलमन्त्र के चार-चार अक्षरों को सात पत्रों में लिखे । आठवें पत्र में आठ अक्षरों को लिखें । मूल मन्त्र छत्तीस अक्षरों का है—

'ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदे स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा' ।

इसके बाद एकाक्षर मन्त्र 'ह्लीं' के तीन या सात जप से उसे अभिमन्त्रित करे। इससे और मूल-मन्त्र से मार्जन-क्रम में मार्जन करे । ऐहिक और आमुष्मिक कर्मों के मार्जन की विधि कहता हूँ । मूर्धा का मार्जन तीन बार बाहुओं का दो बार, हृदय और नाभि देश का तीन बार और पैरों का मार्जन दो बार करे । यह मार्जन-क्रम सौम्य कर्मों का है । इस प्रकार मार्जन करके बगला गायत्री और अर्घ्य मन्त्र को शिष्य के हृदय में देवता के होने की भावना कर के अर्घ्य देवे । मूलमन्त्र के तीन जप से अभिमन्त्रित जल तीन बार देवे । इस प्रकार तीनों कालों (सवेरे, दोपहर एवं शाम) में मन्त्र-सन्ध्या करे ॥ ३-१६ ॥

तीनों कालों में उपस्थान

उपस्थानं त्रिकालस्य वक्ष्येऽहं क्रौञ्चभेदन ।
उपस्थानं विना सन्ध्या निष्फला नात्र संशयः ॥ १७ ॥
गम्भीरां च मदोन्मत्तां स्वर्णकान्तिसमप्रभाम् ।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम् ॥ १८ ॥
मुद्‌गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च बिभ्रतीम् ।
पीताम्बरधरां सौम्यां दृढपीनपयोधराम् ॥ १९ ॥
हेमकुण्डलभूषाङ्गी पीतचन्द्रार्द्धशेखराम् ।
पीतभूषणभूषाङ्गीं स्वर्णसिंहासने स्थिताम् ॥ २० ॥
एवं ध्यात्वा तु देवेशीं प्रातः सन्ध्यां समाचरेत् ।
उपस्थानं प्रवक्ष्यामि मध्याह्नस्य कुमारक ॥ २१ ॥
दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणम्
भूभृत्स्तम्भनकारणं मृगदृशां चेतःसमाकर्षणम् ।

३ सांख्या.

सौभाग्यैकनिकेतनं मम दृशोः कारुण्यपूर्णेक्षणं
विघ्नौघं बगले हर प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥ २२ ॥
एवं मध्यंदिनोपास्थिं कुरु कर्म सुपुत्रक ।
उपस्थानं प्रवक्ष्यामि सायाह्नस्य कुमारक ॥ २३ ॥
मातर्भञ्जय मद्विपक्षवदनं जिह्वाञ्चलां कीलय
ब्राह्मी मुद्रय मुद्रयाशु धिषणामंघ्र्योर्गतिं स्तम्भय ।
शत्रूंश्चूर्णय चूर्णयाशु गदया गौराङ्गि पीताम्बरे
विघ्नौघं बगले हर प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥ २४ ॥
सायमौपास्थि कर्तव्यमेवमेव कुमारक ।
विघ्नग्रहविनाशाय एवं ध्यायेज्जगन्मयीम् ॥ २५ ॥

हे क्रौंचभेदन कार्तिकेय! त्रिकाल उपस्थान को मैं कहता हूँ । उपस्थान के बिना सन्ध्या निष्फल होती है, यहाँ संशय नहीं है । प्रात:-सन्ध्या में देवेशी का ध्यान श्लोक १८-२० में वर्णित है । देवेशी गम्भीर और मदोन्मत है । सोने की आभा वाली उनकी कान्ति है । उनके चार हाथ और तीन नेत्र हैं । वे कमल के आसन पर बैठी हुई हैं । उनके दाहिने हाँथ में मुद्‌गर और बाएँ हाथ में पाश है । उनकी जीभ सुशोभित है एवं वस्त्र पीताम्बर है । सुन्दर दृढ़ बड़े-बड़े स्तन हैं । कानों में सोने के कुण्डल हैं और आभूषण पीले हैं । मस्तक पर अर्द्धचन्द्र है और वस्त्राभूषण पीले हैं । सोने के सिंहासन पर विराजमान हैं । ऐसा ध्यान करके प्रात:सन्ध्या सम्पादित करे । हे कुमार! अब मैं मध्य दिवस के उपस्थान को कहता हूँ । देवेशी का ध्यान श्लोक संख्या बाइस में बतलाया गया है ।

हे कल्याणि! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ । तुम दुष्टों को स्तम्भित करने वाली, विघ्नों का नाश करने वाली, दरिद्रता को नष्ट करने वाली, भूपतियों को स्तम्भित करने वाली, मृगनयनी, चित्त को आकर्षित करने वाली, सौभाग्य का एकमात्र सदन हो । हे देवेशि बगले! अपनी करुणामयी दृष्टि से मुझे देखकर मेरे प्रतिदिन के विघ्नों के समूह का नाश करो । ऐसे ध्यान के बाद हे सुपुत्र! मध्याह्न उपासना करना चाहिये ।

अब मैं शाम के उपस्थान को कहता हूँ । देवेशी का ध्यान करके सायं उपासना करना चाहिये । श्लोक संख्या चौबीस में ध्यान कहा गया है ।

हे कल्याणि! तुम्हें नमस्कार है । हे माते! मेरे विपक्षियों के मुख का भञ्जन करो और उनके जीभ को कीलित करो । ब्राह्मीमुद्रा से बुद्धि और पैरों की गति

को स्तम्भित करो । शत्रुओं को गदा से मार-मार कर चूर्ण करो । हे गौराङ्गी! पीताम्बरे! बगले! प्रतिदिन के मेरे विघ्न-समूहों को नष्ट करो । हे कुमार! सायं उपासना इसी प्रकार करे । विघ्न-ग्रहों के विनाश के लिये जगन्मयी का ध्यान इसी प्रकार करना चाहिये ।। १७-२५ ।।

मन्त्र सन्ध्या उपस्थान का अनिवार्यत्व

मन्त्रसन्ध्यां विना मन्त्रं कोटिकोटि जपन्ति ये ।
न भवेन्मौनसिद्धाद्यैर्मन्त्रसिद्धिः कुमारक ॥ २६ ॥
त्रिकालमाचरेत्सन्ध्यामुपस्थानं तथैव च ।
सहस्रं च जपेन्नित्यं सिद्धिः षण्मासतो भवेत् ॥ २७ ॥
पूर्वोक्तविधिवत्सन्ध्यां कृत्वा चाष्टोत्तरं जपेत् ।
यं यं वापि स्मरन् पुत्र तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ २८ ॥
सन्ध्यामन्त्रेषु सर्वेषु अङ्गमेव कुमारक ।
न प्रसिद्ध्यत्यङ्गहीनं तस्मात्सन्ध्यां समाचरेत् ॥ २९ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'सन्ध्या-विधिर्नाम' चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥
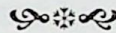
मन्त्र-सन्ध्या के बिना जो करोड़ों जप करते हैं उनके मन्त्र सिद्ध नहीं होते। सवेरे, दोपहर एवं शाम त्रिकाल सन्ध्या उपस्थान करके जो प्रतिदिन एक हजार मन्त्र जप करते हैं उन्हें छह महीनों में ही सिद्धि मिल जाती है । पूर्वोक्त सन्ध्या को विधिवत् करके जो नित्य एक सौ आठ मन्त्र जप करते हैं वे जिन-जिन वस्तुओं की इच्छा करते हैं, उन्हें वे सभी मिल जाती है । हे कुमार! अङ्गों के सहित सन्ध्या-मन्त्रों से उपासना करे। अङ्ग-रहित उपासना से कोई फल प्राप्त नहीं होते । इसलिये साङ्ग-सन्ध्या उपासना करे ।। २६-२९ ।।

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'सन्ध्या-विधि' नामक चतुर्थ पटल समाप्त ॥ ४ ॥
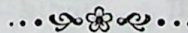
अथ पञ्चमः पटलः

एकाक्षर-मन्त्र-कथनं

श्री बगला देवी का ध्यान

पीतवर्णां मदाघूर्णां समपीनपयोधराम् ।
चिन्तयेद् बगलां देवीं स्तम्भनास्त्राधिदेवताम् ॥ १ ॥

स्तम्भनास्त्र की अधिदेवता बगला देवी का चिन्तन करे । उनका वर्ण पीला है एवं नशे से घूर्णित नेत्र हैं । उनके स्तन बराबर और स्थूल हैं ॥ १ ॥

एकाक्षरी महामन्त्र की जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

नमस्तेऽस्तु जगन्नाथ भस्मोद्धूलितविग्रह ।
एकाक्षरीमहामन्त्रं बगलाख्यं महाप्रभो ॥ २ ॥

कार्तिकेय ने कहा—हे भस्माङ्गविभूषित जगन्नाथ! आपको मैं प्रणाम करता हूँ। बगला के एकाक्षरी महामन्त्र को मुझे बतलाइये ॥ २ ॥

एकाक्षरी बीज मन्त्र का उद्धार

ईश्वर उवाच—

तत्तदेकाक्षरीबीजं तत्तन्मन्त्रेषु जीवनम् ।
उत्तमं बीजमुक्तं च मन्त्रसर्वार्थसाधनम् ॥ ३ ॥
नानामन्त्रेषु मन्त्रं वा बीजाढ्यं सर्वसिद्धिदम् ।
निर्बीजमेव निर्वीर्यं शिवस्य वचनं यथा ॥ ४ ॥
तद्बीजोद्धारमनघं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
पूजनं च प्रयोगं च वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ॥ ५ ॥
सान्तं रान्तसमायुक्तं चतुर्थस्वरसंयुतम् ।
रेफाक्रान्तं बिन्दुयुक्तं ब्रह्मास्त्रैकाक्षरं(रो) मनुः ॥ ६ ॥

ईश्वर ने कहा—सभी मन्त्रों के एकाक्षरी बीज उनके जीवन हैं । उक्त उत्तम बीजमन्त्र सभी अर्थों की सिद्धियों के साधन हैं । नाना मन्त्रों में जो मन्त्र बीजाढ्य है वे सभी सिद्धियों को देते हैं । श्रीशिव के कथन के अनुसार बीजरहित मन्त्र वीर्यहीन होते हैं । अवध मन्त्रों के बीजों का उद्धार सर्वसिद्धिदायक हैं । हे पुत्र! उनके पूजन और प्रयोगों को मैं तुम्हें कहता हूँ ॥ ३-६ ॥

ऋष्यादिन्यास, करन्यास और हृदयादि षडङ्ग न्यास विधि

ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोयं(न्दोऽस्य)गायत्री समुदाहृतम् ।
देवता बगला नाम शक्तिश्चिन्मयरूपिणी ॥ ७ ॥
लं बीजं ह्लीं च शक्तिश्च ईं कीलकमुदाहृतम् ।
न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि मन्त्रसिद्धिकरं नृणाम् ॥ ८ ॥
भूशुद्धिं भूतशुद्धिञ्च मातृकाद्वितयं न्यसेत् ।
पञ्चाक्षरेण विन्यस्य तद्विधिं श्रृणु पुत्रक ॥ ९ ॥
नेत्रबाणं पुनः पञ्च नव पञ्चदशाक्षरम् ।
विन्यसेदङ्गुलीभिश्च षडङ्गेषु तथैव च ॥ १० ॥

ऋष्यादि न्यास—अस्य मन्त्रस्य ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता श्री बगलामुखी, लंवीजं, शक्ति ह्लीं, ई, कीलक ।

करन्यास—ह्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः । ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः । ह्लै अनामिकाभ्या नमः । ह्लौ कनिष्ठाभ्यां नमः ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि षडंग न्यास—ह्ल हृदयाय नमः । ह्ली शिरसे स्वाहा । ह्लू शिखायै वषट् । ह्लैं कवचाय हुं । ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ह्लः अस्त्राय फट् ।

मनुष्यों को मन्त्र सिद्धिदायक न्यास विद्या कहता हूँ । भूशुद्धि, भूतशुद्धि, अन्तर्मातृका, बहिर्मातृका न्यास मन्त्राक्षरों से करे । उसकी विधि को बतलाता हूँ। छत्तीस अक्षरों के मन्त्र के २,५,५,९,५,१० अक्षरों में षडङ्ग न्यास अङ्गुलियों से करे ।

ॐह्ली हृदयाय नमः । बगलामुखी शिरसे स्वाहा । सर्वदुष्टानां शिखायै वषट् । वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हूं । जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् । बुद्धिं विनाशय, ह्ली ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ ७-१० ॥

मन्त्र-सिद्धि प्रदायक पञ्जर-न्यास

वक्ष्येऽहं पञ्जरं न्यासं मन्त्रसिद्धिकरं नृणाम् ।
बगला पूर्वतो रक्षेदाग्नेय्यां च गदाधरी ॥ ११ ॥

पीताम्बरा दक्षिणे च स्तम्भिनी चैव नैर्ऋते ।
जिह्वाकीलिन्यतो रक्षेत् पश्चिमे सर्वतोमयी ॥ १२ ॥
वायव्ये च मदोन्मत्ता कौबेरे च त्रिशूलिनी ।
ब्रह्मास्त्रदेवतैशान्ये पाताले स्तम्भमातरः ॥ १३ ॥
ऊर्द्ध्वं रक्षेन्महादेवी जिह्वास्तम्भनकारिणी ।
एवं दश दिशो रक्षेद् बगला सर्वसिद्धिदा ॥ १४ ॥
एवं न्यासविधिं कृत्वा यत्किञ्चिज्जपमाचरेत् ।
तस्य संस्मरणादेव शत्रूणां स्तम्भनं भवेत् ॥ १५ ॥

अब मनुष्यों को मन्त्र सिद्धि प्रदायक पञ्जर न्यास को कहता हूँ—बगला पूर्व में रक्षा करे । आग्नेय में गदाधरी रक्षा करे । दक्षिण में पीताम्बरा, नैर्ऋत्य में स्तम्भिनी, वायव्य में मदोन्मत्ता और उत्तर में त्रिशूलिनी, ईशान में ब्रह्मास्त्र देवता, पाताल में स्तम्भ माताएँ और ऊपर आकाश में महादेवी जिह्वा स्तम्भन्कारिणी रक्षा करे । दशो दिशाओं में सर्वसिद्धिदा बगला रक्षा करे । इस प्रकार के न्यासों को करके यथाशक्ति जप करे । बगला के स्मरण-मात्र से ही शत्रुओं का स्तम्भन होता है ॥ ११-१५ ॥

मातृका न्यास विधि

सर्वं न्यासविधिं कृत्वा बगलामातृकां न्यसेत् ।
तन्मातृकाविधिं वक्ष्ये सारात्सारतरं तथा ॥ १६ ॥
तारञ्च मातृकावर्णं बगलाबीजमेव च ।
नमोऽन्तेन च विन्यस्य मातृकास्थानतोऽनघ ॥ १७ ॥
ध्यानेन मन्त्रसिद्धिः स्याद् ध्यानं सर्वार्थसाधनम्।
ध्यानं विना भवेन्मूकः सिद्धमन्त्रोऽपि पुत्रक ॥ १८ ॥

सभी न्यासों को करने के बाद बगला मातृका न्यास करे । सारों के सार उसकी मातृका न्यास की विधि कहता हूँ । ॐ, मातृका, ह्लीं नमः से मातृका न्यास स्थानों में न्यास करे ।

१. ॐ अं ह्लीं नमः शिरसि ।
२. ॐ आं ह्लीं नमः मुखवृत्ते ।
३. ॐ इं ह्लीं नमः दक्षनेत्रे ।
४. ॐ ईं ह्लीं नमः वामनेत्रे ।
५. ॐ उं ह्लीं नमः दक्षकर्णे ।
६. ॐ ऊं ह्लीं नमः वामकर्णे ।

७. ॐ ॠं ह्लीं नमः दक्षनासापुटे ।
८. ॐ ॠं ह्लीं नमः वामनासापुटे ।
९. ॐ ऌं ह्लीं नमः दक्षकपीले ।
१०. ॐ ॡं ह्लीं नमः वाम कपोले ।
११. ॐ एं ह्लीं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ।
१२. ॐ ऐं ह्लीं नमः अधरोष्ठे ।
१३. ॐ ओं ह्लीं नमः ऊर्ध्वदन्तपक्तौ ।
१४. ॐ औं ह्लीं नमः अधो दन्तपङ्क्तौ ।
१५. ॐ अं ह्लीं नमः जिह्वाग्रे ।
१६. ॐ अः ह्लीं नमः कण्ठे ।
१७. ॐ कं ह्लीं नमः दक्षबाहुमूले ।
१८. ॐ खं ह्लीं नमः दक्ष कूर्परे ।
१९. ॐ गं ह्लीं नमः दक्ष मणिवधे ।
२०. ॐ घं ह्लीं नमः दक्षकराङ्गुल मूले ।
२१. ॐ ङं ह्लीं नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे ।
२२. ॐ चं ह्लीं नमः वामबाहुमूले ।
२३. ॐ छं ह्लीं नमः वामकूर्परे ।
२४. ॐ जं ह्लीं नमः वाममणिबन्धे ।
२५. ॐ झं ह्लीं नमः कराङ्गुलिमूले ।
२६. ॐ ञं ह्लीं नमः वामकराङ्गुल्यग्रे ।
२७. ॐ टं ह्लीं नमः दक्षांसमूले ।
२८. ॐ ठं ह्लीं नमः दक्षजानुनि ।
२९. ॐ डं ह्लीं नमः दक्षगुल्फे ।
३०. ॐ ढं ह्लीं नमः दक्षपादागुलिमूले
३१. ॐ णं ह्लीं नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे ।
३२. ॐ तं ह्लीं नमः दक्षमांसमूले ।
३३. ॐ थं ह्लीं नमः वामजानुनि ।
३४. ॐ दं ह्लीं नमः वामगुल्फे ।
३५. ॐ धं ह्लीं नमः वामपादाङ्गुलिमूले ।
३६. ॐ नं ह्लीं नमः वामपादागुल्यग्रे
३७. ॐ पं ह्लीं नमः दक्षपार्श्वे ।
३८. ॐ फं ह्लीं नमः वाम पार्श्वे ।
३९. ॐ बं ह्लीं नमः पृष्ठे ।
४०. ॐ भं ह्लीं नमः नाभौ ।

४१. ॐ मं ह्लीं नमः जठरे ।
४२. ॐ यं ह्लीं नमः हृदये ।
४३. ॐ रं ह्लीं नमः दक्षकुक्षे ।
४४. ॐ लं ह्लीं नमः जलपृष्ठे ।
४५. ॐ वं ह्लीं नमः वामकुक्षौ ।
४६. ॐ शं ह्लीं नमः हृदयादि दक्षकराङ्गुल्यन्तम् ।
४७. ॐ षं ह्लीं नमः कराङ्गुल्यन्तम् ।
४८. ॐ सं ह्लीं नमः दक्षपादाङ्गुल्यन्तम् ।
४९. ॐ हं ह्लीं नमः हृदयादि वामपादागुल्यन्तम् ।
५०. ॐ ळं ह्लीं नमः कण्ठ्यादि ब्रह्मरन्ध्रान्तम् ।
५१. ॐ क्षं ह्लीं नमः कण्ठ्यादि ब्रह्मरन्ध्रान्तम् ।

बगला मन्त्राक्षर न्यास

१. ॐ ॐ ह्लीं नमः मूर्ध्नि ।
२. ॐ ह्लीं ह्लीं नमः भाले ।
३. ॐ वं ह्लीं नमः दक्ष नेत्रे ।
४. ॐ गं ह्लीं नमः वामनेत्रे ।
५. ॐ लां ह्लीं नमः दक्ष कर्णे ।
६. ॐ मुं ह्लीं नमः वामकर्णे ।
७. ॐ खिं ह्लीं नमः दक्षकपोले ।
९. ॐ वैं ह्लीं नमः दक्ष नासापुटे ।
१०. ॐ दुं ह्लीं नमः वामनासा पुटे ।
११. ॐ ष्टां ह्लीं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ।
१२. ॐ नां ह्लीं नमः अधरोष्ठे ।
१३. ॐ वां ह्लीं नमः मुखवृत्ते ।
१४. ॐ चं ह्लीं नमः दक्षिणांसे ।
१५. ॐ मुं ह्लीं नमः वामांसे ।
१६. ॐ खं ह्लीं नमः दक्षकूर्परे ।
१७. ॐ पं ह्लीं नमः दक्षमणिबन्धे ।
१८. ॐ दं ह्लीं नमः दक्षाङ्गुल्यमूले ।
१९. ॐ स्तं ह्लीं नमः गले ।
२०. ॐ भं ह्लीं नमः दक्षिण कुचे ।
२१. ॐ यं ह्लीं नमः वाम कुचे ।
२२. ॐ जिं ह्लीं नमः हृदि ।

२३. ॐ ह्रां ह्लीं नमः नाभौ ।
२४. ॐ की ह्लीं नमः काटमागे ।
२५. ॐ लं ह्लीं नमः वामांसे गुह्ये ।
२६. ॐ यं ह्लीं नमः वामकूपरि ।
२७. ॐ कुं ह्लीं नमः वाममणिबन्धे
२८. ॐ दिदं ह्लीं नमः अङ्गुलि मूलदक्षिणा ।
२९. ॐ विं ह्लीं नमः अरौः ।
३०. ॐ नां ह्लीं नमः जानुनि ।
३१. ॐ शं ह्लीं नमः गुल्फे ।
३२. ॐ यं ह्लीं नमः अङ्गुलि मूले ।
३३-३६. ॐ ॐ ह्लीं नमः अं ह्लीं ॐ स्वाहा ह्लीं नमः सर्वागे ।

ध्यान से ही मन्त्र सिद्धि होती है । ध्यान सभी अर्थो का साधन है । हे पुत्र ध्यान के बिना सिद्धमन्त्र भी मूक हो जाता है ॥ १६-१८ ॥

बगलामुखी ध्यान और मन्त्र जप की विधि

वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति
क्रोधे शान्तति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति ।
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रिणा यन्त्रितः
श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥ १९ ॥
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं तत्वलक्षं सुबुद्धिमान् ।
गुडोदकेन सन्तर्प्य तद्दशांशं कुमारक ॥ २० ॥
त्रिकोणकुण्डे जुहुयाद्धस्तनिम्नोन्नते शुभे ।
हयारिकुसुमेनैव सरक्तेनाज्यसंयुतम् ॥ २१ ॥
ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात् तत्वसंख्या तु युग्मकम् ।
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्पुत्र नान्यथा शिवभाषितम् ॥ २२ ॥
वाममार्गक्रमेणैव वामामभ्यर्च्य पुष्पिणीम् ।
मन्त्रसिद्धिकरं चैतत् सर्वदा रिपुनाशनम् ॥ २३ ॥
परमन्त्रप्रयोगेषु नानाकृत्त्रिमचेटकैः ।
सद्यः स्तम्भनविद्या च बगला च न संशयः ॥ २४ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'एकाक्षर-मन्त्र-कथनं' नाम पञ्चमः पटलः ॥ ५ ॥
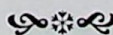
श्री नित्ये बगलामुखि कल्याणि! मैं प्रतिदिन आपको प्रणाम करता हूँ। तुम वादियों को गूँगा बना देती हो। राजा को रङ्क बना देती हो। अग्नि को शीतल कर देती हो। क्रोध को शान्त करती हो। दुर्जन को सज्जन बनाती हो। लङ्गड़े को तुरन्त अनुगामी बना देती हो और घमण्डियों के घमण्ड को चूर करती हो। सर्वज्ञ को जड़ बना देती है। यन्त्रियों को यन्त्रित करती हो।

इस प्रकार का ध्यान करके तत्त्वलक्ष अर्थात् तीन लाख मन्त्र जप करे। उसका दशांश तर्पण गुड़ के शरबत से करे। एक हाथ आयाम और एक हाँथ गड्ढे त्रिकोण कुण्ड में गोघृत सिक्त लाल कनैल के फूलों से हवन करे। छह ब्राह्मणों को भोजन कराये। ऐसा करने में मन्त्र सिद्ध होता है। शिव का यह कथन अन्यथा नहीं हो सकता। वाममार्ग के क्रम से वाम मार्ग से रजस्वला कन्या की पूजा करे। यह पूजा मन्त्र सिद्धिकारक है। सर्वदा शत्रुओं की विनाशक है। दूसरे द्वारा किए गये मन्त्र-प्रयोगों को और नाना कृत्रिम चेटकों को बगला विद्या स्तम्भित कर देती है ॥ १९-२४ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'एकाक्षर-मन्त्र-कथन' नामक पञ्चम पटल समाप्त ॥ ५ ॥

...⁂...

अथ षष्ठः पटलः

एकाक्षरी-षट्-प्रयोग-कथनं

स्तम्भनकारिणी बगलामुखी ध्यान

पाठीननेत्रां परिपूर्णवक्त्रां
पञ्चेन्द्रियस्तम्भनचित्तरूपाम् ।
पीताम्बराढ्यां पिशितासनां सदा
भजामि संस्तम्भनकारिणीं सदा ॥ १ ॥

स्तम्भनकारिणी बगला को हम सर्वदा भजते हैं । उनकी आँखें मछली के समान हैं गात्र मुख-मण्डल परिपूर्ण है । पाँचों इन्द्रियों का स्तम्भन करने वाली चित्तरूपिणी हैं । उनके वस्त्राभूषण पीले हैं । वे पिशिताशिनी है ॥ १ ॥

एकाक्षरी महामन्त्र प्रयोग जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

नमस्ते योगिसंसेव्य नमः कारुणिकोत्तम ।
एकाक्षरीमहामन्त्रप्रयोगं वद शङ्कर ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—योगी जिनकी सेवा में लगे रहते हैं उन्हें प्रणाम करता हूँ । हे करुणाकरों में शङ्कर! एकाक्षरी महामन्त्र के प्रयोगों को कहिये ॥ २ ॥

कामना-भेद से हवन में कुण्ड-भेद

ईश्वर उवाच—

उत्तमं कुण्डहोमञ्च स्थण्डिलञ्चैव मध्यमम् ।
स्थण्डिलेन विना होमं निष्फलं भवति ध्रुवम् ॥ ३ ॥
षट्कोणं चाष्टकोणञ्च चतुष्कोणं कुमारक ।
त्रिविधं स्थण्डिलं चैव वक्ष्येऽहं कुरु आदरात् ॥ ४ ॥

लक्ष्मी(:) शान्तिस्तथा पुष्टिर्विघ्नाविघ्ननिवारणैः ।
चतुरस्त्रे हुनेत्कुण्डे तन्त्रवित् परिशोधिते ॥ ५ ॥
वशीकरणसम्मोहे वाणिज्ये द्रव्यसंग्रहे ।
कीर्त्तिकामस्तु जुहुयाद्भगाकारे च कुण्डके ॥ ६ ॥
दशेन्द्रियस्तम्भने तु दिव्यैर्गन्धैस्तथैव च ।
त्रिकोणकुण्डे जुहुयाद् गुरुमार्गेण बुद्धिमान् ॥ ७ ॥
विद्वेषणे तु जुहुयाद्वर्त्तुले कुण्डमध्यमे ।
उच्चाटने तु जुहुयात् षट्कोणाख्ये तु कुण्डके ॥ ८ ॥
मारणे चाष्टकोणे तु तत्तत्कर्मानुसारतः ।
तत्तद्द्रव्येण जुहुयात्तत्तद्ग्रन्थोक्तमेव च ॥ ९ ॥

कुण्ड में हवन उत्तम होता है । स्थण्डिल में मध्यम होता है । स्थण्डिल में हवन के बिना हवन निष्फल होता है । हे पुत्र! षट्कोण, अष्टकोण और चतुष्कोण तीन प्रकार के स्थण्डिलों के कर्तव्य को मैं आदर से कहता हूँ ।

लक्ष्मी शान्ति दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणमदुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणमदुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणमपुष्टि के लिये विघ्न निवारिणी विद्या से परिशोधित चतुरस्त्र कुण्ड में मन्त्रवेत्ता हवन करे । वशीकरण एवं सम्मोहन वाणिज्य द्रव्य-संग्रह और यश की कामना से त्रिकोणाकार कुण्ड में हवन करे । दशो इन्द्रियों के स्तम्भन के लिये गुरु मार्ग से दिव्य गन्धों से बुद्धिमान साधक त्रिकोण कुण्ड में हवन करे । विद्वेषण के लिये गोलाकार कुण्ड में हवन करे । उच्चाटन के लिये षट्कोणाकार कुण्ड में हवन करे । मारण के लिये अष्टकोण कुण्ड में तथा मन्त्र में कथित कर्म के अनुसार कथित द्रव्यों से हवन करे ॥ ३-९ ॥

कामना-भेद से हवन में स्थण्डिल के भेद

वक्ष्येऽहं स्थण्डिलैर्होमं षट्कर्मसु कुमारक ।
जुहुयाच्छान्तिवश्येषु स्थण्डिले चतुरस्त्रके ॥ १० ॥
विद्वेषणे स्तम्भने च जुहुयादष्टकोणके ।
मारणोच्चाटने पुत्र षट्कोणेषु विधीयते ॥ ११ ॥

हे कुमार! अब मैं षट्कर्मों के हवन में स्थण्डिल-भेद कहता हूँ । शान्ति और वशीकरण में चतुरस्त्र स्थण्डिल में हवन करे । विद्वेषण एवं स्तम्भन में अष्टकोण स्थण्डिल में हवन करे । मारण व उच्चाटन में षट्कोण स्थण्डिल में हवन करे ॥ १०-११ ॥

हवन संख्या भेद से कुण्ड एवं स्थण्डिल के मान

प्रादेशं शतहोमे च अरत्निश्च सहस्रके ।
हस्तं चायुतहोमेषु द्विहस्तं लक्षहोमके ॥ १२ ॥
गुणहस्तं कोटिहोमे कुण्डं निम्नोन्नतं सुत ।
स्थण्डिलस्य च वक्ष्यामि तान्त्रिकोक्तस्य लक्षणम्॥ १३ ॥
अरत्निर्हस्तमात्रं च द्विरत्निश्च द्विहस्तयो: ।
शतं सहस्रमयुतं लक्षहोमेष्वयं क्रमः ॥ १४ ॥
सर्वत्रैवोन्नतं पुत्र प्रादेशं स्थण्डिलक्रमम् ।
लक्षणं स्थण्डिलैः कुण्डैर्न ज्ञात्वा निष्फलं हुतम्॥ १५ ॥

एक सौ हवन में चार अङ्गुल लम्बा-चौड़ा-गहरा, एक हजार हवन में वित्ता-भर लम्बा-चौड़ा-गहरा, दश हजार हवन में एक हाथ लम्बा-चौड़ा-गहरा, एक लाख हवन में दो हाथ लम्बा-चौड़ा-गहरा कुण्ड बनता है । अब मैं स्थण्डिलों के कथित तान्त्रिक लक्षण को कहता हूँ ।

एक सौ हवन में चार अङ्गुल लम्बा-चौड़ा, एक हजार हवन में हाथ भर लम्बा-चौड़ा, दश हजार हवन में दो वित्ता लम्बा-चौड़ा और एक लाख हवन में दो हाँथ लम्बा-चौड़ा सभी ओर से उठा हुआ स्थण्डिल बनाना चाहिये । सर्वत्र उन्नत का अर्थ है कि स्थण्डिलों को चार अङ्गुल उच्च होना चाहिये । कुण्ड और स्थण्डिल लक्षणों को जाने बिना हवन निष्फल होता है ॥ १२-१५ ॥

शान्ति आदि कर्म और उनके लक्षण

शान्तिवश्यस्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटनं तथा ।
मारणान्तानि शंसन्ति षट्कर्माणि मनीषिणः ॥ १६ ॥
नानारोगैः कृत्रिमैश्च नानाचेटकमेव च ।
विषभूतप्रयोगेषु निरासः शान्तिरुच्यते ॥ १७ ॥
वश्यं जनानां सर्वेषां वात्सल्यं हृद्गतं स्मृतम् ।
स्तम्भनं रोधनं पुत्र सर्वकर्मसु निष्फलम् ॥ १८ ॥
मैत्रस्य कलहोत्पत्तिर्विद्वेषणमुदाहृतम् ।
चलबुद्धिभ्रमेणोक्तमुच्चाटनमिदम्भुवि ॥ १९ ॥
प्राणिनां प्राणहरणं मारणं समुदाहृतम् ।
प्रत्येकमेषां वक्ष्यामि होमयोगं सुनिश्चितम् ॥ २० ॥

शान्ति, वश्य, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण को मनीषियों ने षट्कर्म कहा है । शान्ति-कर्म में नाना कृत्रिम रोगों का, नाना चेष्टाक्रम से

विष-भूत प्रयोगों का अन्त किया जाता है। सभी लोगों के हृदय में अपने प्रति स्नेह उत्पन्न करने का नाम वश्य है । स्तम्भन से सभी कर्मों को अवरुद्ध किया जाता है । मित्रों में परस्पर कलह उत्पन्न करने को विद्वेषण कहते हैं । अपने स्थान पात्र से दूर भागने की बुद्धि उत्पन्न करने को उच्चाटन कहते हैं । प्राणियों के प्राण हरण को मारण कहते हैं ॥ १६-२० ॥

कर्म-भेद से हवन, द्रव्य और आहुति संख्या निर्धारण

दूर्वाहोमं त्रिमध्वक्तं जुहुयादयुतत्रयम् ।
रोगहन्ता ग्रहादिभ्यः सद्यः शान्तिकरं भवेत् ॥ २१ ॥
सुमन्त कुसुमैराज्यं कृतं बाणायुतं तथा ।
जुहुयान्निशि काले च वश्यं सम्मोहनं भवेत् ॥ २२ ॥
बिभीतकसमिद्भिर्वा करञ्जैर्बीजमेव च ।
नेत्रायुतं हुनेत्पुत्रं स्तम्भनं परमं मतम् ॥ २३ ॥
निम्बार्कपत्रहोमेन निम्बतैलेन मिश्रितम् ।
नेत्रायुतेन विद्वेषं भवेत्पाषाणयोरपि ॥ २४ ॥
उलूककाकयोः पत्रैर्बाणायुतमखण्डिभिः ।
जुहुयाच्च ततो रात्रौ भवेदुच्चाटनं सुत ॥ २५ ॥
तिलतैलसमायुक्तं शाल्मलीकुसुमं तथा ।
लक्षमेकं हुनेद्रात्रौ प्रेताग्नौ प्रेतकानने ॥ २६ ॥
नग्नः प्रेतमुखे भौमे प्रेतकाष्ठेन बुद्धिमान् ।
मृकण्डुसदृशं चैव मारणं भवति ध्रुवम् ॥ २७ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे एकाक्षरी-षट्-प्रयोग-कथनं नाम षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥
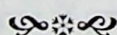
प्रत्येक कर्म में सुनिश्चित हवन योग को कहता हूँ । त्रिमधुर घी, मधु, चीनी घोल से भिंगाकर दूर्वा से तीस हजार हवन करने से रोग एवं कृत्या, ग्रहजन्य पीड़ा की शान्ति तुरन्त होती है । गाय के घी से सिक्त स्यमन्तक के फूलों से पचास हजार हवन आधी रात में करने से वशीकरण और सम्मोहन होता है । बहेड़ा की समिधा से या करञ्ज के बीजों से २० हजार हवन करने से स्तम्भन होता है यह परम मत है । नीम और अकवन के पत्तों को नीम तेल में भिंगोकर बीस हजार हवन करने से दो पत्थरों में भी विद्वेषण हो जाता है । रात में नङ्गे होकर अखण्डित उल्लू और कौओं के पंखों से पचास हजार हवन करने से

उच्चाटन होता है। तिल तेल से संसिक्त सेमर के फूलों से रात में चिता की अग्नि में चिता के जङ्गल में नङ्गे दक्षिण मुख होकर चिता की लकड़ी से प्रज्वलित अग्नि में एक लाख हवन करने से मृकण्डु के समान मनुष्य भी मर जाता है ॥ २१-२७ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'एकाक्षरी-षट्-प्रयोग' नामक षष्ठ पटल समाप्त ॥ ६ ॥

अथ सप्तमः पटलः

महाविद्योद्धारकथनम्

पीताम्बरधरा श्री बगला देवी का ध्यान

पीताम्बरधरां देवीं पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ।
वामे जिह्वां गदां चान्य धारयन्तीं भजाम्यहम् ॥ १ ॥

देवी बगला को हम भजते हैं । वे मृदुल पीताम्बर धारण किए हुई हैं । पूर्णिमा के चाँद जैसा उनका मुख है। बाएँ हाथ से बैरी की जीभ खींच रही हैं । उनके दाहिने हाथ में गदा है ॥ १॥

छत्तीस अक्षरों की बगला विद्या की जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

महापाशुपताक्रान्त नमः पन्नगभूषण ।
षट्त्रिंशदक्षरी विद्या बगलापाशमेव च ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—महापाशुपताक्रान्त नागों के आभूषण धारण करने वाले हे शङ्कर! आपको प्रणाम करता हूँ । अब आप मुझे बगला की छत्तीस अक्षरों की विद्या बतलाइये ।

छत्तीस अक्षरों की विद्या का उद्धार

ईश्वर उवाच—

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि पुरश्चरणलक्षणम् ।
प्रयोगं चोपसंहारं शान्तिं तच्छृणु पुत्रक ॥ ३ ॥
तारं च बगलाबीजं बगलापदमुच्चरेत् ।
मुखीति पदमुच्चार्य सर्वशब्दं ततोच्चरेत् ॥ ४ ॥
दुष्टानां पदमुच्चार्य वाचं मुखं पदं वदेत् ।
स्तम्भयेति पदं चोक्त्वा जिह्वां कीलय उच्चरेत् ॥ ५ ॥
बुद्धिशब्दं ततोच्चार्य विनाशय ततो वदेत् ।

स्थिरमायां ततोच्चार्य प्रणवं च ततोच्चरेत् ॥ ६ ॥
वह्निजायां समुच्चार्य्य एवं मन्त्रं समुद्धरेत् ।
षट्त्रिंशदक्षरं मन्त्रं मन्त्रराजमिदं भुवि ॥ ७ ॥

मन्त्रोद्धार, पुरश्चरण के लक्षण, प्रयोग का उपसंहार अङ्गों के साथ कर रहा हूँ । हे पुत्र! सुनो ।

तार ॐ, बगला बीज ह्री, बगलामुखी, सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय स्थिरमाया ह्लीं, प्रणव ॐ, वह्निजाया स्वाहा के संयोग से छत्तीस अक्षरों का मन्त्र बनता है—ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा । यह छत्तीस अक्षरों के मन्त्र को मन्त्रराज कहते हैं ॥ ३-७ ॥

न्यास-विद्या क्रम

न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि सदा सिद्धिकरीं पराम् ।
बगलामातृकां चादौ कामतार्तीयवाग्भवम् ॥ ८ ॥
श्रीमायामातृकां चैव बगलापञ्जरं न्यसेत् ।
लघुषोढां च विन्यस्य सर्वमन्त्रेष्वयं क्रमः ॥ ९ ॥

न्यास-विद्या का वर्णन करता हूँ । यह सर्वसिद्धिदायिनी परा है । न्यास-क्रम यह है—१. बगला मन्त्राक्षर न्यास, २. क्ली सौः ऐं श्रीं ह्रीं मातृका-न्यास, ३. बगला पञ्जर-न्यास, ४. और लघु षोढा-न्यास सभी तन्त्रों के अनुसार न्यास का क्रम यही है ॥ ८-९ ॥

१. बगला मन्त्राक्षर न्यास

१. ॐ ॐ नमः मूर्ध्नि । २. ॐ ह्लीं नमः भाले ।
३. ॐ वं नमः दक्षनेत्रे । ४. ॐ गं नमः वामनेत्रे ।
५. ॐ लां नमः दक्षकर्णे । ६. ॐ मुं नमः वामकर्णे ।
७. ॐ खीं नमः दक्षकपोले । ८. ॐ सं नमः वामकपोले ।
९. ॐ वँ नमः दक्षनासापुटे । १०. ॐ दुं नमः वामनासापुटे ।
११. ॐ ष्टां नमः ऊर्ध्वोष्ठे । १२. ॐ नां नमः अधरोष्ठे ।
१३. ॐ वां नमः मुखवृत्ते । १४. ॐ चं नमः दक्षांसे ।
१५. ॐ मुं नमः वामांसे । १६. ॐ खं नमः दक्षकूर्परे ।
१७. ॐ यें नमः दक्षमणिबन्धे । १८. ॐ दं नमः दक्षअङ्गुलि मूले ।
१९. ॐ स्तं नमः गले । २०. ॐ मं नमः दक्षकुचे ।
२१. ॐ यं नमः वामकुचे । २२. ॐ जिं नमः हृदि ।

२३. ॐ ह्वां नमः नाभौ । २४. ॐ कीं नमः कट्यां ।
२५. ॐ लं नमः गुह्ये वामांसे । २६. ॐ यं नमः वाम कूर्परे ।
२७. ॐ वं नमः वाममणिबन्धे । २८. ॐ ह्विं नमः अङ्गुलिमूले ।
२९. ॐ विं नमः उरौ । ३०. ॐ ना नमः जानुनि ।
३१. ॐ शं नमः गुल्फे । ३२. ॐ यं नमः अङ्गुलिमूले ।
३३. ह्रीं ॐ स्वाहा सर्वाङ्गे ।

मातृका न्यास

१. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं अं नमः शिरसि ।
२. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं आं नमः मुखवृत्ते ।
३. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं इं नमः दक्ष नेत्रे ।
४. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं ईं नमः वाम नेत्रे ।
५. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं उं नमः दक्षकर्णे ।
६. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं ऊ नमः वामकर्णे ।
७. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं ऋं नमः दक्ष नासा पुटे ।
८. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं ॠं नमः वाम नासा पुटे ।
९. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं लृं नमः दक्ष कपोले ।
१०. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं लॄं नमः वामकपोले ।
११. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं एं नमः अधरोष्ठे ।
१२. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं ऐ नमः अधरोष्ठे ।
१३. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं ओं नमः ऊर्ध्वदन्त पङ्क्तौ ।
१४. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं औं नमः अधो दन्त पङ्क्तौ ।
१५. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं अं नमः जिह्वाग्रे ।
१६. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं अः नमः कण्ठे ।
१७. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं कं नमः दक्षबाहुमूले ।
१८. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं खं नमः दक्ष कूर्परे ।
१९. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं गं नमः दक्षमणिबन्धे ।
२०. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं घं नमः दक्ष कराङ्गुलि मूले ।
२१. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं ङं नमः दक्ष कराङ्गुल्यग्रे ।
२२. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं चं नमः वामवाहुँमूले ।
२३. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं छं नमः वामकूर्परे ।
२४. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं जं नमः वाममणिबन्धे ।
२५. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं झं नमः वाम अङ्गुलि मूले ।
२६. क्लीं सौः ऐं श्रीं ह्रीं ञं नमः वाम अङ्गुल्यग्रे ।

२७. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं टं नम: दक्षोरुमूले ।
२८. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं ठं नम: जानुनि ।
२९. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं डं नम: दक्षगुल्फे ।
३०. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं ढं नम: दक्षपादाङ्गुलिमूले ।
३१. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं णं नम: दक्ष पादाङ्गुल्यग्रे ।
३२. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं तं नम: वामोरुमूले ।
३३. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं थं नम: वामाजानुनि ।
३४. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं दं नम: वाम गुल्फे ।
३५. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं धं नम: वामपादाङ्गुलि मूले ।
३६. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं नं नम: वामपादाङ्गुल्यग्रे ।
३७. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं पं नम: दक्ष पार्श्वे ।
३८. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं फं नम: वाम पार्श्वे ।
३९. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं बं नम: पृष्ठे ।
४०. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं भं नम: नाभौ ।
४१. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं मं नम: जठरे ।
४२. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं यं नम: हृदये ।
४३. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं रं नम: दक्षकुक्षे ।
४४. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं लं नम: गलपृष्ठे ।
४५. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं वं नम: वाम कुक्षौ ।
४६. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं शं नम: हृदयादि दक्ष कराङ्गुल्यन्तम् ।
४७. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं षं नम: हृदयादि वाम कराङ्गुल्यन्तम् ।
४८. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं सं नम: हृदयादि दक्ष पादाङ्गुल्यन्तम् ।
४९. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं हं नम: हृदयादि वाम पादाङ्गुल्यन्तम् ।
५०. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं लं नम: कण्ठयादि पादाङ्गुल्यन्तम् ।
५१. क्लीं सौ: ऐं श्रीं ह्रीं क्षं नम: कण्ठयादि ब्रह्मरन्ध्रान्तम् ।

भगवती का पुन: ध्यान करके पञ्जर न्यास करे ॥ ८-९ ॥

बगला पञ्जरन्यास

ॐ बगला पूर्वतो रक्षेदाग्नेयां च गदाधरी ।
पीताम्बरा दक्षिणे च स्तम्भिनी चैव नैर्ऋते ॥ १ ॥
जिह्वां कीलिन्यतो रक्षेत् पश्चिमे सर्वदाकम ।
वायव्ये मदोन्मत्ता कौवेर्या च त्रिशूलिनी ॥ २ ॥
ब्रह्मास्त्र देवता पातु ऐशान्या सततं मम ।

रक्षेन्मा मातुससस पाताले स्तब्ध मातृका ॥ ३ ॥
ऊर्ध्वं रक्षेन्महादेवी जिह्वा स्तम्भनकारिणी ।
एवं दश दिशो रक्षेद् बगला सर्वसिद्धिदा ॥ ४ ॥

॥ इति सांख्यायन तन्त्रोक्तं श्री बगलापञ्जर स्तोत्रम् ॥

लघु षोढा न्यास

अस्य श्री लघु षोढा न्यासस्य दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः शिरसि गायत्र्यै छन्दसे नमः मुखे । गणेश ग्रहनक्षत्र योगिनी राशि पीठ रूपिण्यै बगलामुखी देवतायै नमः नमः हृदये । श्री बगला विद्यागत्वेन न्यासे विनियोगाय नमः । कर सम्पुटे ।

ऐं ह्रीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं आं ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं इं चं छं जं झं ञं ईं क्लीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं सौः मध्यमाभ्यां नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं एं तं थं दं धं न ऐं ऐं अनामिकाभ्यां नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं ओ पं फं बं भं मं औं क्लीं कनिष्टाभ्या नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः सौः करतल करपृष्ठाभ्यो नमः ।

इसी प्रकार हृदयादि न्यास करे ॥ १-४ ॥

देवी बगला का ध्यान

मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डपरत्नवेद्याम्
सिंहासनोपरि गतां परिपीतवर्णम् ।
पीताम्बराऽभरण माल्य विभूषिताङ्गीं
देवीं नमामि धृतमुद्गर वैरिजिह्वाम् ॥

गणेश न्यास

तरुणादित्यसङ्काशान् गजवक्त्रांस्त्रिलोचनाम् ।
पाशांकुशवराभीति शरान् शक्तिसमन्वितान् ॥
ते तु सिन्दूर वर्णभाः सर्वालङ्कारभूषिता ।
एकहस्तधृताम्भोजा इतरालिंगित प्रियाः ॥

ऐं ह्रीं श्रीं अं श्री युक्ताय विघ्नेशाय नमः शिरसि ।
ऐं ह्रीं श्रीं आं ह्री युक्ताय विघ्नराजाय नमः मुखवृत्ते ।
ऐं ह्रीं श्रीं इं तुष्टियुक्ताय विनायकाय नमः दक्षनेत्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ईं शान्ति युक्ताय शिवौत्तमाय नमः वामनेत्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं उं पुष्टियुक्ताय विघ्नतृति नमः दक्षकर्णे ।

ऐं ह्रीं श्रीं ऊं सरस्वती युक्ताय विघ्नकर्त्रे नमः वामकर्णे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ऋं रति युक्ताय विघ्नराजे नमः दक्षनासापुटे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॠं मेधा युक्तायं गणनायकाय नमः वामनासापुटे ।
ऐं ह्रीं श्रीं लृं कान्तियुक्ताय एकदन्ताय नमः दक्षकपोले ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॡं कामिनीयुक्ताय द्विदन्ताय नमः वाम कपोले ।
ऐं ह्रीं श्रीं एं मोहिनीयुक्ताय गजवक्त्राय नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ ।
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं जटायुक्ताय निरञ्जनाय नमः अधरोष्ठे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ओं तीव्रायुक्ताय कपर्दभृते नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ ।
ऐं ह्रीं श्रीं औं ज्वालिनी युक्ताय दीर्घमुखाय नमः अधोदन्त पङ्क्तौ ।
ऐं ह्रीं श्रीं अं नन्दायुक्ताय शंकुकणीर्य नमः, जिह्वाग्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं अः सुरसायुक्तय वृषध्वजाय नमः, कण्ठे ।
ऐं ह्रीं श्रीं कं कामरूपिणीयुक्ताय गणनाथाय नमः, दक्षबाहुमूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं खं सुभ्रूयुक्ताय गजेन्द्राय नमः दक्ष कूर्परे ।
ऐं ह्रीं श्रीं गं जयिनीयुक्ताय शूर्प कर्णाय नमः मणिवन्धे ।
ऐं ह्रीं श्रीं घं सत्यायुक्ताय त्रिलोचनाय नमः कंरागुलि मूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं ङं विघ्नेशीयुक्ताय लम्बोदराय नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं चं सुरुपायुक्ताय महानादाय नमः वामवाहुमूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं छं कामदायुक्ताय चतुर्मूतये नमः कूर्परे ।
ऐं ह्रीं श्रीं जं मदविह्वलायुक्ताय सदाशिवाय नमः मणिवन्धे ।
ऐं ह्रीं श्रीं झं विकटायुक्ताय आमोदाय नमः अङ्गुलि मूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं ञं पूर्णायुक्ताय दुर्भुखाय नमः वामकराङ्गुल्यग्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं टं भूतिदायुक्ताय सुमुखाय नमः दक्षोरुमूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं ठं भूमियुक्ताय प्रमोदाय नमः जानुनि ।
ऐं ह्रीं श्रीं डं शाक्तियुक्ताय एकपादाय नमः दक्षगुल्फे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ढं रमायुक्ताय द्विजिह्वाय नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं णं मानुषीयुक्ताय शूराय नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं तं मकरध्वजायुक्ताये वीराय नमः वामोरामूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं थं विरिणीयुक्ताय षण्मुखाय नमः जानुनि ।
ऐं ह्रीं श्रीं दं भ्रुकुटीयुक्ताय वरदाय नमः गुल्फे ।
ऐं ह्रीं श्रीं धं लज्जायुक्ताय वामदेवाय नमः अङ्गुलिमूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं नं दीर्घघोणयुक्ताय वक्रतुण्डाय नमः वामपादाङ्गुल्फग्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं पं धनुर्धरयुक्ता द्विरण्डकाय नमः दक्षपार्श्वे ।
ऐं ह्रीं श्रीं फं यामिनीयुक्ताय सेनान्ये नमः वामपार्श्वे ।
ऐं ह्रीं श्रीं बं रात्रियुक्ताय ग्रामण्ये नमः पृष्ठे ।

ऐं ह्रीं श्रीं भं चन्द्रिकायुक्ताय मत्ताय नमः नाभौ ।
ऐं ह्रीं श्रीं मं शशिप्रभायुक्ताय विमत्ताय नमः जठरे ।
ऐं ह्रीं श्रीं यं लोलायुक्ताय मत्तवाहनाय नमः हृदये ।
ऐं ह्रीं श्रीं रं चपात्रायुक्ताय जटिने नमः दक्षस्कन्धे ।
ऐं ह्रीं श्रीं लं ऋद्धियुक्ताय मुण्डिने नमः गलपृष्ठे ।
ऐं ह्रीं श्रीं वं दुर्भगायुक्ताय खड्गिने नमः वामस्कन्धे ।
ऐं ह्रीं श्रीं शं सुभगायुक्ताय वरेण्याय नमः हृदयादि दक्षकराङ्गुल्यग्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं षं शिवायुक्ताय वृषकेतनाय नमः हृदयादिवाम कराङ्गुल्यग्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं सं दुर्गायुक्ताय भक्ष्यप्रियाय नमः हृदयादि दक्ष पादाङ्गुल्यग्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं हं कालीयुक्ताय गणेशाय नमः हृदयादि वाम पादाङ्गुल्यग्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं लं कालकुञ्जिकायुक्ताय मेघनादाय नमः हृदयादि गुह्यान्तम् ।
ऐं ह्रीं श्रीं क्षं विघ्नहारिणी युक्ताय गणेश्वराय नमः हृदयादि मूर्धान्तम् ।

२ ग्रहन्यास

ध्यान रक्तं श्वेतं तथा रक्तं श्यामं पीतं च पाण्डुरम् ।
कृष्णं धूम्रं धूम्रधूम्रं भावयेद् रविपूर्वकान् ।
कामरूपधरान्देवान् दिव्याभरणभूषितान् ।
वामोरुन्यस्त हस्तांश्च दक्ष हस्त वरप्रदान् ॥
शक्त्योऽपि तथा ध्येया वराभय कराम्बुजा ।
स्व प्रियाङ्कनिलयाः सर्वाभरणभूषिताः ॥

ऐ ह्रीं श्रीं अं आं ..... अं अः रेणुकायुक्ताय सूर्याय नमः हृयजठरसन्धो ।
ऐ ह्रीं श्रीं यं रं लं वं अमृतायुक्ताय चन्द्राय नमः भ्रूमध्ये ।
ऐ ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं धर्मायुक्ताय भौमाय नमः नत्रयोः ।
ऐ ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं यशस्विनी युक्ताय वुधायनमः श्रोत्रकूपाधः ।
ऐ ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं शोवूरी युक्ताय वृहस्पतये नमः कण्ठे ।
ऐ ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं ज्ञानरूपायुक्ताय शुक्राय नमः हृदि ।
ऐ ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं शाक्तयुक्ताय शनैश्चराय नमः नाभौ ।
ऐ ह्रीं श्रीं शं षं सं हं कृष्णायुक्ताय राहवे नमः मुखे ।
ऐ ह्रीं श्रीं लं क्षं धूम्रायुक्ताय केतवे नमः गुदे ।

३ नक्षत्र न्यास

ज्वलत्कालानलप्रख्या वरदाभयपाणयः ।
नति पाण्योऽशिनी पूर्वा सर्वाभरणभूषिता ॥

ऐं ह्लीं श्रीं अं आं अश्विन्यै नमः ललाटे ।
ऐं ह्लीं श्रीं इं भरण्यै नमः दक्षनेत्रे ।
ऐं ह्लीं श्रीं ईं उं ॐ कृतिशये नमः वामनेत्रे ।
ऐं ह्लीं श्रीं ऋं ॠं ऌं ॡं रोहिण्यै नमः दक्षकर्णे ।
ऐं ह्लीं श्रीं एं मृगशिरसे नमः वामकर्णे ।
ऐं ह्लीं श्रीं ऐं आर्द्रायै नमः दक्षनासापुटौ ।
ऐं ह्लीं श्रीं ओं औं पुनर्वसवे नमः वामनासापुटौ ।
ऐं ह्लीं श्रीं कं पुष्याय नमः दक्षस्कन्धे ।
ऐं ह्लीं श्रीं खं गं आश्लेषायै नमः कण्ठे ।
ऐं ह्लीं श्रीं घं ङं मघायै नमः वामस्कन्धे ।
ऐं ह्लीं श्रीं चं पूर्वाफल्गुन्यै नमः पृष्ठे ।
ऐं ह्लीं श्रीं छं जं उत्तराफाल्गुन्यै नमः दक्ष कूर्परे ।
ऐं ह्लीं श्रीं टं ठं चित्रायै नमः दक्षमणिबन्धे ।
ऐं ह्लीं श्रीं डं स्वात्यै नमः वाममणिबन्धे ।
ऐं ह्लीं श्रीं ढं णं विशाखायै नमः दक्षहस्ते ।
ऐं ह्लीं श्रीं तं थं दं अनुराधायै नमः वामहस्ते ।
ऐं ह्लीं श्रीं धं ज्येष्ठायै नमः नाभौ ।
ऐं ह्लीं श्रीं नं पं फं मूलाय नमः कटिबन्धे ।
ऐं ह्लीं श्रीं बं पूर्वाषाढायै नमः दक्षोरौ ।
ऐं ह्लीं श्रीं भं उत्तराषाढायै नमः वामोरौ ।
ऐं ह्लीं श्रीं मं श्रवणाय नमः दक्षजानुनि ।
ऐं ह्लीं श्रीं यं रं घनिष्ठायै नमः वामा जानुनि ।
ऐं ह्लीं श्रीं लं शतभिषायै नमः दक्षजंघायाम् ।
ऐं ह्लीं श्रीं वं शं पूर्वाभाद्रपदायै नमः वामजंघायाम् ।
ऐं ह्लीं श्रीं षं सं हं उत्तराभाद्रपदायै नमः दक्षपादे ।
ऐं ह्लीं श्रीं ळं क्षं अं अः रेवत्यै नमः वामपादे ।

योगिनी न्यास और विशुद्धि चक्र में डाकिनी का ध्यान

कण्ठस्थाने विशुद्धौ नृपदलकमले श्वेतवर्णा त्रिनेत्रा ।
हस्तैः खट्वाङ्गखड्गौ त्रिशिखमपि महाचर्मसंधारयन्तीम् ।
वक्त्रेणैकेन युक्ता पशुजनभयदां पायसान्नैकसक्तां ।
त्वक्स्थां वन्दे अमृताद्यै परिवृतवपुषं डाकिनी वीरवन्द्या ॥
ऐं ह्लीं श्रीं अं आं....अं अःभो रक्षरक्ष त्वगात्माने नमः।

इसी मन्त्र से कण्ठस्थ षोडशदल विशुद्धि कमलकर्णिकाओं में डाकिनी का न्यास करके उसके दलों के पुरोभाग में प्रदक्षिण क्रम में आवरणशक्तियों का न्यास करे। जैसे—ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतायै नमः। आं आकार्षण्यै नमः। इं इन्द्राण्ये नमः। ई इशान्यै नमः। उं उमायै नमः। ऊं ऊर्ध्वकेश्यै नमः। ऋं ऋद्धिदायै नमः। ॠं ॠकारायै नमः। ऌं ऌकारायै नमः। ॡं ॡकारायै नमः। एं एकपदायै नमः। ऐ ऐश्वर्यात्मकायै नमः। ओ ओकार्यै नमः। औ औषण्यै नमः। अं अम्बिकायै नमः। अः अक्षरायै नमः।

अनाहत चक्र में राकिणी का ध्यान और न्यास

हृत्पद्मे भानुपत्रे द्विवदनलसितां दंष्ट्रिणी श्यामवर्णा
भक्षं शूलं कपालं डमरुमपि भुजैर्धारयन्तीं त्रिनेत्राम्।
रक्तस्थां कालरात्रि प्रभृति परिवृतां स्निग्धभक्तैकसक्तां
श्रीमद् वीरेन्द्र वन्द्यामभिमतफलदां राकिणीं भावयामः॥

ऐं ह्रीं श्रीं रां रीं रमलव रयूं राकिण्यै नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐ ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं चं छं जं झ ञं टं ठं मां रक्ष रक्ष अमृगात्मन नमः दलों में आवरण शक्तियों का न्यास—

ऐं ह्रीं श्रीं कं कालरात्र्यै नमः खं खण्डितायै नमः। जं गायत्र्यै नमः घं घण्टाकर्षिण्यै नमः। ङं डाकिन्यै नमः। चं चण्डायै नमः छं छायायै नमः। जं जयायै नमः। झं झाङ्करिण्यै नमः। ञं ज्ञानरूपौ नमः टं टेदू हस्तायै नमः। ठं ठेकारिण्यै नमः।

दशदल मणिपूरचक्र में लाकिनी का ध्यान और न्यास

दिक्पत्रे नाभिपद्मे त्रिवदनलासितां दंष्ट्रिणीरक्तवर्णा
शक्तिं दम्भालिदण्डावभयमपि भुजैर्धारयन्ती महोग्राम।
डामयोद्यौ परीतां पशुजनभयदां भांसधात्वेक निष्ठा
गौडान्नासक्तचित्ती सकलसुखकरी लाकिनीं भावयाम॥

ऐं ह्रीं श्रीं लां लीं लमलवरयू लाकिन्यै नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं मां रक्ष रक्ष भासात्मानं नमः। दलों में परिवार का न्यास करे।

ऐं ह्रीं श्रीं डंडामर्यें नमः। ढं ढङ्कारिण्यै नमः। णं णार्णये नमः। तं तामस्यै नमः। थं स्थाण्व्यै नमः। दं दाक्षायण्यै नमः। धं धात्र्यै नमः। नं नार्यै नमः। पं पार्वत्यै नमः। जूं फट्कारिण्यै नमः।

स्वाधिष्ठान षट्दल चक्र में काकिनी का ध्यान और न्यास

स्वाधिष्ठानाख्य पद्मे रसदललसिते वदेवक्त्रां त्रिनेत्रां
हस्तात्रैर्धारयन्ती त्रिशिखगुण कपालांकुशा नात्रगर्वाम् ।
भेदो धातु प्रतिष्ठा भलिमदमुदितां वन्छिनी मुख्य युक्ता
पीतां दध्योदनेष्टममिमतफलदो काकिनीं भावयामः ॥

ऐं ह्लीं श्रीं कां की कमलवरयूं काकिन्यै नमः ।

ऐं ह्लीं श्रीं वं भं मं यं रं लं मां रक्ष रक्ष भेदआत्मानं नमः ।

कर्णिका में न्यास करके दलों में न्यास करे ।

ऐं ह्लीं श्रीं बं बन्धिन्यै नमः । भं भद्रकाल्यै नमः । मं महामायायै नमः । यं यशस्विन्यै नमः । रं रक्तायै नमः । लं लम्बोष्ठ्यै नमः । मूलाधार में साकिनी का ध्यान न्यास ।

मूलाधारस्य पद्मे श्रुतिदल लसिते पञ्चवक्त्रा त्रिनेत्रां
धूम्रागमस्थिसंस्थां श्रृणिमपि कमलं पुस्तके ज्ञान मुद्राम् ।
विभ्राणा बाहुदण्डे सुललित वरदा पूर्व शक्त्यावृतां तां
मुद्गान्नसक्ता मधुमदमुदितां साकिनी भावयामः ॥

ऐं ह्लीं श्रीं सां सीसमलवरयू साकिन्यै नमः ।

ऐं ह्लीं श्रीं वं शं षं सं भां रक्ष रक्ष अस्थ्यात्मान नमः ।

कर्णिका में साकिनी के न्यास के बाद दलों में शक्तियों का न्यास करे ।

ऐं ह्लीं श्रीं वरदायै नमः । शं श्रियै नमः । षं षण्डायै नमः । सं सरस्वत्यै नमः ।

आज्ञा चक्र में हाकिनी का ध्यान और न्यास

भ्रूमध्ये विन्दु पद्मे दलयुगकलिते शुक्लवर्ण कराब्जै
विभ्राणां ज्ञानमुद्रा डमरूकमलाक्षमाला कपालम् ।
षड्वक्त्रा भज्जसंस्थां त्रिनयनमासितां हंसवत्यादि युक्ता
हारिद्रान्नैकसक्तां सकल सुखकरी हाकिनी भावयामः ॥

ऐं ह्लीं श्रीं हां ही ट ण म ल वरयूं हाकिन्यै नमः ।

ऐं ह्लीं श्रीं हं क्षं मां रक्ष रक्ष भज्जात्माने नमः ।

कर्णिका में हाकिनी का दलों में शक्तियों का न्यास करे ।

ऐं ह्लीं श्रीं हं ह स वत्यै नमः । क्षं क्षमावत्यै नमः ।

शिर में स्थित सहस्त्रार में याकिनी का ध्यान और न्यास

मुण्डव्यामस्थ पद्मे दशशत दलके कर्णिका चन्द्रसंस्था
रेतो निष्ठां समस्तायुध कलितकरो सर्वतो वक्त्र पद्माम् ।
आदि क्षान्तार्ण शक्ति प्रकरपरिवृतां सर्व वर्णा भवानी
सर्वान्ना सक्त चित्तां पर शिव रसिकां याकिनी भावयामः ॥

ऐं ह्रीं श्रीं यां यीं यम लव रयूं याकिन्यै नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं .... लं क्षं (५०) भां रक्ष रक्ष शुक्रात्मानं नमः ।

कर्णिका में याकिनी के न्यास के बाद दलों में पूर्वोक्ता अमृता आदि से क्षमावति तक की शाक्तयो का न्यास करे ।

५. राशि न्यास और ध्यान

रक्तश्वेत हरित पाण्डु चित्र कृष्ण पिशङ्गकान् ।
कपिश बभ्रु विर्मोर कृष्ण धूम्रान क्रमात स्मरते ।

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इ ई मेषाय नमः दक्षपादे ।
ऐं ह्रीं श्रीं उं ऊँ वृषाय नमः लिङ्ग दक्ष भागे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ऋं ॠं ऌ ॡं मिथुनाय नमः दक्ष कुक्षौ ।
ऐं ह्रीं श्रीं एं ऐं कर्काय नमः हृदय दक्ष भागे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ओं औं सिहाय नमः दक्षबाहुमूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं अं अः शं षं सं हं लं कन्यायै नमः दक्ष शिरो भागे ।
ऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं तुलायै नमः वाम शिरो भागे ।
ऐं ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं वृश्चिकाय नमः वाम वाहुमूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं धनुषे नमः हृदयवाम भागे ।
ऐं ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं भक्तराय नमः वाम कुक्षौ ।
ऐं ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं कुम्भाय नमः लिङ्गवाम भागे ।
ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं क्षं मोनाय नमः वामपादे ।

६. पीठ न्यास

सितासितारुण श्याम हरित पीतन्यनुक्रमात् ।
पुनः क्रमेण देवेशि पञ्चाशत्वटि सञ्चयः ॥

ऐं ह्रीं श्रीं अं काम रूप पीठाय नमः शिरसि ।
ऐं ह्रीं श्रीं आं वाराणस्यै नमः मुखवृत्ते ।
ऐं ह्रीं श्रीं इं नेपालाय नमः दक्षनेत्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ईं पौण्ड्रवर्धनाय नमः वामनेत्रे ।

ऐं ह्रीं श्रीं उं पुरस्थित काशिमराय नमः दक्षकर्णे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ऊं कान्यकुब्जाय नमः वामकर्णे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ऋं पूर्णशैलाय नमः दक्षनासापुटे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॠं अर्वुदाचलाय नमः वामनासापुटे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ऌं आम्रात केश्वराय नमः दक्षकपोले ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॡं एकाम्राय नमः वामकपोले ।
ऐं ह्रीं श्रीं एं त्रिस्रोत से नमः ऊर्ध्वोष्ठे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कामकोटये नमः अधरोष्टे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ओं कैलासाय नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ ।
ऐं ह्रीं श्रीं औं भृगुनगरायनमः ऊधोदन्तपङ्क्तौ ।
ऐं ह्रीं श्रीं अं केदाराय नमः जिह्वाग्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं अः चन्द्र पुष्करिण्ये नमः कण्ठे ।
ऐं ह्रीं श्रीं कं श्रीपुराय नमः दक्षवाहुमूले।
ऐं ह्रीं श्रीं खं ओंकाराय नमः दक्षकूर्परे ।
ऐं ह्रीं श्रीं गं जालन्धराय नमः दक्षमणिवन्धे ।
ऐं ह्रीं श्रीं घं मालवाय नमः कराङ्गुलिमूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं ङं कुलान्तकाय नमः दक्ष कराङ्गुल्यग्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं चं देवी कोटाय नमः वामवाहुमूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं छं गोकर्णाय नमः कूर्परे ।
ऐं ह्रीं श्रीं जं मारुतेश्वराय नमः मणिबन्धे ।
ऐं ह्रीं श्रीं झं अट्टहासाय नमः कराङ्गुलिमूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं ञं विरजायै नमः वामकरोगुल्यग्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं टं राजगेहाय नमः दक्षोरन्मूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं ठं महापथाय नमः जानुनि ।
ऐं ह्रीं श्रीं डं कोलापुराय नमः गुल्फे ।
ऐं ह्रीं श्रीं ढं एलापुराय नमः पादाङ्गुलिमूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं णं कालेश्वराय नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं तं जयन्तिकायै नमः वामोरु मूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं थं उज्जयिन्यै नमः जानुनि ।
ऐं ह्रीं श्रीं दं चित्रायै नमः गुरुके ।
ऐं ह्रीं श्रीं धं क्षीरिकाय नमः अङ्गुलिमूले ।
ऐं ह्रीं श्रीं नं हस्तिनापुराय वाद पादाङ्गुल्यग्रे ।
ऐं ह्रीं श्रीं पं उड्डीशाय नमः दक्षपार्श्वे ।
ऐं ह्रीं श्रीं फं प्रयागाय नमः वामपार्श्वे ।

ऐं ह्रीं श्रीं बं षष्ठोशाय नमः पृष्ठे ।
ऐं ह्रीं श्रीं भं मायापुर्ये नमः नाभौ ।
ऐं ह्रीं श्रीं मं जलेशाय नमः जठरे ।
ऐं ह्रीं श्रीं यं मलयाय नमः हृदये ।
ऐं ह्रीं श्रीं रं श्री शैलाय नमः दक्षस्कन्धै ।
ऐं ह्रीं श्रीं लं मेरवे नमः गुलपृष्ठे ।
ऐं ह्रीं श्रीं वं गिरिवराय नमः वामस्कन्धे ।
ऐं ह्रीं श्रीं शं महेन्द्राय नमः हृदयादि दक्ष कराङ्गुल्यन्तम् ।
ऐं ह्रीं श्रीं षं वामनाय नमः हृदयादि वाम कराङ्गुल्यन्तम् ।
ऐं ह्रीं श्रीं सं हिरण्यपुण्य नमः हृदयादि दक्ष पादाङ्गुल्यन्तम ।
ऐं ह्रीं श्रीं हं महालक्ष्मीपुराय नमः हृदयादि वामपादाङ्गुल्यन्तम् ।
ऐं ह्रीं श्रीं लं ओड्याणाय नमः हृदयादि गुह्यन्तम् ।
ऐं ह्रीं श्रीं क्षं छायाच्छत्राय नमः हृदयादि मूर्धान्तम् ।

इति लघुषोढान्यासः

बगलामुखी ध्यान और उसका आवश्यकत्व

ध्यानं यत्नात्प्रवक्ष्यामि ध्यानं सर्वार्थसिद्धिदम् ।
आदौ मध्ये तथा चान्ते ध्यानं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥ १० ॥
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम् ।
त्रिशूलं पानपात्रं च गदां जिह्वां च विभ्रतीम् ॥ ११ ॥
बिम्बोष्ठीं कम्बुकण्ठीं च समपीनपयोधराम् ।
पीताम्बरां मदाघूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्त्रदेवताम् ॥ १२ ॥

यत्नपूर्वक ध्यान कहता हूँ। ध्यान सर्वार्थ सिद्धिदायक होता है । प्रारम्भ मध्य और अन्त में एकाग्रता से ध्यान करना चाहिये । चार भुजा, तीन नयन, कमल के आसन पर संस्थित, हाँथों में त्रिशूल, पानपात्र, गदा और वैरी की जीभ सुशोभित है । बिम्बाफल के समान ओष्ठ, शंख के समान कण्ठ और स्तन स्थूल एक समान हैं, वस्त्र पीले हैं, नशे से घूर्णित नेत्र हैं । ब्रह्मास्त्र देवता का ऐसा ध्यान करना चाहिए ।। १०-१२ ।।

ऋष्यादि वर्णन

नारदो ऋषिरेवात्र बृहतीच्छन्द एव च ।
देवता बगला नाम स्तम्भनास्तम्भचिन्मयीम् ॥ १३ ॥
लं बीजं चैव हं शक्तिः ईं कीलकमुदाहृतम् ।

शत्रूणां स्तम्भनार्थञ्च जपेऽहं विधिपूर्वकम् ॥ १४ ॥

इसके ऋषि नारद, छन्द अनुष्टुप, देवता बगला, स्तम्भनास्त्र चिन्मयी, बीज लं, शक्ति ह्रीं एवं कीलक रं है। शत्रुओं के स्तम्भन के लिये मैं विधिवत जप करता हूँ ॥ १३-१४ ॥

सङ्कल्पपूर्वक जप-संख्या निर्धारण

सङ्कल्पपूर्वकं मन्त्रं कौलचक्रक्रमेण च।
पृथ्वीलक्षं जपेन्मन्त्रं न्यासध्यानसमन्वितम् ॥ १५ ॥

सङ्कल्प करके मन्त्र कौलाचार-क्रम से न्यास ध्यान करके एक लाख मन्त्र जप करे ॥ १५ ॥

तर्पण हवन द्रव्य का प्रकार

तर्प्पयेत्तद्दशांशञ्च हेतुमिश्रेण वारिणा।
जुहुयाद्बिल्वकुसुमं तद्दशांशं च बुद्धिमान् ॥ १६ ॥
ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात्तद्दशांशं घृतप्लुतम्।
तर्पयेत् तर्पयामीति स्वाहान्तं होममाचरेत् ॥ १७ ॥

जप का दशांश तर्पण मद्यमिश्रित जल से और दशांश हवन वेल के फूलों से करे। दशांश ब्राह्मणों को घृत प्लुत भोजन कराये। मन्त्र के साथ तर्पणम् जोड़कर तर्पण करे। मन्त्र के साथ स्वाहा जोड़कर हवन करे ॥ १६-१७ ॥

पुरश्चरण लक्षण न करने से सिद्धि नहीं होती

पूजा त्रैकालिकी नित्यं जपस्तर्पणमेव च।
होमो ब्राह्मणभुक्तिश्च पुरश्चरणमुच्यते ॥ १८ ॥
पुरश्चर्या विना मन्त्रं न प्रसिद्ध्यति भूतले।
एवं स्वाधीनमन्त्रेण षट्प्रयोगान् समाचरेत् ॥ १९ ॥

सबेरे, दोपहर, शाम तीनों कालों में प्रतिदिन पूजा, जप, तर्पण, हवन, ब्राह्मण-भोजन को पुरश्चरण कहते हैं। पृथ्वी पर पुरश्चरण के बिना मन्त्र सिद्ध नहीं होते। पुरश्चरण से सिद्ध मन्त्र से षट्कर्म प्रयोग करना चाहिए ॥ १८-१९ ॥

कर्म भेद से दश हजार हवन के द्रव्य

शान्त्याद्यं(न्यर्थ) जुहुयाच्छालिसक्तुराज्यसमन्वितम्।
गुणायुतं हुते धीमान् कुण्डे पूर्वोक्तमादरात् ॥ २० ॥
वशीकरणकार्येषु विल्वपत्रं घृतप्लुतम्।

गुणायुतं चामलकप्रमाणं क्रौञ्चभेदन ॥ २१ ॥
स्तम्भनेषु हुनेद्धीमान् तालकं घृतसम्प्लुतम् ।
बदरीफलमात्रं तु गुणायुतमनन्यधीः ॥ २२ ॥
विद्वेषणे च जुहुयात्पत्रैर्निम्बार्कसंयुतैः ।
रात्रौ वेदायुतं धीमान् सद्यो विद्वेषणं परम् ॥ २३ ॥
राजीलवणसंयुक्त बाणायुतमनन्यधीः ।
तस्य चोच्चाटनं शीघ्रं ध्रुवकूर्मादयोरपि ॥ २४ ॥
तिलतैलेन संयुक्तं माषहोमं गुणायुतम् ।
प्रेताग्नौ प्रेतकाष्ठं च जुहुयात्प्रेतकानने ॥ २५ ॥
भौमवारे निशा नग्नो जुहुयात्प्रेत उल्मुके ।
सद्यो मारणमाप्नोति मृकण्डुसदृशोऽपि च ॥ २६ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'महाविद्योद्धार' नाम सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥
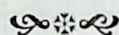
हे क्रौंचभेदन कार्तिकेय! शान्ति कर्म में सत्तू गोघृत मिश्रित चावल से तीस हजार हवन आमले के बराबर आहुतियों से करे । वशीकरण में घृतप्लुत बेल-पत्रों से तीस हजार हवन पूर्वोक्त कुण्ड में करे ।

स्तम्भन में घी संयुक्त तालक की वेर के बराबर आहुतियों से तीस हजार हवन करे ।

रात में साधक नीम और अकवन के पत्तों से चालिस हजार हवन करे तो शीघ्र विद्वेषण होता है । राई और नमक मिश्रण से तीस हजार हवन करने से कूर्म और ध्रुव के समान भी उच्चाटित हो जाते हैं । तिल तेल मिश्रित उड़द से चिता में चिता की लकड़ी से प्रज्वलित अग्नि में रात में नङ्गे होकर चालिस दिनों तक हवन दक्षिण मुख होकर करे तो मार्कण्डेय के समान अमर की भी मृत्यु हो जाती है ।

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'महाविद्याउद्धार' नामक सप्तम पटल समाप्त ॥ ७ ॥
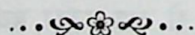
अथाष्टम: पटल:

मन्त्रराजप्रयोग

बगला देवी का ध्यान

बिम्बोष्ठीं चारुवदनां समपीनपयोधराम् ।
पानपात्रं वैरिजिह्वां धारयन्तीं शिवां भजे ॥ १ ॥

उस शिवा का भजन करते हैं । जिसके अधर विम्बा फल के समान लाल है । मुख मण्डल सुन्दर है । दोनों स्तन स्थूल और समान है । एक हाथ में पान पात्र है । दूसरे हाथ से वैरी के जीभ को खींच रही है ॥ १ ॥

बगला-मन्त्रराज के प्रयोग की जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

नमः कौलागमाचार्य वेदवेदाङ्गपारग ।
बगलामन्त्रराजस्य प्रयोगं वद शङ्कर ॥ २ ॥

क्रौच भेदन कार्तिकेय ने कहा—हे कौल आगम के आचार्य! आपको प्रणाम है । हे वेद-वेदाङ्ग के पूर्ण जानकार शङ्कर! बगला-मन्त्रराज का प्रयोग कहिये ॥ २ ॥

कर्म भेद से हवन द्रव्य योग, नाना द्रव्य योजन प्रकार, मन्त्र और योजना विधि

ईश्वर उवाच—

राजीलवणमादाय मूलमन्त्रेण पुत्रक ।
ग्रस्तं कृत्वा साध्यनाम जुहुयादयुतं निशि ॥ ३ ॥
नानारोगहरं चैव नानाभूतनिकृन्तनम् ।
नानाकृत्रिमनाशञ्च भवेत्सत्यं न संशयः ॥ ४ ॥
हरिद्राखण्डहोमेन अयुतेन कुमारक ।
वशीकरणसम्मोहं भवेच्छङ्करभाषणम् ॥ ५ ॥

तालकेन हुनेद्रात्रौ नेत्रायुतमनन्यधीः ।
नानास्तम्भनमार्गेषु सत्यमेतन्न संशयः ॥ ६ ॥
खरस्य रक्तमादाय जातिकर्मविरोधिनाम् ।
निम्बार्कपत्रमादाय प्रत्येकं नाम चालिखेत् ॥ ७ ॥
प्रेताग्नौ प्रेतकोष्ठे च नग्ने च प्रेतदिङ्मुखे ।
हुनेत्प्रेतवने धीमानयुतं द्वेषकारकम ॥ ८ ॥
अनाथस्य चितौ रात्रौ शत्रुप्रकृतिं लिखेत् ।
हृदये नाम आलिख्य मारयेति ललाटके ॥ ९ ॥
दहयुग्मं लिखेद् बाहौ ऊर्वोस्तस्य कुरुद्वयम् ।
एवं च विलिखेत्सम्यक् सशत्रोर्वर्णमादरात् ॥ १० ॥
ताडयेद् हृदये मन्त्री शतमष्टोत्तरं जपेत् ।
तद्भस्म संग्रहे धीमान् गोपयेन्नगराद् बहिः ॥ ११ ॥
पुनर्भौमनिशाकाले मन्त्रयेन्मूलमन्त्रतः ।
अष्टोत्तरसहस्रं च शत्रुमूर्द्धनि विनिःक्षिपेत् ॥ १२ ॥
स शत्रुः सप्तरात्रेण म्रियते नात्र संशयः ।
उष्ट्रारूढं रिपुं ध्यात्वाग्रस्य दण्डेन मन्त्रयेत् ॥ १३ ॥
निःक्षिपेत्सप्तरात्रं तु सप्तधा मन्त्रितं तथा ।
उच्चाटनं भवेत्सत्यं शिवस्य वचनं यथा ॥ १४ ॥
प्रेतभस्म रवौ ग्राह्यं बगलामन्त्रराजतः ।
सहस्रं मन्त्रयेच्छत्रो रात्रौ नग्नो न भौमके ॥ १५ ॥
खाने पाने च तद्भस्म दातव्यं शत्रु मण्डले ।
वाक्पाणिपादपायुश्च नेत्रश्रोत्रमतिस्तथा ॥ १६ ॥
स्तम्भनं च भवेच्छीघ्रं बृहस्पतिसमोऽपि च ।
किम्पुनर्मानवादीनां स्तम्भनं क्रौञ्चभेदन ॥ १७ ॥
क्षुद्रप्रयोजनैः पुत्र न कर्त्तव्यं कदाचन ।
अज्ञानात्कुरुते यस्तु देवताशापमाप्नुयात् ॥ १८ ॥
ग्रस्तं कृत्वा वैरिनाम विलिखेत्तालपत्रके ।
निशाकाले चार्कवारे निर्दहेद् दीपवह्निना ॥ १९ ॥
कुबेरसदृशः श्रीमान् मासमात्रेण पुत्रक ।
मन्दबुद्धिर्दरिद्रोऽपि जायते भुवि पुत्रक ॥ २० ॥
चितिवस्त्रं रवौ ग्राह्यं तदङ्गारं रवौ पुनः ।
चितिकाष्ठं रवौ ग्राह्यं रवौ कुर्यात्स लेखिनीम् ॥ २१ ॥

रवौ रात्रौ च संलिख्य शत्रुनाम च तत्पटे ।
वेष्टयेद् बगलाबीजं मूलमन्त्रं ततो लिखेत् ॥ २२ ॥
वह्निबीजेन संवेष्ट्य वेष्टयेज्जीवनीमनुः ।
तद्वस्त्रगुलिकां कृत्वा वेष्टयेत् श्वेतरज्जुना ॥ २३ ॥
स्थापयेच्च कपाले तु निशि भौमे च चर्चिते ।
प्रादेशगर्त्तं कृत्वाथ श्मशाने च सुबुद्धिमान् ॥ २४ ॥
रवौ रात्रौ च निःक्षिप्य पूरयेद्भस्म सादरात् ।
तत्र नग्नौ जपं कुर्यादयुतं मूलविद्यया ॥ २५ ॥
मन्दाग्निर्मन्दबुद्धिश्च नेत्रश्रोत्रेषु मन्दताम् ।
पाणिपादौ च मन्दत्वं निर्वीर्यो भवति ध्रुवम् ॥ २६ ॥

मूल मन्त्र में साध्य का नाम ग्रथित करके रात में दश हजार हवन राई नमक के मिश्रण से करे । इससे नाना रोगों का नाश, नाना भूतों का निकृन्तन, नाना कृत्रिमों का नाश होता है। यह सत्य है, इससे संशय नहीं है ।

हल्दी के टुकड़ों से दश हजार हवन करने से शङ्करभाषित वशीकरण और सम्मोहन होते हैं । रात में ताड़ के फल-खण्डों से तीस हजार हवन करने से नाना मार्गों में स्तम्भन होता है । यह सत्य है, संशय नहीं है ।

ज्ञात कर्म विरोधियों के नाम नीम और अकवन के पत्तों पर गदहे के रक्त से लिखे । चिता में चिता की लकड़ियों से आग जलाकर नग्न होकर दक्षिण ओर मुख करके प्रेत वन में दश हजार हवन करे तो विरोधी आपस में झगड़ने लगाते हैं ।

अनाथ की चिता में रात में शत्रु का चित्र बनावे । उसके हृदय में नाम लिखे । ललाट में मारय लिखे । बाहों में दह-दह लिखे । उस ओम में 'भस्मी कुरुकुरु' लिखे । अपने शत्रु के नामाक्षरों को इसी प्रकार लिखे । मन्त्र बोलते हुए एक सौ आठ बार गदा से प्रहार करे । उस भस्म को एकत्रित करके नगर के बाहर छिपा दे । पुनः मङ्गलवार की रात में उस भस्म को एक हजार आठ मन्त्र जप से अभिमन्त्रित करके शत्रु के मस्तक पर डाल दे । वह शत्रु सात रातों में मर जाता है । यहाँ संशय नहीं है ।

ऊँट पर सवार शत्रु को ध्यान करके साधक पकड़े और पटक दे । सात रातों तक सात बार मन्त्रित भस्म उरु पर डाले इससे शङ्कर के कथनानुसार शत्रु का उच्चाटन शीघ्र हो जाता है । रविवार में बगला-मन्त्रराज जपते हुए चिता भस्म ले आये । मङ्गलवार की रात में नङ्गे होकर एक हजार जप से उसे मन्त्रित

५ सांख्या.

करे । शत्रु-मण्डल के खान-पान में उसे डाल दे । इससे बृहस्पति के समान शत्रु की भी बोली, हाथ-पैर, मलद्वार, कान, आँख और बुद्धि का स्तम्भन शीघ्र हो जाता है । तब साधारण मनुष्यों आदि का स्तम्भन क्यों सुगम नहीं होगा। हे पुत्र! ऐसा प्रयोग छोटे-मोटे कामों के लिये नहीं करना चाहये । अनजाने में जो करता है, वह देवता का शाप प्राप्त करता है ।

ताड़पत्र पर वैरी का नाम ग्रथित करके लिखे । रविवार की रात में उसे दीपक की शिखा पर रखकर जलावे । हे पुत्र! ऐसा करने से कुवेर के समान श्रीमान भी एक माह में मन्दबुद्धि, दरिद्र हो कर संसार में रहता है ।

एक रविवार में चिता का वस्त्र लेकर रखे । दूसरे रविवार में चिता का कोयला ले आये । तीसरे रविवार में चिता की लकड़ी लाकर लेखनी बनावे । रविवार की रात में चिता के वस्त्र पर चिता के कोयले की स्याही में शत्रु का नाम लिखे । उस नाम को बगला बीज सहित मूलमन्त्र के अक्षरों से वेष्टित करे। उसके बाहर अग्निबीज 'रं' लिखकर वेष्टित करे । उसे बाहर जीवनी-मन्त्र लिखकर वेष्टित करे । उस वस्त्र से गोली बनाकर उसे चिता-वस्त्र के धागों से वेष्टित करे । मङ्गलवार की रात में अर्चित कपाल में स्थापित करे । श्मशान में चिता भर गहरा गड्ढा खोदकर रविवार की रात में खोपड़ी सहित उसे गाड़ दे ऊपर से चिता भस्म से भर दे । वहाँ पर नङ्गे होकर मूल-मन्त्र का जप दश हजार करे । तब शत्रु को भूख नही लगती । बुद्धि मन्द हो जाती है । आँखों की देखने की शक्ति और कानों की सुनने की शक्ति कम हो जाती है । हाँथ पैरों में शिथिलता हो जाती है । वह निश्चित बलहीन हो जाता है ॥ ३-२६ ॥

द्रव्य तर्पण से परकृत कर्म का निवारण

एवं रोगसमायुक्तो मण्डलाद्रिपुनाशनम् ।
चन्द्रप्रस्तारमन्त्रेण द्रव्यतर्प्पणमाचरेत् ॥ २७ ॥
शतं सहस्त्रमयुतं कार्यलाघवगौरवात् ।
तत्तर्पणासवं पीत्वा प्रयोगं शान्तिमाप्नुयात् ॥ २८ ॥
न कर्तव्यं मुमुक्षैश्च परपीडां कदाचन ।
प्राणैः कण्ठगतैः कुर्यात् पश्चात् संस्कारमाचरेत् ॥ २९ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'मन्त्रराजप्रयोगं' नाम अष्टमः पटलः ॥ ८ ॥
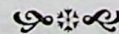
इस प्रकार के रोगों से ग्रस्त शत्रु की मृत्यु चालिस दिनों के अन्दर हो जाती है । चन्द्र प्रस्तार मन्त्र से द्रव्यों से तर्पण करे । कार्य की लघुता गुरुता के

अनुरूप सौ हजार और दश हजार तर्पण करे । उस तर्पण का आसव पीने से प्रयोग की शान्ति हो जाती है ।

मोक्षार्थियों को पर पीड़ा कदापि नहीं करना चाहिए । प्राणों को कण्ठगत करने के बाद संस्कार करे ॥ २७-२९ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'मन्त्रराजप्रयोग' नामक अष्टम पटल समाप्त ॥ ८ ॥

...༄༅...

अथ नवमः पटलः

यन्त्रप्रयोगं

बगलामुखी ध्यान

पीताम्बरालङ्कृतपीतवर्णां
शातोदरी शर्वमुखामृतार्चिताम् ।
पीनस्तनालङ्कृतपीतपुष्पां
सदा स्मरेयं बगलामुखीं हृदि ॥ १ ॥

हम उस बगलामुखी का हृदय में स्मरण करते हैं जो पीले वस्त्रों में सुशोभित है । जो पीले वर्ण की है । जो शातोदरी हैं । जो शर्व शिवमुख से और देवताओं के द्वारा अर्चित है । जिनके स्तन स्थूल है । जो पीले फूलों से अलंकृत है ॥ १ ॥

बगला-मन्त्र प्रयोग के मूल-यन्त्र के बारे में जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

नमोऽतु मन्त्रागमकोविदाय
श्रीनीलकण्ठाय नमो नमस्ते ।
एतन्मनोर्यन्त्रखण्डतेजसे
प्रयोगमूलं वद चन्द्रचूड ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—मन्त्रागमों के पूर्ण ज्ञाता को प्रणाम है । श्री नीलकण्ठ को बार-बार प्रणाम है । इस मन्त्र के यन्त्र, अखण्ड तेज प्रयोग के मूल को हे चन्द्रमौलि! कहिये ॥ २ ॥

यन्त्रोद्धार

ईश्वर उवाच—

यन्त्रप्रयोगं यमशासने कलौ
यन्त्रप्रयोगं यमिनां च दुर्लभम् ।

यन्त्रप्रयोगं यतयस्तु कुर्वतां
यज्ञाद्धि गोविप्रयतैश्च रक्षणे ॥ ३ ॥
बिन्दुं त्रिकोणं वृत्तं च अष्टकोणं ततोपरि ।
ततोपरि लिखेत्पुत्र षट्कोणं वृत्तमादरात् ॥ ४ ॥
ततोपरि लिखेत्सम्यक् भूपुरद्वयमादरात् ।

ईश्वर ने कहा—कलियुग में यन्त्र-प्रयोग यम शासन है । यन्त्र प्रयोग और उसको करने वाले दुर्लभ है । यति लोग यन्त्र-प्रयोग, यज्ञादि, गाय, ब्राह्मण गौपतियों की रक्षा के लिये करते हैं । एक वित्ता लम्बा-चौड़ा चाँदी या सोने के पत्र पर सोने की लेखनी से शुक्रवार में यन्त्र को लिखे । पहले त्रिकोण बनाकर उसके मध्य में बिन्दु अंकित करे । त्रिकोण के बाहर अष्टकोण बनावे । अष्टकोण के बाहर षट्कोण और षट्कोण के बाहर वृत्त बनावे । वृत्त के बाहर दो भूपुर बनावे ॥ ३-५ ॥
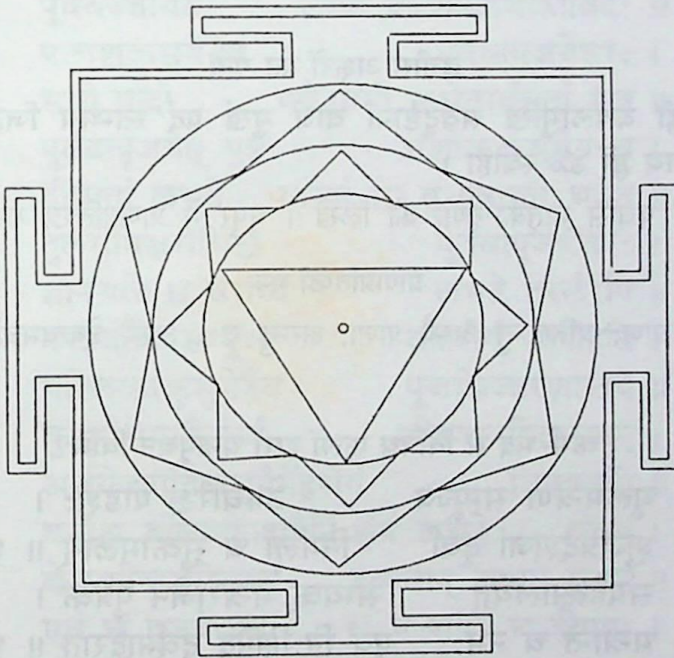
यन्त्र में मन्त्र-लेखन विधि

बिन्दुमध्ये लिखेत्कोणत्रितये त्रितयं त्रिधा ॥ ५ ॥
अष्टकोणेषु विलिखेद् गायत्रीं बगलाह्वयाम् ।
षट्कोणेषु सुसंलिख्य विद्यां षट्त्रिंशदक्षरीम् ॥ ६ ॥
वृत्तेषु विलिखेत्पुत्र पञ्चाशद्वर्णमादरात् ।

भूपुरेषु च संलिख्य प्राणस्थापनकं मनुम् ॥ ७ ॥
रजते स्वर्णपट्टे वा प्रादेशं चतुरस्रके ।
लेखिन्या स्वर्णमय्या च लिखेद्भार्गववासरे ॥ ८ ॥
पूजायन्त्रमिदं पुत्र पूजनात् सर्वसिद्धिदम् ।
पूजाविधिं प्रवक्ष्यामि मुनिगुह्यं सुपावनम् ॥ ९ ॥

त्रिकोण के प्रत्येक कोण में उसके तीन-तीन बीजों को लिखे । बिन्दु में बगला बीज 'ह्लीं' लिखकर उसके गर्भ में साध्यक का नाम लिखे । अष्टकोण के प्रत्येक कोण में बगला-गायत्री के तीन-तीन अक्षरों को लिखे । बगला गायत्री इस प्रकार है—

ह्लीं बगलामुखी विद्महे ।
दुष्ट स्तम्भिनी धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

षट्कोण के प्रत्येक कोण में छत्तीस अक्षरी बगला विद्या के छह-छह अक्षरों को लिखे ।

छत्तीस अक्षरों का मन्त्र

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिविनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।

वृत्त में पचास मातृका-वर्णों को लिखे । भूपुर में प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र लिखे—

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र

अस्य प्राणः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।

कर्म-भेद से विविध फूलों द्वारा यन्त्रपूजन विधि

मूलमन्त्रेण सम्पूज्य उपचारैश्च षोडशैः ।
शुद्धप्रदेशजां दूर्वां निर्मलां च सुकोमलाम् ॥ १० ॥
संग्रहेत्क्षालयेत् सम्यक् मन्त्रराजेन पुत्रक ।
मन्त्रान्ते च नमः पूर्वं निःक्षिपेद् दूर्वमादरात् ॥ ११ ॥
एवं भूतसहस्रं च पूजयेच्च दिने दिने ।
मण्डलाद् व्याधयः सर्वे मुच्यन्ते कृत्रिमादयः ॥ १२ ॥
भूतप्रेतपिशाचाद्याः क्रूराः खेचरभूचराः ।
पूजनान्नाशमाप्नोति शिवस्य वचनं यथा ॥ १३ ॥
अर्चयेत्पूर्ववद्यन्त्रमुपचारैश्च षोडशैः ।

संग्रहेद्रक्तकुसुमं हयारिं च सुनिर्मलम् ॥ १४ ॥
तेन पूजा प्रकर्त्तव्या पूर्ववन्मण्डलं सुधीः ।
सम्मोहनं च वश्यञ्च द्रव्यलाभं भवेद्ध्रुवम् ॥ १५ ॥
विभीतकोद्भवं पुष्पमाहरेद्भौमवासरे ।
पूजयेत्पूर्ववत्पुत्र नानास्तम्भनकर्मणि ॥ १६ ॥
निम्बार्ककुसुमेनाथ यन्त्रं वापि कुमारक ।
पूर्ववत्पूजयेन्मन्त्री सद्यो विद्वेषणं भवेत् ॥ १७ ॥
धत्तूरकुसुमेनैव पूर्ववत्पूजयेत्सुत ।
उच्चाटनं भवेत्सत्यं नान्यथा शिवभाषणम् ॥ १८ ॥
विषतिन्दुकपुष्पेण पूर्ववत्सम्यगर्चयेत् ।
सद्यो विनाशमाप्नोति मृकण्डुसदृशो रिपुः ॥ १९ ॥
शमन्तकुसुमेनैव पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।
पूर्ववज्जायते लोके वदेशास्त्रार्थकोविदः ॥ २० ॥
पलाशकुसुमेनैव पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।
सद्यो मन्दो भवेद्वाग्मी लभेत्सर्वज्ञतां सुत ॥ २१ ॥
पूर्ववत्पूजयेत् पुत्र अशोककुसुमेन च ।
ईप्सितां लभते कन्यां सा तु पुत्रवती भवेत् ॥ २२ ॥
तुलसीमञ्जरीभिश्च पूर्ववत्पूजयेन्नरः ।
ज्ञानभक्तिश्च वैराग्यं लभते तरलैरपि ॥ २३ ॥
नन्दावर्तेन सम्पूज्य वातरोगं व्यपोहति ।
मल्लिकाकुसुमेनैव पूजयेज्ज्वरशान्तये ॥ २४ ॥
कुसुमैश्चम्पकैरर्च्य शीतज्वरनिवारणम् ।
अर्चयेज्जातिकुसुमैर्मेहरोगं विनश्यति ॥ २५ ॥
वन्यैश्च मल्लिकापुष्पैर्निःक्षेपं लभते ध्रुवम् ।
केतकीकुसुमेनार्च्य द्रव्यवान् जायते ध्रुवम् ॥ २६ ॥
एवं च पूजयेद्यन्त्रं न जपैर्न च होमतः ।
प्रयोगसिद्धिर्भवति बगलायाः प्रसादतः ॥ २७ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'यन्त्रप्रयोगं'
नाम नवमः पटलः ॥ ९ ॥

हे पुत्र! इस पूजा-यन्त्र को पूजने से सभी सिद्धियों की प्राप्ति होती है। इसकी गुह्य सनातन पूजा-विधि को मुनियों ने कहा है। मूल-मन्त्र से षोडशोपचार पूजा करे। शुद्ध प्रदेश से निर्मल कोमल दूब लाकर मन्त्रराज से उसका प्रक्षालन करे। मन्त्र के साथ 'नमः' जोड़कर एक हजार दूब यन्त्र पर चढ़ावे। चालिस दिनों तक प्रतिदिन ऐसा करने से कृत्रिम आदि सभी बाधाओं का नाश हो जाता है। श्री शिव के कथन के अनुसार इस पूजा से भूत-प्रेत-पिशाच आदि क्रूर खेचर-भूचर सबों का नाश हो जाता है।

पूर्ववत् यन्त्र की पूजा षोडशोपचार से करे। इसके बाद निर्मल लाल एक हजार कनैल के फूलों से चालिस दिनों तक मूल-मन्त्र के साथ नमः जोड़कर पूजा करे। इस पूजा से सम्मोहन, वशीकरण और द्रव्य-लाभ अवश्य होता है। स्तम्भन-कर्म में मङ्गलवार में एक हजार बहेड़े के फूलों से पूजा करने से स्तम्भन सिद्ध होता है। विद्वेषण के लिये नीम अकवन के फूल पत्तों से पूर्ववत् पूजा करने से विद्वेषण होता है। धत्तूर के फूलों से पूर्ववत् पूजा करने से उच्चाटन होता है। शिवभाषित वचन सत्य है, अन्यथा नहीं है। विषतिन्दुकर फलों से पूर्ववत् पूजा करने से मृकण्डु के समान शत्रु भी मर जाता है। स्यमन्त के फूलों से पूर्ववत् पूजा करने से पूजक को वेदशास्त्र कोविद पुत्र प्राप्त होता है। पलाश के फूलों से पूर्ववत् पूजा करने से मन्द मनुष्य भी सर्वज्ञ होकर वक्ता हो जाता है। अशोक के फूलों से पूर्ववत् पूजा करने से मनचाही कन्या से विवाह होता है और उससे पुत्र उत्पन्न होता है। तुलसी मञ्जरी से पूर्ववत् पूजा करने से मनुष्य को ज्ञान, शक्ति और वैराग्य का लाभ होता है। नन्धा वन पुष्पों से पूजा करने से बात गठिया रोगों का नाश होता है। ज्वर शान्ति के लिये मल्लिका फूलों से पूजा करे। चम्पा फूलों से पूजा करने पर शीतज्वर का निवारण होता है। जाति पुष्पों से पूजा करने से मधुमेह रोग खत्म होता है। जङ्गली मल्लिका फूलों से पूजने पर विक्षेप होता है। केवड़ा के फूलों से पूजा करने से धन प्राप्त होता है। इस प्रकार यन्त्र की केवल पूजा करने से बिना जप हवन के बगला की कृपा से प्रयोग सिद्ध होते हैं।

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'यन्त्रप्रयोग' नामक नवम पटल समाप्त ॥ ९ ॥

...✿...

अथ दशमः पटलः

यन्त्रलेपनक्रम

पीताम्बरा बगला ध्यान

कम्बुकण्ठीसुताम्रोष्ठीं मदविह्वललोचनाम् ।
भजेऽहं बगलां देवीं पीताम्बराधरां शुभाम् ॥ १ ॥

हम उन बगला देवी को भजते हैं जिनका कण्ठ शंख के समान है । जिनके ताम्बे के समान लाल ओठ हैं । जिनका चित्त नशे से विह्वल है तथा जिनके वस्त्र पीले वर्ण के हैं । जो देवी सबका कल्याण करने वाली है ॥ १ ॥

मन्त्र-लेपन-प्रयोग जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

अष्टमूर्त्ते महामूर्त्ते नमस्ते चन्द्रशेखर ।
वद प्रयोगं मन्त्रस्य लेपनक्रममादरात् ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—हे अष्टमूर्ते! हे महामूर्ते! हे चन्द्रशेखर! आपको प्रणाम है । आप मुझे मन्त्र-लेपन-प्रयोग के बारे में बतलाइये ॥ २ ॥

लेपन में कर्मभेद से चन्दन आदि द्रव्य का निरूपण

ईश्वर उवाच—

पूर्वोक्त यन्त्रमालिख्य प्राणस्थापनपूर्वकम् ।
अर्चयेदुपचारेण चन्दनेन विलेपयेत् ॥ ३ ॥
बाणायुतं जपेद्धीमान् नित्यपूजासमन्वितम् ।
राज्यसिद्धिर्भवेत्सत्यमयत्नेन कुमारक ॥ ४ ॥

ईश्वर ने कहा—पूर्वोक्त यन्त्र लिखकर प्राण-प्रतिष्ठा करनी चाहिए । तदनन्तर उपचारों से पूजा करके उसमें चन्दन का लेप लगावे । नित्य पूजा के बाद पचास

हे पुत्र! इस पूजा-यन्त्र को पूजने से सभी सिद्धियों की प्राप्ति होती है। इसकी गुह्य सनातन पूजा-विधि को मुनियों ने कहा है। मूल-मन्त्र से षोडशोपचार पूजा करे। शुद्ध प्रदेश से निर्मल कोमल दूब लाकर मन्त्रराज से उसका प्रक्षालन करे। मन्त्र के साथ 'नमः' जोड़कर एक हजार दूब यन्त्र पर चढ़ावे। चालिस दिनों तक प्रतिदिन ऐसा करने से कृत्रिम आदि सभी बाधाओं का नाश हो जाता है। श्री शिव के कथन के अनुसार इस पूजा से भूत-प्रेत-पिशाच आदि क्रूर खेचर-भूचर सबों का नाश हो जाता है।

पूर्ववत् यन्त्र की पूजा षोडशोपचार से करे। इसके बाद निर्मल लाल एक हजार कनैल के फूलों से चालिस दिनों तक मूल-मन्त्र के साथ नमः जोड़कर पूजा करे। इस पूजा से सम्मोहन, वशीकरण और द्रव्य-लाभ अवश्य होता है। स्तम्भन-कर्म में मङ्गलवार में एक हजार बहेड़े के फूलों से पूजा करने से स्तम्भन सिद्ध होता है। विद्वेषण के लिये नीम अकवन के फूल पत्तों से पूर्ववत् पूजा करने से विद्वेषण होता है। धत्तूर के फूलों से पूर्ववत् पूजा करने से उच्चाटन होता है। शिवभाषित वचन सत्य है, अन्यथा नहीं है। विषतिन्दुकर फलों से पूर्ववत् पूजा करने से मृकण्डु के समान शत्रु भी मर जाता है। स्यमन्त के फूलों से पूर्ववत् पूजा करने से पूजक को वेदशास्त्र कोविद पुत्र प्राप्त होता है। पलाश के फूलों से पूर्ववत् पूजा करने से मन्द मनुष्य भी सर्वज्ञ होकर वक्ता हो जाता है। अशोक के फूलों से पूर्ववत् पूजा करने से मनचाही कन्या से विवाह होता है और उससे पुत्र उत्पन्न होता है। तुलसी मञ्जरी से पूर्ववत् पूजा करने से मनुष्य को ज्ञान, शक्ति और वैराग्य का लाभ होता है। नन्धा वन पुष्पों से पूजा करने से बात गठिया रोगों का नाश होता है। ज्वर शान्ति के लिये मल्लिका फूलों से पूजा करे। चम्पा फूलों से पूजा करने पर शीतज्वर का निवारण होता है। जाति पुष्पों से पूजा करने से मधुमेह रोग खत्म होता है। जङ्गली मल्लिका फूलों से पूजने पर विक्षेप होता है। केवड़ा के फूलों से पूजा करने से धन प्राप्त होता है। इस प्रकार यन्त्र की केवल पूजा करने से बिना जप हवन के बगला की कृपा से प्रयोग सिद्ध होते हैं।

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'यन्त्रप्रयोग'
नामक नवम पटल समाप्त ॥ ९ ॥

...✿...

अथ दशमः पटलः

यन्त्रलेपनक्रम

पीताम्बरा बगला ध्यान

कम्बुकण्ठीसुताम्रोष्ठीं मदविह्वललोचनाम् ।
भजेऽहं बगलां देवीं पीताम्बराधरां शुभाम् ॥ १ ॥

हम उन बगला देवी को भजते हैं जिनका कण्ठ शंख के समान है । जिनके ताम्बे के समान लाल ओठ हैं । जिनका चित्त नशे से विह्वल है तथा जिनके वस्त्र पीले वर्ण के हैं । जो देवी सबका कल्याण करने वाली है ॥ १ ॥

मन्त्र-लेपन-प्रयोग जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

अष्टमूर्त्ते महामूर्त्ते नमस्ते चन्द्रशेखर ।
वद प्रयोगं मन्त्रस्य लेपनक्रममादरात् ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—हे अष्टमूर्ते! हे महामूर्ते! हे चन्द्रशेखर! आपको प्रणाम है । आप मुझे मन्त्र-लेपन-प्रयोग के बारे में बतलाइये ॥ २ ॥

लेपन में कर्मभेद से चन्दन आदि द्रव्य का निरूपण

ईश्वर उवाच—

पूर्वोक्त यन्त्रमालिख्य प्राणस्थापनपूर्वकम् ।
अर्चयेदुपचारेण चन्दनेन विलेपयेत् ॥ ३ ॥
बाणायुतं जपेद्धीमान् नित्यपूजासमन्वितम् ।
राज्यसिद्धिर्भवेत्सत्यमयत्नेन कुमारक ॥ ४ ॥

ईश्वर ने कहा—पूर्वोक्त यन्त्र लिखकर प्राण-प्रतिष्ठा करनी चाहिए । तदनन्तर उपचारों से पूजा करके उसमें चन्दन का लेप लगावे । नित्य पूजा के बाद पचास

हजार मन्त्र जप करे । हे कुमार! ऐसा करने से बिना किसी यत्न के राज्य प्राप्त होता है ॥ ३-४ ॥

कस्तूरीलेपनं कुर्यात्सम्यगर्चितयन्त्रके ।
नित्यं बाणसहस्त्रं च न्यासध्यानसमन्वितम् ॥ ५ ॥
मण्डलद्वययोगेन रोगकृत्याग्रहादयः ।
तत्क्षणान्नाशमायान्ति तमः सूर्योदये यथा ॥ ६ ॥
पूर्ति चार्द्धपलं नित्यं लेपयेद्यन्त्रमादरात् ।
जपं कुर्यात्पूर्ववच्च मासं वा मण्डलं तु वा ॥ ७ ॥

सम्यक् रूप से अर्चित यन्त्र में कस्तूरी का लेप लगावे । न्यास ध्यान समन्वित पाँच हजार जप प्रतिदिन करे । दो मण्डल अर्थात् अस्सी दिनों तक ऐसा करने से रोग कृत्यादि ग्रहों के कुप्रभाव का नाश वैसे ही हो जाता है जैसे सूर्य के उदय होने पर अन्धकार का नाश हो जाता है । भूमि की प्राप्ति के लिये प्रतिदिन तीस दिनों या चालिस दिनों तक फलपिष्ट का लेप यन्त्र में लगावे और मन्त्र जप करे ॥ ५-७ ॥

वशीकरं तु सम्मोहं द्रव्यसंग्रहमेव च ।
भवत्येव न सन्देहो नात्र कार्या विचारणा ॥ ८ ॥
हरिद्रातालकं चैव अर्कक्षीरेण मर्द्दितम् ।
त्रिकालं लेपयेन्नित्यं त्रिसहस्त्रं जपेद्दिने ॥ ९ ॥
महास्तम्भनमाप्नोति कर्णाक्षिवाक्पतिस्तु वा ।
मण्डलान्नगरं ग्रामं रणसम्मोहमेव च ॥ १० ॥

वशीकरण सम्मोहन के लिये हल्दी और हरताल को अकवन के दूध में पीसकर उस पिष्ट से सवेरे-दोपहर-शाम तीनों समयों में यन्त्र में लेप लगावे । तीन हजार मन्त्र जप करे; भक्ति से ऐसा करने से अवश्य कार्य सिद्ध होता है इसमें सन्देह न करे, न कोई विचार करे । ऐसा करने से पन्द्रह दिनों में शेषनाग और गरुड़ का भी स्तम्भन होता है । चालिस दिनों में नगर, ग्राम या युद्ध में सम्मोहन होता है ॥ ८-१० ॥

सर्षपास्त्रिकदूर्वैश्च दुग्धैर्वज्रार्कसम्भवैः ।
क्षारेण मर्दयेत्सम्यक् यन्त्रलेपनमाचरेत् ॥ ११ ॥
कृत्वार्धमण्डलं चैव षट्सहस्त्रं दिने दिने ।
विद्वेषणं भवेत्सिद्धं शिवस्य वचनं यथा ॥ १२ ॥

सरसो, सोंठ, पीपल, गोल मिर्च को उजले अकवन के दूध में मिला कर खल में कूटकर यन्त्र में लेप लगावे । अर्द्धमण्डल अर्थात् बीस दिनों तक

प्रतिदिन छह हजार मन्त्र जप करे तो शिव के वचनानुसार अवश्य विद्वेषण सिद्ध होता है ॥ ११-१२ ॥

धत्तूरं तिन्दुकं बीजं तालकेन समन्वितम् ।
निम्बपत्रद्रवेनैव मर्दयेल्लेपयेत्त्रिधा ॥ १३ ॥
एवं मासप्रयोगेण नगरं ग्राममेव च ।
रणे वा राजगेहे वा शीघ्रमुच्चाटनं भवेत् ॥ १४ ॥

धतूर, तिन्दूक बीज, ताल को मिलाकर नीम के पत्तों के रस में पीसकर लेप बनावे । एक महीने तक प्रतिदिन तीन बार यन्त्र में लेप लगावे । इससे नगर, ग्राम या युद्ध में या राजमहल में शीघ्र उच्चाटन होता है ॥ १४ ॥

प्रेतान्नं प्रेतभस्मं च प्रेताङ्गारं समं समम् ।
अर्कवज्रीमयं क्षीरं खल्वेनैव तु मर्दयेत् ॥ १५ ॥
त्रिकालं लेपनं कुर्यात् प्रीतये होमयुक्तिना ।
नित्यं ऋतुसहस्त्रं तु मन्त्रराजमिमं जपेत् ॥ १६ ॥
पक्षान्मारणमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।
अथवा निम्बतैलेन तद्वत्कृत्वा तु मारणम् ॥ १७ ॥
तिलतैलेन संयुक्तं मर्दयेद् गरमादरात् ।
यन्त्रस्य लेपनं कुर्यात् त्रिकालं मूलविद्यया ॥ १८ ॥
सन्तपेद्दीपशिखया पक्षमेकं कुमारक ।
मारणं च भवेन्नित्यं नात्र कार्या विचारणा ॥ १९ ॥

प्रेतान्न, प्रेतभूति और चिता का कोयला बराबर-बराबर लेकर अकवन के गुद्दे और दूध में मिलाकर खल में कूटे । तीनों काल में यन्त्र का लेपन करके दीपक शिखा पर तपावे । इस मन्त्रराज का दश हजार या तीन हजार जप करे तो पन्द्रह दिनों में शत्रु की मृत्यु हो जाती है । इसमें विचार की जरूरत नहीं है । अथवा नीम के तेल से ऐसा करने पर भी मृत्यु होती है । तिल तेल में विष मिलाकर मलकर यन्त्र में तीनों कालों में मूल विद्या से लेप लगावे । फिर दीप शिखा पर तपावे । पन्द्रह दिनों तक ऐसा करने से मारण होता है । इसमें विचार की जरूरत नहीं है ॥ १५-१९ ॥

वज्रीक्षीरं त्रिकालं तु पूर्वल्लेखनेषु च ।
तापज्वरस्य पीडायां षण्मासाद्रिपुमारणम् ॥ २० ॥
पूर्ववल्लेपनं चैव जपसन्तर्पणं तथा ।
त्रिसप्तदिनमात्रेण मारणं चोरगौरगैः ॥ २१ ॥

थूहर के दूध का लेप तीनों कालों में यन्त्र में लगाने से छह महीनों में शत्रु की मृत्यु तापज्वर से हो जाती है । एक्कईस दिनों तक पूर्ववत् लेप लगाकर दीपशिखा पर यन्त्र को तपाने से और मन्त्र का जप करने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है ॥ २०-२१ ॥

धत्तूरद्रवसंयुक्तं मर्दयेत्सर्षपं तथा ।
जपलेपनयोः पुत्र गुल्मरोगी भवेद्रिपुः ॥ २२ ॥
निम्बपत्रद्रवं चैव विषकण्टकजं तथा ।
विषतिन्दुकजं चैव त्रिविधं च समं समम् ॥ २३ ॥
त्रिकाललेपनं कुर्यात् षट्सहस्रं मनुं जपेत् ।
पक्षेण द्वादशाहेन मारणं च समं समम् ॥ २४ ॥

धतूर और सरसों को एक साथ पीसकर उस पिष्ट से यन्त्र में लेप लगाने से शत्रु को गुल्म रोग हो जाता है । नीम के पत्तों का रस वच्छनाग का काँटा एवं तिन्दुकजन्यविष तीनों को बराबर-बराबर लेकर एक साथ पीसे । तीनों कालों में यन्त्र में इसका लेप लगाकर छह हजार मन्त्र जपे । इससे पन्द्रह या बारह दिनों में मारण होता है, इसमें संशय नहीं है ॥ २२-२४ ॥

त्रिकालं लेपनं कुर्यात् षट्सहस्रं मनुं जपेत् ।
मर्द्दयेदारनालेन मारिचं त्रिफलां तथा ॥ २५ ॥
त्रिकालं लेपनं कुर्यात् त्रिकालं जपमाचरेत् ।
करपादादिदाहेन मण्डलाच्छत्रुमारणम् ॥ २६ ॥
गोमयैर्लेपनं दत्वा गुल्मरोगी भवेद्रिपुः ।
गोमूत्रं छागमूत्रं च मिश्रितं पूर्ववत्तथा ॥ २७ ॥
पित्तरोगी भवेच्छत्रुरर्द्धमण्डलमात्रतः ।
लेपनं छागरक्तेन भ्रान्तार्त्यैत्ति भवेद् ध्रुवम् ॥ २८ ॥
मत्कुणस्य च रक्तेन उन्मादी जायते रिपुः ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'यन्त्रलेपनक्रम' नाम दशमः पटलः ॥ १० ॥
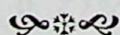
दारनाल में मरिच, आँवला, हरड़, बहेड़ा को पीसकर तीनों कालों में यन्त्र में लेप लगावे और जप करे । इससे हाँथ पैरों में जलन होने से चालिस दिनों में शत्रु का नाश होता है । उसी प्रकार गोबर लेप से शत्रु गुल्म रोगी हो जाता है । गोमूत्र व छागमूत्र को मिलाकर यन्त्र में लेप लगाने से बीस या चालिस

दिनों में शत्रु को पित्त की बीमारी होती है । बलूरे के खून के लेप लगाने से शत्रु लक्षण भ्रान्त हो जाता है । मत्कुण के खून का लेप लगाने से शत्रु पागल हो जाता है ॥ २५-२८ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'यन्त्रलेपनक्रम' नामक दशम पटल समाप्त ॥ १० ॥

...~~...

अथैकादशः पटलः

तर्पणप्रयोगनिरूपण

बगला देवी का ध्यान

नमस्ते बगलादेवीमासवप्रियभामिनीम् ।
भजेऽहं स्तम्भनार्थं च गदां जिह्वां च बिभ्रतीम् ॥ १ ॥

आसवप्रिय की भामिनी बगलादेवी का भजन स्तम्भन के लिये हम करते हैं। जो एक हाँथ से शत्रु की जीभ खींच रही है और दूसरे हाँथ में गदा धारण किये हुई हैं ॥ १ ॥

मन्त्रराज-तर्पण-प्रयोग जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

नमस्ते मौलिसंसेव्य नमः पन्नगभूषण ।
तर्पणेन प्रयोगं च वद मे करुणाकर ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—मुनियों के संसेव्य को प्रणाम है । पन्नग भूषण शिव को प्रणाम है । हे करुणाकर ! मुझे तर्पण प्रयोग बतलाइये ॥ २ ॥

कर्मभेद से गुड़ आदि तर्पण-द्रव्यों का निरूपण

ईश्वर उवाच—

पूजयेद्यन्त्रराजं च उपचारैश्च षोडशैः ।
तद्यन्त्रोपरि सन्तर्प्य तर्प्पणस्य विधिं शृणु ॥ ३ ॥

यन्त्रराज की पूजा षोडशोपचारों से करके यन्त्र पर तर्पण करे । उस तर्पण की विधि को सुनो ॥ ३ ॥

गुडोदकैस्तर्पणं च कुर्यात्पञ्चायुतं तथा ।
शान्तिकृत्यं भवेच्छीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ॥ ४ ॥

गुड़ के शर्बत से पचास हजार तर्पण करे तो शीघ्र कृपा एवं शान्ति होती है । यह विचार करने की जरूरत नहीं है ॥ ४ ॥

द्रवेण तर्पणं कुर्यात् पूर्वसंख्यासु पुत्रक ।
वश्यं सम्मोहनं चैव भवेत्तर्पणयोगतः ॥ ५ ॥
मोहनीद्रव्यसंमिश्रं जलेनैव तु तर्पणम् ।
नेत्रायुतप्रमाणेन जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ॥ ६ ॥

मद्य से पचास हजार तर्पण करने पर तर्पणयोग से वशीकरण और सम्मोहन होता है । मोहिनी द्रव्य मिश्रित जल से तीस हजार तर्पण सम्यक्रूप से करने पर जिह्वा का स्तम्भन होता है ॥ ५-६ ॥

गतिगर्भं च वाक्यानि गात्रं श्रोत्रं तथाक्षिकम् ।
क्षुधा तृष्णा च निद्रा च स्तम्भनं च भवेद् ध्रुवम् ॥ ७ ॥
निम्बार्कपत्रजद्रावैर्मिश्रितं कूपवारिणा ।
पञ्चायुतं तर्पणेन सद्यो विद्वेषणं भवेत् ॥ ८ ॥

इससे गति स्तम्भन, बोली, हाथ, गात्र, श्रोत्र, नेत्र, भूख, प्यास और नींद का स्तम्भन शीघ्र होता है । नीम और अकवन के पत्तों के रस में कुएँ का जल मिलाकर पचास हजार तर्पण करने से तुरन्त विद्वेषण होता है ॥ ७-८ ॥

वज्रार्कक्षीरमिश्रं च कान्ता च तर्पणेन च ।
उच्चाटनं भवेच्छत्रोरयुतत्रयमादरात् ॥ ९ ॥
प्रेतान्नं प्रेतभस्मं च प्रेताङ्गारं च पुत्रक ।
समं समं गरं ग्राह्यं जीवेनैव तु मिश्रितम् ॥ १० ॥
नेत्रायुतं तर्पणेन साक्षाद् रिपुविनाशनम् ।
हयारिपत्रजद्रावैर्मिश्रितं मारणं भवेत् ॥ ११ ॥

थूहर और अकवन के दूध में करक जल मिलाकर तीस हजार तर्पण करने से शत्रु का उच्चाटन होता है । पिण्डदान के पिण्ड का अन्न, चिता भस्म और चिता के कोयले को बराबर-बराबर लेकर रविवार में जल में मिलाकर पीसे । इस मिश्रण से तीस हजार तर्पण करने से पन्द्रह दिनों में शत्रु का नाश हो जाता है । पूर्वोक्त द्रव्यों में कनैल के पत्तों का रस मिलाकर तर्पण करने से मारण होता है ॥ ९-११ ॥

कर्पूरमिश्रितं तोयं पञ्चाशच्छतमादरात् ।
नित्यं च तर्पयेद् धीमान् मासमेकतन्द्रितः ॥ १२ ॥
पुराणज्वरमत्युग्रं पित्तरोगं विनश्यति ।
चन्दनाम्भस्तर्पणेन तापं कृत्रिमजं हरेत् ॥ १३ ॥
कस्तूरीमिश्रितं तोयै राज्यलाभो भवेद् ध्रुवम् ।

यैस्तु तर्पणमन्त्रेषु　　अयुतं रविसंख्यया ॥ १४ ॥
कुबेरसदृशः श्रीमान्　　जायते नात्र संशयः ।

कर्पूरमिश्रित जल से पाँच हजार तर्पण एक महीने तक प्रतिदिन करने से पुराना बुखार और उग्र पित्तरोग का नाश होता है । चन्दन मिश्रित जल से तर्पण करने पर कृत्रिम ताप नष्ट हो जाता है । कस्तूरीमिश्रित जल से तर्पण करने पर राज्य का लाभ होता है । सत्तर हजार तर्पण पैष्टी शराब से करने पर कुबेर के समान श्रीमान् होता है ॥ १२-१५ ॥

माध्वीद्रव्येण सम्मिश्रं　　पूजितं शुद्धवारिणा ॥ १५ ॥
रत्नायुतं तर्पणेन　　लक्ष्मीर्वा जायते ध्रुवम् ।
गोक्षीरतर्पणेनैव ईप्सितां　　सिद्धिमाप्नुयात् ॥ १६ ॥
तक्रेण तर्पणं चैव　　पित्तरोगं व्यपोहति ।
आरनालेन संतर्प्य　　जलदोषं च शाम्यति ॥ १७ ॥

पूजित माध्वी शराब में शुद्ध जल मिलाकर दश हजार तर्पण करने से अवश्य धनवान् हो जाता है । गो दूध से तर्पण करने से इच्छित निधि प्राप्त होती है । मट्ठा से तर्पण करने पर पित्तरोग का नाश होता है । आरनाल में तर्पण करने से जलदोष का प्रशमन होता है ॥ १५-१७ ॥

हरिद्राम्भस्तर्पणेन　　स्त्रीणामाकर्षणं भवेत् ।
शमंतकुसुमेनैव　　मिश्रितं जलतर्पणम् ॥ १८ ॥
पुत्रवान् जायते मर्त्यो　　अयुतेन न संशयः ।

हल्दी और जल के घोल में तर्पण करने से स्त्रियों का आकर्षण होता है। स्यमन्त फूलों में मिश्रित जल से दश हजार तर्पण करने से मनुष्य पुत्रवान् होता है ॥ १८-१९ ॥

कदलीफलगोक्षीरं शर्करा　　च समं समम् ॥ १९ ॥
पलाष्टकं च प्रत्येकं　　मिश्रितं जलतर्पणम् ।
मन्त्रसिद्धिर्विना　　सिद्धिर्भक्तिवैराग्यमेव वा ॥ २० ॥
भ्रमज्ञानं व्यपोहति　　नान्यथा शिवभाषणम् ।

केले के फल, गाय का दूध, शक्कर बराबर-बराबर आठ-आठ पल मिश्रित जल से तर्पण करने से मन्त्र सिद्धि, ज्ञान सिद्धि, भक्ति एवं वैराग्य की प्राप्ति होती है । भ्रम ज्ञान का नाश होता है । यह शिववचन अन्यथा नहीं है ।

छागरक्तेन सम्मिश्रं　　चार्चितं तैलतर्पणात् ॥ २१ ॥
मूकांश्च कुरुते　　प्राज्ञान् रिपुसंघाननेकशः ।

जलेन मिश्रितं पुत्र शोणितं विड्वराहजम् ॥ २२. ॥
वेदायुतं तर्पणेन उन्मादी जायते रिपुः ।
काकरक्तेन सम्मिश्रं तर्पणं शुद्धवारिणा ॥ २३ ॥
जातिभ्रष्टो भवेच्छत्रुः स भवेन्निन्दको भुवि ।

छाग रक्त मिश्रित पूजित तेल से तर्पण करने से गूंगा बोलने लगता है । घोड़े या गदहे के रुधिर में जल मिलाकर चालिस हजार तर्पण में अनेक शत्रु समूह और शत्रु पागल हो जाते हैं । कौवे के रक्त में जल मिलाकर तर्पण करने से संसार में शत्रु जातिभ्रष्ट और निन्दित हो जाता है ॥ २१-२४ ॥

उलूकरक्तसम्मिश्रं वारिणा तर्पणं तथा ॥ २४ ॥
व्रणेन म्रियते शत्रुरयुतद्वयसमंततः ।
श्वानरक्तेन सम्मिश्रं वारिणा तर्पणं तथा ॥ २५ ॥
श्वानवज्ज्वलते शत्रुर्म्रियते नात्र संशयः ।
मार्जाररक्तसम्मिश्रं तर्पणं वारिणा तथा ॥ २६ ॥
क्षयरोगी भवेच्छत्रुः षण्मासैर्म्रियते रिपुः ।
उष्टरीशोणितं मिश्रं तोये सन्तर्प्पयेत् सह ॥ २७ ॥
मासेन शत्रुमरणं मृकण्डुसदृशोऽपि वा ।
जपसंख्या य नोक्ता लक्षमेकं कुमारक ॥ २८ ॥
दिनसंख्या यत्र नोक्ता पक्षमेव न संशयः ॥ २९ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'तर्पणप्रयोगं' नाम एकादशः पटलः ॥ ११ ॥
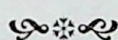
उल्लू के खून से मिश्रित जल से बीस हजार तर्पण करने से शत्रु घाव से मर जाता है । कुत्ते के खून को जल मिलाकर तर्पण करने से कुत्ते के समान भोंक-भोंक कर शत्रु मर जाता है, इससे संशय नहीं है । विडालरक्त मिश्रित जल में छह मास तक तर्पण करने से शत्रु क्षय रोग से मर जाता है । सर्पों के खून मिश्रित जल से रात में एक हजार तर्पण से शत्रु का विनाश शीघ्र हो जाता है । ऊँट रक्त मिश्रित जल से तर्पण करने पर भी शत्रु का नाश होता है । जहाँ जप संख्या कथित नहीं है, वहाँ पचास हजार जप संख्या मान्य है । जहाँ दिनों की संख्या कथित नहीं है, वहाँ पन्द्रह दिनों की अवधि मान्य है ॥ २४-२९ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'तर्पणप्रयोग' नामक एकादश पटल समाप्त ॥ ११ ॥

अथ द्वादशः पटलः

बगलागायत्रीविधि

चिन्मयी बगला का ध्यान

कौलागमैकसंवेद्यां सदा कौलागमाम्बिकाम् ।
भजेऽहं सर्वसिद्ध्यर्थं बगलां चिन्मयीं हृदि ॥ १ ॥

कौल-आगमों में एकमात्र जानने योग्य, कौल आगम साधकों की अम्बिका, चिन्मयी बगला को सभी सिद्धियों की प्राप्ति के लिये हम अपने हृदय में भजते हैं ॥ १ ॥

बगला गायत्री जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

नमस्ते सर्वसर्वेश गर्वितासुरभञ्जन ।
गायत्रीं बगलाख्यां च वद मे करुणाकर ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—सर्वसर्वेश को प्रणाम है । असुरों के घमण्ड को चूर करने वाले को प्रणाम है । हे करुणाकर! आप मुझे बगला-गायत्री बतलाइये ॥ २ ॥

गायत्री मन्त्रोद्धार

ईश्वर उवाच—

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि मन्त्रमाहात्म्यमेव च ।
पुरश्चर्याप्रयोगं च वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ॥ ३ ॥
ब्रह्मास्त्रायपदं चोक्त्वा विद्महेति पदं ततः ।
स्तम्भनेति पदं चोक्त्वा बाणाय तदनन्तरम् ॥ ४ ॥
धीमहीति पदं चोक्त्वा तन्नः शब्दं ततो(दो)च्यते ।
बगलापदमुच्चार्य उद्धरेच्च प्रचोदयात् ॥ ५ ॥

गायत्री-मन्त्र का उद्धार और उसका माहात्म्य भी कहता हूँ । हे पुत्र! उसका पुरश्चरण और उसके प्रयोगों को कहता हूँ । ब्रह्मास्त्राय पद कहकर विद्महे पद कहे, फिर स्तम्भन पद के बाद वाणाय कहे । धीमहि पद कहकर तन्नः शब्द कहे । बगला पद कहकर प्रचोदयात् कहे । इसके अनुसार बगला-गायत्री मन्त्र जो बनता है वह यह है—ब्रह्मास्त्रय विद्महे स्तम्भन वाणाय धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात् । इसके पहले ॐ ह्लीं लगा ले ।। ३-५ ।।

ऋष्यादि कथन के बाद पुरश्चरण, न्यास, ध्यान आदि निरूपण

गायत्री बगलानाम्नी सर्वसिद्धिप्रदा भुवि ।
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोयं(स्य) गायत्री समुदाहृतम् ।। ६ ।।
देवता बगलानाम्नी चिन्मयी शक्तिरूपिणी ।
ॐ बीजं चैव शक्तिर्ह्लीं कीलकं विद्महे पदम् ।। ७ ।।
चतुर्ल्लक्षं पुरश्चर्य्या तद्दशांशं च तर्प्पणम् ।
तद्दशांशं हुनेदाज्यं तावद्ब्राह्मणभोजनम् ।। ८ ।।
न्यासध्यानादिकं सर्वं कुर्यात् तन्मन्त्रतो जपेत् ।
प्रयोगानथ वक्ष्यामि गायत्रीबगलाह्वये ।। ९ ।।

ऋष्यादि अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः देवता चिन्मयी शक्ति रूपिणी बगला, ॐ बीजं ह्लीं शक्तिं कीलकं विद्महे जपे विनियोगः । यह बगला-गायत्री संसार में सभी सिद्धियों को देने वाली है । चार लाख जप करने से इसका पुरश्चरण होता है । जप का दशांश चालिस हजार तर्पण होता है। तर्पण का दशांश चार हजार हवन घी से होता है । हवन का दशांश चालिस ब्राह्मणों को भोजन कराना पड़ता है । इसके न्यास एवं ध्यान आदि से बगला मन्त्रराज के समान होते हैं। अब गायत्री-बगला के प्रयोगों को कहता हूँ ।। ६-९ ।।

कर्म भेद से गायत्री मन्त्र के प्रयोग

तारादि प्रजपेन्मन्त्रं मोक्षार्थी च कुमारक ।
शान्त्यर्थं च जपेत्पुत्र शारदाबीजपूर्वकम् ।। १० ।।
सम्मोहनार्थं प्रजपेत् कामराजपुरस्सरम् ।
स्तम्भनार्थं प्रजपेच्छक्तिदाहपूर्वकम् ।। ११ ।।
वाराहं शक्तिवाराहं स्तब्धमायापुरस्सरम् ।
प्रजपेन्मन्त्रमेतद्धि मारणं भवति ध्रुवम् ।। १२ ।।

हे कुमार! गायत्री के पहले प्राणवादि लगाकर मोक्ष के लिये जप करे । प्रणवादि से तात्पर्य ॐ ह्लीं है । शान्ति के लिये गायत्री के पहले शारदा बीज

'ऐं' लगाकर जप करे । सम्मोहन के लिये मन्त्र के पहले कामराज बीज क्लीं लगाकर जप करे । स्तम्भन के लिये मन्त्र के पहले बगला बीज 'ह्लीं' लगाकर जप करे । विद्वेषण के लिये मन्त्र के पहले 'हूं हूं' कहकर जप करे । उच्चाटन के लिये मन्त्र के पहले 'ह्रीं हूं' लगाकर जप करे । 'हूं ह्रीं हूं ह्लीं' बीजों को मन्त्र के पहले लगाकर जप करने से निश्चित रूप से मारण होता है ॥ १०-१२॥

वाग्भवादि जपेन्मन्त्रं विद्यासिद्धिर्भविष्यति ।
बालादि प्रजपेन्मन्त्रं कन्यकां क्षिप्रमाप्नुयात् ॥ १३ ॥
वाराहीबीजमध्यस्थां गायत्रीं लक्षजापनात् ।
भूलाभं (भो) जायते तस्य अनायासेन पुत्रक ॥ १४ ॥
श्रीबीजादि जपेत् पुत्र गायत्रीं बगलाह्वयाम् ।
कुबेरसदृशः श्रीमान् जायते नात्र संशयः ॥ १५ ॥

मन्त्र के पहले 'ऐं' लगाकर जपने से विद्या की सिद्धि होती है । मन्त्र के पहले ऐं क्लीं सौं बालामन्त्र लगाकर जपने से इच्छित कन्या से विवाह होता है । वाराही बीज 'हूं' को गायत्री के पहले और बाद में लगाकर सम्पुटित करके जपने से अनायास भूमि की प्राप्ति होती है । बगला गायत्री के पहले 'श्रीं' लगाकर जप करने से जापक साधक कुबेर के समान धनी हो जाता है । इसमें संशय नहीं है ॥ १३-१५ ॥

तार्क्ष्यबीजादि मन्त्रं प्रजपेद् ध्यानपूर्वकम् ।
नानाविषप्रयोगांश्च ग्रहरोगादिनाशनम् ॥ १६ ॥
भैरवीं बीजमाद्यं च प्रजपेच्च कुमारक ।
भूतप्रेतपिशाचाद्यास्तत्प्रयोगाद् व्यपोहति ॥ १७ ॥
जपेदमृतबीजानि गायत्रीं बगलाह्वयाम् ।
तापज्वरमहातापं शमयेत् क्रौञ्चभेदन ॥ १८ ॥
जपेच्च वायुबीजादि गायत्रीं बगलाह्वयाम् ।
क्षिप्रमुच्चाटनं चैव भवेच्छङ्करभाषणम् ॥ १९ ॥
अग्निबीजादिगायत्रीं प्रजपेद् बगलाह्वयाम् ।
महता(दा) तापसंयुक्तः पक्षाच्छत्रुर्मतो भवेत् ॥ २० ॥
मायादि प्रजपेत् पुत्र गायत्रीं बगलाह्वयाम् ।
इष्टसिद्धिर्भवेत् क्षिप्रं शिवस्य वचनं यथा ॥ २१ ॥
मन्त्रराजस्य गायत्रीं पादाद्यवयवं तथा ।
गायत्रीं च विना मन्त्रं न सिद्ध्यति कलौ युगे ॥ २२ ॥

तार्क्ष्यबीज 'क्षिप' को मन्त्र के पहले लगाकर जपने से नाना विष प्रयोग एवं ग्रह-पीड़ा रोगादि का नाश होता है । मन्त्र के पहले **भैरव बीज** ह्रीं लगाकर जपने से भूत-प्रेत पिशाचदि के प्रयोगों का नाश होता है । अमृत बीज 'वं' को मन्त्र के पहले लगाकर जपने से ताप ज्वर महाताप की शान्ति होती है । **वायुबीज** 'य' को पहले लगाकर बगला गायत्री जपने से शीघ्र उच्चाटन होता है, यह शङ्कर भाषित है । **अग्नि बीज** 'रं' को पहले लगाकर बगला गायत्री जपने से शत्रु महाताप से पीड़ित होकर मर जाता है । **माया बीज** 'ह्रीं' को पहले लगाकर बगला गायत्री के जप से राजा या राजपुत्र आजीवन वशीभूत होता है। प्रारम्भ में 'ह्रीं' लगाकर बगला गायत्री जपने से इष्ट सिद्धि शीघ्र मिलती है । ऐसा कथन शिव जी का है । बगला मन्त्र राज के पाद आदि अवयव गायत्री है । गायत्री के बिना मन्त्र सिद्ध नहीं होता ॥ १६-२२ ॥

पुरश्चरणकाले तु गायत्रीं प्रजपेन्नरः ।
मूलविद्यां दशांशं च मन्त्रसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥ २३ ॥
त्यक्त्वा तन्मन्त्रगायत्रीं यो जपेन्मन्त्रमादरात् ।
कोटिकोटिजपेनैव तस्य सिद्धिर्न जायते ॥ २४ ॥
जपसंख्या यत्र नोक्ता लक्षमेकं कुमारक ।
दिनसंख्या यत्र नोक्ता पक्षमेकं न संशयः ॥ २५ ॥
गायत्री बगलानाम्नी बगलायाश्च जीवनम् ।
मन्त्रादौ चाथ मन्त्रान्ते जपेद् ध्यानपुरस्सरम् ॥ २६ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'बगलागायत्रीविधिं' नाम द्वादशः पटलः ॥ १२ ॥
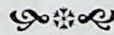
पुरश्चरण के समय मूल विद्या जप का दशांश गायत्री जप से मन्त्रसिद्धि अवश्य होती है । गायत्री मन्त्र को छोड़कर जो सादा मन्त्र जपते हैं उन्हें करोड़ों जप के बाद भी सिद्धि नहीं मिलती । हे कुमार! जहाँ जप संख्या उक्त नहीं है वहाँ एक लाख जप करना चाहिये । जहाँ दिनों की संख्या उक्त नहीं है वहाँ एक पक्ष अर्थात् पन्द्रह दिन समझना चाहिये । बगला नाम की गायत्री बगला का जीवन है । मन्त्र जप के पहले या मन्त्र जप के बाद में ध्यानपूर्वक गायत्री का जप करना चाहिये ॥ २३-२६ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'बगलागायत्रीविधि' नामक द्वादश पटल समाप्त ॥ १२ ॥
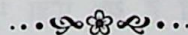
अथ त्रयोदशः पटलः

यन्त्रपूजाविधि

बगला ध्यान

निधाय पादं हृदि वामपाणिना
जिह्वां समुत्पाटनकोपसंयुताम् ।
गदाभिघातेन च फालदेशे
अम्बां भजेऽहं बगलां हृदब्जे ॥ १ ॥

उस अम्बा बगला को हम हृदय कमल में भजते हैं जो शत्रु के हृदय पर वायाँ पैर रख्कार बाएँ हाँथ से क्रुद्ध होकर वैरी का जीभ खींच रही हैं । वैरी के मस्तक पर गदा प्रहार कर रही है ॥ १ ॥

यन्त्र पूजा जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

श्रीकण्ठ श्रीगराधार शार्दूलाम्बरभूषण ।
शान्तवद् वद मे पूजां बगलायाश्च शङ्कर ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—हे श्रीकण्ठ! श्रीधरा का आधार, बाघम्बर भूषण शान्तवद् शङ्कर हमे बगला पूजन बतलाइये ॥ २ ॥

यन्त्र पूजा विधि

बिन्दुमध्ये च सम्पूज्य स्वर्णसिंहासनोपरि ।
चिन्मयीं बगलादेवीं सर्वसिद्धिप्रदायिकाम् ॥ ३ ॥
चतुर्भुजां च द्विभुजां गदां जिह्वां च बिभ्रतीम् ।
पीतवर्णा महापूर्णार्चयेन्मूलविद्यया ॥ ४ ॥

चक्र में बिन्दु में सोने के सिंहासन पर बैठी सर्वसिद्धि प्रदायिका चिन्मयी बगला देवी की पूजा करे । पूजा के समय चतुर्भुजा या दो भुजा का ध्यान करे। एक हाँथ में वैरी की जिह्वा और दूसरे हाँथ में गदा है। उनका वर्ण पीला है। नशे से गोल-गोल घूमती आँखे हैं यह पूजा मूल विद्या से करे ॥ ३-४ ॥
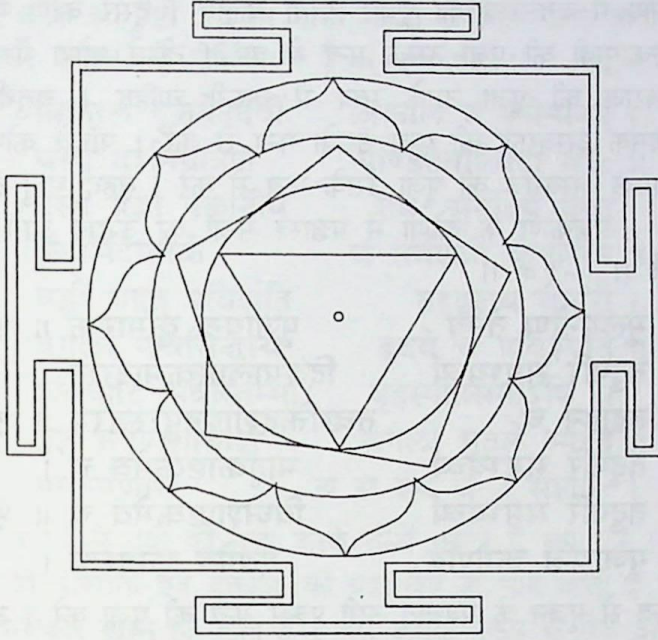
यन्त्रपूजन क्रम

त्रिकोणे पूजयेत् पुत्र वाणीं गौरीं रमां क्रमात् ।
तत्तद्बीजेन सम्पूज्य तदावाहनपूर्वकम् ॥ ५ ॥
पञ्चास्त्रं पञ्चकोणेषु वक्ष्ये तत्पूजनं क्रमात् ।
पूर्वकोणे तु सम्पूज्य अस्त्रं च बगलामुखीम् ॥ ६ ॥
द्वितीयकोणे सम्पूज्य अस्त्रराजं कुमारक ।
उल्कामुखीति विख्यातं तन्मन्त्रेणैव पूजयेत् ॥ ७ ॥
तृतीयकोणे सम्पूज्य अस्त्रराजं कुमारक ।
नाम्नी ज्वालामुखीं चैव तन्मन्त्रेणैव पूजयेत् ॥ ८ ॥
चतुर्थकोणे सम्पूज्य अस्त्रराजं कुमारक ।
जातवेदमुखीनाम्नीं तन्मन्त्रेणैव पूजयेत् ॥ ९ ॥
पञ्चमेषु च कोणेषु अस्त्रराजं कुमारक ।
बृहद्भानुमुखी ख्याता त्रिषु लोकेषु दुर्लभा ॥ १० ॥
पञ्चकोणेष्वेमेतत्पञ्चास्त्र सम्यगर्चयेत् ।

त्रिकोण के कोनों में क्रमशः सरस्वती, गौरी और लक्ष्मी की पूजा उनके बीजमन्त्रों से वाहनों के साथ करे। पञ्चास्त्र के पाँच कोनों में पूजा क्रम इस प्रकार का है—

पूर्व कोण में बगलास्त्र का पूजन करना चाहिए । दूसरे कोण में अस्त्रराज विख्यात उल्कामुखी की पूजा उसके मन्त्र से करे । तीसरे कोण में ज्वालामुखी नामक अस्त्रराज की पूजा उनके मन्त्र से करनी चाहिए । चतुर्थ कोण में जातमुखी नामक अस्त्रराज की पूजा उसके मन्त्र से करे । पाँचवें कोण में बृहद् भानुमुखी नामक अस्त्रराज की पूजा उसके मन्त्र से करे । बृहद् भानु तीनों लोकों में दुर्लभ है । पञ्चकोण के कोणों में पञ्चास्त्र मन्त्रों का उद्धार आगे के पटलों में कथित है ॥ ५-१० ॥

मूलमन्त्रेण तेनैव पूजायन्त्रं कुमारक ॥ ११ ॥
तदुपरि समभ्यर्च्य दिक्पालाष्टकमादरात् ।
तद्वाहनं च तच्छक्तिदशायुतपुरस्सरम् ॥ १२ ॥
तदुपरि समभ्यर्च्य मातृकाष्टकमेव च ।
तदुपरि समभ्यर्च्य विघ्नेशाष्टकमेव च ॥ १३ ॥
पूजायन्त्रं क्रमेणैव एवमेव कुमारक ।

मूल मन्त्र से पूजन के पश्चात् उसी प्रकार यन्त्र की पूजा करे । उसके बाहर अष्टदल में आठ दिक्पालों की पूजा उनके वाहन एवं शक्ति आदि आयुधों के साथ करे । अष्टदल के दलों में ही अष्टमातृकाओं की पूजा करे । अष्टदल में ही आठ विघ्नेशों की पूजा करे । अष्टदल में ही अष्ट-भैरवों की पूजा करे । हे कुमार! यही यन्त्र-पूजन का क्रम है ॥ ११-१३ ॥

शालग्रामशिलायां वा वह्निमण्डलमध्यमे ॥ १४ ॥
कन्यकां चाथवा पुत्र पूजयेद् बगलाम्बिकाम् ।
उत्तमं युवतीपूजा मध्यमं वह्निमण्डले ॥ १५ ॥
अधमं च शिलापूजा क्रम एष शिवोदितः ।
नमोऽतेनैव नाम्ना च पूजयेच्च कुमारक ॥ १६ ॥
एवं च पूजयेत् सम्यक् पुरश्चरणके विधौ ।
द्रव्यं यत्त्रिविधं प्रोक्तं पूजायां च विशेषतः ॥ १७ ॥
गौडी माध्वी च पैष्टी च गौडी चैवोत्तमोत्तमा ।
छागकुक्कुटमत्स्यं च बगलाप्रीतिकारकम् ॥ १८ ॥

बगलामुखी की पूजा शालग्राम शिला में या अग्निमण्डल में या कुमारी कन्या में करे । युवती पूजा उत्तम होती है । अग्निमण्डल में पूजा मध्यम होती है । शालग्राम शिला में पूजन अधम होता है । चतुर्थ्यन्त नाम के साथ 'नमः' लगाकर पूजा करे जैसे 'मङ्गलायै नमः' इत्यादि । पूजा में द्रव्य-विशेष भी तीन प्रकार के होते हैं । द्रव्य-विशेष में मदिरा तीन प्रकार की होती है—१. गौड़ी,

२. माध्वी और ३. पैष्टी । इनमें गौड़ी मदिरा सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है । छाग, मुर्गा, मछली बगला को प्रीतिकारक हैं ॥ १४-१८ ॥

त्रिकालं पूजयेद्देवीं त्रिकालं च जपेन्मनुम् ।
यस्य दर्शनमात्रेण पण्डितैर्वाग्विदां वरैः ॥ १९ ॥
तस्य प्रज्ञा पलानीय तमः सूर्योदये यथा ।
तेजोभेदमनेकं च सर्वशत्रौ कुमारक ॥ २० ॥
वह्नौ यद्वत् प्रविशंति तद्वद्वादय चातुरी ।
बगला मन्त्रसिद्धस्य हृदये च प्रविश्यति ॥ २१ ॥
प्रतिवादि भवेत्स्तम्भो बृहस्पतिसमोऽपि च ।
प्रज्ञाकर्षणशक्तिश्च बगला भूतले स्मरेत् ॥ २२ ॥
माकर्षणार्थं च स एव च न संशयः ।

तीनों कालों में देवी की पूजा करके तीनों कालों में जप करे । ऐसे साधक को देखते ही पण्डितों एवं वक्ताओं की प्रज्ञा वैसे ही भाग जाती है जैसे सूर्योदय होते ही अन्धकार खत्म हो जाता है । जैसे अनेक प्रकार के तेज अग्नि में प्रवेश करते हैं । वैसे ही सभी शत्रुओं की वाणीरूपा चातुरी बगला मन्त्र सिद्ध के हृदय में प्रवेश करती है । बृहस्पति के समान प्रतिवादी भी स्तब्ध हो जाते हैं । विद्या के आकर्षण के लिये प्रज्ञा-आकर्षणी शक्ति बगला का स्मरण करे । इससे विद्या का आकर्षण तुरन्त हो जाता है ॥ १९-२२ ॥

ब्रह्मचारी गृही वापि वानप्रस्थोऽथवा यतिः ॥ २३ ॥
बगलामन्त्रसिद्धस्तु सैव पूज्यो यतीश्वरः ।
बगलामन्त्रसिद्धश्च यत्र तिष्ठति भूतले ॥ २४ ॥
पञ्चक्रोशप्रमाणेन विद्वानेव च भासते ।
न भासते चान्यविद्या न स्मरन्न परामुखी ॥ २५ ॥
प्रयोगं चैव न भवेद् बगलार्चापरैः पुरा ।
ग्रसने सर्वविद्यानां बगला यैव भूतले ॥ २६ ॥
बगलाया विना मन्त्रं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
तत्सम्प्रदायविधिना साधयेद् बगलामुखीम् ।
एवं च बगलामन्त्रं मन्त्रराजमिदं भुवि ॥ २७ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'यन्त्रपूजाविधिं' नाम त्रयोदशः पटलः ॥ १३ ॥
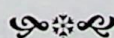
बगला मन्त्र को छोड़कर जो दूसरे की उपासना में जो कुछ करता है वे सभी पत्थर पर बीज डालने के समान हो जाते हैं । बगला मन्त्रसिद्ध ब्रह्मचारी, गृहस्थ या यति ही मुनीश्वरों का पूज्य होता है । बगला मन्त्रसिद्ध जिस भू-भाग में निवास करता है उसके इर्द-गिर्द पाँच कोश (दस मील) तक कोई भी अन्य विद्वान प्रसिद्ध नहीं होता । बगलार्चन के बिना अन्य विद्या नहीं भासती, न अन्य देवता रहते हैं और न प्रयोग ही सम्भव होते हैं । पृथ्वी पर सभी विद्याओं को ग्रसित करने वाली अकेले बगला हैं । बगला के वे मन्त्र तीनों लोकों में दुर्लभ है । सत् सम्प्रदाय विधि से बगलामुखी की साधना करे । इस प्रकार का बगला मन्त्र संसार में मन्त्रराज है ।। २३-२७ ।।

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'यन्त्रपूजाविधि' नामक त्रयोदश पटल समाप्त ॥ १३ ॥

...❧❀❧...

अथ चतुर्दशः पटलः

बगलार्चाविधि

बगला का ध्यान

सुधाब्धौ रत्नपर्य्यङ्के मूले कल्पतरोस्तथा ।
ब्रह्मादिभिः परिवृतां बगलां भावयेद् हृदि ॥ १ ॥

अमृत के सागर में कल्पवृक्ष के मूल के निकट रत्न सिंहासन पर विराजमान् और ब्रह्मा आदि देवताओं से घिरी हुई बगला को हम भजते हैं ॥ १ ॥

बगलार्चा-विधि जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

वीर विद्रूप विश्वेश चिदानन्दस्वरूपिणे ।
बगलार्चाविधिं चैव वद मे करुणाकर ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—चित-अचित चराचर में व्याप्त विश्वेश! चिन्दानन्द स्वरूप! हे करुणाकर! बगला के पूजन की विधि मुझे बतलाइये ॥ २ ॥

देश भेद से सृष्टि, स्थिति एवं संहार पूजा-क्रम का वर्णन

ईश्वर उवच—

सृष्टिं स्थितिं च संहारं पूजा च त्रिविधा कलौ ।
केरले सृष्टिरूपा च गर्भकौलागमक्रमात् ॥ ३ ॥
अर्चनं गौडदेशे च स्थितिमार्गं कुमारक ।
सारूपा अर्हदेशे तु संहारार्चनमेव च ॥ ४ ॥
गुप्तं कौलागमं नाम गौडदेशार्चनादिभिः ।
कामरूपागमं नाम संहारक्रमपूजनम् ॥ ५ ॥

कलियुग में सृ्ष्टि, स्थिति और संहार तीन प्रकार की पूजा होती है । केरल सम्प्रदाय में बगला पूजा सृष्टि-क्रम से होती है और गर्भ कौल आगम के क्रम

से होती है । गौड़ देश में पूजा स्थिति-क्रम से होती है । कामरूप कामाख्या में पूजा संहार-क्रम से होती है । गौड़ देश में गुप्त कौलागम के अनुसार पूजा होती है । कामरूप आगम की पूजा संहार-क्रम से होती है । सांख्यायन मुनि ने गौड़ागम का अवलम्बन लेकर इस आगम को लिखा है । हे पुत्र! उसमें सृष्टि-क्रम का अर्चन है ।

सृष्टि-क्रम में सौभाग्य-अर्चन विधि

लाटार्चनं चावलम्ब्य सांख्यायनमुनिस्तथा ।
उक्तवानागमं चैव सृष्टयर्थं श्रृणु पुत्रक ॥ ६ ॥
सर्वाङ्गसुन्दरीं श्यामां सर्वावयवशोभिनीम् ।
नवोढां पुष्पिणीं चैव प्रार्थयेद्विप्रकन्यकाम् ॥ ७ ॥
कृष्णाष्टम्यां चतुर्द्दश्यां पौर्णमास्यां कुमारक ।
अथवा भौमवारे च निशां भृगुजवासरे ॥ ८ ॥
सुवासिनीं च तैलेन कुर्यादभ्यङ्गनं तथा ।
तूलिकातल्पमानीत्वा आस्तीर्योदङ्मुखेषु ॥ ९ ॥
तस्योपरि ततस्तीर्य शमन्तैर्जातिचम्पकैः ।
कर्पूरं चैव कस्तूरीमिश्रितं चन्दनं तथा ॥ १० ॥
सर्वाङ्गे लेपनं कुर्याल्लक्ष्मीसूक्तेन बुद्धिमान् ।
पर्य्यंकोपरि तत्कन्यां चन्दनेन विलेपिताम् ॥ ११ ॥

सर्वाङ्गसुन्दरी, सभी अङ्गों से सुशोभित, नवोढ़ा, रजस्वला विप्रकन्या को पूजा के लिये प्रार्थना करे । कृष्णपक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी या पूर्णिमा तिथि में मङ्गलवार या शुक्रवार को रात में पूजा-गृह में कन्या को सुगन्धित तेल की मालिश करे । रूई का गद्दा बिछाकर उस पर उस कन्या को उत्तर मुख बैठाये। स्यमन्त, जाति, चम्पा, कपूर, कस्तूरी मिश्रित चन्दन का लेप पूरे शरीर में लक्ष्मी-सूक्त से लगावे । पलङ्ग पर बैठाकर चन्दन का लेप लगावे ॥ ६-११ ॥

ध्रुवाद्यैरिति मन्त्रेण कुर्याद्दक्षिणतोमुखीम् ।
उन्मुखेत्यर्चनं कुर्यात् श्रीसूक्तेन कुमारक ॥ १२ ॥
पादौ प्रसार्य तत्कन्यां गुप्तेनार्चनमाचरेत् ।
न्यस्त्वा षोढाद्वयं चादौ बगलापञ्जरं न्यसेत् ॥ १३ ॥

ध्रुवाद्यैरिति मन्त्र से कन्या को दक्षिण मुखी लेटावे । श्रीसूक्त से उसे ऊर्ध्वमुखी करे । उसके पैरों को पसार कर गुप्ताङ्ग का अर्चन करे । पहले दोनों षोढा न्यास करे । तदनन्तर बगला पञ्जर का न्यास करे ॥ १२-१३ ॥

कन्यां चैव न्यसेदेवं तत्तदङ्गानि संस्मरेत् ।
गन्धद्वारेति मन्त्रेण कुर्यात् कस्तूरिलेपनम् ॥ १४ ॥
मूलमन्त्रेण चाभ्यर्च्य पुष्पमालां समर्चयेत् ।
निवेदयेद् द्रव्यशुद्धिं तत्रैव जपमाचरेत् ॥ १५ ॥
शतं वाऽथ सहस्रं वा मन्त्रराजमिदं सुत ।
पुरश्चरणमध्ये तु प्रतिभार्गववासरे ॥ १६ ॥
अथवा पौर्णमास्यां वा सौभाग्यार्चनमाचरेत् ।

कन्या के अङ्गों का स्पर्श करते हुए न्यास करे । गन्ध द्वारा मन्त्र से कस्तूरी का लेप लगावे । तदनन्तर मूल मन्त्र से माला पहनावे । द्रव्य शुद्धि देकर जप करना चाहिए । इस मन्त्रराज का जप एक सौ या एक हजार की मात्रा में करना चाहिए । पुरश्चरण काल में प्रत्येक शुक्रवार में अथवा पूर्णिमा में सौभाग्यार्चन करना चाहिए ।। १४-१६ ।।

प्रयोग के पहले विधिवत् सौभाग्यार्चन

प्रयोगसिद्धिदं शस्तं मन्त्रसिद्धिकरं परम् ॥ १७ ॥
एतत्पूजां विना पुत्र प्रयोगं न भवेत् कलौ ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन प्रयोगादि च भूतले ॥ १८ ॥
सौभाग्यार्चां विना पुत्र न भवेज्जपकोटिभिः ।
अभिमानाष्टकं त्यक्त्वा त्यक्त्वा चैवेषणात्रयम् ॥ १९ ॥
त्यक्त्वा पञ्चेन्द्रियासक्तिं सौभाग्यार्चनमाचरेत् ।
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ॥ २० ॥
शीतोष्णे समतां कृत्वा सौभाग्यार्चनमाचरेत् ।
षोढाद्वयं च न ज्ञात्वा यः करोत्यर्चनं भुवि ॥ २१ ॥
स पतितो भवेत् पुंसां रौरवं नरकं व्रजेत् ।
बाह्याभ्यन्तरतः पुत्र अभेदज्ञानयोर्विना ॥ २२ ॥
सौभाग्यार्चनकर्त्तॄणामनन्तं शापमाप्नुयात् ।
सङ्कल्पं च विकल्पं च त्यक्त्वा विश्रान्तमानसः ॥ २३ ॥
कुर्यात् सौभाग्यसम्पूजां च नो चेद् भ्रष्टो भवेन्नरः ।
जितेन्द्रियः सुखं त्यक्त्वा कुर्यात् सौभाग्यपूजनम् ॥ २४ ॥
सुखापेक्षेण यत् कुर्याद् देवताशापमाप्नुयात् ।
स्वस्थादेशविधिं चैव न ज्ञात्वा क्रौञ्चभेदन ॥ २५ ॥

यह प्रयोग पुरुषों को परम मन्त्र सिद्धकारक है । इस पूजा के बिना कलियुग

में प्रयोग नहीं होता। इसलिये सभी यत्नों से प्रयोगार्थी प्रयोग करे। सौभाग्यार्चा के बिना पृथ्वी पर करोड़ों जप से भी मन्त्र सिद्धि नहीं मिलती। अभिमान अष्टक और तीनों ऐषणाओं को छोड़कर पाँचों इन्द्रियों की आसक्ति त्यागकर सौभाग्य अर्चन करे। सुख-दुःख को बराबर करके लाभ-हानि, जीत-हार, सर्दी-गर्मी को एक-समान समझ करके सौभाग्य अर्चन करे। दोनों षोढा न्यासों को जाने बिना जो अर्चन करता है वह नरकगामी होता है। बाहर भीतर में अभेद ज्ञान के बिना सौभाग्यार्चा न करे अन्यथा देवता शाप देते हैं। सङ्कल्पविकल्प का त्याग करे। शुद्ध मानस से जो सौभाग्य पूजा नहीं करते वे मनुष्य भ्रष्ट होते हैं। जितेन्द्रिय होकर और सुख को छोड़कर सौभाग्य पूजन करना चाहिये। जो सुख के लिये पूजा करता है वह देवता के शाप का पात्र बनता है ॥ १७-२५ ॥

सौभाग्य अर्चन में अपनी पत्नी आदि पूजा के विषय में सांख्यायन, मृकण्डु, दुर्वासा एवं मतङ्ग मुनि के मत

यः करोत्यर्चनं चैव स विप्रः पतितो भवेत्।
स्वपत्नीं भ्रातृपत्नीं वा गुरुभार्यामिथापि वा ॥ २६ ॥
अर्चयेत् षड्रसोपेतां सांख्यायनमतं त्विदम्।
दीक्षालयस्थां रजकीं कुलालगृहकन्यकाम् ॥ २७ ॥
पुलिन्दकन्यकां चैव मृकण्डुमतमादिशेत्।
अर्चयेद् ऋषिपत्नीं च पूर्वोक्तां लक्षणान्विताम् ॥ २८ ॥
अर्चयेद् विधिमार्गेण पूजा दुर्वाससम्मता।
सर्वलक्षणसम्पन्नां पुष्पिणीमर्चयेत्ततः ॥ २९ ॥
मतङ्गमुनिनोक्तं च सद्यः सिद्धिकरं भुवि।
इति मार्गमतं पुत्र नास्ति सिद्धिर्गुरोर्विना ॥ ३० ॥
तस्मात् सर्वप्रयत्नेनार्चयेद् गुर्वनुज्ञया ॥ ३१ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'बगलार्चाविधिं' नाम चतुर्दशः पटलः ॥ १४ ॥
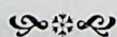
हे क्रौंचभेदन! स्वस्थावेश को जाने बिना जो अर्चन आरम्भ करता है वह विप्र पतित हो जाता है। सत्कन्या पूजन के समय जिसके मन में क्षोभ उत्पन्न होता है तो बृहस्पति समान होने पर भी वह साधक तुरन्त भ्रान्तचित्त होता है। मन और शरीर में वेदना उत्पन्न नहीं करनी चाहिए। जो वेदना उत्पन्न करता है, वह पतित होता है।

सांख्यायन का मत है कि अपनी पत्नी, भाभी या गुरु पत्नी यदि युवती हो तो उनकी पूजा करे । मृकण्डु का मत है कि दीक्षित धोबिन, कुम्हार की कन्या, या आदि वाणी पुलिन्द की कन्या का भी पूजन किया जा सकता है । दुर्वासा का मत है कि पूर्वोक्त लक्षणों वाली ऋषि पत्नी का पूजन भी अर्चन विधि मार्ग से किया जा सकता है । मातङ्ग मुनि का कथन है कि सभी लक्षणों वाली रजस्वला नारी का पूजन तुरन्त सिद्धिदायक होता है । हे पुत्र! यह सिद्धि मार्ग है इसमें गुरु के बिना सिद्धि नहीं मिलती । इसलिये सभी प्रयत्नों से गुरु की आज्ञा के अनुसार उपासना करे ।। २६-३१ ।।

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'बगलार्चाविधि' नामक चतुर्दश पटल समाप्त ॥ १४ ॥

अथ पञ्चदशः पटलः

पञ्चास्त्रविद्यावर्णनम्

स्तम्भनास्त्र स्वरूपिणी बगला का ध्यान

पीतवर्णां मदाघूर्णां दृढपीनपयोधराम् ।
वन्देऽहं बगलां देवीं स्तम्भनास्त्रस्वरूपिणीम् ॥ १ ॥

ध्यान—स्तम्भनास्त्र स्वरूपिणी उन देवी बगला की हम वन्दना करते हैं जिनका वर्ण पीला है । जो नशे में मत्त है और जिनके दोनों स्तन स्थूल और दृढ़ हैं ॥ १ ॥

पञ्चास्त्र विद्या जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

राजराज स वै श्रीमान् रजताद्रिनिकेतन ।
पञ्चास्त्रविद्यां वद मे स्तम्भनाख्यान्सपावनान् ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—हे राजराज श्रीमान्, चाँदी के पर्वत के निकेतन में रहने वाले शर्व! सुपावनी स्तम्भन नामक पञ्चास्त्र विद्या को अब मुझे बतलाइये ॥ २ ॥

पञ्चास्त्र विद्या का वर्णन

ईश्वर उवाच—

आद्यास्त्रं बगलानाम्नी रणस्तम्भनकारणम् ।
उल्कामुखी द्वितीयं च स्तम्भनं भुवनत्रये ॥ ३ ॥
ज्वालामुखी तृतीयास्त्रं स्तम्भनं त्रिषु दैवतैः ।
जातवेदमुखी चैव चतुर्थास्त्रं कुमारक ॥ ४ ॥
ब्रह्माविष्णुमहेशानां स्तम्भनं नात्र संशयः ।
बृहद्भानुमुखी चास्त्रं पञ्चमं तु कुमारक ॥ ५ ॥

षट्पञ्चकोटिचामुण्डा कालिकादिशत सुत ।
सपादकोटि त्रिपुरा स्तम्भनास्त्रं च उत्तमम् ॥ ६ ॥

पहली वडवास्त्र नामक विद्या युद्ध का स्तम्भन करने वाली है । दूसरी उल्कामुखी नामक विद्या तीनों लोकों को स्तम्भित करने वाली है । तृतीयास्त्र ज्वालामुखी ऋषियों और देवताओं को भी स्तम्भित कर देने वाली है । चतुर्थास्त्र जातवेदमुखी विद्या कही गयी है । यह ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भी स्तम्भित करने वाली है । पञ्चमास्त्र विद्या का नाम बृहद् भानुमुखी है । यह छप्पन करोड़ चामुण्डा, सौ करोड़ काली और सवा करोड़ त्रिपुरा को भी स्तम्भन करने वाली है ॥ ३-६ ॥

बगलास्त्र विद्याओं का उद्धार और उनके प्रयोगों की विधि

पञ्चास्त्रोद्धारमतुलं तत्प्रयोगविधिं तथा ।
वक्ष्ये तस्योपसंहारं साम्प्रतं तव पुत्रक ॥ ७ ॥
तारं च विलिखेत् पूर्वं स्तब्धमायामतः परम् ।
वाराहं शक्तिवाराहं बगलामुखि चोच्चरेत् ॥ ८ ॥
ह्लां ह्लीं ह्लूं च ततोच्चार्य सर्वदुष्टपदं वदेत् ।
लङ्कारं दीर्घसंयुक्तं बिन्दुनादविभूषितम् ॥ ९ ॥
ह्लैं ह्लौं ह्लश्च ततश्चैव वाचं मुखं पदं वदेत् ।
स्तम्भयद्वितयं प्रोक्त्वा ह्लः ह्लौं ह्लैं च ततो वदेत् ॥ १० ॥
जिह्वां कीलय उच्चार्य ह्लूं ह्लीं ह्लां च ततः परम्।
बुद्धिं विनाशयोच्चार्य शक्तिवाराहमुच्चरेत् ॥ ११ ॥
वाराहं बगलाबीजं तारवर्मास्त्रसंयुतम् ।
रणस्तम्भनबाणं च दुर्लभं भुवि पुत्रक ॥ १२ ॥
पञ्चाशदुत्तरं पञ्चबीजबद्धं सुपावनम् ।
ऋषिरेवास्य मन्त्रस्य वसिष्ठः छन्दसां पुनः ॥ १३ ॥
पञ्चास्यदेवतामन्त्र रणस्तम्भनकारिणी ।
न्यासविद्यां च कर्त्तव्यं पूर्वोक्तं मन्त्रराजवत् ॥ १४ ॥
ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि बगलामुखिदेवता ।
पीताम्बरधरां देवीं द्विसहस्रभुजान्विताम् ॥ १५ ॥
अर्द्धजिह्वां गदां चार्द्धं धारयन्तीं शिवां भजे ।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमर्कलक्षं सुबुद्धिमान् ॥ १६ ॥
तालकेन हुनेल्लक्षं ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः ।

गजाश्वरथसामन्तकोटिकोटिबलं तथा ॥ १७ ॥
निर्वीर्यो जायते सद्यो मृतशेषः पलायते ।
प्रयोगान्ते समभ्यर्च्य मन्त्रसंस्कारमाचरेत् ॥ १८ ॥
संस्कारेण विना मन्त्रं साधकस्य प्रमादकृत् ।
लोकालोकस्तम्भनं च नाम्ना उल्कामुखी तथा ॥ १९ ॥

इनके उपसंहार को कहता हूँ । हे पुत्र! शान्ति से इन्हें सुनो ।

प्रथमास्त्र बड़वामुखी

श्लोक ८-१२ का उद्धार करने पर वडवामुखी अस्त्र मन्त्र होते हैं । ॐ ह्लीं हूँ ग्लौं बगलामुखि ह्लां ह्लीं ह्लूं सर्वदुष्टानां ह्लै ह्लौं ह्लः वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ह्लः ह्लौं ह्लै जिह्वां कीलय ह्लूं ह्लीं ह्लां बुद्धि विनाशय ग्लौं हूँ ह्लीं ॐ हूँ फट् । इसमें ५५ अक्षर हैं ।

विनियोग—ॐ अस्य श्री बड़वामुखी अस्त्र मन्त्रस्य वशिष्ठ ऋषिः पंक्ति छन्दः, युद्धस्तम्भनकारिणी श्री बगलामुखी देवता, लं बीजं हं शक्तिः ईं कीलकं श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास—श्री वशिष्ठ ऋषये नमः शिरसि । पंक्ति छन्दसे नमः मुखे । रणस्तम्भनकारिणी श्री बगलामुखी देवतायै नमः हृदि । लं बीजाय नमः गुह्ये । हं शक्तये नमः पादयोः । ईं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे । श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

करन्यास—ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्लीं बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हूँ । ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय कनिष्ठाभ्यां वौषट् । ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ॐ ह्लीं स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादि षडङ्गन्यास

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः हृदि । ॐ ह्लीं बगलामुखी शिरसे स्वाहा शिरसि । ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां शिखायै वषट् शिखा । ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हूँ ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ॐ ह्लीं स्वाहा अस्त्राय फट् ।

न्यास के बाद बडवामुखी देवता का ध्यान करे ।

पीताम्बरधरां देवीं द्विसहस्त्रभुजान्विताम् ।
साध्य जिह्वा गदा चापं धारयन्तीं शिवां भजे ॥

देवी के वस्त्र पीले हैं। दो हजार भुजाएँ हैं। एक हाथ से साध्य के जीभ को खींच रही हैं। दूसरे हाथों में गदा और धनुष वाण है। ऐसा ध्यान करके बुद्धिमान् साधक एक लाख मन्त्र जप करे। ताड़फल (नारियल) से एक लाख हवन करे और ब्राह्मणों को भोजन करावे। इससे घोड़े, हाथी, रथ सामन्त करोड़ों सैनिक निर्बल हो जाते हैं और तत्काल मर जाते हैं, बचे हुए भाग जाते हैं। प्रयोग के अन्त में सम्यक् रूप से पूजा करे और मन्त्र संस्कार करे। संस्कार के बिना मन्त्र साधक को प्रमादी बना देता है ॥ ७-१९ ॥

उल्कामुखी अस्त्र विद्या का उद्धार एवं उसके प्रयोग की विधि

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि शरजन्मन् समासतः।
तारं च स्तब्धमायां च शक्तिवाराहमेव च ॥ २० ॥
बगलामुखीपदं चोक्त्वा बीजत्रयं तु सर्व च।
दुष्टानां पदमुच्चार्य पूर्वबीजत्रयं वदेत् ॥ २१ ॥
वाचं मुखं पदं चोक्त्वा पूर्वबीजत्रयं वदेत्।
स्तम्भद्वितयं चोक्त्वा बीजत्रयं ततो वदेत् ॥ २२ ॥
जिह्वां कीलय उच्चार्य पुनर्बीजत्रयं वदेत्।
बुद्धिं विनाशयोच्चार्य पूर्वबीजत्रयं वदेत् ॥ २३ ॥
प्रणवं वह्निजायां च उल्कामुख्या अयं मनुः।
पञ्चाशदूर्द्ध्वं चैवाष्टबीजबद्धं सुपावनम् ॥ २४ ॥
ऋषिश्चाप्यग्निवाराहश्च छन्दः ककुभमेव च।
उल्कामुखी देवता च जगत्स्तम्भनकारिणी ॥ २५ ॥
बीजं च बगलाबीजं शक्तिः स्वाहासमन्वितम्।
कीलकं शक्तिवाराहं न्यासं पूर्ववदाचरेत् ॥ २६ ॥
ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदे कुमारक।
विलयानसङ्काशां वीरवेषेण संस्थिताम् ॥ २७ ॥
वीराम्नायमहादेवीं स्तम्भनार्थं भजाम्यहम्।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं मनुलक्षं कुमारक ॥ २८ ॥
प्रपञ्चस्तम्भनं कृत्वा स्वविद्यां च प्रकाशयेत्।
तालकेन हुनेत् पुत्र लक्षमेकं हुताशने ॥ २९ ॥
मन्त्रसिद्धिर्भवेत् पुत्र त्रैलोक्ये कीर्त्तिमान् भवेत्।
तस्याज्ञया जगत्सर्वं स्थावरं जङ्गमात्मकम् ॥ ३० ॥
कुमारक प्रवर्त्तन्ते सर्वाश्चर्यकरं भुवि।

गजाश्वरथसामन्तकोटिकोटिबलं तथा ॥ १७ ॥
निर्वीर्यो जायते सद्यो मृतशेषः पलायते ।
प्रयोगान्ते समभ्यर्च्य मन्त्रसंस्कारमाचरेत् ॥ १८ ॥
संस्कारेण विना मन्त्रं साधकस्य प्रमादकृत् ।
लोकालोकस्तम्भनं च नाम्ना उल्कामुखी तथा ॥ १९ ॥

इनके उपसंहार को कहता हूँ । हे पुत्र! शान्ति से इन्हें सुनो ।

प्रथमास्त्र बड़वामुखी

श्लोक ८-१२ का उद्धार करने पर वडवामुखी अस्त्र मन्त्र होते हैं । ॐ ह्लीं हूँ ग्लौं बगलामुखि ह्लां ह्लीं ह्लूं सर्वदुष्टानां ह्लै ह्लौं ह्लः वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ह्लः ह्लौं ह्लैं जिह्वां कीलय ह्लूं ह्लीं ह्लां बुद्धि विनाशय ग्लौं हूँ ह्लीं ॐ हूँ फट् । इसमें ५५ अक्षर हैं ।

विनियोग—ॐ अस्य श्री बड़वामुखी अस्त्र मन्त्रस्य वशिष्ठ ऋषिः पंक्ति छन्दः, युद्धस्तम्भनकारिणी श्री बगलामुखी देवता, लं बीजं हं शक्तिः ईं कीलकं श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास—श्री वशिष्ठ ऋषये नमः शिरसि । पंक्ति छन्दसे नमः मुखे। रणस्तम्भनकारिणी श्री बगलामुखी देवतायै नमः हृदि । लं बीजाय नमः गुह्ये । हं शक्तये नमः पादयोः । ईं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे । श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

करन्यास—ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्लीं बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हूँ । ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय कनिष्ठाभ्यां वौषट् । ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ॐ ह्लीं स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादि षडङ्गन्यास

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः हृदि । ॐ ह्लीं बगलामुखी शिरसे स्वाहा शिरसि । ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां शिखायै वषट् शिखा । ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हूँ ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ॐ ह्लीं स्वाहा अस्त्राय फट् ।

न्यास के बाद बडवामुखी देवता का ध्यान करे ।

पीताम्बरधरां देवीं द्विसहस्रभुजान्विताम् ।
साध्य जिह्वा गदा चापं धारयन्तीं शिवां भजे ॥

देवी के वस्त्र पीले हैं। दो हजार भुजाएँ हैं। एक हाथ से साध्य के जीभ को खींच रही हैं। दूसरे हाथों में गदा और धनुष वाण है। ऐसा ध्यान करके बुद्धिमान् साधक एक लाख मन्त्र जप करे। ताड़फल (नारियल) से एक लाख हवन करे और ब्राह्मणों को भोजन करावे। इससे घोड़े, हाथी, रथ सामन्त करोड़ों सैनिक निर्बल हो जाते हैं और तत्काल मर जाते हैं, बचे हुए भाग जाते हैं। प्रयोग के अन्त में सम्यक् रूप से पूजा करे और मन्त्र संस्कार करे। संस्कार के बिना मन्त्र साधक को प्रमादी बना देता है ॥ ७-१९ ॥

उल्कामुखी अस्त्र विद्या का उद्धार एवं उसके प्रयोग की विधि

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि शरजन्मन् समासतः ।
तारं च स्तब्धमायां च शक्तिवाराहमेव च ॥ २० ॥
बगलामुखीपदं चोक्त्वा बीजत्रयं तु सर्व च ।
दुष्टानां पदमुच्चार्य पूर्वबीजत्रयं वदेत् ॥ २१ ॥
वाचं मुखं पदं चोक्त्वा पूर्वबीजत्रयं वदेत् ।
स्तम्भद्वितयं चोक्त्वा बीजत्रयं ततो वदेत् ॥ २२ ॥
जिह्वां कीलय उच्चार्य पुनर्बीजत्रयं वदेत् ।
बुद्धिं विनाशयोच्चार्य पूर्वबीजत्रयं वदेत् ॥ २३ ॥
प्रणवं वह्निजायां च उल्कामुख्या अयं मनुः ।
पञ्चाशदूर्द्ध्वं चैवाष्टबीजबद्धं सुपावनम् ॥ २४ ॥
ऋषिश्चाप्यग्निवाराहश्च छन्दः ककुभमेव च ।
उल्कामुखी देवता च जगत्स्तम्भनकारिणी ॥ २५ ॥
बीजं च बगलाबीजं शक्तिः स्वाहासमन्वितम् ।
कीलकं शक्तिवाराहं न्यासं पूर्ववदाचरेत् ॥ २६ ॥
ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदे कुमारक ।
विलयानसङ्काशां वीरवेषेण संस्थिताम् ॥ २७ ॥
वीराम्नायमहादेवीं स्तम्भनार्थं भजाम्यहम् ।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं मनुलक्षं कुमारक ॥ २८ ॥
प्रपञ्चस्तम्भनं कृत्वा स्वविद्यां च प्रकाशयेत् ।
तालकेन हुनेत् पुत्र लक्षमेकं हुताशने ॥ २९ ॥
मन्त्रसिद्धिर्भवेत् पुत्र त्रैलोक्ये कीर्त्तिमान् भवेत् ।
तस्याज्ञया जगत्सर्वं स्थावरं जङ्गमात्मकम् ॥ ३० ॥
कुमारक प्रवर्त्तन्ते सर्वाश्चर्यकरं भुवि ।

सिद्धिं चतुर्विधां चैव एतन्मन्त्रस्य जापके ॥ ३१ ॥
इच्छया वर्त्तते सर्वमाश्चर्यकरमादरात् ।
नदी नदश्च रतिमान् नानापादपसङ्कुलम् ॥ ३२ ॥
आगच्छेत्याज्ञया तस्य पुनर्गच्छन्ति चादरात् ।
किन्न स्यात् पद्ययुक्तानि माहात्म्यं पदगं मनोः ॥ ३३ ॥
कामयेन्मन्त्रमेतद्धि क्रौंचभेदनकोविद ॥ ३४ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'पञ्चास्त्रविद्यावर्णनं' नाम पञ्चदशः पटलः ॥ १५ ॥

द्वितीयास्त्र उल्कामुखी विद्या में अण्ठावन अक्षर है । लोका-लोक स्तम्भन नामक उल्कामुखी के मन्त्र का उद्धार कहता हूँ । २०-२४ श्लोकों के उद्धार करने पर द्वितीयास्त्र उल्कामुखी मन्त्र इस प्रकार का बनता है—

ॐ ह्लीं ग्लौं बगलामुखि! ॐ ह्लीं ग्लौं सर्वदुष्टानां, ॐ ह्लीं ग्लौं वाचं मुखं पदं ॐ ह्लीं ग्लौं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं ग्लौ जिह्वां कीलय ॐ ह्लीं ग्लौं बुद्धिं विनाशय ॐ ह्लीं ग्लौं ह्लीं ॐ ग्लौं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं ग्लौं जिह्वा कीलय ॐ ह्लीं ग्लौ बुद्धि विनाशय ॐ ह्लीं ग्लौं ह्लीं ॐ स्वाहा । विनियोग—ॐ अस्य श्री उल्कामुखी अस्त्र मन्त्रस्य श्रीअग्नि वराह ऋषिः ककुप् छन्दः, जगत् स्तम्भनकारिणी श्रीउल्कामुखी देवता, ह्लीं बीजम्, स्वाहा शक्तिं ग्लौं कीलकं श्री उल्कामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास

श्री अग्नि वराहऋषये नमः, शिरसि । ककुप् छन्दसे नमः मुखे । जगत् स्तम्भनकारिणी श्रीउल्कामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः नमः सर्वाङ्गे । पूर्वोक्त प्रथमास्त्र मन्त्र के समान कर और अङ्ग न्यास करे ।

ध्यान

विलयानल सङ्काशां वीर वेर्षण संस्थिताम् ।
वीराम्नाय महादेवीं स्तम्भनार्थे भजाम्यहम् ॥

इस प्रकार का ध्यान करके चौदह लाख मन्त्र जप करे । प्रपञ्च स्तम्भन करके अपनी विद्या को प्रकाशित करे । ताड़ फल से एक लाख हवन करे । ऐसा करने से मन्त्रसिद्धि होती है । साधक तीनों लोकों में विख्यात हो जाता है । संसार के सभी स्थावर जङ्गम उसकी इच्छानुसार चलते हैं । वह संसार में

सर्वाश्चर्यकर्ता हो जाता है । इस मन्त्र का जप चार प्रकार से होता है । इच्छा करते ही सभी आश्चर्य हाँथ में आ जाते हैं । नदी, नद एवं नाना वृक्षों सहित पर्वत आज्ञा से आते हैं और फिर वापस चले जाते हैं । इस मन्त्र के माहात्म्य में कौन पदयुक्त नहीं है । मन्त्र जापकी साधक का माहात्म्य भी मन्त्र के समान ही बतलाया गया है । प्रख्यात्माओं के द्वारा गोपित भी तीनों लोकों से आकर्षित होता है । हे क्रौंचभेदन कोविद! इस मन्त्र को गुप्त रखते हैं । कोविद इस मन्त्र को चाहते हैं ।। २०-३४ ।।

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'पञ्चास्त्रविद्यावर्णन' नामक पञ्चदश पटल समाप्त ॥ १५ ॥
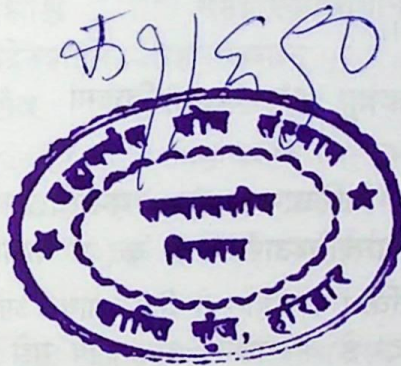
अथ षोडश: पटल:

वेदमुखी-अस्त्रविद्याकथनम्

स्तम्भनास्त्राधिदेवता बगला का ध्यान

बन्धूककुसुमा भासां बुद्धिनाशनतत्पराम् ।
वन्देऽहं वगलां देवीं स्तम्भनास्त्राधिदेवताम् ॥ १ ॥

स्तम्भनास्त्र के अधिदेवता उन बगला देवी की हम वन्दना करते हैं जो शत्रुओं की बुद्धि के विनाशन में तत्पर रहती है और जिनका वर्ण वन्धूक पुष्प के समान है ॥ १ ॥

अस्त्र विस्तार जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

नमस्ते गिरिजानाथ मन्त्रविद्यागमप्रभो ।
अधुना चास्त्रविस्तारं वद मे करुणाकर ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—हे गिरिजानाथ! आपको प्रणाम करता हूँ । हे मन्त्र विद्या विशारद! हे करुणाकर! अब आप मुझे वेदमुखी अस्त्रविद्या को बतलाइये ॥ २ ॥

जातवेदमुखी अस्त्र विद्या का उद्धार और उसके प्रयोग की विधि

ईश्वर उवाच—

तारं च स्तब्धमायां च प्रासादं च ततः परम् ।
पुनर्लिख्य स्तब्धमायां प्रणवं च ततः परम् ॥ ३ ॥
वगलामुखि पदं चोक्त्वा सर्वदुष्टपदं वदेत् ।
न(ल?) कारं दीर्घसंयुक्तं बिन्दुना भूषितं तथा ॥ ४ ॥
बीजपञ्चकमुच्चार्य वाचं मुखं पदं वदेत् ।
स्तम्भयद्वयमुच्चार्य पञ्चबीजानि चोच्चरेत् ॥ ५ ॥
जिह्वा कीलय उच्चार्य पञ्चबीजानि चोच्चरेत् ।

बुद्धिं विनाशययुगं पञ्चबीजानि चोच्चरेत् ॥ ६ ॥
वह्निजायासमायुक्तं षष्टिवर्णात्मकं मनुम् ।
जातवेदमुखीमन्त्रं जगदाश्चर्यकारकम् ॥ ७ ॥
अर्कपञ्चवर्णेन बद्धोऽयं मन्त्रनायकाः ।
ऋषिः कालाग्निरुद्रस्तु पंक्तिश्छन्द उदाहृतम् ॥ ८ ॥
जातवेदमुखी मन्त्रदेवता समुदाहृता ।
ॐ बीजं ह्लीं च शक्तिश्च हं कीलकमुदाहृतम् ॥ ९ ॥
पूर्ववन्न्यासविद्यां च ध्यानं वक्ष्यामि पुत्रक ।
जातवेदमुखी देवी देवता प्राणरूपिणी ॥ १० ॥
भजेऽहं स्तम्भनार्थं च स्तम्भनीं विश्वरूपिणीम् ।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं त्रिंशल्लक्षं सुपावनम् ॥ ११ ॥
चर्मधृग्वसनो भूत्वा चिन्तितार्थप्रदं ध्रुवम् ।
गन्धर्वांश्चैव यक्षांश्च गरुडोरगपन्नागान् ॥ १२ ॥
वेतालडाकिनीप्रेतशाकिनीब्रह्मराक्षसान् ।
ऋषिदेवगणांश्चैव सिद्धानन्यांश्च पुत्रक ॥ १३ ॥

श्लोक ३-७ के उद्धार करने पर एकसठ अक्षरों का जातवेदमुख्यास्त्र मन्त्र इस प्रकार का होता है । ॐ ह्लीं ह्सौं, ह्लीं ॐ बगलामुखि! सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ जिह्वां कीलयं ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ बुद्धिं नाशय नाशय ॐ ह्लीं ह्सौ ॐ स्वाहा ।

विनियोग—ॐ अस्य श्री जातवेदमुखी अस्त्र मन्त्रस्य श्रीकालाग्नि रुद्र ऋषिः पंक्तिः छन्दः श्री जातवेदमुखी देवता ॐ बीजं ह्लीं शक्तिः हं कीलकं श्रीजातवेदमुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास—श्री कालाग्निरुद्र ऋषये नमः शिरसि, पंक्तिः छन्दसे नमः मुखे, श्रीजातवेदमुखी देवतायै नमः हृदि । ॐ बीजाय नमः गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः पादयोः, हं कीलकाय नमः बाहवे, श्रीजातवेदमुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

प्रथमास्त्र मन्त्र के समान करन्यास और हृदयादि षडङ्गन्यास करना चाहिए । तब ध्यान करना चाहिए ।

ध्यान

जातवेदमुखीं देवीं देवता प्राण रूपिणीम् ।
भजेहं स्तम्भनार्थं च चिन्मयी विश्वरूपिणीम् ॥

चिन्मयी विश्वरूपिणी प्राणरूपिणी जातवेदमुखी देवी को हम स्तम्भन के लिये भजते हैं ।

इस प्रकार का ध्यान करने के बाद सुपावन मन्त्र का तीस लाख जप मृग चर्म पहन कर करने से चिन्तित कार्य अवश्य होते हैं । गन्धर्व, अप्सरा, यक्ष, गरुड़, सर्प, नाग, वेताल, डाकिनी, प्रेतशाकिनी, ब्रह्मराक्षस, ऋषि, देवगण, सिद्ध और दूसरे मनुष्य का स्तम्भन होता है । शङ्करजी के द्वारा कथित यह वचन सत्य है ॥ ३-१३ ॥

ज्वालामुखी अस्त्र विद्या का उद्धार और उसके प्रयोग की विधि

अधुना स्तम्भयत्येतत् सत्यं शङ्करभाषणम् ।
तारं च स्तब्धमायां च वह्निबीजं च पञ्चकम् ॥ १४ ॥
प्रस्फुरद्वितयं चैव बीजं चैव त्रयोदश ।
ज्वालामुखी पदं चोक्त्वा वदेद् बीजं त्रयोदश ॥ १५ ॥
सर्वशब्दं ततोच्चार्य दुष्टानां पदमुच्चरेत् ।
बीजं त्रयोदशं चोक्त्वा वाचं मुखं पदं वदेत् ॥ १६ ॥
स्तम्भयद्वितयं चोक्त्वा पुनर्बीजं त्रयोदश ।
जिह्वां कीलय चोच्चार्य पुनर्बीजं त्रयोदश ॥ १७ ॥
बुद्धिं विनाशयं चोक्त्वा पुनर्बीजं त्रयोदश ।
वह्निजायासमायुक्तं ज्वालामुख्यमयं मनुः ॥ १८ ॥
शतोत्तरं भवेद्विंशद्बीजबद्धो मनुस्त्वयम् ।
अत्रिश्च ऋषिरेवात्र गायत्रीछन्द उच्यते ॥ १९ ॥
ज्वालामुखी देवता च स्तम्भनाय त्रिमूर्त्तिभिः ।
ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि न्यासं पूर्ववदाचरेत् ॥ २० ॥
ध्यानं विना भवेन् मूकः सिद्धमन्त्रोऽपि पुत्रक ।
ज्वालापुञ्जसटोन्मुक्तां कालानलसमप्रभाम् ॥ २१ ॥
चिन्मयीं स्तम्भनीं देवीं भजेऽहं विधिपूर्वकम् ।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमर्कलक्षं सुबुद्धिमान् ॥ २२ ॥
तर्पणं च गवां क्षीरैस्तालकेन हुनेत् सदा ।
तर्पणं च चतुर्ल्लक्षं लक्षमेकं हुनेत्सदा ॥ २३ ॥
सहस्रद्वितयं चैव ब्राह्मणानां सुभोजयेत् ।
त्रिमूर्त्तिं स्तम्भयेन्मन्त्री पञ्चतत्वान्यपि क्षणात् ॥ २४ ॥

श्लोक १४-१८ का उद्धार करने पर चतुर्थास्त्र ज्वालामुखी मन्त्र में कुल

एक-सौ बीस अक्षर होते हैं । ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर बगलामुखी, ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय, ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर जिह्वां कीलय कीलय ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर बुद्धिं विनाशय विनाशय ॐ ह्लीं रां रीं रूं रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर स्वाहा ।

विनियोग—अस्य श्री ज्वालामुखी अस्त्र मन्त्रस्य श्री अत्रि ऋषिः गायत्री छन्दः, श्री ज्वालामुखी देवता, ॐ बीजं ह्लीं शक्तिः हं कीलकं श्री ज्वालामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास—अत्रिऋषये नमः शिरसे, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, श्री ज्वालामुखी देवतायै नमः हृदि, ॐ बीजाय नमः गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः पादयोः, हं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे । श्री ज्वालामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

षडङ्ग न्यास और कर न्यास पूर्वोक्त प्रथमास्त्र के समान करे । न्यास के बाद ध्यान करे ।

ज्वलत् पद्मासन युक्तां कालानलसम प्रभाम् ।
चिन्मयी स्तम्भिनी देवी भजेऽहं विधिपूर्वकम् ॥

कालाग्नि के समान प्रभा वाली ज्वलित कमल के आसन पर बैठी हुई चिन्मयी स्तम्भिनी देवी का मैं विधिवत् भजन करता हूँ । ध्यान के बिना सिद्ध मन्त्र भी मूक हो जाता है । इसलिये साधक ध्यान करके बारह लाख मन्त्र जप करे । गाय के दूध से तर्पण करके ताल (नारियल) से हवन करे । चार लाख तर्पण करे । एक लाख हवन करे । दो हजार ब्राह्मणों को भोजन करावे । मन्त्र सिद्ध होने पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश के सहित सभी पञ्च तत्वात्मक शरीरधारियों का स्तम्भन होता है । यह आश्चर्यजनक महामन्त्र संसार में मनुष्यों के लिये दुर्लभ है ॥ १४-२४ ॥

वृहद भानुमुख्यास्त्र विद्या का उद्धार और उसकी प्रयोग-विधि

आश्चर्यदं महामन्त्रं नराणां दुर्ल्लभं भुवि ।
इदानीं मन्त्रराजं च बृहद्भानुमुखाह्वयम् ॥ २५ ॥
मारणं स्तम्भबाणं च आश्चर्यं च कलौ युगे ।
तारं ह्लां ह्लीं च उच्चार्यं ह्लूं ह्लैं ह्लौं च ततः परम्॥ २६ ॥
ह्लस्तथाप्युच्चरेत् पुत्र ह्लां ह्लीं ह्लूं च ततः परम् ।
ह्लैं ह्लौं ह्लश्च ततश्चोक्त्वा बगलामुखि पदं वदेत् ॥ २७ ॥

सर्वशब्दं ततोच्चार्य दुष्टानां पदमुच्चरेत् ।
वाचं मुखं पदं चोक्त्वा स्तम्भयद्वयमुच्चरेत् ॥ २८ ॥
आद्यबीजं पुनश्चोक्त्वा उद्धरेत् पुनराद्यवत् ।
जिह्वां कीलय उच्चार्य पूर्ववद् बीजमुद्धरेत् ॥ २९ ॥
बुद्धिं विनाशयोच्चार्य पूर्वबीजानि चोच्चरेत् ।
वह्निजायासमायुक्तो बृहद्भानुमुखीमनुः ॥ ३० ॥
सविता च ऋषिः ख्यातो गायत्रीछन्द एव च ।
देवता स्तम्भनार्थं च बृहद्भानुमुखी तथा ॥ ३१ ॥
बीजं च बगलाबीजं शक्तिर्माया कुमारक ।
कीलकं प्रणवं चात्र विनियोगस्ततः परम् ॥ ३२ ॥
पूर्ववन्न्यासविद्यां च तन्त्रराजवदाचरेत् ।
ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥ ३३ ॥
कालानलनिभां देवीं ज्वलत्पुञ्जशिरोरुहाम् ।
कोटिबाहुसमायुक्तां वैरिजिह्वासमन्विताम् ॥ ३४ ॥
स्तम्भनास्त्रमयीं देवीं दृढपीनपयोधराम् ।
मदिरामदसंयुक्तां बृहद्भानुमुखीं भजे ॥ ३५ ॥
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमर्कलक्षं कुमारक ।
तर्प्पयेत्तद्दशांशं च गुडोदकसमन्वितम् ॥ ३६ ॥
तालकेन हुनेत्तस्य दशांशं संस्कृताग्निना ।
ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात् तद्दशांशं कुमारक ॥ ३७ ॥

श्लोक संख्या २५-३० का उद्धार करने पर वृहदभानुमुखी पञ्चमास्त्र मन्त्र एक सौ छह अक्षरों का बनता है ।

मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लै ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ बगला मुखी ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लै ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ जिह्वा कीलय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लै ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः बुद्धि नाशय ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लै ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ ह्लीं ॐ स्वाहा ।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीबृहदभानु मुखी अस्त्रमन्त्रस्य श्री सविता ऋषिः गायत्री छन्दः श्री बृहदभानुमुखी देवता, ह्लीं बीजं, ह्लीं शक्तिः ॐ कीलकं, श्रीबृहदभानुमुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास—श्री सविता ऋषये नमः शिरसि । गायत्री छन्दसे नमः, मुखे, श्री वृहदभानु देवतायै नमः, हृदि, ह्लीं बीजाय नमः, गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः, पादयोः, ॐ कीलकाय नमः, सर्वाङ्गे ।

षडङ्ग न्यास और करन्यास पूर्वोक्त प्रथमास्त्र के समान करे । न्यास के बाद ध्यान करे । ध्यान के बिना सिद्ध मन्त्र भी मूक हो जाता है ।

कालानलनिभो देवीं ज्वलत् प्रेतशिरोरुहाम् ।
कोटिबाहुसमायुक्तां वैरिजिह्वासमन्विताम् ॥
स्तम्भनास्त्रमयी देवीं दृढ़पीनपयोधराम् ।
मदिरामदसंयुक्तां वृहद्भानुमुखी भजे ॥

देवी की प्रभा कालाग्नि के समान है । केश ज्वाला पुञ्ज के समान हैं । एक करोड़ हाथ हैं । वैरी का जीभ खींच रही हैं । देवी स्तम्भनास्त्ररूपिणी हैं। स्तन स्थूल और दृढ़ हैं । मदिरा के नशे में चूर हैं । ऐसी बृहदभानु मुखी देवी को हम भजते हैं । इस प्रकार ध्यान करके बारह लाख मन्त्र जप करे । गुड़ के शर्वत से दशांश तर्पण करे ॥ २५-३७ ॥

प्रयोग के बाद सौभाग्य अर्चन का आवश्यकत्व

मन्त्रान्ते च प्रकर्त्तव्यं सौभाग्यार्चनमादरात् ।
सौभाग्यार्चा विना पुत्र मन्त्रसिद्धिर्न जायते ॥ ३८ ॥
पञ्चास्त्रमन्त्रसिद्धिर्हि दिवि देवेषु दुर्लभा ।
गोपयेत् सर्वदा पुत्र गुप्ता वीर्यवती भवेत् ॥ ३९ ॥
न कर्त्तव्यः प्रयोगोऽस्य शपथादि कदाचन ।
यः करोति प्रयोगं च देवताशापमाप्नुयात् ॥ ४० ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'वेदमुखीअस्त्रविद्या' नाम षोडशः पटलः ॥ १६ ॥
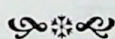
उसका दशांश हवन ताल (नारियल) से संस्कृत अग्नि में करे । उसका दशांश ब्राह्मण भोजन करावे। प्रयोग के बाद सौभाग्य अर्चन करे । हे पुत्र! सौभाग्य अर्चन के बिना मन्त्रसिद्धि नहीं मिलती । यह पञ्चास्त्र मन्त्र देवताओं को भी दुर्लभ है । हे पुत्र! इसे सर्वदा गुप्त रक्खे । गुप्त रखने से यह वीर्यवती होती है । शपथादि प्रयोग कदापि नहीं करना चाहिये । जो प्रयोग करता है उसे देवता शाप देते हैं ।। ३८-४० ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'वेदमुखीअस्त्रविद्या' नामक षोडश पटल समाप्त ॥ १६ ॥
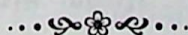
अथ सप्तदशः पटलः

शताक्षरीविधि

बगलाम्बिका का ध्यान

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं
वामेन शत्रुन परिपीडयन्तीम्।
पीताम्बरां पीनपयोधराढ्यां
सदास्मरेऽहं बगलाम्बिकां हृदि॥ १ ॥

ध्यान—जिह्वाग्रमादाय करद्वयेन छित्वा दधन्तीगुरु शक्ति युक्तां । पीताम्बरा पीनपयोधराढ्यां सदा स्मरेऽहं बगलाम्बिकां हृदि—इस वगलाम्बिका का स्मरण अपने हृदय में मैं सर्वदा करता हूँ । वे दो हाँथों से जीभ खींच रही हैं । अपने शक्तिशाली पैर से वैरी को दबाये हुई हैं । उनके वस्त्र पीले हैं । उनके स्तन स्थूल हैं ॥ १ ॥

शताक्षरी महामन्त्र जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

चन्द्रचूड नमस्तेऽस्तु इन्दिरापतिपूजित ।
शताक्षरीमहामन्त्रं बगलायाश्च मे वद ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—हे चन्द्रचूड़! आपको मैं प्रणाम करता हूँ । हे लक्ष्मीपति पूजित शङ्कर! आप बगला के शताक्षरी मन्त्र मुझे बतलाइये ॥ २ ॥

शताक्षरी मन्त्र का उद्धार

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि पुरश्चर्याविधिं तथा ।
प्रयोगं चोपसंहारं वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ॥ ३ ॥
स्तब्धमायां च वाग्बीजं मायामन्मथमेव च ।
श्रीबीजं शक्तिवाराहं बगलामुखि चोच्चरेत् ॥ ४ ॥

स्फुरद्वयं तथा चोक्त्वा सर्वशब्दं ततोच्चरेत् ।
दुष्टानां पदमुच्चार्य वाचं मुखं पदं वदेत् ॥ ५ ॥
स्तम्भयद्वयमुच्चार्य प्रस्फुरद्वयमुच्चरेत् ।
विकटाङ्गीपदं चोक्त्वा घोररूपीपदं वदेत् ॥ ६ ॥
जिह्वां कीलय उच्चार्य महाशब्दं ततोच्चरेत् ।
पश्चाद्भ्रमकरी चैव बुद्धिं नाशय उच्चरेत् ॥ ७ ॥
विरामयपदं चोक्त्वा सर्वप्रज्ञामयीति च ।
प्रज्ञां नाशय उच्चार्य उन्मादीकुरु युग्मकम् ॥ ८ ॥
मनोपहारिणीं चोक्त्वा स्तम्भमायां समुच्चरेत् ।
शक्तिवाराहबीजं च लक्ष्मीबीजं ततः परम् ॥ ९ ॥
कामराजं च ह्लल्लेखां वाग्भवं तदनन्तरम् ।
स्तब्धमायां ततोच्चार्य वह्निजायासमन्वितम् ॥ १० ॥

महाओजस्वी शताक्षरी मन्त्र का उद्धार कहता हूँ। हे मयूरवरवाहन षडानन! पुत्र! उसे सुनो । श्लोक ४-१० का उद्धार करने पर सौ अक्षरों का मन्त्र इस रूप का बनता है ।

ह्लीं ऐं ह्रीं क्लीं श्री ग्लौं ह्लीं बगलामुखि स्फुर स्फुर सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय प्रस्फुर प्रस्फुर विकटांगिघोररूपि जिह्वां कीलय, महा भ्रमकरि बुद्धिं नाशय विरामयी सर्वप्रज्ञामयि प्रज्ञां नाशय उन्मादं कुरु कुरु मनोपहरिणी ह्लीं ग्लौं श्री क्लीं ह्रीं ऐ ह्लीं स्वाहा । बगला का यह शताक्षरी मन्त्र परम पावन है ।। ३-१० ।।

ऋष्यादि न्यास

शताक्षरीमहामन्त्रं वगलानाम पावनम् ।
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽस्य गायत्री समुदाहृता ॥ ११ ॥
देवता वगलानाम्नी जगत्स्तम्भनकारिणी ।
ह्लौं बीजं शक्तिरित्येवं वाग्भवं कीलकं तथा ॥ १२ ॥
पूर्वोक्तां न्यासविद्यां च वगलापञ्जरादयः ।
न्यासानुक्तक्रमेणैव जपाद्यां पञ्च एव च ॥ १३ ॥
पीताम्बराधरां सौम्यां पीतभूषणभूषिताम् ।
स्वर्णसिंहासनस्थां च मूले कल्पतरोरधः ॥ १४ ॥
वैरिजिह्वाभेदानार्थं छुरिकां बिभ्रतीं शिवाम् ।
पानपात्रं गदां पाशं धारयन्तीं भजाम्यहम् ॥ १५ ॥

विनियोग—अस्य श्री बगलामुखी शताक्षरी महामन्त्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, जगत्स्तम्भनकारिणी श्री बगलामुखी देवता ह्लीं बीजं ह्रीं शक्तेः ऐं कीलकं जगत्स्तम्भनकारिणी श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास—श्री ब्रह्मा ऋषये नमः, शिरसि । गायत्री छन्दये नमः, मुखे जगत्स्तम्भनकारिणी श्री बगलामुखी देवतायै नमः, हृदि । ह्लीं बीजाय नमः, लिङ्गे, ह्री शक्तये नमः, पादयोः ऐं कीलकाय नमः, सर्वाङ्गे । जगत्स्तम्भन-कारिणी श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

करन्यास—ॐ ह्लां अगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्लै अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ह्लौ कनिष्ठाभ्यां वौषट् । ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अंगन्यास—ॐ ह्लां हृदयाय नमः । ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्लूं शिखायै वषट् । ॐ ह्लैं कवचाय हुं । ॐ ह्लौ नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ह्लः अस्त्राय फट् ।

ध्यान

इसके बाद इस प्रकार ध्यान करे—

पीताम्बरधरां सौम्यां पीतभूषणभूषिताम् ।
स्वर्णसिंहासनस्थां च मूले कल्पतरोरधः ॥
वैरि जिह्वा भेदनार्थं छुरिकां विभ्रति शिवाम् ।
पानपात्रं गदां पाशं धारयन्तीं भजाम्यहम् ॥

देवी शिवा के वस्त्र पीले हैं । वे सौम्य हैं और उनके भूषण पीले हैं । कल्प वृक्ष के मूल के निकट सिंहासन पर बैठी हैं । वैरी के जीभ को काटने के लिये हाँथ में चाकू लिये हुई है । हाँथों में पान पात्र एवं गदा पाश है । ऐसी देवी को हम भजते हैं ॥ ११-१५ ॥

जप-संख्या तर्पण आदि का वर्णन

एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमर्कलक्षं क्षपाशनाः ।
तर्प्ययेद्धेतुमिश्रेण वारिणा वाथ पुत्रक ॥ १६ ॥
जातिपञ्चकसम्मिश्रजलेन च कुमारक ।
पूजायुतं च सन्तर्प्य ह्यर्चितेन जलेन च ॥ १७ ॥

इस प्रकार के ध्यान के बाद बारह लाख मन्त्र जप करना चाहिए । मद्य-मिश्रित जल से तर्पण करने के बाद जाती चम्पा मिश्रित जल से तर्पण करे । पूजित जल से चालिस हजार तर्पण करना चाहिए ॥ १६-१७ ॥

कर्मभेद से हवन द्रव्य, आहुति संख्या एवं समय का वर्णन

त्रिमध्वक्तं पायसेन अथवा पायसाज्ययोः ।
चरुणा वा हुनेत् पुत्र सहस्रं तत्त्वसंख्यया ॥ १८ ॥
नानादेहरोगांश्च कृत्रिमग्रहसम्भवान् ।
यावकांश्च प्रयोगांश्च तुल्यधातुसमुद्भवान् ॥ १९ ॥
सद्योनाशनमायान्ति मन्त्रहोमेन साधकः ।
साज्यसक्तुघृताक्तं च शमन्तकुसुमेन वा ॥ २० ॥
षट्सहस्रं हुनेत् पुत्र स्थण्डिले वाथ कुण्डके ।
वशीकरं च सम्मोहं कीर्त्तिः प्रज्ञा भवेद् ध्रुवम् ॥ २१ ॥
तालकेन हुनेत् पुत्र सहस्रं वसुसंख्यया ।
कुण्डे चैव भगाकारे राजताग्नौ कलौ निशा ॥ २२ ॥
स्तम्भनं च भवेत् पुत्र नात्र कार्य विचारणा ।
अर्क्कैश्च पिचुमन्द्दैश्च समिधः संग्रहेन्नरः ॥ २३ ॥
प्रत्येकं त्रिसहस्रं च प्रादेशसमिधा क्रमः ।
मन्त्रं सर्वं समुच्चार्यं समिधाद्वयमेव च ॥ २४ ॥
हुनेद् ध्यानसमायुक्तः सद्यो विद्वेषणं भवेत् ।
विभीतकस्य समिधो ग्राह्यास्तु त्रिसहस्रकम् ॥ २५ ॥
षट्कोणकुण्डे जुहुयान्निशायां कृष्णपक्षके ।
स्थावरांश्च गिरींश्चैव नदीपादपसङ्कुलान् ॥ २६ ॥
क्षणादुच्चाटनं कुर्याद् होमस्याय प्रभावतः ।
निम्बतैलेन संयुक्तं शालीकुसुमं तथा ॥ २७ ॥
षट्कर्मनिर्माणमिद सुसिद्धं
शताक्षरीमन्त्रमशेषदुःखहम् ।
होमेन संस्तम्भनमाचरेद् बुधो-
त्विद्यासुसिद्धं मुनिगुह्यमादरात् ॥ २८ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'शताक्षरीविधि'
नाम सप्तदशः पटलः ॥ १७ ॥
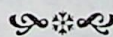
त्रिमधुर मिश्रित पायस अथवा गोघृत मिश्रित पायस या चरु से हवन करे तो पर्याप्त फल मिलता है । तीन हजार हवन तर्पण से करे । इससे नाना प्रकार के देहजरोग, कृत्रिम ग्रह सम्भूत रोग या चेटक प्रयोग अथवा तुल्य धातु

समुद्भूत रोगों का नाश शीघ्र हो जाता है। घृत मिश्रित शालि चावल के सत्तू और स्यमन्त कुसुम से छह हजार हवन स्थण्डिल या कुण्ड में करने से वशीकरण सम्मोहन के साथ कीर्ति और प्रज्ञा का लाभ होता है। आठ हजार हवन तालक से योनि कुण्ड की अग्नि में सोलह रातों तक करने से स्तम्भन होता है। अकवन और पिचुमन्द की प्रादेश के बराबर लम्बी तीन-तीन हजार समिधाओं को एकत्रित करे। सर्वमन्त्र कहकर एक अकवन और एवं पिचुमन्द की समिधा कुल दो-दो समिधाओं से ध्यानपूर्वक हवन करे तो तुरन्त विद्वेषण होता है। वहेड़े की तीन हजार समिधाओं से कृष्णपक्ष की रात में षट्कोण कुण्ड में हवन करने से सभी स्थावर नदी, पेड़ समूह के साथ पर्वत का भी उच्चाटन हो जाता है इस हवन का ऐसा ही प्रभाव है। नीम तेल से सिक्त सेमर के फूलों से देवता का ध्यान करते हुए हवन करने से मारण होता है। षट्कर्म निर्माण भञ्जक सुसिद्ध यह शताक्षरी मन्त्र सभी दुखों का विनाशक है। हवन करने से स्तम्भन होता है। यह विद्या सुसिद्ध है। मुनि लोग आदर से इसे गुप्त रखते हैं ॥ १८-२७ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'शताक्षरीविधि' नामक सप्तदश पटल समाप्त ॥ १७ ॥

अथ अष्टादशः पटलः

शताक्षरी-प्रयोग-विधिः

जिह्वास्तम्भनकारिणी बगला का ध्यान

नमस्ते जगतां देवीं जिह्वास्तम्भनकारिणीम् ।
भजेऽहं शत्रुनाशार्थं साधकासक्तमानसाम् ॥ १ ॥

जिह्वा का स्तम्भन करने वाली बगला देवी को मैं नमस्कार करता हूँ । साधक में आसक्त मन वाली बगला का भजन हम शत्रु के नाश के लिये करते हैं ॥ १ ॥

शताक्षरी हवन प्रयोग जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

सम्यग् ज्ञान महेशान नित्यनित्यस्वरूपक ।
चन्द्रचूड नमस्तेऽस्तु प्रयोगं वद मे प्रभो ॥ २ ॥

सत्य ज्ञानमय साक्षात् नित्य अनित्य स्वरूप धरने वाले चन्द्रशेखर शङ्कर को प्रणाम करता हूँ । अब शताक्षरी के प्रयोगों को कहिये ॥ २ ॥

विषम ज्वरादि विविध रोग-नाश के लिये नाना द्रव्यों से आहुति प्रयोग

ईश्वर उवाच—

षट्सहस्रं हुनेत् पुत्र दूर्वाहोममतन्द्रितः ।
सम्यग् विषज्वरं हन्ति वगलायाः प्रसादतः ॥ ३ ॥
कुशेन जुहुयात्तस्य तापज्वरहरं परम् ।
हुनेत् तावत् श्वेतदूर्वा ज्वरं चातुर्थिकं हरेत् ॥ ४ ॥
त्रिमध्वक्तं श्वेतदूर्वां षट्सहस्रं हुनेत् क्रमात् ।
नानाविधं गरं हन्ति नात्र कार्या विचारणा ॥ ५ ॥

दधिमिश्रं गुडूचीभिः शर्करागुडसम्मितम् ।
जुहुयात् षट्सहस्रं नानामेहनिवारणम् ॥ ६ ॥
सर्षपं लवणोपेतं पूर्ववज्जुहुयान्नरः ।
नाशयेद् गुल्मरोगं च औषधेन विना महत् ॥ ७ ॥
षट्सहस्रं हुनेत् पुत्र शर्कराज्यसमन्वितम् ।
पित्तोद्रकादिसर्वांश्च रोगान्नाशयति ध्रुवम् ॥ ८ ॥

आलस्यरहित होकर दूब से छह हजार हवन करे तो बगला की कृपा से ताप ज्वर तुरन्त नष्ट हो जाता है । जड़इया बुखार के निवारण के लिये छह हजार हवन कुशों से करे । चौथइया बुखार के निवारण के लिये छह हजार दुर्वा से हवन करने पर नाना प्रकार के ज्वरों का नाश होता है ।

मधुमेह के निवारण के लिये दही, शक्कर, गुड़ मिश्रित गुडुची से छह हजार हवन करे । सरसों में नमक मिलाकर पूर्ववत् छह हजार हवन करे तो गुल्म रोग का नाश औषधि के बिना ही हो जाता है । शक्कर में गोघृत मिलाकर छह हजार हवन करे तो पित्तोद्रेक आदि सभी रोगों का नाश हो जाता है ॥ ३-८॥

वशीकरण आदि अभीप्सित कामना भेद से अनेक-विध द्रव्यों से आहुति प्रयोग

शालिसक्तुं घृतोपेतं वशीकरणमुत्तमम् ।
लाजाहोमं षट्सहस्रं लभेद्वाञ्छितकन्यकाम् ॥ ९ ॥
हरिद्राखण्डहोमं तु षट्सहस्रं सुबुद्धिमान् ।
गर्भस्तम्भो भवेन्नारी सापि वश्या भवेद् ध्रुवम् ॥ १० ॥
केतकीदलहोमेन गणिका वश्यमाप्नुयात् ।
हुनेत् पद्मदलेनैव नेत्ररोगं विनश्यति ॥ ११ ॥
मल्लिकाकुसुमेनैव अधिका च मतिर्भवेत् ।
जातीफलेन जुहुयादुन्मत्तो जायते रिपुः ॥ १२ ॥
षट्सहस्रं देवकुसुमं शर्कराज्यसमन्वितम् ।
बुद्धिगं चैव चाञ्चल्यं संज्ञानमुन्मतिस्तथा ॥ १३ ॥
अलीकेन क्षुद्रमतिर्दुर्बुद्धिः सिद्धबुद्धिता ।
तत्क्षणान्नाशमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ॥ १४ ॥
मांसं सम्पुटसंयुक्तं द्रव्येण सममेव च ।
अयुतं जुहुयाद्रात्रौ सद्यो धनपतिर्भवेत् ॥ १५ ॥
मध्यवाक्तं छागमांसं च त्रिसहस्रं हुनेत् सुत ।

भूलाभं जायते शीघ्रं ग्रामादिपतिरेव च ॥ १६ ॥

शालि चावल और सत्तू में घी मिलाकर हवन करने से वशीकरण होता है। धान के लावा से छह हजार हवन करने से वशीकरण होता है। धान के लावा से छह हजार हवन करने से वांछित कन्या से विवाह होता है। हल्दी के टुकड़ा से छह हजार हवन करने पर गर्भ का स्तम्भन होता है और वह नारी बन्ध्या हो जाती है। केतकी फूल के दलों से हवन करने पर वेश्या वश में हो जाती है। कमल के दलों से हवन करने पर आँख के रोगों का नाश होता है। मल्लिका पुष्पों के हवन से मति वांछित होती है। जाती फल के हवन से शत्रु पागल होता है। शक्कर एवं गोघृत समन्वित देव पुष्प से छह हजार हवन करने पर उद्वेग, चाञ्चल्य, उच्चाटित बुद्धि, विवेकहीनता, क्षुद्र बुद्धि, दुर्बुद्धि मन्दबुद्धिता का तुरन्त नाश वैसे ही हो जाता है जैसे सूर्योदय के बाद अन्धकार समाप्त हो जाता है। मधु की शक्कर मिश्रित मुर्गे के मांस से दश हजार हवन रात में करने पर तुरन्त धन मिलता है। घी मधु शक्कर मिश्रित बकरे के मांस से तीन हजार हवन करने पर शीघ्र भूमि मिलती है और वह गाँव का अधिपति होता है ॥ ९-१६ ॥

बहुमूत्रादि रोग शमन प्रयोग

गौडीद्रव्येण जुहुयात् सहस्रं बाणसंख्यया।
बहुमूत्रादिरोगांश्च नाशयेत्तान् न संशयः ॥ १७ ॥
मध्वोद्रव्येण जुहुयात् षट्सहस्रं क्रमेण च।
ज्वरपैक्ष्यादिरोगांश्च सद्यो नाशनमाप्नुयात् ॥ १८ ॥
पैष्टीद्रव्येण जुहुयान्निशास्वष्टसहस्रकम्।
संग्रहग्रहणीरोगं सद्यो नाशनमाप्नुयात् ॥ १९ ॥

गौड़ी शराब से पाँच हजार हवन करने से वहुमूत्रादि दोषों का नाश होता है। माध्वी मदिरा से छह हजार हवन करने पर पीत्तज्वर आदि का शीघ्र नाश होता है। पैष्टी मदिरा से रात में आठ हजार हवन करने से संग्रहणीरोग का नाश शीघ्र होता है ॥ १७-१९ ॥

वश्य आकर्षण प्रयोग

अन्नेन अन्वहो हुत्वा अन्नदानपतिर्भवेत्।
घृतेन कान्तिमान् भूत्वा नारीणामात्मदो भवेत् ॥ २० ॥
क्षीरेण भ्रमनाशश्च दध्ना तापननाशनम्।
पञ्चगव्येन जुहुयात् पूर्ववत् पाप नाशयेत् ॥ २१ ॥

गोमूत्रेण हुनेन्मन्त्री षट्सहस्त्रं क्रमेण च ।
तालीमद्येन जुहुयात् स्त्रीणामाकर्षणं भवेत् ॥ २२ ॥

अन्न चाहने वाला अन्न से हवन करके अन्न दाताओं में श्रेष्ठ होता है । घी में हवन करने पर कान्तिमान होकर स्त्रियों के लिये कामदेव हो जाता है । दूध के हवन से भ्रम का नाश और दही के हवन से ताप का नाश होता है । ताप शान्ति के लिये पूर्ववत् पञ्चगव्य से हवन करे। गोमूत्र से छह हजार हवन करने पर शत्रु पत्नी रहित विवश होकर भ्रान्त हो जाता है । ताड़ी से हवन करने पर नारियों का आकर्षण होता है ॥ २०-२२ ॥

खर्जूरजेन द्रव्येण पुंसामाकर्षणं भवेत् ।
तिलतैलेन जुहुयात् सर्वाकर्षणमाप्नुयात् ॥ २३ ॥
एरण्डतैलेन जुहुयाद् वाचाकर्षणमाप्नुयात् ।
कुसुम्भतैलहोमेन काकगृध्राननेकशः ॥ २४ ॥
आकर्षणं भवेच्छीघ्रं खेचराः पक्षिजातयः ।

खजूर की ताड़ी के हवन से पुरुषों का आकर्षण होता है । तिल तैल हवन से सबों का आकर्षण होता है । रेड़ी के तेल से हवन करने पर हाँथियों का आकर्षण होता है । कुसुम्भ तेल से पूर्ववत् हवन करने पर सभी प्रकार के जलचरों का आकर्षण होता है। करञ्ज तैल के हवन से कौआ एवं गिद्ध अनेकों खेचर पक्षी जातियों का आकर्षण शीघ्र होता है ॥ २३-२४ ॥

शत्रु रोग कृत प्रयोग

पवना पानहोमेन अग्निमान्द्याद्रिपुः स्वयम् ॥ २५ ॥
रोगी च जायते मासाच्छिवस्य वचनं यथा ।
जुहुयादारनलोन पित्तरोगी भवेद्रिपुः ॥ २६ ॥
निम्बपत्रद्रवेणैव वातरोगी भवेद्रिपुः ।
मोहिनपत्रजद्रावैः श्लेष्मरोगी भवेद्रिपुः ॥ २७ ॥
अर्कपत्रद्रवेणैव क्षयरोगी भवेद्रिपुः ।
वज्रीक्षीरेण संयुक्तमारनालेन पुत्रक ॥ २८ ॥

कल्याण मन्दिर प्रकाशित सांख्यायन तन्त्र देखें । आरनाले के हवन से शत्रु अग्निमान्द्य से एक महीने में रोगी हो जाता है । आरनाल के हवन से शत्रु पित्तरोगी हो जाता है । मोहिनी पत्र के रस से हवन करने पर शत्रु को खाँसी की बीमारी हो जाती है । अकवन के पत्तों के रस से हवन करने पर शत्रु क्षय रोगी हो जाता है । तत्कारी पत्तों के रस में हवन करने पर शत्रु कर्म भ्रष्ट हो

जाता है । निर्गुण्डी के पत्तों के रस से हवन करने परशत्रु बुखार से पीड़ित होता है । कपास के पत्तों के रस से हवन करने पर शत्रु को कोष्ठबद्धता का रोग हो जाता है । हर्र्रे से हवन करने पर शत्रु को घाव होते हैं ॥ २५-२८ ॥

मारण प्रयोग

जुहुयात् षट्सहस्त्रं तु वगलाध्यानपूर्वकम् ।
नाडीव्रणसमायुक्तो षण्मासान्म्रियते रिपुः ॥ २९ ॥
गरं च तिलतैलं च आरनालयुतेन च ।
ग्रामे वा नगरे वाथ वगलाध्यानपूर्वकम् ॥ ३० ॥
स्फोटव्रणाश्च जायन्ते रिपोर्योजनमात्रतः ।
तिलतैलेन संयोज्य यावनालान्नमेव च ॥ ३१ ॥
जुहुयात् पूर्ववच्छत्रु मण्डलाच्छिन्नशीर्षकः ।
कर्पूरमिलितं चैव तिलतैलं हुनेत् सुधीः ॥ ३२ ॥
मारणं मण्डलाच्छत्रोर्नात्र कार्या विचारणा ॥ ३३ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'शताक्षरी-प्रयोग-विधिः'
नाम अष्टादशः पटलः ॥ १८ ॥

थूहर के दूध में आरनाल मिलाकर बगला ध्यान पूर्वक छह हजार हवन करने से शत्रु नाड़ीव्रण रोग से छह महीनों में मर जाता है । अकवन के दूध में आरनाल मिलाकर पूर्ववत् हवन करने से शत्रु भगन्दर व्रण रोगी होकर छह महीनों में मर जाता है । विष तिल तैल के आरनाल मिलाकर बगला ध्यान पूर्वक हवन करनेसे शत्रु ग्राम या नगर के एवं योजन तक स्फोटव्रण हो जाता है। शत्रु की मृत्यु हो जाती है । तिल तैल में आरनाल मिलाकर पूर्ववत् हवन करने पर चालिस दिनों में शत्रु मर जाता है । तिल तैल में कपूर मिलाकर हवन करने से चालिस दिनों में शत्रु मर जाता है ॥ २९-३३ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'शताक्षरी-प्रयोग-विधिः'
नामक अष्टादश पटल समाप्त ॥ १८ ॥

गोमूत्रेण हुनेन्मन्त्री षट्सहस्त्रं क्रमेण च ।
तालीमद्येन जुहुयात् स्त्रीणामाकर्षणं भवेत् ॥ २२ ॥

अन्न चाहने वाला अन्न से हवन करके अन्न दाताओं में श्रेष्ठ होता है । घी में हवन करने पर कान्तिमान होकर स्त्रियों के लिये कामदेव हो जाता है । दूध के हवन से भ्रम का नाश और दही के हवन से ताप का नाश होता है । ताप शान्ति के लिये पूर्ववत् पञ्चगव्य से हवन करे। गोमूत्र से छह हजार हवन करने पर शत्रु पत्नी रहित विवश होकर भ्रान्त हो जाता है । ताड़ी से हवन करने पर नारियों का आकर्षण होता है ॥ २०-२२ ॥

खर्जूरजेन द्रव्येण पुंसामाकर्षणं भवेत् ।
तिलतैलेन जुहुयात् सर्वाकर्षणमाप्नुयात् ॥ २३ ॥
एरण्डतैलेन जुहुयाद् वाचाकर्षणमाप्नुयात् ।
कुसुम्भतैलहोमेन काकगृध्रानने‍कशः ॥ २४ ॥
आकर्षणं भवेच्छीघ्रं खेचराः पक्षिजातयः ।

खजूर की ताड़ी के हवन से पुरुषों का आकर्षण होता है । तिल तैल हवन से सबों का आकर्षण होता है । रेड़ी के तेल से हवन करने पर हाँथियों का आकर्षण होता है । कुसुम्भ तेल से पूर्ववत् हवन करने पर सभी प्रकार के जलचरों का आकर्षण होता है। करञ्ज तैल के हवन से कौआ एवं गिद्ध अनेकों खेचर पक्षी जातियों का आकर्षण शीघ्र होता है ॥ २३-२४ ॥

शत्रु रोग कृत प्रयोग

पवना पानहोमेन अग्निमान्द्याद्रिपुः स्वयम् ॥ २५ ॥
रोगी च जायते मासाच्छिवस्य वचनं यथा ।
जुहुयादारनलोन पित्तरोगी भवेद्रिपुः ॥ २६ ॥
निम्बपत्रद्रवेणैव वातरोगी भवेद्रिपुः ।
मोहिनपत्रजद्रावैः श्लेष्मरोगी भवेद्रिपुः ॥ २७ ॥
अर्कपत्रद्रवेणैव क्षयरोगी भवेद्रिपुः ।
वज्रीक्षीरेण संयुक्तमारनालेन पुत्रक ॥ २८ ॥

कल्याण मन्दिर प्रकाशित सांख्यायन तन्त्र देखें । आरनाले के हवन से शत्रु अग्निमान्द्य से एक महीने में रोगी हो जाता है । आरनाल के हवन से शत्रु पित्तरोगी हो जाता है । मोहिनी पत्र के रस से हवन करने पर शत्रु को खाँसी की बीमारी हो जाती है । अकवन के पत्तों के रस से हवन करने पर शत्रु क्षय रोगी हो जाता है । तत्कारी पत्तों के रस में हवन करने पर शत्रु कर्म भ्रष्ट हो

जाता है । निर्गुण्डी के पत्तों के रस से हवन करने परशत्रु बुखार से पीड़ित होता है । कपास के पत्तों के रस से हवन करने पर शत्रु को कोष्ठबद्धता का रोग हो जाता है । हर्र्े से हवन करने पर शत्रु को घाव होते हैं ॥ २५-२८ ॥

मारण प्रयोग

जुहुयात् षट्सहस्त्रं तु वगलाध्यानपूर्वकम् ।
नाडीव्रणसमायुक्तो षण्मासान्म्रियते रिपुः ॥ २९ ॥
गरं च तिलतैलं च आरनालयुतेन च ।
ग्रामे वा नगरे वाथ वगलाध्यानपूर्वकम् ॥ ३० ॥
स्फोटव्रणाश्च जायन्ते रिपोर्योजनमात्रतः ।
तिलतैलेन संयोज्य यावनालान्नमेव च ॥ ३१ ॥
जुहुयात् पूर्ववच्छत्रु मण्डलाच्छिन्नशीर्षकः ।
कर्पूरमिलितं चैव तिलतैलं हुनेत् सुधीः ॥ ३२ ॥
मारणं मण्डलाच्छत्रोर्नात्र कार्या विचारणा ॥ ३३ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'शताक्षरी-प्रयोग-विधिः' नाम अष्टादशः पटलः ॥ १८ ॥

थूहर के दूध में आरनाल मिलाकर बगला ध्यान पूर्वक छह हजार हवन करने से शत्रु नाड़ीव्रण रोग से छह महीनों में मर जाता है । अकवन के दूध में आरनाल मिलाकर पूर्ववत् हवन करने से शत्रु भगन्दर व्रण रोगी होकर छह महीनों में मर जाता है । विष तिल तैल के आरनाल मिलाकर बगला ध्यान पूर्वक हवन करनेसे शत्रु ग्राम या नगर के एवं योजन तक स्फोटव्रण हो जाता है। शत्रु की मृत्यु हो जाती है । तिल तैल में आरनाल मिलाकर पूर्ववत् हवन करने पर चालिस दिनों में शत्रु मर जाता है । तिल तैल में कपूर मिलाकर हवन करने से चालिस दिनों में शत्रु मर जाता है ॥ २९-३३ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'शताक्षरी-प्रयोग-विधिः' नामक अष्टादश पटल समाप्त ॥ १८ ॥

अथैकोनविंशः पटलः

प्रयोगोपसंहारकथनम्

चतुर्भुजा बगला का ध्यान

चतुर्भुजां त्रिनयनां पीतवस्त्रधरां शुभाम्।
वन्देऽहं वगलां देवीं शत्रुस्तम्भनकारिणीम्॥ १ ॥

चार भुजाओं वाली, तीन नेत्रों वाली, पीले वस्त्रों से सुशोभित शिवा और शत्रुओं को स्तम्भन करने वाली बगला देवी की वन्दना मैं करता हूँ ॥ १ ॥

शताक्षरी मन्त्र-प्रयोग उपसंहार जिज्ञासा

स्कन्द उवाच—

नमस्ते योगिसंसेव्य नमः कारुणिकोत्तमम्।
प्रयोगं चोपसंहारं वद मे सर्वमङ्गल॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—योगी जिनकी सेवा में लगे रहते हैं, उन्हें प्रणाम, श्रेष्ठ करुणाकर! हे सर्वमङ्गल रूप शङ्कर! मुझे शताक्षरी-मन्त्र के प्रयोग और उपसंहार बतलाइये ॥ २ ॥

शत्रु मारणादि के प्रसङ्ग में विविध गुलिका प्रयोग और उनके निराकरण की विधि

ईश्वर उवाच—

प्रेताङ्गारमषीं कृत्वा सितवस्त्रेण बुद्धिमान्।
शल्यं तदन्तरे भस्म वैरिनाम च संलिखेत्॥ ३ ॥
एकार्णा वगलां देवी वेष्टयेत् सम्यगादरात्।
शताक्षरीं च संवेष्ट्य ईशानादिषु वेष्टयेत्॥ ४ ॥
तद्वस्त्रं गुलिकीकृत्य वेष्टयेत् प्रेतरज्जुना।
भौमवारे समानीय स्थापयेद् वृक्षकोटरे॥ ५ ॥

वृक्षमूले जपेन्मन्त्रममुतं ध्यानपूर्वकम् ।
पुत्रदारादिसंयुक्तः पक्षाच्छत्रुर्मृतो भवेत् ॥ ६ ॥

चिता के कोयले से स्याही बनाकर उजले वस्त्र पर हड्डी की कलम से बैरी का नाम और आकार बनावे । उस आकृति को बगला एकाक्षरी 'ह्लीं' से वेष्टित करे । उसके बाद शताक्षरी से ईशान से प्रारम्भ करके पूर्व तक वेष्टित करे । उस वस्त्र की गोली बनाकर चिता वस्त्र के धागों से उसे वेष्टित करे । मङ्गलवार को वृक्ष के खोढरे में उसे स्थापित करे । वृक्ष के मूल में बैठकर ध्यान पूर्वक दश हजार मन्त्र जप करे । पन्द्रह दिनों तक ऐसा करने से पुत्र-स्त्री सहित शत्रु की मृत्यु हो जाती है ॥ ३-६ ॥

भूर्जपत्रे लिखेन्नाम वगलाबीजमध्यमम् ।
कोटरे स्थापयेत् पुत्र विभीतकतरोस्तथा ॥ ७ ॥
जिह्वास्तम्भं भवेच्छत्रोः पक्षमात्रेण पुत्रक ।
बृहस्पतिसमो वापि वाचस्पतिसमोऽपि वा ॥ ८ ॥

बगला 'ह्लीं' के पेट में भोजपत्र पर शत्रु का नाम लिखे । बहेड़ा वृक्ष के खोढरे में उसे स्थापित करे । ऐसा करने से पन्द्रह दिनों में बृहस्पति या शुक्र के समान शत्रु जीभ का भी स्तम्भन हो जाता है ॥ ७-८ ॥

तालमध्ये लिखेन्नाम वगलाबीजमध्यमम् ।
प्राणप्रतिष्ठां कृत्वाऽथ निर्दहेद् दीपवह्निना ॥ ९ ॥
जपेत्तत्र सहस्रैकं शताक्षरमनुं तथा ।
जिह्वां स्तम्भं भवेच्छीघ्रं शेषभाषापतिः स्वयम् ॥ १० ॥

ताड़पत्र पर बगला 'ह्लीं' के उदर में शत्रु का नाम लिखकर उसमें प्राण-प्रतिष्ठा करे । दीप-शिखा पर उसे तर्पण करते हुए शताक्षर मन्त्र का एक हजार जप करे । इससे शेषनाग। और बृहस्पति के समान शत्रु के जीभ का भी स्तम्भन हो जाता है ॥ ९-१० ॥

प्रेतभाण्डे लिखेन्नाम प्रेताङ्गारेण साधकः ।
प्राणस्थापनकं कृत्वा रवौ रात्रौ सुबुद्धिमान् ॥ ११ ॥
प्रेताग्नौ प्रेतकाष्ठे तु निर्द्दहेत् प्रेतकानने ।
नग्नः श्मशानमध्ये तु जपेद् दक्षिणदिङ्मुखः ॥ १२ ॥
सहस्रं ध्यानपूर्वं तु प्रातर्यामे समासतः ।
एवं कृत्वा तु सप्ताहं ज्वरस्थो जायते भुवि ॥ १३ ॥
मासान्मृत्युवशो भूत्वा विनश्यति न संशयः ।

श्रीसूक्तमार्जनेनैव तन्मन्त्रेणाभिमन्त्रितम् ॥ १४ ॥
शतमष्टोत्तरं चैव सहस्रं वा कुमारक ।
मन्त्रितोदकपानेन पुण्यं सुखमवाप्नुयात् ॥ १५ ॥

चिता से घड़ा लेकर उसमें चिता के कोयले से शत्रु का नाम लिखकर प्राण-प्रतिष्ठा करे । रविवार की रात्रि में चिता की प्रज्वलित अग्नि में पितृकानन में उसे तपावे । श्मशान भूमि में साधक रात में दक्षिण मुख बैठकर ध्यानपूर्वक एक हजार जप करे । प्रातःकाल में जप को समाप्त करे । निरन्तर सात दिनों तक ऐसा करने से शत्रु बुखार से ग्रस्त हो जाता है । एक महीने में मृत्यु के वश में होकर नष्ट हो जाता है । श्रीसूक्त से मार्जन करने के बाद एक सौ आठ या एक हजार आठ मन्त्र जप से अभिमन्त्रित द्रव्य पीने से तत्काल सुख मिलने लगता है ॥ ११-१५ ॥

पुत्तलिकादि अभिचार प्रयोग

चिताभस्म चिताङ्गारं चितान्नं च कुमारक ।
मोहिनीपत्रजद्रावैर्मर्द्दयेत् सूक्ष्मतोऽनघ ॥ १६ ॥
समं समं रिपूच्छिष्टं मर्द्दयेत् कल्पयेत् पुनः ।
चतुरङ्गुलां पुत्तलीं कुर्यात् सर्वाङ्गसंयुताम् ॥ १७ ॥
हृदि तन्नाम चालिख्य ललाटे वगलां लिखेत् ।
सर्वाङ्गे चाग्निबीजं च लिखेद् बिन्दुं च निर्द्दहेत् ॥ १८ ॥
प्रेतवह्नौ प्रेतकाष्ठे प्रेतमांसं सुपुत्रक ।
जपेत्तत्रायुतं पुत्र रिपुर्गच्छेद्यमालये ॥ १९ ॥

चिता-भस्म, चिता का कोयला, प्रेतान्न को कोई साग के रस में महीन पीसे। उसी के बराबर शत्रु के जूठन को मिलाकर मर्दन करे । तदनन्तर चार अङ्गुल मान की शत्रु की पुत्तली बनावे । हृदय में बगला लिखकर नाम और मन्त्र को लिखे । ललाट में 'हुं' लिखे । सभी अङ्गों में अग्निबीज के साथ बिन्दु भी अंकित करे । चिता की लकड़ी को चिता की अग्नि से जलाकर उसमें उस पुत्तली को जला दे । वहीं पर बैठकर दश हजार मन्त्र जप करे तो शत्रु यमलोक में चला जाता है ॥ १६-१९ ॥

स्नुह्या क्षीरेण संयुक्तं मर्द्दयेत् श्वेतसर्षपैः ।
चतुरङ्गुलपुत्तल्यां लिखेत् पूर्ववदाचरेत् ॥ २० ॥
स्थापयेच्चुल्ह्यधोभागे यमघण्टकयोगतः ।
तत्रोपरि दिवारात्रौ अग्निं संस्थाप्य बुद्धिमान् ॥ २१ ॥

थूहर के दूध में अकवन का दूध मिलाकर उसमें पीला सरसों पीसे । उस पिष्ट से चार अङ्गुल मान की पुत्तली बनावे । उसमें पूर्ववत् लिख कर क्रिया करे। प्राण-प्रतिष्ठा करे । मिट्टी द्वारा निर्मित एक भाण्ड में थूहर के दूध के साथ उसे रखे । उस भाण्ड को चूल्हे के नीचे अधोमुख पुतली के साथ जमीन में नीचे गाड़ दे। उस पर दिन-रात आग जलाये रखे । एकाक्षर-मन्त्र का जप दिन-रात में दश हजार करे । इससे शत्रु को बुखार के साथ मसूरिका चेचक निकलने से मृत्यु हो जाती है ।। २०-२१ ।।

वगलाबीजमध्यस्थं साध्यनाम च संलिखेत् ।
वेष्टयेद्वगलामन्त्रं ईशानादिशताक्षरम् ॥ २२ ॥
प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा तु संहारक्रमतोऽर्चयेत् ।
शताक्षर्यर्कक्षीरैस्तु स्नुहीक्षीरेण लेपयेत् ॥ २३ ॥
एवं कृते सप्तरात्रं स शत्रुश्च मृतो भवेत् ।
मसूरिकाजरासक्तः पक्षाद् गच्छेद् यमालयम् ॥ २४ ॥
मन्त्रयेन्निम्बपत्रेण एकमेकं क्रमं क्रमम् ।
चन्द्रप्रसादमन्त्रेण शीतलाविद्यया तथा ॥ २५ ॥
सपर्णां क्षालयेत् क्षीरैः सदाहः शान्तिमाप्नुयात् ।

अकवन के पत्ते पर अकवन के दूध से बगला बीज 'ह्लीं' के पेट में साध्य का नाम लिखे । उसे ईशान से पूर्व तक बगला शताक्षरी मन्त्र से वेष्टित करे। प्राण-प्रतिष्ठा करके संहार-क्रम से अर्चन करे । अकवन और थूहर का दूध का लेप शताक्षरी मन्त्र से लगावे । उसे दीप शिखा पर तपावे । पुनः लेप लगाकर तपावे । इसके बाद शताक्षरी मन्त्र का जप एक सौ आठ बार करे । सात रातों तक ऐसा करने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है । मसूरिका ज्वर से पन्द्रह दिनों में मृत्यु हो जाती है । नीम के पत्तों से, क्रमशः ग्लौं, ह्सौं से या शीतला मन्त्र से या एकाक्षरी विद्या 'ह्लीं' से या शताक्षरी विद्या से या सपर्णी दूध से मसूरिका का क्षालन करने से ज्वर की जलन शान्त हो जाती है । इन मन्त्रों से मन्त्रित जल या दूध से हवन करने पर एक सप्ताह में उसी प्रकार की शान्ति मिलती है जैसे सूर्योदय के बाद अन्धकार नहीं रहता ।। २२-२५ ।।

तिक्तकोशातकीजातिः तापिच्छी सादरं तथा ॥ २६ ॥
धत्तूरकं च तन्मूर्ध्नि कारवेल्या फलाकृतिम् ।
षट्मनःशिलाबीजैश्च कुर्यात् पादद्वयं तथा ॥ २७ ॥
बदरीमूलतो गत्वा प्राणस्थानकं चरेत् ।
मन्त्रमुच्चारयेत्पुत्र तदन्तः शत्रुमुच्चरेत् ॥ २८ ॥

श्रोत्रालीगण्डभ्रूमध्ये जिह्वानासास्यशेफसौ ।
दक्षिणाभिमुखो भूत्वा वगलसम्पुटद्वयम् ॥ २९ ॥
ब्रह्मस्थाने तालुदेशे कण्टकार्नकसंख्यया ।
दक्षिणाभिमुखो भूत्वा रोपयेन्नग्नतस्तथा ॥ ३० ॥
पञ्च पञ्च करे रोप्य पार्श्वे कुक्षौ च पृष्ठके ।
कण्टकान् सप्तसंख्याकान् मन्त्रयेत् पूर्ववत्क्रमात् ॥ ३१ ॥
रोपयेत् पादयुग्मे तु प्रत्येकं द्वादशं तथा ।
मन्त्रपूर्वं च संरोप्य वदरीकण्टकांस्तथा ॥ ३२ ॥
पुत्तलीं प्रेतवस्त्रेण बद्ध्वा प्रादेशगगर्भके ।
श्मशानाग्नौ क्षिपेद् रात्रौ बलिं दद्याच्च कुक्कुटम् ॥ ३३ ॥
अश्मर्यदं रिपोरङ्गे नाडीशूलं भवेद् ध्रुवम् ।
तेनैव दुःखितः शत्रु पक्षाद् गच्छेद् यमालयम् ॥ ३४ ॥

तिक्त कोशातकी एवं जाती पिष्ट से पुत्तली का ललाट एवं उदर बनावे । धत्तूर से मस्तक, करवल्ली से हाँथ और खजूर एवं नीमपिष्ट से दोनों पैर बनावे। वेर के जड़ से रोम बनावे । पुतली में प्राण-प्रतिष्ठा करके मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। शत्रु का नाम लेकर पुत्तली में वेर के काँटों को क्रमशः कान, गाल, मुख, कण्ठ, पेट, ब्रह्मस्थान एवं तालु में बारह काँटों को गाड़ दे । दक्षिणमुख नग्न होकर रविवार में पाँच काँटों को हाँथों में, पार्श्वों में एवं कुक्षि में गाड़ दे । सात काँटों को मन्त्र बोलकर पीठ में गाड़ दे । बारह-बारह काँटों को दोनों पैरों में गाड़ दे। मन्त्रपूर्वक वेर के काँटों को रोपकर पुत्तली को प्रेत वस्त्र से बाँधकर वित्ते भर के गड्ढे में श्मशान में रात में गाड़ दे । तदनन्तर मुर्गे की बाग देवे। इससे शत्रु के अङ्गों में पीड़ा होने लगती है । उस कष्ट से शत्रु यमलोक में चला जाता है ॥ २६-३४ ॥

प्रयोग के उपसंहार (शान्त करने) की विधि

वक्ष्येऽहं चोपसंहारं जीवस्थोऽपि रिपुं(पुर) यथा।
रवौ रात्रौ बलिं दत्वा चानीत्वा साधकोत्तमः ॥ ३५ ॥
उत्पाट्य कण्टकान्यादौ क्षीरेण क्षालयेत् सुत ।
तच्छलाकां च संक्षाल्य निःक्षिपेत् कूपमध्यगे ॥ ३६ ॥
निःक्षिपेन् मन्त्रपूर्वं च एकैकं चोत्तरामुखः ।
शल्वकेनैव मन्त्रेण मन्त्रेयत् कलशोदकम् ॥ ३७ ॥
सहस्त्रवारं विधिवन् मन्त्रेण वारिभिः क्रमात् ।

प्रयोगं पीडितं तेन मार्जयेच्छाम्भवेन तु ॥ ३८ ॥
स्थापयेत् तेन मन्त्रेण मन्त्रसिद्धिस्तु पुत्रक ।
ताम्रपत्रे नदीतोये नदीवेगाग्रवेष्टितः ॥ ३९ ॥
तस्मिंश्च मन्त्रयेत् साध्यं मन्त्रेणैव शतं तथा ।
त्रिकालं प्राशयेत्तोयं मध्याह्ने मार्जनं तथा ॥ ४० ॥
त्रिदिनं चाथवा पञ्च ऋषिसंख्यादिनेषु च ।
एवं कृते पीडितस्य पीडां सूर्योदये यथा ॥ ४१ ॥
संहरेच्छान्तिमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ।
न ज्ञात्वा चोपसंहारं यः करोति नराधमः ॥ ४२ ॥
स जीवन्नेव चाण्डालो मृतः श्वानो भविष्यति ।
प्रयोगं चोपसंहारमभ्यसेच्च कुमारक ॥ ४३ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'प्रयोगोपसंहारकथनम्' नाम एकोनविंशः पटलः ॥ १९ ॥

अब प्रयोग का उपसंहार कहता हूँ । यदि शत्रु जीवित हो तब रविवार की रात में बलि देकर पुत्तली को गड्ढे से बाहर निकालकर उसमें से काँटों को निकालकर दूध से धो दे । लेखनी को धोकर कूप में डाल दे । मन्त्र बोलकर काँटों को भी एक-एक करके कुएँ में डाल दे । उत्तर मुख होकर शालुवेश मन्त्र से कलश जल को अभिमन्त्रित करे और शालुवेश मन्त्र के सहस्र धारे से पीड़ित का मार्जन करे । उस मन्त्र से तर्पण करे । ताम्रपात्र में वेगवती नदी का जल लेकर उसे शल्य मन्त्र के सौ या हजार जप से मन्त्रित करे । उस मन्त्रित जल को तीनों समय पिलावे । दोपहर में तीन बार मार्जन करे । तीन दिन, या पाँच दिन या सात दिनों तक मार्जन करे । ऐसा करने से पीड़ित की पीड़ा शान्त हो जाती है । देवता से शान्ति उसी प्रकार मिलती है जैसे सूर्योदय के बाद अन्धकार नहीं रहता । उपसंहार को जाने बिना जो प्रयोग करता है । वह नराधम जीवित रहने पर चाण्डाल होता है और मरने पर कुत्ते की योनि में जन्म लेता । साधक को प्रयोग और उपसंहार दोनों का अभ्यास करना चाहिए ॥ ३५-४३ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'प्रयोगोपसंहारकथन' नामक एकोनविंश पटल समाप्त ॥ १९ ॥
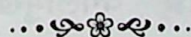
अथ विंशः पटलः

परविघ्नप्रयोगकथनम्

बगला देवी का ध्यान

सर्वावयवशोभाढ्यां समपीनपयोधराम् ।
हृदि सम्भावये देवीं वगलां सर्वसिद्धिदाम् ॥ १ ॥

सर्वसिद्धिदा बगला देवी का हृदय में ध्यान करते हैं । सभी अङ्ग शोभायुक्त है एवं दोनों स्तन स्थूल और बराबर हैं ॥ १ ॥

परविद्या-भेदन के उपाय के बारे में प्रश्न

स्कन्द उवाच—

नमस्ते पार्वतीनाथ नमः पन्नगभूषण ।
परविद्याभेदनं च वगलायाश्च मे वद ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—हे पार्वतीनाथ! आपको मेरा प्रणाम है । हे पन्नगभूषण! आपको मेरा प्रणाम है । अब बगला के परविद्या-भेदन का उपाय कहिये ॥ २ ॥

परविद्या भेदन मन्त्र का उद्धार उसके ऋष्यादि का वर्णन

ईश्वर उवाच—

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि मन्त्रसम्भेदनाविधिम् ।
प्रयोगं चोपसंहारं श्रृणु सर्वं कुमारक ॥ ३ ॥
उद्धरेत्तारमादौ तु स्तब्धमायां ततः परम् ।
श्रीर्मायां शक्तिवाराहं वाग्भवं मन्मथं तथा ॥ ४ ॥
विलिखेत्ताक्ष्यर्बीजं च वगलामुखी समुच्चरेत् ।
परप्रयोगमुच्चार्य ग्रसयुग्मं ततः परम् ॥ ५ ॥
पूर्ववन्नवबीजं च ब्रह्मास्त्रपदमुच्चरेत् ।

रूपिणीपदमुच्चार्य परविद्यापदं वदेत् ॥ ६ ॥
ग्रसनीति पदं चोक्त्वा भक्षद्वितयमुच्चरेत् ।
पूर्ववन्नवबीजं च परप्रज्ञापदं वदेत् ॥ ७ ॥
हारिणीति पदं चोक्त्वा प्रज्ञाख्यातियुगं वदेत् ।
पूर्ववन्नवबीजं च स्तम्भनास्त्रपदं वदेत् ॥ ८ ॥
रूपिणीपदमुच्चार्य बुद्धिं 'वाचायुगं वदेत् ।
पञ्चेन्द्रियपदं चोक्त्वा ज्ञानं भक्षद्वयं वदेत् ॥ ९ ॥
पूर्ववन्नवबीजं च वगलामुखि उच्चरेत् ।
हुँ फट् स्वाहा समायुक्तं वगलामन्त्रमुत्तमम् ॥ १० ॥
शतोत्तरं मन्त्रबीजमष्टाविंशतिरेव च ।
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽस्य गायत्री समुदाहृता ॥ ११ ॥

परविद्या-भेदन के मन्त्र का उद्धार और उसके प्रयोग की विधि, प्रयोग और उपसंहार कहता हूँ। हे कुमार! उन सबों को सुनो । श्लोक संख्या ४-१० का उद्धार करने पर एक सौ सत्ताइस अक्षरों का परविद्या-भेदन मन्त्र बनता है जो निम्नलिखित है ।

ॐ ह्लीं श्रीं ग्लौं ऐं क्लीं हुं क्षीं बगलामुखि परप्रयोग ग्रस ग्रस फट् ब्रह्मास्त्र रूपिणी परविद्या ग्रसिनि भक्षय भक्षय फट् परप्रज्ञाहारिणी प्रज्ञां भ्रंशय भ्रंशय फट् स्तम्भनास्त्ररूपिणी बुद्धिं नाशय नाशय पञ्चेन्द्रिय ज्ञानं भक्ष भक्ष फट् बगलामुखि हुं फट् स्वाहा ।

विनियोग, ऋष्यादि-न्यास, करन्यास, अङ्गन्यास, ध्यान एवं पुरश्चरण वर्णन

परविद्याभक्षणी च वगला देवता स्वयम् ।
अत्र प्रयोगं वक्ष्यामि मन्त्रस्यास्य कुमारक ॥ १२ ॥
पाशाङ्कुशेनान्तरितः शक्तिबीजेन विन्यसेत् ।
तत्तद्वागीश्वरीबीजैस्तद्वच्छ्रीबीजतो न्यसेत् ॥ १३ ॥
लघुषोढां च विन्यस्य क्रमादेव कुलेश्वरी ।
ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि क्रौञ्चभेदनकोविद ॥ १४ ॥
सर्वमन्त्रमयीं देवीं सर्वाकर्षणकारिणीम् ।
सर्वविद्याभक्षणीं च भजेऽहं विधिपूर्वकम् ॥ १५ ॥
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं लक्षमेकं क्षपाशनः ।
तर्पयेदासवेनैव तद्दशांशं कुमारक ॥ १६ ॥
छागमांसेन जुहुयान् मध्वाज्येन समन्वितम् ।

खण्डमामलकप्रख्यमयुतं च कुमारक ॥ १७ ॥
योगिनीं वीरपूजां च ह्याचरेच्च समादरात् ।
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तत्र नात्र कार्या विचारणा ॥ १८ ॥

विनियोग—ॐ अस्य श्री परविद्याभेदिनी बगलामुखी मन्त्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, परविद्याभक्षिणी श्रीबगलामुखी देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं श्री बगला देवी प्रसाद सिद्धि द्वारा परविद्याभेदनार्थं विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास—श्री ब्रह्मर्षये नमः, शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः, मुखे, परविद्याभक्षिणी श्री बगलामुखी देवतायै नमः, हृदि, आं बीजाय नमः, गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः, क्रों कीलकाय नमः, सर्वाङ्गे, श्री बगला देवी प्रसाद सिद्धि द्वारा परविद्याभेदनार्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

करन्यास—आं ह्रीं क्रो अङ्गुष्ठाभ्यो नमः, वद वद तर्जनीभ्यो स्वात वाग्वादिनी मध्यमाभ्यां वषट्, स्वाहा अनामिकाभ्यां हुं, ऐं क्ली सौः कनिष्ठाभ्यां वौषट्, ह्री करतल करपृष्ठाभ्यां फट् ।

अङ्गन्यास—आं ह्रीं को हृदयाय नमः, वद वद शिरसे स्वाहा वाग्वादिनी शिखायै वषट्, स्वाहा कवचाय हुं, ऐं क्लीं सौः नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्री अस्त्राय फट् ।

इसके बाद लघुषोढा न्यास करके ध्यान करे ।

सर्वमन्त्रमयीदेवी सर्वाकर्षणकारिणीम् ।
सर्व विद्याभक्षिणी च भजेऽहं विधिपूर्वकम् ॥

मैं उस बगला देवी का ध्यान करता हूँ । जो सर्वमन्त्रमयी है । जो सबो का आकर्षण कर सकती है । जो सभी विद्याओं का भक्षण कर सकती है ।

इस प्रकार का ध्यान करके एक लाख मन्त्र जप करे । उसका दशांश दस हजार आरुव से तर्पण करे । मधु और गोघृत आमला खण्ड समन्वित बकरे के मांस से दश हजार हवन करे । आदरपूर्वक योगिनी और वीर की पूजा करे । ऐसा करने से मन्त्र सिद्धि मिलती है । पुत्र! इसमें विचार अनावश्यक है ।

परविद्या-भेदिनी विद्या के नाना प्रयोग

परप्रयोगकालेषु मन्त्रमेतं कुमारक ।
सहस्त्रत्रितयं जप्त्वा स शत्रुरवशिष्यते ॥ १९ ॥
शत्रवश्च पुरश्चर्यां यत्र कुर्वन्ति पुत्रक ।
तत्रायुतं जपं कुर्यात् तत्र विघ्नं प्रजायते ॥ २० ॥

यत्र कुत्रापि रिपवस्तपः कुर्वन्ति निश्चलात् ।
तत्रायुतं जपेन्मन्त्रं ग्रसते परविद्यया ॥ २१ ॥
अयुतं तस्य मन्त्रन्तु अभिमन्त्र्य फलं भवेत् ।
द्रव्याभिमानिनो ये च ये च विद्याभिमानिनः ॥ २२ ॥
रूपाभिमानिनो ये च ये च यौवनमानिनः ।
यत्र कुत्रापि तिष्ठन्ति मन्त्रमेतं कुमारक ॥ २३ ॥
परविद्याभक्षणाख्यं मन्त्रं चैवायुतं जपेत् ।
श्वेतकेशान् समायाति दन्तशून्यो भवेद्रिपुः ॥ २४ ॥
सद्यो यौवनहीनं तु तमः सूर्योदयं यथा ।
रूपवान् व्रणयोगी च भवत्येव न संशयः ॥ २५ ॥
जात्याभिमानिनो ये च निन्दको भवति ध्रुवम् ।
तपोऽभिमानिनो ये च अङ्गहीनो विजायते ॥ २६ ॥
वैदिकं च परित्यज्य विपरीतकृतं भवेत् ।
विद्याभिमानिनः सर्वेऽप्युतं जपमाचरेत् ॥ २७ ॥
भवेद्विद्याविहीनोऽपि मुष्करो भवति ध्रुवम् ।
देहाभिमानी पुरुषो नष्टदेहो भवेद् ध्रुवम् ॥ २८ ॥
दौर्भाग्येन समायुक्तः सर्वं सम्मोहनं भवेत् ।
एतन्मन्त्रस्य माहात्म्यं न जानन्ति ऋषीश्वराः ॥ २९ ॥

परप्रयोग के समय इस मन्त्र का तीन हजार जप करे । इससे शत्रु का नाश हो जाता है । शत्रु जहाँ इसका पुरश्चरण करते हों, वहाँ इसका जप दश हजार करने से उनके पुरश्चरण में विघ्न होता है । जहाँ कहीं भी शत्रु निश्चल होकर तप करते हों, वहाँ पर दश हजार जप करने से तप करने वाले की विद्या ग्रस्त हो जाती है । उसके मन्त्र को दश हजार जप से मन्त्रित करने पर तप का फल मिलता है ।

धन के घमण्डी, विद्या के अभिमानी, रूप के घमण्डी और यौवन के अभिमानी जहाँ कहीं रहते हों वहाँ पर इस परविद्याभक्षक मन्त्र का दश हजार जप करने से उनके बाल उजले हो जाते हैं, दाँत टूट जाते हैं, वे यौवन रहित हो जाते हैं । रूपवान रोगी हो जाते हैं, इससे संशय नहीं है । वैरी जिस घर में निवास करते हैं, वह सूना हो जाता है । तुरन्त धनहीन वैसे ही हो जाते हैं जैसे सूर्योदय के बाद अन्धकार नहीं रहता । जाति अभिमानियों को वैदिक त्याग देते हैं । तप के अभिमानी अङ्गहीन हो जाते हैं । वैदिक मार्ग छोड़कर विपरीत आचरण करने लगते हैं । विद्या के अभिमानियों की विद्या व्यर्थ हो जाती है ।

धन के अभिमानियों के धन का नाश हो जाता है। देहाभिमानी पुरुष नष्ट-देह हो जाते हैं।

सिद्ध मन्त्र के माहात्म्य का वर्णन

सर्वे स्वं देहजं मह्यं स्वप्रभावात् प्रकाशिनी।
योगाभ्यासो योगसिद्धो तपस्वी सत्यवादिनः॥ ३०॥
मन्त्रेण सिद्धोऽसिद्धोऽपि यत्र प्रत्येति पुत्रक।
परविद्याभेदनं च मन्त्रोपासनतत्परः॥ ३१॥
यत्र गत्वा समासीन एतन्मन्त्रायुतं जपेत्।
योगसिद्धो मन्त्रसिद्धस्तपस्वीशतजीविनः (तः)॥ ३२॥
महाक्रान्तो भवेन्नो चेन्निन्दकोऽपि भवेद् ध्रुवम्।
ये ये तन्मन्त्रराजं च नित्यमष्टोत्तरं जपेत्॥ ३३॥
एतद्राज्यं स मासेन अम्बासेवापरो भवेत्।
न तत्समधिको भूयान्नैव द्वेषकरो भवेत्॥ ३४॥
नैव निन्दाकरो भूयाद् यदीच्छेद्ये च(च्चेत्स्व) जीवितम्॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'परविघ्नप्रयोगं' नाम विंशतिः पटलः॥ २०॥
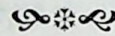
सभी दुर्भाग्य से सम्मोहित हो जाते हैं। इस मन्त्र का माहात्म्य मुनीश्वरों को भी ज्ञात नहीं है। हे पुत्र! इसमें आश्चर्य क्या है। यह अपने प्रभाव को प्रकाशित करने वाली विद्या है। योगाभ्यासी से योग सिद्ध तपस्वी श्रेष्ठ है। इस मन्त्र का सिद्ध या असिद्ध जहाँ पर विद्या-भेदन और मन्त्रोपासना में तत्पर रहते हैं। वहाँ जाकर समासीन होकर इस मन्त्र का दश हजार जप करे। योगसिद्ध तपस्वी और चिरञ्जीवी पापाक्रान्त हो जाते हैं और निन्दक हो जाते हैं।

इस मन्त्रराज का नित्य नियम से एक सौ आठ जप करने से राजा वशवर्ती हो जाते हैं। उस राज्य के सभी लोग वश में होकर सेवा करते हैं। इस मन्त्र से श्रेष्ठ कुछ नहीं है। यदि संसार में जीवित रहने की इच्छा हो तो इससे द्वेष न करे और न ही इसकी निन्दा करे।

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'परविघ्नप्रयोग' नामक विंश पटल समाप्त॥ २०॥
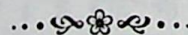
अथैकविंशः पटलः

परविद्या आकर्षणकथनम्

परविद्या भक्षिणी बगला का ध्यान

परप्रज्ञोपसंहारीं परगर्वप्रभेदिनीम् ।
परविद्याकर्षणं च प्रयोगं वद शङ्कर ॥ १ ॥

हम उस बगला का हृदय में ध्यान करते हैं जो दूसरों के गर्व का नाश करती हैं, जो दूसरों की विद्या का भक्षण करती है ॥ १ ॥

परविद्या आकर्षण विधि की जिज्ञासा

ईश्वर उवाच—

विश्वमेतद्भक्तिमयं सा भक्तिर्वगलमया ।
एतच्च भास्मानां तां वगलां च कुमारक ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—हे मुनियों के आराध्य! आपको प्रणाम है योगिराज को प्रणाम है, हे शङ्कर! अब परविद्या आकर्षण प्रयोग कहिये ॥ २ ॥

परविद्या आकर्षण आदि महा आश्चर्यजनक नाना प्रयोग

वाङ्मयं चैव वैचित्र्यं त्रिषु लोकेषु वर्त्तते ।
तद्गर्वहरणार्थं च विद्यामेतां कुमारक ॥ ३ ॥

यह विश्व शक्तिमय है और वह शक्ति बगलामयी है । दोनों का एकत्र स्वरूप बगला है । यह वाणीमय वैचित्र्य तीनों लोकों में व्याप्त है । उसके गर्व को नष्ट करने के लिये यह विद्या बगला है ।

मनसा तं जपेन्मन्त्रं मुखं तस्यावलोकयेत् ।
भयं च विस्मृतिर्भ्रान्तिस्तत्क्षणाद् भवति ध्रुवम् ॥ ४ ॥

शत्रु के मुख का चिन्तन करते हुए मानसिक जप करे तो उसमें भय, विस्मृति एवं भ्रान्ति की उत्पत्ति तत्क्षण होने लगती है ॥ ४ ॥

पानपात्रं वैरिजिह्वां गदां शूलेन संयुताम् ।
पीतवर्णां मदाघूर्णां चिन्तयेदाननं रिपोः ॥ ५ ॥

पान पात्र, वैरी जिह्वा, गदा, त्रिशूल युक्त पीले वर्ण, मदमत्त शत्रु के मुख का चिन्तन करे ॥ ५ ॥

स तु भाषापतिः साक्षाद् बृहस्पतिरिव स्वयम् ।
स तु जात्यंतरो भूत्वा निन्दितो भवति ध्रुवम् ॥ ६ ॥
अस्त्रशस्त्रमयं मन्त्रं यो जानाति कुमारक ।
तत्र गत्वा महामन्त्रं जपेद्देवीमनन्यधीः ॥ ७ ॥
त्रिसहस्त्रं ध्यानमुक्तं तस्य विद्या कुमारक ।
विस्मृतिश्च भवेच्छीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ॥ ८ ॥

ऐसा करने में बृहस्पति के समान वाचस्पति तुरन्त महामूर्ख के समान निन्दित हो जाता है । अस्त्र-शस्त्र और मन्त्र-यन्त्रादि का जानकार जहाँ रहता है। वहाँ जाकर एकाग्रता से ध्यानपूर्वक महामन्त्र का तीन हजार जप करे तो वह जानकार सभी विद्याओं को भूल जाता है ॥ ६-८ ॥

अत्यन्तैश्वर्य्यसंयुक्तो द्विषता वर्तते यदि ।
तस्य गेहे भौमवारे निशि नग्नेन बुद्धिमान् ॥ ९ ॥
प्रदक्षिणत्रयं कृत्वा दिशि कौबेरदिङ्मुखः ।
सहस्त्रं सप्तरात्रौ च नष्टद्रव्यो भवेद् ध्रुवम् ॥ १० ॥
ग्रामं वा नगरं वाथ नित्यं कृत्वा प्रदक्षिणम् ।
जपेदयुतसंख्या तु तद्ग्रामं तु कुमारक ॥ ११ ॥
सस्यादिभिर्विनश्यन्ति द्रव्यं चौरेण नश्यति ।
पशुभिर्म्रियते पुत्र मासाद्दौर्भाग्यमाप्नुयात् ॥ १२ ॥

बहुत ऐश्वर्य वाले वैरी को यदि गर्व हो तो मङ्गलवार की रात में निर्वस्त्र होकर साधक उसके घर की तीन प्रदक्षिणा करके उत्तर मुख बैठकर एक-एक हजार जप सात रातों तक करे तो उसके धन का नाश हो जाता है । किसी गाँव या शहर की प्रदक्षिणा रात में करके दश हजार मन्त्र जप करे तो उस गाँव की खेती नष्ट हो जाती है । धन को चोर चुरा लेते हैं । पशुओं की मृत्यु होने लगती है । एक महीना में यह दुर्भाग्य उत्पन्न हो जाता है ॥ ९-१२ ॥

फलितं पुष्पितं चैव शत्रोराराममाश्रितः ।
रवौ रात्रौ निशाकाले नग्नो भूत्वा सुनिश्चयः ॥ १३ ॥
प्रदक्षिणत्रयं कृत्वाप्ययुतं जपमाचरेत् ।

वृक्षो निर्मूलमाप्नोति शिवस्य वचनं तथा ॥ १४ ॥

रविवार की रात में निशाकाल में नग्न होकर शत्रु के फलित पुष्पित बगीचे की तीन प्रदक्षिणा करके दश हजार जप करे तो वृक्ष जड़ से खत्म हो जाते हैं। यह शिव का कथन है ।। १३-१४ ।।

एकाक्षरीं च बगलां साध्याख्यं मध्यदेशतः ।
चिन्तयेज्जाप्यकालेषु सहस्रं जपमाप्नुयात् ॥ १५ ॥
लक्षं जप्त्वा मनोरेवं मृत्तिकां च कुमारक ।
प्रवाहोपरि निःक्षिप्य नद्या उपरिबुद्धिमान् ॥ १६ ॥
स्तम्भयेत्तं नदीवेगं महदाश्चर्यकारणम् ।

जप के समय एकाक्षरी बगला का चिन्तन साध्य के देश के रूप में करे तो उस देश की जीत हो जाती है । इस मन्त्र को एक लाख जपकर सात मुट्ठी मिट्टी अथवा गर्दा जल के ऊपर छींट दें । इससे उस नदी का वेग स्तम्भित हो जाता है, यह बड़ा आश्चर्यकारक है ।। १५-१६ ।।

महनद्यामेवमेव कुर्यात्तं गुरुलाघवान् ॥ १७ ॥
व्यालव्याघ्रादयश्चैव ये ये क्रूरमृगादयः ।
त्रिसप्तमन्त्रितं भस्म मूर्ध्नि क्षेपणमात्रतः ॥ १८ ॥
वाक्पाणिवदनाक्ष्णां च तत्क्षणात् स्तम्भनं भवेत्।
मन्त्रयेत् संस्कृतं भस्म मन्त्रेणानेन पुत्रक ॥ १९ ॥

महानदी के प्रयोग के समान यह प्रयोग सर्प या बाघ आदि क्रूर मृगादि पर करे । इस मन्त्र जप से मन्त्रित भस्म को उनके माथे पर डाल देने से ही उनकी बोली, हाँथ, मुख, आँख एवं पैर तत्क्षण स्तम्भित हो जाते हैं ।। १७-१९ ।।

अष्टोत्तरशतं सम्यक् ध्यानमात्रेण बुद्धिमान् ।
सर्वाङ्गोद्धूलनं कुर्यात् तद्भस्मना कुमारक ॥ २० ॥
वनेचरास्तामसजन्तवश्च
चौराग्निदुष्कर्मकृदल्पहानपि ।
प्रेताश्च भूताश्च पिशाचभूचराः
सिंहाश्च संस्तम्भयति ध्रुवं च ॥ २१ ॥

संस्कृत भस्म को इस मन्त्र के एक सौ आठ जप से मन्त्रित करे । अपने पूर्ण शरीर में लगावे तो जङ्गली तामस जानवर चोर आदि दुष्कर्म करने वालों के साथ भूत-प्रेत आदि खेचर-भूचर के जीभ स्तम्भित हो जाते हैं ॥२०-२१॥

एतन्मन्त्रवरं पुत्र मनसा जपमाचरेत् ।

वादार्थं चाथ वाणिज्यं सभायां राजसन्निधौ ॥ २२ ॥
गत्वा तु रिपवः सर्वे जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ।

इस मन्त्रराज का दश हजार की संख्या में मानसिक जप करके वाद-विवाद में, वाणिज्य में, सभा में या राजा के निकट जाने से सभी वैरियों के जीभ का स्तम्भन हो जाता है ॥ २२ ॥

प्रयोग का उपसंहार

शत्रुमुद्दिश्य मन्त्रं च अयुतं प्रजपेत्ततः ॥ २३ ॥
पक्षमात्राद् भवेच्छत्रोर्जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ।
तेनैव म्रियते शत्रुर्मण्डलार्धेन मानवः ॥ २४ ॥
दक्षिणामूर्त्तिमन्त्रेण मन्त्रितं जलमादरात् ।
त्रिकालं चैव पीत्वा तु मण्डलाच्छान्तिमाप्नुयात् ॥ २५ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'परविद्याआकर्षणं' नाम एकविंशतिः पटलः ॥ २१ ॥
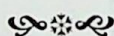
प्रयोग का उपसंहार—शत्रु का चिन्तन करते हुए इस मन्त्र को दश हजार की संख्या में जपे तो पन्द्रह दिनों में शत्रु की जीभ स्तम्भित हो जाती है । इसी प्रकार चालीस दिनों में शत्रु मर जाता है । इसकी शान्ति करने के लिये दक्षिणामूर्ति मन्त्र से अभिमन्त्रित जल तीनों समय चालिस दिनों तक पीये । इससे शान्ति होती है ॥ २३-२५ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'परविद्याआकर्षण' नामक एकविंश पटल समाप्त ॥ २१ ॥

अथ द्वाविंशः पटलः

बगलास्त्रविद्या

बगलामुखी का ध्यान

नमस्ते देवेदेवशीं जिह्वास्तम्भनकारिणीम् ।
पानपात्रगदायुक्तां भजेऽहं वगलामुखीम् ॥ १ ॥

जिह्वा स्तम्भनकारिणी देवदेवेशी उस बगलामुखी को हम प्रणाम करते हैं, जिनके हाँथों में पानपात्र और गदा है ॥ १ ॥

बगलास्त्र विद्या प्रश्न

स्कन्द उवाच—

त्रिपुरारे त्रिलोकज्ञस्त्रिकालात्मंस्त्रियम्बकः ।
वगलास्त्रं वदास्माकं मयि वात्सल्यगौरवात् ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—हे त्रिपुरारे! हे त्रिकालज्ञ! हे त्र्यम्बक! हे महेश्वर! मुझ पर वात्सल्य के गौरव से कृपापूर्वक बगलास्त्र को कहिये ॥ २ ॥

बगला-विद्या का क्रम

शिव उवाच—

वगलास्त्रमिदं पुत्र सुरासुरपूजितम् ।
अगस्त्यः प्रोक्तवान् पूर्वं रामं दाशरथिं प्रति ॥ ३ ॥
तेनोक्तमाञ्जनेयाय तेनोक्तं चार्जुनं प्रति ।
तद्विद्यां च प्रवक्ष्यामि वगलाहृदयं मनुम् ॥ ४ ॥

ईश्वर ने कहा—हे पुत्र! यह बगलास्त्र देव और दैत्यों से सुपूजित है । पहले अगस्त्य मुनि ने दाशरथि राम को इसे बतलाया । तदनन्तर श्रीराम ने हनुमान् को बतलाया । हनुमान् जी ने अर्जुन को बतलाया । उस बगलाहृदय मन्त्र विद्या को तुम्हे बतलाता हूँ ॥ ३-४ ॥

बगलास्त्र विद्या मन्त्रोद्धार

प्रथमं वगलाबीजं वाराहं तदनन्तरम् ।
मम शत्रूंस्ततः शक्तिं वगलाबीजमुद्धरेत् ॥ ५ ॥
वगलामुखिपदं चोक्त्वा वाचं मुखं पदं वदेत् ।
ग्रसद्वयं च उच्चार्य खाहियुग्मं ततः परम् ॥ ६ ॥
भक्षयुग्मं ततोच्चार्य शोणितं पिबन्युग्मकम् ।
वगलामुखि उच्चार्य वगलाबीजमुच्चरेत् ॥ ७ ॥
शक्तिं वाराहमुच्चार्य वर्मास्त्र च समुद्धरेत् ।
त्रिचत्वारिंशद्वर्णयुक्तं वगलायाः सुपावनम् ॥ ८ ॥

क्रमाङ्क ५-८ के श्लोको का उद्धार करने पर ४३ तैतालिस अक्षरों का बगलास्त्र मन्त्र निम्नलिखित रूप का होता है ।

बगलास्त्रमन्त्र

ह्लीं हूं मम शत्रून ग्लौ ह्लीं बगला मुखि वाचं मुखं ग्रस ग्रस खाहि खाहिं भक्ष भक्ष शोणितं पिव पिव बगलामुखि ह्लीं ग्लौं हुं फट् ॥ ५-८॥

ऋष्यादि न्यास, ध्यान एवं पुरश्चरण विधि

दुर्वासा ऋषिरेवात्र छन्दोऽनुष्टुप् भवेच्छुभम् ।
देवता वगलानाम्नी जगद्व्यापकरूपिणी ॥ ९ ॥
ग्लौं बीजं ह्लीं च शक्तिश्च फट्कारं कीलकं तथा ।
मन्त्रराजेन देव्याश्च न्यासविद्यां समाचरेत् ॥ १० ॥
ध्यानभेदं प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ।

विनियोग—अस्य श्री बगलास्त्र मन्त्रस्य श्री दुर्वासा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः अस्त्ररूपिणी श्री बगलामुखी देवता, ग्लौ बीजं ह्लीं शक्तिः फट् कीलके, अस्त्ररूपिणी श्री बगलाम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास—श्री दुर्वासा ऋषये नमः, शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमः, मुखे, अस्त्ररूपिण्ये श्री बगलामुखी देवतायै नमः, हृदि, ग्लौं बीजाय नमः, गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः, पादयोः, फट् कीलकाय नमः, सर्वाङ्गे, अस्त्ररूपिणी श्री बगलाम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

करन्यास—ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा, सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्, वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुं, जिह्वां कीलय कनिष्ठाभ्यां वौषट्, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

अङ्गन्यास—ह्लीं हृदयाय नमः, बगलामुखी शिरसे स्वाहा, सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुं, जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् । न्यास के बाद मन्त्रभेद से ध्यान करे। श्लोक संख्या १२ एवं १३ ध्यान हैं ।

चतुर्भुजां त्रिनयनां पीनोन्नतपयोधराम् ॥ ११ ॥
जिह्वां खड्गं पानपात्रं गदां धारयन्तीं पराम् ।
पीताम्बराधरां देवीं पीतपुष्पैरलंकृताम् ॥ १२ ॥
बिम्बोष्ठीं चारुवदनां मदाघूर्णितलोचनाम् ।

देवी को चार हाँथ तीन नेत्र, स्थूल उन्नत स्तन है । हाँथों में शत्रु की जीभ, खड्ग, पान-पात्र एवं गदा हैं । देवी के वस्त्र पीले हैं । वे पीले फूलों से अलंकृत हैं। बिम्बा फल के समान लाल ओठ हैं । उनका मुख सुन्दर है, नशा में मत्त आँखें हैं ॥ ११-१२ ॥

सर्वविद्याकर्षिणीं च सर्वप्रज्ञापहारिणीम् ॥ १३ ॥
भजेऽहं चास्त्रवगलां सर्वाकर्षणकर्मसु ।
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं बाणलक्षं कुमारक ॥ १४ ॥
तर्प्ययेत्तद्दशांशं च जपासंमिश्रवारिणा ।
तद्दशांशं हुनेत् पुत्र तालकं चाज्यसंयुतम् ॥ १५ ॥
भगाकारे सुकुण्डेऽस्मिन् मुद्रया हंस बुद्धिमान् ।
वदरीफलमात्रं च आहुतीश्च कुमारक ॥ १६ ॥
ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात् सहस्रं शतमेव च ।
योगिनीं पूजयेत् पुत्र द्रव्यशुद्धिसमन्विताम् ॥ १७ ॥
मन्त्रसिद्धिर्भवेत् सद्यो देवता च प्रसीदति ।

सभी आकर्षण कर्म में सर्वविद्याकर्षिणी और ज्ञानापहारिणी बगलास्त्र विद्या को हम भजते हैं । इस प्रकार का ध्यान करके पाँच लाख मन्त्र जप करे । मदिरा मिश्रित जल से पचास हजार तर्पण करे । इसका दशांश पाँच हजार हवन गोघृत मिश्रित तालक से त्रिकोणकुण्ड में हंस मुद्रा से करे । बैर के फल के बराबर आहुति की मात्रा होती है । इसके बाद एक हजार या एक सौ ब्राह्मणों को भोजन करावे । द्रव्य शुद्धि करके योगिनी की पूजा करे । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है, देवता प्रसन्न होते हैं, यह सत्य है ॥ १३-१८ ॥

शत्रु-क्षय-कृतादि नाना प्रयोग

शिवालये जपेन्मन्त्रमयुतं च सुबुद्धिमान् ॥ १८ ॥

शत्रुक्षयं भवेत् सद्यो नान्यथा शिवभाषितम् ।
षट्सहस्त्रं जपेन्मन्त्रं निशायां चण्डिकालये ॥ १९ ॥
जिह्वास्तम्भनमाप्नोति बृहस्पतिसमोऽपि वा ।

शिवालय में दश हजार मन्त्र का बुद्धिमान् साधक जप करे । इसमें तुरन्त शत्रुक्षय होता है । शिव का कथन अन्यथा नहीं हो सकता । चण्डी मन्दिर में रात में छह हजार मन्त्र जप करे तो बृहस्पति समान विपक्षी का जीभ स्तम्भित हो जाती है ॥ १८-१९ ॥

जपित्वा च सहस्त्रं तु भैरवस्य च सन्निधौ ॥ २० ॥
बुद्धिभ्रंशो भवेत् सद्यो वाणीपतिसमोऽपि वा ।
वीरभद्रालये पुत्र अयुतं जपमाचरेत् ॥ २१ ॥
सिद्धिदो जायते वत्स नान्यथा शिवभाषणम् ।

भैरव के समीप पाँच हजार की संख्या में मन्त्र जप करे तो बृहस्पति के समान वाचस्पति की भी बुद्धि शीघ्र भ्रष्ट हो जाती है । वीरभद्र के मन्दिर में दश हजार की संख्या में जप करे तो शत्रु का निधन हो जाता है—शिव का कथन अन्यथा नहीं है ॥२०-२१॥

मातृकासन्निधौ मन्त्री जपेद् दशसहस्त्रकम् ॥ २२ ॥
सद्यः स्तम्भनमाप्नोति वाल्मीकिसदृशोऽपि वा ।
ध्यानपूर्वं जपेन्मन्त्री अयुतं च कुमारक ॥ २३ ॥
रूपयौवनवाञ्छत्रुर्व्याधिमान् भवति ध्रुवम् ।

मातृकाओं के निकट साधक यदि आठ हजार की संख्या में मन्त्र जप करे तो वाल्मीकि के समान विरोधी का भी शीघ्र स्तम्भन होता है । ध्यानपूर्वक आठ हजार की संख्या में मन्त्र जप करे तो रूप एवं यौवन युक्त शत्रु व्याधि से पीड़ित हो जाता है ॥ २२-२३ ॥

त्रिसहस्त्रं जपेन्मन्त्रं त्रिसहस्त्रं दिने दिने ॥ २४ ॥
मण्डलाच्छत्रुसम्मोह कुबेरसदृशोऽपि च ।
ऐश्वर्यं नाशमाप्नोति कुबेरसदृशोऽपि वा ॥ २५ ॥
त्रिकालमयुतं जप्त्वा ध्यानपूर्वं सुबुद्धिमान् ।
वगलाध्यानतो मन्त्रमयुतं जपमाचरेत् ॥ २६ ॥
सर्वाङ्गं वायुना शत्रुः शीघ्रं गच्छेद् यमालयम् ।

चालिस दिनों तक प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में तीन-तीन हजार की संख्या में मन्त्र जप करे तो कुवेर के समान धनी शत्रु की सम्पदा भी चालिस दिनों

में नष्ट हो जाती है। तीनों कालों में प्रतिदिन ध्यानपूर्वक दश हजार मन्त्र जप करे तो शत्रु के सारे शरीर में वायु कोप हो जाता है और वह यमलोक में चला जाता है ॥ २४-२६ ॥

पार्वतीसन्निधौ मन्त्री जपेदयुतमादिशन् ॥ २७ ॥
रात्रौ पूजासमायुक्तो नग्नो दक्षिणदिङ्मुखः ।
अन्धो भवति तच्छत्रुरवश्यं क्रौञ्चभेदन ॥ २८ ॥
विघ्नराजं समभ्यर्च्य रवौ तु जपमाचरेत् ।
त्रिसहस्रं जपेन्मन्त्रं कुक्षिरोगी भवेद्रिपुः ॥ २९ ॥
मण्डलान्नाशमायाति नात्र कार्या विचारणा ।
प्रयोगान्ते च संस्कारं पूजाकाले समाचरेत् ॥ ३० ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'बगलास्त्रविद्या'
नाम द्वाविंशतिः पटलः ॥ २२ ॥
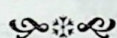
पार्वती के निकट आदरपूर्वक रात में पूजा के बाद नङ्गे दक्षिणमुख दश हजार मन्त्र जप करे तो शत्रु अवश्य अन्धा हो जाता है। रविवार की रात में गणेश पूजा करके एक हजार जप करे तो कुक्षि रोगी होकर चालिस दिनों में शत्रु मर जाता है। प्रयोग के अन्त में संस्कार पूजा करे ॥ २७-३० ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'बगलास्त्रविद्या'
नामक द्वाविंश पटल समाप्त ॥ २२ ॥
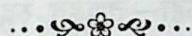
अथ त्रयोविंशः पटलः

बगलास्त्रप्रयोगविवरणम्

श्री बगलादेवी का ध्यान

स्वर्णसिंहासनासीनां सुन्दराङ्गीं शुचिस्मिताम् ।
बिम्बोष्ठीं चारुनयनां ध्यायेत् पीनपयोधराम् ॥ १ ॥

बगलामुखी देवी का ध्यान हम करते हैं । सोने के सिंहासन पर बैठी हैं। सभी अङ्ग सुन्दर हैं । मुख पर पवित्र मुस्कान है । बिम्बा फूल के समान लाल ओठ है । दोनों नेत्र मनोहर हैं । दोनों स्तन स्थूल एवं उन्नत हैं ॥ १ ॥

बगलास्त्र महामन्त्र प्रयोग की जिज्ञासा

स्कन्द उवाच—

नमस्ताण्डवरुद्राय तापत्रयहराय च ।
वगलास्त्रमहामन्त्रैः प्रयोगान् वद शङ्कर ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—ताण्डव रुद्र को नमस्कार है । तीनों तापों के हरने वाले हे शङ्कर ! बगलास्त्र महामन्त्र का प्रयोग कहिये ॥ २ ॥

वाक् सिद्धिप्रद प्रयोग

शिव उवाच—

त्रिकालं तु समासीनो ध्यानपूर्वं तु साधकः ।
त्रिसप्त मन्त्रयित्वा तु जपं पश्चात् समाचरेत् ॥ ३ ॥
नित्यं च त्रिसहस्रं तु षण्मासं विजितेन्द्रियः ।
वाचासिद्धिर्भवेत्तस्य शापानुग्रहकारका ॥ ४ ॥

मौन रहकर ध्यानपूर्वक तीनों कालों में मन्त्र जप करे । एक्कईस जप से मन्त्रित करने के बाद मन्त्र जप करे । छह महीनों तक जितेन्द्रिय रहकर प्रतिदिन तीन हजार जप करे । इससे साधक को शाप देने और अनुग्रह करने की वाचा सिद्धि प्राप्त होती है ॥ ३-४ ॥

व्याधिनाशन प्रयोग

अश्वत्थमूले प्रजपेदयुतं ध्यानपूर्वकम् ।
भक्षणाद् व्याधिनाशं च भवेदेवं न संशयः ॥ ५ ॥

पीपल की जड़ के निकट बैठकर ध्यानपूर्वक दश हजार की संख्या में मन्त्र जप करे । उसी क्षण में व्याधि और शारीरिक रोग का नाश हो जाता है ॥ ५ ॥

जीभ, कान, प्राण, पैर, भूख, गात्र स्तम्भन प्रयोग

विभीतकतरोर्मूले अयुतं जपमाचरेत् ।
जिह्वास्तम्भनमाप्नोति साक्षाद्वागीश्वरोऽपि वा ॥ ६ ॥

बहेड़ा वृक्ष के मूल के निकट बैठकर दश हजार जप करे तो साक्षात् वागीश्वर की जीभ भी स्तम्भित हो जाती है ॥ ६ ॥

कपित्थवृक्षमूले तु प्रजपेदयुतं तथा ।
श्रोत्रस्तम्भनमाप्नोति सद्यो बधिरतां व्रजेत् ॥ ७ ॥

खैर वृक्ष मूल के निकट बैठकर दश हजार जप करे तो कान का स्तम्भन होता है और शत्रु तुरन्त बहरा हो जाता है ॥ ७ ॥

पिचुमंदतरोर्मूलेऽप्ययुतं जपमाचरेत् ।
प्राणस्तम्भनमाप्नोति रोगी पीनसवान् भवेत् ॥ ८ ॥

पिचुमन्द वृक्ष मूल के निकट बैठकर दश हजार जप करे तो शत्रु का प्राण स्तम्भित होकर वह सर्दी का रोगी एवं पीनसवान हो जाता है ॥ ८ ॥

कदलीमूलमाश्रित्य अयुतं जपमाचरेत् ।
पादस्तम्भो भवेत् सद्यो वातरोगी भवेद् रिपुः ॥ ९ ॥

केले के मूल के निकट बैठकर दश हजार जप करने से शत्रु के पैरों का स्तम्भन हो जाता है । वह शीघ्र वात रोगी हो जाता है ॥ ९ ॥

करञ्जमूलमाश्रित्याप्ययुतं जपमाचरेत् ।
स्तम्भेज्जठराग्निस्तु अन्नद्वेषो भवेद् ध्रुवम् ॥ १० ॥

करञ्ज वृक्ष मूल के निकट बैठकर दश हजार जप करने से जठराग्नि अर्थात् भूख का स्तम्भन हो जाता है । शत्रु को अन्न खाने का मन नहीं होता ॥१०॥

विषतिन्दुकमूलं च समाश्रित्य मनुं जपेत् ।
अयुताच्च भवेत् पुत्र गात्रस्तम्भनमाप्नुयात् ॥ ११ ॥

विषतिन्दुक मूल के निकट बैठकर दश हजार जप करने से शरीर के अङ्गो का स्तम्भन हो जाता है ॥ ११ ॥

शत्रु पत्नी के गर्भ गिराने का प्रयोग

नद्यां समुद्रगामिन्यां नाभिदघ्नजले स्थितः ।
तर्पयेद् वगलास्त्रेण ग्रस्तं कृत्वारिनाम च ॥ १२ ॥

समुद्रगामिनी नदी में नाभि तक जल में खड़े होकर बगलास्त्र मन्त्र के साथ वैरी नाम जोड़कर प्रतिदिन बगला ध्यान पूर्वक ग्यारह दिनों तक एक हजार मन्त्र से तर्पण करे तो चालिस दिनों में शत्रु की पत्नी मर जाती है ॥ १२ ॥

शत्रु की पत्नी का बन्ध्याकरण और उसके नाश का प्रयोग

दिने दिने सहस्रैकं वगलाध्यानपूर्वकम् ।
गर्भस्रावं भवेत्तस्य भार्यायाः शिवभाषितम् ॥ १३ ॥

पलाश मूल के समीप बैठकर ग्यारह तर्पण करने से पूर्ववत् फल मिलता है । शिव वचन मिथ्या नहीं है ॥ १३ ॥

वल्लीपलाशमूले तु जपेदयुतसंख्यया ।
मन्त्रमध्ये रिपोर्भार्यां ग्रस्तं कृत्वा कुमारक ॥ १४ ॥
तर्पणं च दिवा कृत्वा रात्रौ रात्रौ जपेन्मनुम् ।
सापि वन्ध्या भवेत्सत्यं नात्र कार्या विचारणा ॥ १५ ॥

वल्ली, पलाश मूल के निकट बैठकर दश हजार मन्त्र जप करे, मन्त्र मध्य में रिपोर्भार्या ग्रस्त करके रात में जप करे तो शत्रु पत्नी बन्ध्या हो जाती है । यहाँ विचार की जरूरत नहीं है ।

पलाश मूल के निकट बैठकर ध्यानपूर्वक दश हजार जप करने से शत्रुभार्या का गर्भ गिर जाता है । ऐसा कथन शिव जी का है ॥ १४-१५ ॥

श्मशाने प्रजपेन्मन्त्रं ग्रस्तं कृत्वा तु पूर्ववत् ।
सद्यस्तद्भार्यानाशं न भवेदेवं न संशयः ॥ १६ ॥

पूर्ववत् शत्रु का नाम मन्त्र मध्य में ग्रस्त करके श्मशान में दश हजार जपे। उसकी भार्या का निधन तुरन्त हो जाता है, इसमें संशय नहीं है ॥ १६ ॥

शत्रु लक्ष्मी विनाशक आदि अनेक प्रयोग

शून्यागारे जपेदेवमयुतं ध्यानमपूर्वकम् ।
लक्ष्मीर्नाशयते नूनं स शत्रुरविशष्यते ॥ १७ ॥

सूने घर में ध्यान सहित दश हजार मन्त्र जप करे तो शत्रु के धन का नाश शीघ्र हो जाता है । शत्रु बच जाता है ॥ १७ ॥

जम्बीरतरुमूले तु अयुतं जपमाचरेत् ।
भ्रमाकुलकुलं सर्वं मण्डलान्नाशमाप्नुयात् ॥ १८ ॥
शतवारं मन्त्रितं च शर्करोदकमेव च ।
रिपूणां चैव दातव्यं जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ॥ १९ ॥
द्वि?तं मन्त्रितं चैव नारिकेलफलोदकैः ।
पाययेद्रात्रि रिपुभिर्जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ॥ २० ॥

गम्भीर वृक्ष के मूल के निकट बैठकर दश हजार जप करने से शत्रु का कुल भ्रमाकुल होकर चालिस दिनों में नष्ट हो जाता है । सौ बार जप से मन्त्रित गुड़ का शर्वत शत्रु को पिलाने से उसके जीभ का स्तम्भन हो जाता है । दो सौ जप से मन्त्रित नारियल जल शत्रु को पिलावे तो उसकी जीभ स्तम्भित हो जाती है ॥ १८-२० ॥

नागवल्लीदलं चैव क्रमुकं चूर्णमेव च ।
सहस्रं मन्त्रितं पुत्र दातव्यं शत्रु(त्रू)णां निशि ॥ २१ ॥
ताम्बूलचर्वणाच्छत्रुर्जिह्वास्तम्भनमाप्नुयात् ।
चन्दनं चैव कस्तूरीघर्षितं मन्त्रयेत् सुत ॥ २२ ॥
पुनश्च मन्त्रयेत्ताम्रपात्रे गुणसहस्रकम् ।
तच्चन्दनलेपनेन रिपुर्भ्रान्तो भविष्यति ॥ २३ ॥

सुपारी-चूर्ण और पान पत्ते को एक हजार मन्त्र-जप से मन्त्रित करके शत्रु को देवे । पान का पत्ता चबाते ही शत्रु की जीभ स्तम्भित हो जाती है । चन्दन और कस्तूरी को पीसकर ताम्रपात्र में रखकर तीन हजार जप से मन्त्रित करके शत्रु को देवे, उस चन्दन का लेप लगाते ही शत्रु भ्रान्त हो जाता है ॥२१-२३॥

दन्तधावनकाष्ठं च मन्त्रयेत् त्रिसहस्रकम् ।
तत्काष्ठेन रिपोः पुत्र दन्तधावनमात्रतः ॥ २४ ॥
जिह्वां वाणीं च बुद्धिं च मनः पादादिकं तथा ।
स्तम्भनं च भवेच्छीघ्रं शिवस्य वचनं यथा ॥ २५ ॥

दतुवन को तीन हजार जप से मन्त्रित करके शत्रु को देवे । उस दतुवन को करते ही शत्रु के जीभ, बोली, बुद्धि, मन एवं पैर आदि का शीघ्र स्तम्भन हो जाता है । जैसा शिव जी का कथन है ॥ २४-२५ ॥

प्रेतवस्त्रं रवौ ग्राह्यं चितिकाष्ठं च वेष्टयेत् ।
श्मशाने निखनेद् रात्रौ त्रिसहस्रं जपेत्तदा ॥ २६ ॥

शेषभाषापतिः साक्षाद् बृहस्पतिरपि स्वयम् ।
जिह्वास्तम्भनमाप्नोति सद्यो मूकत्वमाप्नुयात् ॥ २७ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'बगलास्त्रप्रयोगविवरणं' नाम त्रयोविंशतिः पटलः ॥ २३ ॥
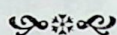
रविवार में चिता के वस्त्र पर शत्रु का नाम लिखकर उसकी गोली बनाकर प्राणप्रतिष्ठा करे और पूजा करे । रात में उसे श्मशान में गाड़ कर तीन हजार मन्त्र जप करे तो शत्रु के जीभ का स्तम्भन हो जाता है और वह गूँगा हो जाता है । शेष नाग, भाषापति, बृहस्पति नालमन्त्र के अधिदेवता भी शत्रु की रक्षा नहीं कर सकते ॥ २६-२७ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'बगलास्त्रप्रयोगविवरण' नामक त्रयोविंश पटल समाप्त ॥ २३ ॥

अथ चतुर्विंशः पटलः

मालाप्रकरणम्

स्तम्भन रूपा बगलाम्बा का ध्यान

अम्बां पीताम्बराढ्यामरुणकुसुमगन्धानुलेपां त्रिनेत्रां
गम्भीरां कम्बुकण्ठीं कठिनकुचयुगां चारुबिम्बाधरोष्ठीम्।
शत्रोर्ज्जिह्वासिपत्रं शरधनुसहितां व्यक्तगर्वाधिरूढां
देवीं संस्तम्भरूपां सुविरलरसनामम्बिकां तां भजामि ॥ १ ॥

बगला माता के वस्त्र पीले हैं लाल फूल के गन्ध अनुलेप है। उनके तीन नेत्र हैं। वे गम्भीर हैं। उनका कण्ठ शंखाकार है। दोनों स्तन कठोर हैं। बिम्बाफल के समान लाल अधर और ओठ है। शत्रु का जीभ खड्ग और धनुषवाण सहित व्यक्त गर्व पर अधिरूढ हैं। उस स्तम्भनरूपा हृदयस्थ अम्बिका बगला को मैं भजता हूँ ॥ १ ॥

बगला मन्त्र कालिका लक्षण की जिज्ञासा

स्कन्द उवाच—

नमस्ते वृषभारूढ नमः पन्नगकङ्कण।
लक्षणं वद मे देव वगलामन्त्रमालिका ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—वृषारूढ को प्रणाम है। पन्नग कङ्कणभूषण को प्रणाम है। हे देव! बगला जप-माला के लक्षणों को बतलाइये ॥ २ ॥

हरिद्रा माला-निर्माण विधि

ईश्वर उवाच—

भृगुवारे च संगृह्य आरामस्थनिशां तथा।
तां शुष्कां सप्तरात्रं तु कृत्वा मेतामनन्तरम् ॥ ३ ॥
भूताविपरितं चैव कपिलागोमयं तथा।
पुनरेकान्तराद्ग्राह्यं भाण्डमध्ये तु निःक्षिपेत् ॥ ४ ॥

सविषं जलसंयुक्तं कुर्यान्मेलनमेव च ।
हरिद्रां तत्र निःक्षिप्य पूजयेदाशु तत्क्रमात् ॥ ५ ॥
चुह्लयोपरि च तद्भाण्डं रवौ रात्रौ च निःक्षिपेत् ।
द्विगुणं जलसंयुक्तं कुर्यान्मेलनमेव च ॥ ६ ॥
अश्वत्थैरिन्धनैरेव ज्वालां कृत्वा सुबुद्धिमान् ।
तस्यां मृदु भवेत्तावत्पचनं सम्यगाचरेत् ॥ ७ ॥
गोमयस्थां हरिद्रां च क्षालयेद्वारिणा ततः ।
छायाशुष्कं च कर्त्तव्यं हरिद्रामणिमादरात् ॥ ८ ॥
तेन कुर्यान्मालिकां च अष्टोत्तरशतं तथा ।
पुण्यस्त्रीनिर्मितं सूत्रं मन्त्रैः संच्छेदयेत् सुधीः ॥ ९ ॥

शुक्रवार में कच्ची हल्दी लाकर सात रातों तक छाया में सुखाये । कपिला गाय के गोबर और मूत भूमि पर गिरने के पहले एक हाथ में लेकर किसी बर्तन में रक्खे । उसमें नदी का पानी मिलाकर फेंट दे । उसमें हल्दी डालकर बगलामुखी की पूजा करे । उस बर्तन को चूल्हे पर रविवार की रात में रखकर दुगुना जल डाल कर मिला दे । चूल्हा में पीपल की लकड़ी से आग जलाकर तब तक पकावे जब तक हल्दी मुलायम न हो जाय। इसके बाद गोबर घोल में से हल्दी को निकाल कर पानी से धोकर साफ करे। हल्दी को छाया में सुखाये । सूखने पर उससे एक सौ आठ मनियों की माला बनावे । पवित्र स्त्री के द्वारा काते गये सूत से प्रत्येक में छेद करे ॥ ३-९ ॥

माला संस्कार

तन्मालिकां रवौ वारेऽप्यमृतेनैव मार्जयेत् ।
अर्चयेन्मूलमन्त्रेण षोडशैरुपचारकैः ॥ १० ॥
निवेदयेत् पायसं च शर्कराज्यसमन्वितम् ।
सहस्त्रं प्रजपेदादौ पञ्चाशद्वर्णमादरात् ॥ ११ ॥
एकाक्षरीमहामन्त्रैर्वगलानाम्नि पावनैः ।
अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं मालिकासिद्धिमाप्नुयात् ॥ १२ ॥
एवं च मालिकां कुर्यान् मन्त्रसिद्धिमपेक्षता ।
हरिद्रावस्त्रमाच्छाद्य सिद्ध्यर्थं जपमाचरेत् ॥ १३ ॥
हरिद्रामयपुष्पं च हरिद्रामयचन्दनम् ।
समर्पयेदलङ्कृत्य जपं रात्रौ समाचरेत् ॥ १४ ॥

रविवार को मदिरा से सिंचित कर मूल-मन्त्र से माला की षोडशोपचार से पूजा करे । नैवेद्य में शक्कर, गोघृत मिश्रित खीर अर्पण करे। पहले पचास वर्णो

का एक हजार जप करे । तब बगला के एकाक्षर मन्त्र 'ह्लीं' का दश हजार जप करने से माला सिद्ध हो जाती है । सिद्धि चाहने वाले को इस विधि से माला बनाना चाहिये । हल्दी से रंगे वस्त्र से ढक कर जप करे । हल्दी लिप्त फूल और हल्दी चन्दन अर्पित करे । फिर अलंकृत करके जप करे ॥ १०-१४ ॥

भूमि पर गिरने पर माला का पुनः संस्कार

देवी भूत्वा जपेद्देवीमर्चयेद्विधिवद्यथा ।
प्रमादान् मालिका भूमौ पतिता चेत् कुमारक ॥ १५ ॥
पुनः पूजा प्रकर्त्तव्या पूर्ववज्जपमाचरेत् ।

देवी होकर रात में देवी की पूजा विधिवत् करके जप करे । यदि प्रमादवश माला भूमि पर गिर जाय तब माला की पूजा पुनः करे ॥ १५ ॥

शान्ति आदि कर्मभेद से माला के लक्षण

अथ वक्ष्ये प्रयोगांश्च मालिकालक्षणं तथा ॥ १६ ॥
पञ्चविंशतिभिर्मोक्षैः धनार्थी त्रिंशदेव च ।
वशीकरणसम्मोहे कला संख्या सुमालिका ॥ १७ ॥
द्विपञ्चसप्तविंशद्भिरुच्चाटे चार्कसंख्यया ।
ज्वरे रोगादिपीडार्थं पञ्च चैव चतुर्द्दश ॥ १८ ॥
पञ्चाशच्छान्तिकर्माख्ये बुद्धिं च चतुरुत्तरे ।
पञ्चदशाभिचारे च मालिकाक्रममी(ई)दृशः ॥ १९ ॥

अब प्रयोग और माला के लक्षण को कहता हूँ । मोक्ष-प्राप्ति के लिये बीस मनको की, धन के लिये तीस मणियों की माला बनावे । वशीकरण एवं सम्मोहन के लिये सोलह मनको की माला बनावे । स्तम्भन के लिये बीस मनको की सुन्दर माला बनावे । विद्वेषण के लिये सत्ताइस मनको की माला और उच्चाटन के लिये सत्ताइस मनकों की माला बनावे । ज्वर शक्ति के लिये बारह मनकों की और रोगादि पीड़ा निवारण के लिये चौदह मनकों की माला बनावे । शान्ति कर्म में पचास मनकों की और बुद्धि विस्तार के लिए चौवन दानों की माला बनावे । अभिचार कर्म में पन्द्रह दानों की माला बनावे ॥ १६-१९ ॥

प्रतलिका निर्माण-विधि

भृगुवारे च संगृह्य द्रव्याण्येतानि पुत्रक ।
हरिद्रापङ्कजं वस्तु (पद्मं) कर्पूरं मृगनाभि च ॥ २० ॥
श्रीखण्डरोचनागरुं केसरं च समं समम् ।
मर्द्दयेन्मु(दु)षसि प्रज्ञ खल्वेनैव कुमारक ॥ २१ ॥

१० सांख्या.

तेन कुर्यात् पुत्तलीं च चतुरङ्गुलमानतः ।
सर्वाङ्गसुन्दरीं देवीं द्विभुजां वगलामुखीम् ॥ २२ ॥
चित्रपीताम्बरधरां पीनोन्नतपयोधराम् ।
पीतवर्णां मदाघूर्णामर्द्धचन्द्रां च पुत्तलीम् ॥ २३ ॥
प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा तु संस्नाप्य विधिनाऽर्भकम् ।
अखण्डतण्डुलेनैव हरिद्राक्षतमेव च ॥ २४ ॥

शुक्रवार में हल्दी, कमल, कस्तूरी, श्रीखण्ड, चन्दन, गोरोचन, केसर को बराबर-बराबर लेकर पानी में पीसे । उस पिष्ट में चार अङ्गुल मानकी सर्वाङ्गसुन्दर पुत्तली बनावे । उस पुत्तली में सर्वाङ्गसुन्दरी द्विभुजा, हाथों में वज्र और पानपत्र लिए हुई, पीले वर्ण की, नशे में मत्त, अर्द्धचन्द्र चूड़ा बगलाम्बिका की प्राणप्रतिष्ठा करके विधिवत् स्थापित करे ॥ २०-२४ ॥

अर्चन जप-विधि

कृत्वा एकाक्षरीमन्त्रैरक्षतान् मूर्ध्नि निःक्षिपेत् ।
नित्यं चायुतपूजां च कुर्याच्चैव च पुत्रक ॥ २५ ॥
देवीं सम्पूजयेत्सम्यक् जपं कुर्यात् सुबुद्धिमान् ।
एवं कृत्वा तत्त्वलक्षं देवी प्रत्यक्षतामियात् ॥ २६ ॥
यत् परस्मै न वक्तव्यं न वक्तव्यं कदाचन ।
एवं पूजाविधिं कृत्वा पुरा दुर्वाससेन च ।
तत्त्वलक्षप्रमाणेन प्राप्तं ग्रन्थोदितं फलम् ॥ २७ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'मालाप्रकरणं'
नाम चतुर्विंशतिः पटलः ॥ २४ ॥

अखण्ड चावल को हल्दी में रंग कर एकाक्षरी मन्त्र से देवी के मस्तक पर डाले । इसी प्रकार प्रतिदिन दो बार पूजा करे । देवी की सम्यक् पूजा के बाद तीन लाख की संख्या में जप करने पर प्रत्यक्ष दर्शन होता है । इस विधि को जिस किसी को न देवे और न कभी बतलावे । बहुत पहले इस विधि के अनुसार पूजा करके दुर्वासा मुनियों में श्रेष्ठ हो गये । तीन लाख जप से ग्रन्थोक्त फल मिलता है ॥ २५-२७ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'मालाप्रकरण'
नामक चतुर्विंश पटल समाप्त ॥ २४ ॥

अथ पञ्चविंशः पटलः

बगला-चतुरक्षरीपूजाप्रकरणम्

बगला देवी का ध्यान

नमामि वगलां देवीं शत्रुवाक्स्तम्भरूपिणीम् ।
भजेऽहं विधिपूर्वं च जयं देहि रिपून् दह ॥ १ ॥

शत्रु की बोली को स्तम्भित कर देने वाली बगला देवी आपका भजन मैं विधिपूर्वक करता हूँ । मुझे जय दो और शत्रुओं का दहन करो ॥ १ ॥

चतुरक्षरी महामन्त्र जिज्ञासा

स्कन्द उवाच—

नमः कैलाशनाथाय नमस्ते मुनिसेवित ।
चतुरक्षरीमहामन्त्रं वगलायाश्च मे वद ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—कैलासवासी को प्रणाम है । मुनिसेवित को नमस्कार है । हे शिवजी! बगला के चतुरक्षरी महामन्त्र को कहिये ॥ २ ॥

चतुरक्षरी महामन्त्र का उद्धार

ईश्वर उवाच—

सप्तकोटिमहामन्त्रैर्मन्त्रराजमिमं शृणु ।
षट्प्रयोगैः स्तम्भनं च सर्वकर्मोत्तमोत्तमम् ॥ ३ ॥
यदा शत्रुभयोत्पन्नं तदानीमेव पुत्रक ।
अयुतं च जपेन्मन्त्रं वगलाचतुरक्षरम् ॥ ४ ॥
मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि न्यासध्यानादिकं तथा ।
प्रयोगं चोपसंहारं वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ॥ ५ ॥
वेदादि विलिखेत् पूर्वं पाशबीजं ततः परम् ।
स्तब्धमायां ततोच्चार्य अङ्कुशं बीजमेव च ॥ ६ ॥

चतुरक्षरीं च वगलां सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमाम् ।
न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥ ७ ॥

ईश्वर ने कहा—सात करोड़ महामन्त्रों में इस मन्त्रराज को सुनो । छह प्रयोगों में स्तम्भन कर्म में सभी कर्मों से उत्तम है । जब शत्रुभय उत्पन्न हो तब इस चतुरक्षर मन्त्र को दश हजार बार जपे । मन्त्रोद्धार, न्यास एवं ध्यान आदि कहता हूँ । प्रयोग और उसके उपसंहार को भी कहता हूँ । श्लोक संख्या-६ का उद्धार करने पर बगला का चतुरक्षरी मन्त्र इस प्रकार है—ॐ आं ह्लीं क्रों ।

चतुरक्षरी बगला सभी मन्त्रों में श्रेष्ठ है । अब न्यास-विद्या और मन्त्र-भेद बतलाता हूँ ॥ ३-७ ॥

चतुरक्षरी न्यास-विद्या का वर्णन

पाशाङ्कुशान्तरितशक्तिरमां च तद्व-
त्तद्वन्यसेन्मदनबीजमथो वराहम् ।
वागीश्वरीं च बगलाख्यसुबीजराजं
विन्यस्यतां करयुगे हृदयादिकेषु ॥ ८ ॥
चतुर्व्वणात्मिके मन्त्रे मातृकाबीजपूर्वकम् ।
प्रत्येकं च न्यसेत् पुत्र मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात् ॥ ९ ॥
अथवा वगलामन्त्रं सर्वैरङ्गुलिभिर्न्यसेत् ।
ततो जपेन्मन्त्रराजं वगलाचतुरक्षरम् ॥ १० ॥
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽत्र गायत्री समुदाहृतम् ।
देवता वगलानाम्नी ध्यानं वक्ष्ये कुमारक ॥ ११ ॥

विनियोग—ॐ अस्य श्री बगला चतुरक्षरी मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्दः, श्री बगलामुखी देवता, ह्ली बीजं, आं शक्ति, क्रों कीलकं श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास—श्री ब्रह्मर्षये नमः, शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः, मुखे, श्री बगलामुखी देवतायै नमः, हृदये, ह्लीं बीजाय नमः, गुह्ये, आं शक्तये नमः, पादयोः, क्रों कीलकाय नमः, सर्वाङ्गे, श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

कर-न्यास—ॐ आं ह्लीं क्रों अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ आं ह्लीं क्रों तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ आं ह्लीं क्रों मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ आं ह्लीं क्रों अनामिकाभ्यां हुं । ॐ आं ह्लीं क्रों कनिष्ठाभ्यां वौषट् । ॐ आं ह्लीं क्रों करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादि षडङ्गन्यास

ॐ आं ह्लीं क्रों हृदयाय नमः । ॐ आं ह्लीं क्रों शिरसे स्वाहा । ॐ आं ह्लीं क्रों शिखायै वषट् । ॐ आं ह्लीं क्रों कवचाय हुं । ॐ आं ह्लीं क्रों नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ आं ह्लीं क्रों अस्त्राय फट् । तदनन्तर ध्यान करे ॥ ८-११ ॥

बगला चतुरक्षरी मन्त्र का ध्यान और पुरश्चरण विधान

कुटिलालकसंयुक्तां मदाघूर्णितलोचनाम् ।
मदिरामोदवदनां प्रवालसदृशाधराम् ॥ १२ ॥
सुवर्णकलशप्रख्यकठिनस्तनमण्डलाम् ।
दक्षिणावर्त्तसन्नाभिसूक्ष्ममध्यमसंयुताम् ॥ १३ ॥
रम्भोरुपादपद्मां तां पीतवस्त्रसमावृताम् ।
एवं ध्यात्वा महादेवीं कुर्याज्जपमतन्द्रितः ॥ १४ ॥

ध्यान—देवी बगला के केश घुँघराले हैं । आँखें नशा से घूर्णित हैं । मद्यपान से आनन्दित मुख है । मूँगे के समान लाल ओठ हैं । सोने के कलश के समान कठोर स्तन मण्डल हैं। त्रिवली युक्त नाभि है । नाभि के आवर्त सूक्ष्म और मध्यम हैं । केले के स्तम्भ के समान जांघे हैं । कमल के समान पैर हैं । वह पीले वस्त्रों से समावृत्त हैं। इस प्रकार का ध्यान करके आलस्यरहित होकर जप करे ॥ १२-१४ ॥

वेदलक्षं जपं कुर्यात् पर्वताग्रे कुमारक ।
भिक्षाशिनः फलाशीनो मौनी भूत्वा समाहितः ॥ १५ ॥

पुरश्चरण—शैल शिखर पर चार लाख जप करे । जपकाल में भिक्षान्न का भोजन करे । फल खाकर मौन रहें ॥ १५ ॥

तर्प्पणं च दिवा कुर्याद् रात्रौ वा प्रजपेन्मनुम् ।
एवं कुर्यात् पुरश्चर्यां देवी प्रत्यक्षमाप्नुयात् ॥ १६ ॥
रात्रौ होमं च कर्त्तव्यं दिवा ब्राह्मणभोजनम् ।
हरिद्रावस्त्रसंयुक्तं हरिद्रावर्णचन्दनम् ॥ १७ ॥
हरिद्रां चाक्षमालां च हरिद्रावर्णदेवताम् ।
स्मरेच्च जपकाले तु सर्वसिद्धिकरं नृणाम् ॥ १८ ॥

दिन में तर्पण करे और रात में मन्त्र का जप करे । ऐसा पुरश्चरण करने से देवी प्रत्यक्ष दर्शन देती हैं । रात में हवन करे और दिन में ब्राह्मण भोजन करावे । हल्दी में रंगे वस्त्र पहने । हल्दी का चन्दन लगावे । हल्दी की माला

और हल्दी वर्ण के देवता का स्मरण जपकाल में करने से मनुष्य को सभी सिद्धियाँ मिलती हैं ॥ १६-१८ ॥

मधूकपुष्पसम्मिश्रमर्चितेन जलेन वा ।
तर्पणं तद्दशांशं च देवतामूर्ध्नि निःक्षिपेत् ॥ १९ ॥
आज्येन मिश्रितं चैव शर्करापायसं हुनेत् ।
पूर्णाहुत्यन्तमनघ ब्राह्मणान् भोजयेत् ततः ॥ २० ॥

महुआ फूल मिश्रित जल से दशांश तर्पण करे । देवता के मूर्धा पर भी डाले । गोघृत शक्कर मिश्रित पायस से हवन करे । पुरश्चरण के अन्त में ब्राह्मणों की पूजा करके उन्हें भोजन कराये ॥ १९-२० ॥

योगिनी के लक्षण

योगिनीं पूजयेत् पश्चाद् द्रव्यशुद्धिसमन्वितः ।
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य नात्र कार्या विचारणा ॥ २१ ॥

इसके बाद द्रव्य-शुद्धि करके साधक योगिनी की पूजा करे । इससे मन्त्र की सिद्धि होती है । इसमें किसी प्रकार के विचार की जरूरत नहीं है ॥ २१ ॥

लौकिक आदि त्रिविध पूजा के लक्षण

आदौ भास्वररूपिणीं कुरु तदा सद्वंशजां योगिनीं
नानालक्षणसंयुतां कुचभरां प्रौढां नवोढां तथा ।
स्ता(स्ना)ताभ्यञ्जनभूषणैश्च सहितां सच्चन्दैर्लेपितां
पूजागारमुपानयेद्रहसि सा द्रव्यैश्च शुद्ध्या रहः ॥ २२ ॥

उत्तम कुल में उत्पन्न भास्कररूपा योगिनी का चयन करे । यह योगिनी सभी लक्षणों से युक्त प्रौढ़ा और नवोढा हो । उसे नाना वस्त्र और सुन्दर आभूषण पहना कर चन्दन का लेप लगाकर माला पहनावे । पूजागृह में लाकर बैठाये एवं द्रव्य शुद्धि करे ॥ २२ ॥

योगिनी पूजा के तीन प्रकार

लौकिकी चैव गुप्तात्र सौभाग्यार्चा कुमारक ।
मन्त्रसिद्धिकरं वक्ष्ये गोपनं कुरु सर्वदा ॥ २३ ॥
अङ्गत्रयेण संयुक्तं लौकिकार्चनमेव च ।
चतुरङ्गुलसंयुक्तां गुप्तपूजा कुमारक ॥ २४ ॥

योगिनी पूजा तीन प्रकार की होती है—लौकिकी, गुप्ति और सौभाग्य । ये तीनों पूजा सनातन हैं और मुनियों के लिये भी गुह्य है । यहाँ पर मैं मन्त्र सिद्धि

प्रद लौकिकी, गुप्ता और सौभाग्यार्चन को कहता हूँ । इसे सर्वदा गुप्त रखे । योगियों के मत से चौथी पूजा निर्गुण है ॥ २३-२४ ॥

चारो प्रकार के अर्चन में गौड़ादि देश भेद से सृष्टि आदि नाम सङ्केत एवं उनकी पूजा विधि और उनके फल

सौभाग्यार्चाविधिश्चैव पञ्चाङ्गोपासनं भुवि ।
योषिद्भुक्तिद्रव्ययुक्तं लौकिकार्चनमेव च ॥ २५ ॥
योषिच्छुद्धिद्रव्यपूजा पञ्चमीयुतमादरात् ।
एतत्सौभाग्यपूजा च मुनिगुह्यमुपासनम् ॥ २६ ॥

प्रत्येक पूजा के मन्त्र सिद्धिकारक लक्षणों को कहता हूँ । कुमार इन्हें गुप्त रखना चाहिये । कौलिकार्चन के तीन अङ्ग हैं । योषित को द्रव्ययुक्त भोजन कराना, योषित द्रव्य-शुद्धि पूजा, और पञ्चमी गुप्त अर्चन । यह सौभाग्य पूजा मुनियों की गुह्य और सुपावनी है ॥ २५-२६ ॥

बिन्दुपात्रयुता पूजा निर्गुणा योगिनां मतम् ।
एतच्चतुर्विधा चर्या देशनामार्चनाविधिः ॥ २७ ॥

योगियों के मत से बिन्दुपात्र युक्त पूजा निर्गुण है । इन चारों प्रकार की पूजा की अर्चन की देशी विधि कहता हूँ । यह किसी को देय नहीं है ॥ २७ ॥

वक्ष्येऽहं विधिवत्पुत्र न देयं यस्य कस्यचित् ।
सृष्टिः स्थितिश्च संहारं जीवन्मुक्तिप्रदं तथा ॥ २८ ॥
एतदर्चाविधिर्नामसङ्केतं मुनिभिः सह ।
सृष्टिश्च गौडदेशेषु स्थितिः केरलदेशके ॥ २९ ॥
संहारार्चा कामरूपे कुरुपाञ्चालयोः परम् ।
पीठोपरि समावेश्य गर्भकौलागमक्रमात् ॥ ३० ॥

ये सृष्टि, स्थिति, संहार और जीवन मुक्तिप्रद हैं । इनकी अर्चा विधि नाम सङ्केत कहता हूँ । सृष्टि-पूजा गौड़ देश में होती है, स्थिति-पूजा केरल देश में, संहार-पूजा कामरूप में और जीवन्मुक्ति-पूजा पाञ्चाल देश में होती है । सृष्टि-पूजा क्रम में पीठ पर बैठाकर कौलागम क्रम से पूजा होती है ॥ २८-३० ॥

अर्चनं गौडदेशीयं सृष्टिपूजाक्रमस्त्वयम् ।
पूर्वोक्तलक्षणोपेतां मृदुपर्य्यंकके तथा ॥ ३१ ॥
शयनीकृत्य कन्यां च स्थित्यर्चाक्रममादरात् ।
केरले तु स्थितिश्चैव सिद्ध्यसिद्धिकरी तथा ॥ ३२ ॥

यह गौड़ देशीय अर्चन क्रम है । स्थिति-पूजा में पूर्वोक्त लक्षणों वाली कन्या को कोमल पलङ्ग पर लेटाकर क्रिया होती है । यह केरल क्रम है । यह सिद्धिकरी विद्या है ।। ३१-३२ ।।

कौलसारं च तन्नाम सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमम् ।
पूर्वोक्तलक्षणोपेतास्तिष्ठन्ति कन्यका भुवि ॥ ३३ ॥
कामरूपाख्यदेशे तु संहाराह्वयपूजनम् ।
पूर्वोक्तलक्षणोपेतां कृत्वाभ्यञ्जनमादरात् ॥ ३४ ॥
बिन्दुमात्रं गृहीत्वा तु कृत्वा मुक्त्यर्चनं भुवि ।
कुरुपाञ्चालदेशीयमनिशं पूजनं तथा ॥ ३५ ॥
कौलसारपरं नाम चागमं भुवि दुर्ल्लभम् ।
सम्यक् पूजाविधिश्चैव उपसंहृतमानसः ॥ ३६ ॥

यह कौल सारतर नामक पूजा सभी तन्त्रों में उत्तमोत्तम है । कामरस्य देश में संहार पूजन में पूर्वोक्त लक्षणों वाली कन्या भूमि पर बैठायी जाती है । मुक्तार्चन में पूर्वोक्त लक्षण वाली कन्या को हाँथ में मद्यपात्र देकर शय्या पर बैठाया जाता है । कुरु पञ्चाल देश में यह पूजा अहर्निश होती है । यह कौलसारतर नामक आगम संसार में दुर्लभ है । जप, ध्यान समन्वित सम्यक् पूजा विधि स्वयं देवता होकर पञ्चम अर्चा समाप्त करे ।। ३३-३६ ।।

पञ्चमी चैव कर्त्तव्या सौख्यार्थं तस्य पुत्रक ।
पात्रं चैव समासेन जपध्यानसमन्वितः ॥ ३७ ॥
देवो भूत्वा स्वयं पुत्र पञ्चमीं च समाचरेत् ।
संहारार्चनयोरेवमुपसंहृत्य पूजनम् ॥ ३८ ॥
सम्पूजयेत् पञ्चमीं चैव सौख्यार्थं तस्या साधकः ।
आदौ मध्ये तथा चान्ते बिन्दुपात्रार्थमेव च ॥ ३९ ॥
अर्चयेत् पञ्चमीं कुर्याद् ग्रहणे चन्द्रसूर्य्ययोः ।
कुरुपाञ्चालदेशेऽथ निग्गुर्णार्च्चाविधिस्तथा ॥ ४० ॥
एतदर्च्चाविधिश्चैव दुर्ल्लभोः विधिशङ्करैः ।

संहार अर्चन में देवी को हृदय में लाकर पूजन होता है । पञ्चमी पूजा पूर्ववत् सौख्य के लिये होती है । चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण के प्रारम्भ मध्य और अन्त में मद्यपात्र देकर पञ्चमी अर्थात् कन्या की पूजा करे । कुरुपाञ्चाल देशोक्त निर्गुण अर्चन की विधि शङ्कर भाषित विधि में भी दुर्लभ है ।। ३७-४० ।।

गौडदेशार्चनं पुंसां शान्तिपुष्टिकरं सदा ॥ ४१ ॥

एवमेव विधिः पुत्र सर्वैश्वर्यप्रदायकः ।
कामरूपार्चनं पुंसां मारणादिप्रयोगकृत् ॥ ४२ ॥
कुरुपाञ्चालदेशार्च्चा सर्वसिद्धिप्रदा सदा ।
एतदर्च्चाविधिं चैव यः करोति सुबुद्धिमान् ॥ ४३ ॥
जीवन्मुक्तः स एवात्र स सिद्धो नात्र संशयः ।

गौड़ देशार्चन पूजा शान्ति और पुष्टिप्रद है । इसकी पूजा-विधि पूर्ववत् है । यह सभी ऐश्वर्य देने वाली है । कामरूप अर्चन का प्रयोग मारण आदि मे होता है । कुरुपाञ्चाल देश का अर्चन सभी सिद्धियों को देने वाला है । इस अर्चन विधि से जो पूजा करता है, वह जीवन्मुक्त सिद्ध होता है ॥ ४१-४३ ॥

नारीनिन्दा न कर्त्तव्या स्वपादैस्तां न संस्पृशेत् ॥ ४४ ॥
नारीं दृष्ट्वा मानसेन वन्दनं च समाचरेत् ।
स्वप्रियामर्च्चयेत् पुत्र प्रियां पञ्चमिकां चरेत् ॥ ४५ ॥
स्वप्रियाबिन्दुपात्रं च गृहीत्वा साधकोत्तमः ।
असह्येनार्चनं कृत्वा बिन्दुपात्रं तथैव च ।
उन्मादी च भवेत् पुत्र मृतः श्वानो भविष्यति ॥ ४६ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'चतुरक्षरीपूजाप्रकरणं' नाम पञ्चविंशतिः पटलः ॥ २५ ॥
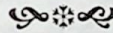
साधक नारी निन्दा न करे । अपने पैरों से उसका स्पर्श न होने दे । नारी को देखकर मानसिक बन्दन करे । अपनी पत्नी को पञ्चमी रूप में पूजा करे । अपनी पत्नी का मद्यपात्र लेकर असम्मत पूजा न करे । असम्मत बिन्दु पात्र ग्रहण करके पञ्चमी पूजा करने से साधक पागल हो जाता है और कुत्ता की योनि में जन्म लेता है ॥ ४४-४६ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'चतुरक्षरीपूजाप्रकरण' नामक पञ्चविंश पटल समाप्त ॥ २५ ॥

अथ षड्विंशः पटलः

चतुरक्षरी-तर्पणप्रयोगम्

बगला देवी ध्यान

जातवेदमये देवि जगज्जननकारिणि ।
जय पीताम्बरधरे बगलायै नमो नमः ॥ १ ॥

जातवेदमये देवि । जगत् जनकारिणि! जय पीताम्बर देवि बगले! आपको बार-बार प्रणाम है ॥ १ ॥

बगला चतुरक्षरी मन्त्र प्रयोग जिज्ञासा

स्कन्द उवाच—

नमस्ते सिद्धसंसेव्य सिद्धविद्याधरार्चित ।
वगलाचतुरक्षर्याः प्रयोगं वद शङ्कर ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—हे सिद्धों के सेवन योग्य सिद्ध विद्याधरों के द्वारा अर्चित शङ्कर ! बगला चतुरक्षरी के प्रयोग कहिये ॥ २ ॥

नाना द्रव्य योग से तर्पण प्रयोग विधि

शिव उवाच—

प्रयोगं तर्पणं चैव वक्ष्येऽहं तव पुत्रक ।
तर्पणं देवतावासं तर्पणं यन्त्रसिद्धिदम् ॥ ३ ॥
तर्पणं मन्त्रसंस्कारं सर्वं तत्तर्पणाद् भवेत् ।
तर्पणं द्रव्ययोगं च ततः सिद्धिर्न संशयः ॥ ४ ॥
अर्चनं कलशे चैव प्रकाशादि च वर्जितम् ।
गृहीत्वा क्षालयेत् सम्यक् पूजयेन्मूलमन्त्रतः ॥ ५ ॥
तज्जलं च समानीय पूजयेत् सुसमाहितः ।
आपो वा इति मन्त्रेण मन्त्रयेत्तज्जलं पुनः ॥ ६ ॥
उपचारैः षोडशभिः पूजयेत् कुम्भमादरात् ।

तत्पवित्रेण संयुक्तं तर्प्यणस्यायुतेन च ॥ ७ ॥
तेनोक्तविधिना सम्यक् पूजनं तदुदाहृतम् ।

ईश्वर ने कहा—हे पुत्र! प्रयोग और तर्पण को कहता हूँ । तर्पण मन्त्र संस्कार सभी कुछ तर्पण से होते हैं । द्रव्ययोग से तर्पण करने पर सिद्धि प्राप्त होती है इसमें संशय नहीं है । कलश में अर्चन दीपक के बिना करे । कलश को लेकर अच्छी तरह से धोकर मूल विद्या से पूजा करे । हाँथों से स्थापित करके एकाग्रता से सम्यक् पूजा करे । 'आपोहिष्ठा' मन्त्र से उसके जल को मन्त्रित करे । कलश की पूजा षोडशोपचार से करे । प्रयोग में उक्त विधि से पूजा करना चाहिये ॥ ३-७ ॥

काकोलूकच्छदेनैव पवित्रं ग्रन्थिमादरात् ॥ ८ ॥
तत्पवित्रेण संयुक्तं तर्पणस्यायुतेन च ।
नेत्ररोगी भवेच्छत्रुर्दिवान्धो जायते ध्रुवम् ॥ ९ ॥
काकपत्रेण संयुक्तं पवित्रग्रन्थिमादरात् ।
तेनैव सह सन्तर्प्य अयुतं साधकोत्तमः ॥ १० ॥
काकवद् भ्रमते शत्रुर्महीमामरणान्तिकम् ।

गौड़तन्त्र के अनुसार कौआ और उल्लूं के पंखों को उल्लू के पाँव में बाँधकर पवित्रा बनावे । इसी पवित्रा से दश हजार तर्पण करे । ऐसा करने से शत्रु नेत्र रोगी होकर दिवान्ध हो जाता है। कौआ के पंख से पवित्रा को बाँधकर उससे तर्पण करने पर शत्रु पृथ्वी पर भ्रमता रहता है । जब तक उसकी मृत्यु नहीं हो जाती ॥ ८-१० ॥

काकोलूकस्य पक्षाभ्यामेकीकृत्वा सुबुद्धिमान् ॥ ११ ॥
कृत्वा पवित्रग्रन्थिं च तेन सन्तर्प्य चादरात् ।
अयुतं वगलामन्त्रैः शत्रुविद्वेषणं भवेत् ॥ १२ ॥
विड्वराहमजारोमैः पवित्रग्रन्थिमादरात् ।
तर्पयेदयुतं तेन वगलाचतुरक्षरैः ॥ १३ ॥
अन्नद्वेषो जायते च स शत्रुरवशिष्यते ।

कौआ और उल्लू के पंखों को एकत्र करके पवित्रा में गाँठ लगाकर दश हजार तर्पण करे । बगला मन्त्र से भी दश हजार तर्पण करे, तो शत्रु का विद्वेषण होता है । सूअर के रोम से बने पवित्रा में गाँठ लगावे, तदनन्तर चतुरक्षर बगला में दश हजार तर्पण करे । शत्रु के रज से तर्पण करने से रोगी को अन्न में द्वेष हो जाता है । अन्न नहीं खाने से शत्रु एक महीने तक जिन्दा रहता है ॥ ११-१३ ॥

केशं च कलशस्थं च पवित्रग्रन्थिमादरात् ॥ १४ ॥
अयुतं तर्पणेनैव स शत्रोर्नाशनं भवेत् ।
उष्ट्ररोमेण कृत्वा तु पवित्रग्रन्थिरेव च ॥ १५ ॥
तेनायुतं तर्पणेन मूको भवति पण्डितः ।
पूर्ववद्वाजिरोमेण तर्पणं च कुमारक ॥ १६ ॥
हिक्कारोगो भवेत्तस्य शीघ्रं भ्रान्तो भविष्यति ।

शत्रु के केश और गदहे के बाल से पवित्रा में गाँठ लगावे । इससे दश हजार तर्पण करने पर शत्रु का नाश होता है । उसी प्रकार ऊँट के बाल से पवित्रा में गाँठ लगाकर दश हजार तर्पण करने से पण्डित भी गूँगा हो जाता है। पर्ववत घोड़े के वाल से तर्पण करने पर शत्रु को हिचकी का रोग हो जाता है। और वह परिभ्रान्त हो जाता है ॥ १४-१६ ॥

खररक्तेन सम्मिश्रमर्चितं जलतर्पणात् ॥ १७ ॥
जिह्वास्तम्भो भवत्येव वाणीपतिसमोऽपि वा ।
श्वानरक्तेन सम्मिश्रमर्चितं शुभवारिणा ॥ १८ ॥
अयुतं तर्पणात्पुत्र उन्मादी जायते रिपुः ।
काकरक्तेन सम्मिश्रमर्चितं शुद्धवारिणा ॥ १९ ॥
अयुतं तर्पणात्पुत्र काकवद् भ्रमते महीम् ।
उलूकरक्तसम्मिश्रमर्चितं शुभवारिणा ॥ २० ॥
रिपुरन्धो भवेत् पुत्र अयुताच्च न संशयः ।

गधे के रक्त मिश्रित जल से दश हजार तर्पण करने पर वाणी पति के समान शत्रु के जिह्वा का स्तम्भन हो जाता है । कुत्ते के खून मिले जल से दश हजार तर्पण करने से शत्रु कुत्ते के समान भूतल पर घूमता रहता है । जल में कौआ का खून मिलाकर दश हजार तर्पण करने पर शत्रु कौआ के समान पृथ्वी घूमता रहता है । उल्लू के रुधिर मिश्रित जल से दश हजार तर्पण करने पर शत्रु जात्यन्ध हो जाता है॥ १७-२० ॥

मार्जारबालरक्तेन मिश्रिताज्जलतर्पणात् ॥ २१ ॥
भ्रान्तचित्तो भवेच्छत्रुरयुताच्च न संशयः ।
विड्वराहस्य रक्तेन मिश्रितं जलतर्पणम् ॥ २२ ॥
उन्मादी च भवेच्छत्रुरयुतादेव पुत्रक ।
लुलायरक्तसम्मिश्रजलेनैव तु तर्पणम् ॥ २३ ॥
अयुतादरिगर्वं तु मूकत्वं कुरुते नृणाम् ।
भुजङ्गरक्तसम्मिश्रजलेनैव तु तर्पणम् ॥ २४ ॥

शत्रूणां मारणं पुत्र अयुताच्च न संशयः ।
छागरक्तेन सम्मिश्रमर्चितेन जलेन च ॥ २५ ॥
तर्पणेनायुतेनैव व्रणरोगी भवेद्रिपुः ।

बाल विलार के खून के जल में मिलाकर दश हजार तर्पण करने से शत्रु भ्रान्त चित्त हो जाता है । विड वराह के रक्त को जल में मिलाकर तर्पण दश हजार करने पर शत्रु पागल हो जाता है । लुलाय रक्त मिश्रित जल से दश हजार तर्पण करने से वैरी वर्ग गूंगा हो जाता है । सर्प रक्त मिश्रित जल में दश हजार तर्पण करने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है । वकरे के रक्त मिश्रित जल से दश हजार तर्पण करने पर शत्रु व्रण रोगी हो जाता है ॥ २१-२५ ॥

शशकस्य तु रक्तेन मिश्रितेन जलेन च ॥ २६ ॥
क्षयरोगी भवेन्मर्त्योऽप्ययुताच्च न संशयः ।
मत्कुणस्य च रक्तेन मिश्रितेन जलेन च ॥ २७ ॥
अयुतात्तस्य शत्रोश्च भवेन्मरणमुत्तमम् ।
मेषस्य पुच्छरक्तेन मिश्रितेन जलेन च ॥ २८ ॥
अयुताज्ज्वररोगी च जायते तत्क्षणाद्रिपुः ।
द्रव्येणैव च सम्मिश्रमर्चितं जलतर्पणम् ॥ २९ ॥
अयुताच्चिन्तितं कार्यं भवत्येव न संशयः ।
एतत्तर्पणयोगं च सिद्धात् सिद्धतरं सुत ।
न वक्तव्यं न वक्तव्यं न वक्तव्यं कदाचन ॥ ३० ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'चतुरक्षरीतर्पणप्रयोगं' नाम षड्विंशतिः पटलः ॥ २६ ॥
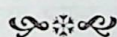
खरगोश रक्त मिश्रित जल से दश हजार तर्पण करने पर शत्रु को क्षय रोग हो जाता है । मत्कुण (खटमल) रक्त मिश्रित जल से दश हजारतर्पण करने से शत्रु घाव से मर जाता है । भेड़ के पूँछ खून को जल में मिलाकर दश हजार तर्पण करने से शत्रु बुखार से पीड़ित होता है । इन सभी द्रव्यों को जल में मिलाकर तर्पण करने से चिन्तित सभी कार्य होते हैं यह तर्पण योग सिद्ध से भी सिद्धता होती है । कभी किसी को इस न बतलावे ॥ २६-३० ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'चतुरक्षरीतर्पणप्रयोग' नामक षड्विंश पटल समाप्त ॥ २६ ॥
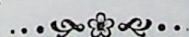
अथ सप्तविंशः पटलः

चतुरक्षरीहवनवर्णनम्

परब्रह्म अधिदेवता बगला का ध्यान

नानालङ्कारशोभाढ्यां नरनारायणप्रियाम् ।
वन्देऽहं वगलां देवीं परब्रह्माधिदेवताम् ॥ १ ॥

नाना अलङ्कारों से सुशोभित नर और नारायण की प्रिया परब्रह्म अधिदेवता बगला देवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

बगलाचतुक्षरीमन्त्र हवन प्रयोग जिज्ञासा

स्कन्द उवाच—

वन्दे पाशुपताध्यक्ष परमानन्दविग्रह ।
वद होमप्रयोगं च वगलचतुरक्षरैः ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—पाशुपत के अध्यक्ष को प्रणाम! हे परमानन्द विग्रह बगला चतुरक्षरी हवन प्रयोग कहिये ॥ २ ॥

कर्मभेद से कुण्डभेद एवं स्थान भेद और हवन द्रव्य योग

शिव उवाच—

वक्ष्ये होमविधिं सम्यक् सावधानेन श्रूयताम् ।
अयुतं पुत्र होमं च पिचुमन्दफलैर्हुनेत् ॥ ३ ॥
अयुताच्छत्रुसंहारो भ्रान्तभीतो भवेद् ध्रुवम् ।
करवीराणि रक्तानि अयुतं चाज्यसंयुतम् ॥ ४ ॥
हुनेत् त्रिकोणकुण्डे तु अयुताद् रिपुमारणम् ।
विषतिन्दुकबीजं च सौवीरद्रवसंयुतम् ॥ ५ ॥

ईश्वर ने कहा—मैं हवन विधि सम्यक् रूप से कहता हूँ, सावधानीपूर्वक सुनो । पिचुमन्द फल से दश हजार हवन करे तो शत्रु समूह भ्रान्तचित्त होता

है । करवीर और शलाढु में गोघृत मिलाकर त्रिकोण कुण्ड में दश हजार हवन करे तो शत्रु की मृत्यु हो जाती है ॥ ३-५ ॥

ग्राममध्ये हुनेन्मन्त्री भगाकारे च कुण्डके ।
तद्ग्रामे वेदशास्त्राणि सर्वं विस्मृतिमाप्नुयात् ॥ ६ ॥

गाँव के बीच में अग्नि कोण में पलाश बीज से दश हजार हवन करे तो उस गाँव में रहने वाले पण्डित सभी शास्त्रों को भूल जाते हैं ॥ ६ ॥

शेषभाषापतिप्रख्यः स एव जडतामियात् ।
वटमूलं समाश्रित्य कृत्वा कुण्डं त्रिकोणकम् ॥ ७ ॥
तत्फलेन हुनेद् रात्रौ अयुतं चाज्यमिश्रितम् ।
भाषापतिसमो विद्वांस्तत्क्षणाद् भ्रान्तिमाप्नुयात् ॥ ८ ॥

शेषनाग भाषापति प्रख्य भी जड़ हो जाते हैं । बरगद के मूल के निकट त्रिकोण कुण्ड बनावे । आज्यमिश्रित बरगद के फलों से दश हजार हवन करे तो भाषापति के समान विद्वान् तत्क्षण भ्रान्त हो जाते हैं ॥ ७-८ ॥

अश्वत्थमूलमाश्रित्य षट्कोणाकृतिकुण्डके ।
तत्फलं च हुनेद् रात्रौ अयुतं चाज्यमिश्रितम् ॥ ९ ॥
स्फोटकव्रणसंयुक्तो म्रियते यमशासनात् ।
उदुम्बरस्य मूले तु षट्कोणाकृतिकुण्डके ॥ १० ॥
कोमलं तत्फलं सम्यगयुतं चाज्यमिश्रितम् ।
जुहुयाद्रजकस्याग्नौ जुहुयाद्दक्षिणामुखः ॥ ११ ॥
ग्रामं वा नगरं वाथ रणं राजकुलं तु वा ।
नाडीव्रणसमायुक्तो नानादुःखेन पुत्रक ॥ १२ ॥
म्रियते न च सन्देहो नात्र कार्या विचारणा ।

पीपल के मूल के निकट षट्कोणकृति कुण्ड बनाकर अन्य मिश्रित पीपल के फलों से दश हजार हवन करे तो चेचक घाव से मृत्यु हो जाती है । गूलर वृक्ष के मूल के निकट षट्कोण कुण्ड में आज्य सिक्त कोमल गूलर फलों से धोबी के घर की दक्षिणमुख होकर दश हजार हवन करे तो गाँव या नगरवासी, युद्ध, राजकुल, नाड़ी व्रणसमायुक्त होकर नाना दुःख से मरते हैं । इसमें सन्देह नहीं है, विचार आवश्यक नहीं है ॥ ९-१२ ॥

राजवृक्षं समाश्रित्य तन्मूले च कुमारक ॥ १३ ॥
हस्तमात्रं भगाकारं कुण्डं कुर्याद् विचक्षणः ।
तत्फलं निम्बतैलेन मिश्रितं निशि बुद्धिमान् ॥ १४ ॥

नेत्रायुतं हुनेद् धीमान् ग्रामं वा नगरं तथा ।
स्फोटकव्रणसंयुक्तो हस्तपादादिभग्नतः ॥ १५ ॥
पर्यायान् म्रियते चैव नात्र कार्या विचारणा ।

राजवृक्ष मूल के निकट हाँथ भर मान का भगाकार कुण्ड बनावे । राजवृक्ष के फलों को नीम तैल से सिक्त करके तीस हजार हवन करे तो ग्राम या नगरवासी हाँथ-पाँव में स्फोटक घाव से शत्रु मर जाते हैं । यहाँ विचार आवश्यक नहीं है ॥ १३-१५ ॥

सर्षपं लवणं चैव तिलतैलेन मिश्रितम् ॥ १६ ॥
अयुतं जुहुयान्मन्त्री ज्वररोगी भवेद्रिपुः ।
पिचुमन्दस्य तैलेन मिश्रितं लवणं तथा ॥ १७ ॥
हुनेच्च पूर्ववत् कुण्डे अयुतं प्रेतपावके ।
कुष्ठरोगी भवेच्छत्रुम्रियते तेन निश्चितम् ॥ १८ ॥

तिल तेल मिश्रित सरसो व नमक से दश हजार हवन करने पर शत्रु बुखार से मर जाता है । पिचुमन्द तेल मिश्रित नमक से दश हजार हवन चिता के अग्नि में करने से शत्रु कोढ़ी होकर मर जाता है ॥ १६-१८ ॥

शमीमूले हुनेत्पुत्र शृणु वक्ष्यामि तत्फलम् ।
तिलतैलेन सम्मिश्रं तत्फलं निशि पुत्रक ॥ १९ ॥
जुहुयात्तत्क्षणात् पुत्र शृणु वक्ष्यामि तत्फलम् ।
वातरोगी भवेच्छत्रुम्रियते नात्र संशयः ॥ २० ॥
अपामार्गस्य बीजं तु तिलतैलेन मिश्रितम् ।
शमीमूले हुनेत्पुत्र अयुतं ध्यानपूर्वकम् ॥ २१ ॥
तत्रस्थाः शत्रुभार्याश्च तद्गृहे यत्र योषितः ।
वन्ध्याः स्त्रियो भवेयुश्च सत्यमेव शिवोदितम् ॥ २२ ॥

शमी पेड़ के नीचे त्रिकोण कुण्ड बनाकर तिल तेल मिश्रित शमी के फलों से दश हजार हवन करने के फल को बतलाता हूँ । उसी क्षण से शत्रु वात रोग से पीड़ित होकर मर जाता है । अपामार्ग के बीज में तिल तेल मिलाकर शमी मूल में दश हजार हवन ध्यानपूर्वक करे । वहाँ स्थित शत्रुभार्या घर में स्थित स्त्रियाँ वन्ध्या हो जाती है । यह शिवोक्त कथन सत्य है ॥ १९-२२ ॥

शमीमूलं समाश्रित्य शलाटुं च समासतः ।
तिलतैलेन सम्मिश्रं जुहुयादयुतं तथा ॥ २३ ॥
प्रेताग्नौ रजकाग्नौ वा पूर्वोक्ते चैव कुण्डके ।

वैरिस्त्रीणां भवेत् सद्यः स्रवद्रक्तं निरन्तरम् ॥ २४ ॥
तिलतैलेन सम्मिश्रं शलाटु शाल्मलीभवम् ।
पूर्ववच्च हुनेत् पुत्र मेहरोगी भवेद्रिपुः ॥ २५ ॥

शमी मूल के निकट शलाटु तेल और तिल तेल मिलाकर दश हजार हवन धोबी के घर के आग या चिता की अग्नि से त्रिकोण कुण्ड में प्रज्वलित अग्नि में करे । इससे वैरी की स्त्रियों को रक्तस्राव निरन्तन होने लगता है । तिल तेल युक्त शलाटु और सेमर वृक्ष से पूर्ववत् हवन करे तो शत्रु को मधुमेह रोग हो जाता है ॥ २३-२५ ॥

एवं होमप्रयोगं च रात्रौ कुर्यात् कुमारक ।
प्रयोगं चोपसंहारं सत्पुत्रायापि नो वदेत् ॥ २६ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'बगलाचतुरक्षरीहवनवर्णनं' नाम सप्तविंशतिः पटलः ॥ २७ ॥
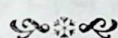
इस प्रकार के हवन रात में करे । प्रयोग के आदि और अन्त में पूजा करे । प्रयोग और उपसंहार अपने सत्पुत्र को भी न बतलावे । तन्त्र-मन्त्र के प्रयोग सत्य है, संशय न करे । इस प्रकार के प्रयोग जो करते हैं उन्हें सिद्धि मिलती है । पूजा के बिना प्रयोग कर्म निष्फल होता है ॥ २६ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'बगलाचतुरक्षरीहवनवर्णन' नामक सप्तविंश पटल समाप्त ॥ २७ ॥

अथाष्टाविंशतिः पटलः

बगलाहृदयप्रयोगम्

स्तम्भनास्त्ररूपिणी बगला का ध्यान

बालभानुप्रतीकाशां नीलकोमलकुन्तलाम् ।
वन्देऽहं वगलां देवीं स्तम्भनास्त्रस्वरूपिणीम् ॥ १ ॥

देवी की आभा बाल सूर्य के समान है । केश नीले और कोमल हैं । स्तम्भनास्त्र स्वरूपिणी बगला देवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥ १ ॥

स्तम्भ विद्या के प्रयोग की जिज्ञासा

स्कन्द उवाच—

विश्वनाथ नमस्तेऽस्तु विरूपाक्ष नमो नमः ।
सुगमं स्तम्भविद्यायाः प्रयोगं वद शङ्कर ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—विश्वनाथ तुम्हें प्रणाम है । विरूपाक्ष को बार-बार प्रणाम है । हे शङ्कर! सुगमा स्तम्भिनी विद्या के प्रयोग कहिये ॥ २ ॥

बगलाहृदय मन्त्र की प्रशस्ति का वर्णन

शिव उवाच—

वगलाहृदयं मन्त्रं गुप्तगुप्ततरं तथा ।
एतच्छ्रवणमात्रेण मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥
न ध्यानं न च होमं च न जपं न च तर्पणम् ।
सकृदुच्चारणान् मन्त्राच्चिन्तितं भवति ध्रुवम् ॥ ४ ॥
न चाभिषेकं न च मन्त्रदीक्षा
न चात्र दिक्काल ऋतुश्च देवता ।
न चापि पञ्चेन्द्रियनिग्रहं च
सकृत् स्मरन्वै वगलाख्यहृन्मनुम् ॥ ५ ॥

वगलाहृदयं मन्त्रं ब्रह्मादीनां च दुर्लभम् ।
सकृत् स्मरणमात्रेण वाञ्छितं फलमाप्नुयात् ॥ ६ ॥
दरिद्रोऽपि भवेच्छ्रीमान् स्तब्धीभवति पण्डितः ।
चतुरो मुष्करश्चैव कीर्त्तिमान् निन्दको भवेत् ॥ ७ ॥
कबीरश्वरोऽपि चोन्मादी भोगासक्तोऽपि रोगवान् ।
रोगवान् क्षयरोगी स्यात् कुलजो निन्दको भवेत् ॥ ८ ॥
मानी लघुतरश्चैव नैष्ठिको भ्रष्टतां व्रजेत् ।
एतद्विना कलौ पुत्र सुकृतकीर्त्तिकारणम् ॥ ९ ॥
गुणश्च वर्त्तते पुंसां तस्योत्पन्नकारणम् ।
वगलाहृदयं मन्त्रं सकृदावर्त्तयेत्तु यः ॥ १० ॥
तस्योल्लङ्घनमात्रेण नष्टः स्यात्पद्मजोऽपि वा ।
वगलाहृदयं मन्त्रमुपासनपरस्य च ॥ ११ ॥
करोति यस्य सन्तोषं तस्य सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ।
येन केनाप्युपायेन हृन्मन्त्रं येन जायते ॥ १२ ॥
सन्तोषं जनयेत् तस्य चिन्तितं फलमाप्नुयात् ।

ईश्वर ने कहा—बगलाहृदय मन्त्र गुह्य से गुह्यतर है । इसके सुनने से ही मन्त्रसिद्धि प्राप्त होती है । न ध्यान, न हवन, न जप और न तर्पण की जरूरत होती है । मन्त्र के उच्चारण से ही चिन्तित कार्य होता है । बगलाहृदय मन्त्र में अभिषेक, मन्त्र-दीक्षा विधि, कालविद्या देवता और पञ्चेन्द्रिय निग्रह आवश्यक नहीं है । केवल उच्चारण से ही सिद्धि मिल जाती है । बगलाहृदय मन्त्र ब्रह्मा आदि देवों को भी दुर्लभ है। केवल इसके स्मरण से ही वाञ्छित फल मिल जाता है । गतिमान पङ्गु और वादी गूँगा हो जाता है । दरिद्र धनवान् हो जाता है । पण्डित स्तब्ध हो जाता है । निन्दित चतुर वक्ता और कीर्तिवान् हो जाता है । कवीश्वर भी पागल हो जाता है । भोग में आसक्त रोगी हो जाता है । सत्यवादी क्षय रोगी हो जाता है । कुलीन निन्दित हो जाता है । मानी निर्लज्ज और निष्ठावान् भ्रष्ट हो जाता है ।

कलियुग में इसके समान सुकृत कीर्ति का कारण और कुछ नहीं है । पुरुष में गुणों की वृद्धि होती है । उसके नाश का कारण है । बगलाहृदय मन्त्र का जप जो करता है । उसका उल्लंघन करने से ब्रह्मा भी नष्ट हो सकते हैं । बगलाहृदय उपासना में संलग्न साधक से देवी सन्तुष्ट होकर सिद्धि देती है । क्रौंचभेदन सुनो, किसी प्रकार जो बगलाहृदय मन्त्र को जपता है उसे वाञ्छित फल मिलता है ।। ३-१२ ।।

बगलाहृदय मन्त्र का उद्धार उसके जप से वन्ध्यादोष कृत्रिम रोग का नाशन फल

तन्मन्त्रोद्धारमतुलं तत्वतः स्वविधानतः ॥ १३ ॥
वक्ष्येऽहं तव सर्वज्ञ क्रौञ्चभेदन तच्छृणु ।
पाशबीजं ततोच्चार्य स्तब्धमायां ततोच्चरेत् ॥ १४ ॥
अङ्कुशं बीजमुच्चार्य भूव(वा)राहं तथोच्चरेत् ।
वाराहं वाग्भवं चैव कामराजं ततः परम् ॥ १५ ॥
श्रीबीजं भुवनेशीं च वगलामुखिपदं वदेत् ।
आवेशद्वयं चोक्त्वा पाशबीजमतोच्चरेत् ॥ १६ ॥
स्तब्धमायां ततोच्चार्य मङ्कुशं बीजमुच्चरेत् ।
ब्रह्मास्त्ररूपिणीं चोक्त्वा एहियुग्मं ततोच्चरेत् ॥ १७ ॥
पाशबीजमतोच्चार्य स्तब्धमायां ततोच्चरेत् ।
अङ्कुशं बीजमुच्चार्य मम शब्दं ततोच्चरेत् ॥ १८ ॥
हृदये तु समुच्चार्य आवाहययुगं वदेत् ।
सान्निध्यं कुरुयुग्मं च पुनर्बीजत्रयं वदेत् ॥ १९ ॥
ममैव हृदयेत्युक्त्वा चिरं तिष्ठद्वयं वदेत् ।
पुनर्बीजत्रयं चोक्त्वा हुं फट् स्वाहासमन्वितः ॥ २० ॥
अशीतिवर्णसंयुक्तो वगलाहृदयं मनुः ।
बन्ध्यामुन्मार्जयेदङ्गं वगलाहृदयेन च ॥ २१ ॥
वन्ध्या पुत्रवती चैव षण्मासाद् भवति ध्रुवम् ।
वगलाहृदयेनैव त्रिसप्तमभिमन्त्रितम् ॥ २२ ॥
पयः पिबति वा सा स्त्री वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ।
कृत्रिमेषु च रोगेषु नानाभयसमुद्भवे ॥ २३ ॥
त्रिसप्तमन्त्रितं तोयं सद्यो नैर्मल्यमातनोत् ।
नित्यमष्टोत्तरशतं वगलाहृदयं मनुम् ॥ २४ ॥
चिन्तितं च भवेत् पुत्र नात्र कार्या विचारणा ॥ २५ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'बगलाहृदयप्रयोगं' नाम अष्टाविंशतिः पटलः ॥ २८ ॥
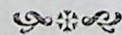
हृदय मन्त्र का उद्धार अतुल्य है अत: अपने-अपने विधान के अनुसार सभी को कहता हूँ । क्रौंचभेदन सुनो, क्रमाङ्क १५ से २१ तक के श्लोकों का उद्धार

करने पर अस्सी अक्षरों के बगला हृदय मन्त्र का रूप यह है—आं ह्लीं क्रों ब्रह्मास्त्र रूपिणी! ऐहि ऐहि आं ह्लीं क्रों मम हृदये आवाहय आवाहय, सान्निध्यं कुरु कुरु आं ह्लीं क्रों ममैव हृदय चिरं तिष्ठ तिष्ठ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा । पुत्र दे दे शिर दर्द पर यह हृदय मन्त्र किसी को न दे । वन्ध्या के अङ्गों में वगलाहृदय मन्त्र में मार्जन करे तो छह महीनों में वन्ध्या पुत्रवती हो जाती है । बगलाहृदय मन्त्र के एक इस जप से मन्त्रित दूध पीने से बन्ध्या पुत्रवती हो जाती है । कृत्रिम रोगों में, नाना भय उत्पन्न होने पर एकइस जप से मन्त्रित जल पीने से पीड़ित स्वस्थ हो जाता है । प्रतिदिन एक सौ आठ बगलाहृदय मन्त्र के जप से चिन्तित कार्य तुरन्त होते हैं । इसमें विचार करने की जरूरत नहीं है ॥ १३-२५ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'बगलाहृदयप्रयोग' नामक अष्टाविंश पटल समाप्त ॥ २८ ॥

...❦...

अथैकोनत्रिंशः पटलः

बगलाहृदययन्त्रप्रकाशम्

श्री बगलादेवी का ध्यान

नमस्ते देवदेवेशि नमः स्वर्णविभूषणे ।
पानपात्रयुते देवि वगले त्वां नतोऽस्म्यहम् ॥ १ ॥

हे देवदेवेशि! आपको नमस्कार है । हे पन्नगभूषणे! आपको प्रणाम है । पानपात्र को धारण करने वाली हे देवि बगले! तुम्हे नमस्कार है ॥ १ ॥

बगलाहृदय मन्त्र-प्रयोग जिज्ञासा

स्कन्द उवाच—

अष्टमूर्त्ते नमस्तुभ्यं आनन्दगणसागर ।
वगलाहृदयं यन्त्रं प्रयोगं वद शङ्कर ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—हे अष्टमूर्ते ! (भवशर्व आदि) तुम्हें नमस्कार है । आनन्द गुणसागर शङ्कर! बगलाहृदय यन्त्र को कहिये ॥ २ ॥

बगलाहृदय यन्त्रोद्धार

ईश्वर उवाच—

बिन्दुत्रिकोणषट्कोणवृत्तत्रयविभूषितम् ।
षट्कोणं चैव वृत्तं च भूपुरद्वयसंयुतम् ॥ ३ ॥

बिन्दु त्रिकोण षट्कोण के बाहर तीन वृत्त इसके बाहर षट्कोण के बाहर वृत्त और दो भूपुर रेखाओं से बगला हृदय का यन्त्र बनता है ॥ ३ ॥

स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र में बगला हृदय मन्त्र लिखने का क्रम

मध्ये लिखेन्महामन्त्रं वगलाहृदयं तथा ।
त्रिकोणेषु लिखेद् बीजं वगलाख्यं सुपावनम् ॥ ४ ॥

षट्कोणे वा लिखेन्मन्त्रं षट्त्रिंशद्वर्णकारकम् ।
शताक्षरीमहामन्त्रमाद्यवृत्ते लिखेत् क्रमात् ॥ ५ ॥
तस्योपरि च संवेष्ट्य वगलाबीजमादरात् ।
तस्योपरि विलिखेद्यन्त्रं स्वर्णे वा रौप्यपत्रके ॥ ६ ॥
लिखित्वा शुभलग्ने तु स्पष्टरेखाश्च संलिखेत् ।
स्पष्टबीजानि संलिख्य पूजयेदर्कवासरे ॥ ७ ॥
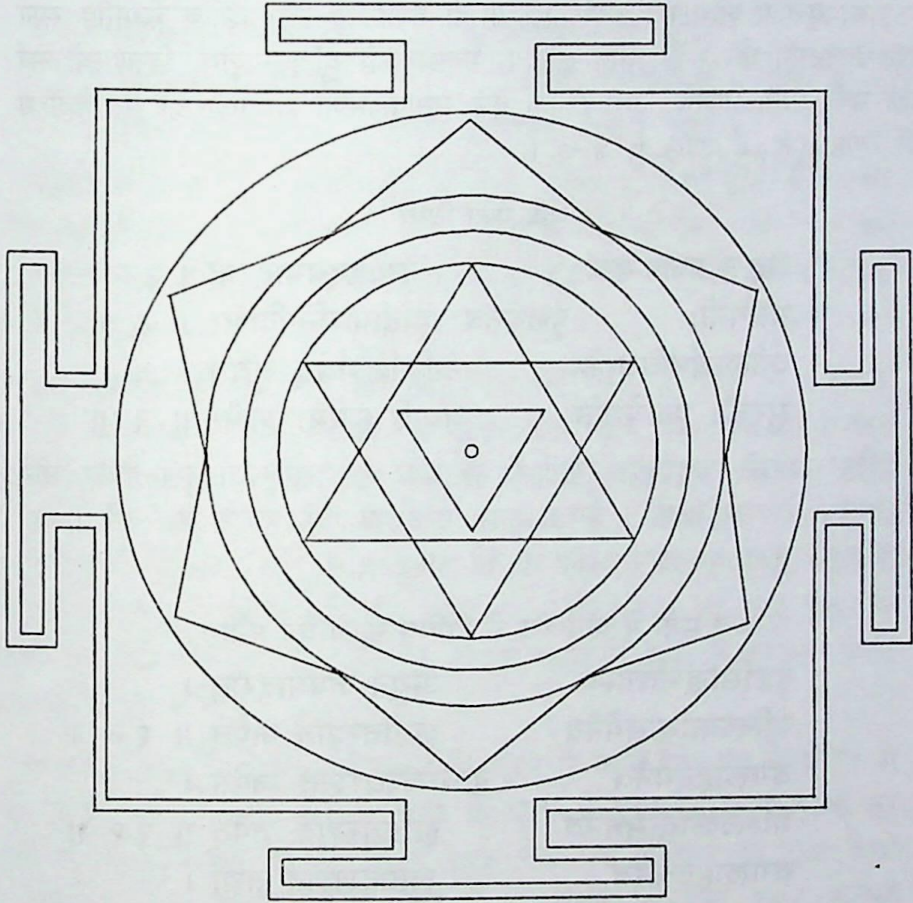
यन्त्र के मध्य में महामन्त्र बगलाहृदय लिखे । त्रिकोण के कोनों में पावन बगला बीज लिखे । षट्कोण के छह कोनों में छत्तीस अक्षरों के मन्त्र के छह-छह अक्षरों को लिखे । इसके बाद वाले वृत्त में बगला बीज लिखकर वेष्टित कर उसके बाहर षट्कोण में चार अक्षरों के बगला मन्त्र प्रत्येक कोण में लिखे । इस यन्त्र को सोने, चाँदी अथवा ताम्बा के पत्र पर लिखे । यन्त्र में लिखने वाले मन्त्र—

१. बगलाहृदय यन्त्र—आं ह्लीं क्लौं ग्लौं हुं ऐं क्लीं श्रीं ह्लीं बगलामुखि आवेशय आवेशय आं ह्लीं क्रों ब्रह्मास्त्र रूपिणी एहि एहि आं ह्लीं क्रों भमैव हृदये चिरं तिष्ट तिष्ट आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा—(८० अक्षर)

२. त्रिकोण के प्रत्येक कोण में 'ह्लीं' ।

३. षट्कोण में ३६ अक्षरों का मन्त्र—ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुख पदं स्तम्भय जिह्वा कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।

४. वृत्त में शताक्षरी मन्त्र—ह्लीं ऐं ह्लीं क्लीं श्रीं ग्लौं ह्लीं बगलामुखि स्फुर स्फुर विक्टांगि घोर रूपी जिह्वा कीलय, महाभ्रमकरि बुद्धि नाशय, विराण्मयी सर्व प्रज्ञा मयी, पत्ता नाशय, उन्मादे कुरु कुरु मनोपहारिणी ह्लीं ग्लौं श्री क्लीं ह्लीं ऐं ह्लीं स्वाहा (१०० वर्ण) ॥ ४-७ ॥

यन्त्र पूजा विधि

सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रं दुर्गाहृदयमादरात् ।
योगिनीः पूजयेत्तत्र धूपदीपार्चनादिभिः ॥ ८ ॥
कौलार्चनविधानेन मन्त्रसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ।
सुरक्तैः पूजयेद्यन्त्रं हयारिकुसुमैः शुभैः ॥ ९ ॥

जिस अष्टमी, चतुर्दशी, नवमी में मङ्गलवार हो उसमें उत्तरमुख होकर सोने की कलम से यन्त्र लिखे । बगला हृदय मन्त्र का एक हजार जप करे । वहाँ योगिनी की पूजा धूप दीप आदि से करे ॥ ८-९ ॥

यन्त्र पूजा में कर्म भेद से विविध फूलों का प्रयोग

इष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य अयुतं जपमादरात् ।
मल्लिकाकुसुमेनैव ह्यष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ १० ॥
वगलाहृदयेनैव ह्यर्चयेज्ज्वरशतं जपेत् ।
मल्लिकाकुसुमेनैव ह्यष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ ११ ॥
वगलाहृदयेनैव अष्टादशशतं तथा ।
अभ्रान्तं वेदशास्त्राणां व्याख्याता भवति ध्रुवम् ॥ १२ ॥
वकुलैः पूजयेद्यन्त्रं पुत्रवान् जायते नरः ।
पलाशकुसुमैरर्चेद्यन्त्रराजं कुमारक ॥ १३ ॥
विद्यासिद्धिर्भवेत् पुत्र पूर्वसंख्याक्रमात्सुत ।
पद्मपत्रेण सम्पूज्य पूर्ववद्यन्त्रमादरात् ॥ १४ ॥
कुबेरसदृशो भूत्वा लभते भुवि सम्पदः ।

नन्द्यावर्त्तैर्यन्त्रराजं पूजयेत् पूर्ववत् सुत ॥ १५ ॥
त्रैलोक्यं वशमाप्नोति पूजायाश्च प्रभावतः ।
चम्पकेनैव सम्पूज्य पूर्ववद्विजितेन्द्रियः ॥ १६ ॥
तस्य दर्शनमात्रेण वादिनां स्तम्भनं भवेत् ।
विल्वपत्रेण सम्पूज्य पूर्वसंख्यासु बुद्धिमान् ॥ १७ ॥
द्रव्यलाभं भवेत्तस्य तत्क्षणादेव पुत्रक ।
अशोकपुष्पैः सम्पूज्य पूर्ववद्विजितेन्द्रियः ॥ १८ ॥
श्रेष्ठराजं भवेत्पुत्र अनायासेन साधकः ।
केतकीकुसुमेनैव पूर्ववत्पूजयेत्सुत ॥ १९ ॥
निधानं लभते तस्य शिवस्य वचनं तथा ।

कौलार्चन विधान से अर्चन करने पर मन्त्र अवश्य ही सिद्ध होता है । लाल कनैल आदि लाल फूलों से अर्चन करे । पूजा के उपरान्त दश हजार मन्त्र जप से इच्छित कार्य होता है । इसके साथ बगलाहृदय का जप भी एक सौ आठ बार करे ।

ज्वर शान्ति के लिये एक सौ आठ मल्लिका फूलों से पूजा करे । बगला हृदय से भी एक सौ फूल चढ़ावे तब बुखार उतर जाता है । एक सौ स्यमन्त पुष्पों से पूजा करे । बगला हृदय मन्त्र से एक सौ आठ फूल चढ़ावे । इससे नहीं सुने गये शास्त्रों का भी व्याख्याता हो जाता है । मौलसिरी के फूलों से पूजा करने पर पुत्रवान् होता है । पूर्वोक्त संख्या एक सौ आठ पलाश फूलों से यन्त्र पूजा करने पर विद्या की सिद्धि होती है । पूर्ववत् यन्त्र की पूजा आदर से कमल फूल की पंखुड़ियों से करने पर साधक संसार में कुबेर के समान सम्पत्ति वाला हो जाता है ।

यन्त्रराज की पूजा पूर्ववत् नन्द्यार्वत के फूलों से करने पर पूजा के प्रभाव से तीनों लोक वश में हो जाते हैं । चम्पा के फूलों से पूजा करने पर पूजक को देखते ही वादी निष्प्रभ हो जाते हैं । १०८ वेल पत्रों से यन्त्र की पूजा करने पर थोड़े ही दिनों में द्रव्य लाभ होता है । यन्त्रराज की पूजा १०८ तुलसी मञ्जरियों से करने पर अल्पकाल में ही राज्य लाभ होता है । जितेन्द्रिय होकर अशोक के फूलों से पूर्ववत् पूजा करे तो छीना गया राज्य अनायास मिल जाता है । यन्त्रराज की पूजा पूर्ववत् केतकी के फूलों से करे तो इच्छित पदार्थ प्राप्त होते हैं । ऐसा शिव का कथन है ॥ १०-१९ ॥

पीतवर्णेन पुष्पेण निर्गन्धेन सुगन्धिना ॥ २० ॥
अर्चयेदयुतं मन्त्री षोडशैरुपचारकैः ।

वाचां सिद्धिर्भवेत्तस्य देवीरूपो न संशयः ॥ २१ ॥
तस्य दर्शनमात्रेण सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ।
यजेत्तद्बगलायन्त्रं मुनिगुह्यं सुपावनम् ॥ २२ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'बगलाहृदययन्त्रप्रकाशनं' नाम एकोनत्रिंशः पटलः ॥ २९ ॥
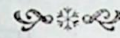
पीले रंग के सुगन्धित या बिना गन्ध वाले दश हजार फूलों के साथ सोलह उपचारों से पूजा करने पर साधक को वाक्सिद्धि मिलती है । वह जो कहता है वह हो जाता है और वह देवी रूप का हो जाता है । इसमें संशय नहीं है । उसके दर्शन से ही सभी सिद्धियाँ मिल जाती हैं ।

यह बगला मन्त्र मुनि गुह्य, सुन्दर एवं पवित्र है । इसे किसी को न बतलावे अन्यथा देवता का शाप मिलता है ॥ २०-२२ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'बगलाहृदययन्त्रप्रकाशन' नामक एकोनत्रिंश पटल समाप्त ॥ २९ ॥
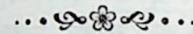
अथ त्रिंशः पटलः

बगलाअष्टाक्षरमन्त्रवर्णनम्

बगला ध्यानम्

नमस्ते देवदेवेशि पुत्रपौत्रप्रवर्द्धिनी(नि) ।
स्तम्भनार्थं भजेऽहं त्वां पीतमाल्यानुलेपनाम् ॥ १ ॥

देवी कल्पवृक्ष के नीचे स्वर्ण शिला पर पञ्चप्रेतासन पर बैठी हुई है । चित्त में उल्लास है । कान्ति शोभित है और ये भक्तों की कामनाओं को पूरा करने में लगी रहती है । हे पुत्र-पौत्री को बढ़ाने वाली देवेशि! तुम्हें प्रणाम है । पीले माला अनुलेप समन्वित तुम्हारा भजन हम स्तम्भन के लिये करते है ॥ १ ॥

बगला अष्टाक्षर मन्त्र जिज्ञासा

स्कन्द उवाच—

नमस्ते सर्वसर्वेश पुराणपुरुषोत्तम ।
वगलाष्टाक्षरमन्त्रं वद मे करुणाकर ॥ २ ॥

कार्तिकेय ने कहा—हे पुराण पुरुषोत्तम! सर्व सर्वेश! आपको नमस्कार है । हे करुणाकर! आप मुझे बगला अष्टाक्षर मन्त्र बतलाइये ॥ २ ॥

बगला अष्टाक्षर मन्त्र के उद्धार उसकी विधि आदि न्यास विद्या कथन

शिव उवाच—

वेदादि विलिखेत् पूर्वं पाशबीजमनन्तरम् ।
स्तम्भमायां ततोच्चार्य अङ्कुशं बीजमेव च ॥ ३ ॥
हुं फट् स्वाहा समायुक्तं मन्त्रमष्टाक्षरं तथा ।
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽस्य गायत्री समुदाहृता ॥ ४ ॥
देवता वगलानाम्नी चिन्मयी विश्वरूपिणी ।
ॐ बीजं ह्लीं शक्तिश्च क्रों कीलकमुदाहृतम् ॥ ५ ॥

न्यासविद्यां च वगलामन्त्रराजवदाचरेत् ।
ध्यानं चैव प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥ ६ ॥

ईश्वर ने कहा—अष्टाक्षर मन्त्र का उद्धार कहता हूँ । उद्धार करने पर आठ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार होता है—

ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।

विनियोग—ॐ अस्य बगलाष्टाक्षर मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्दः, ॐ बीजं, ह्लीं शक्ति, क्रों कीलकं श्री बगलाम्बर प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग ।

ऋष्यादि न्यास—श्री ब्रह्मर्षये नमः, शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः, मुखे, ॐ बीजाय नमः, गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः, पादयोः, क्रों कीलकाय नमः, सर्वाङ्गे, श्री बगला प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ । अन्य न्यास पूर्वोक्त बगला मन्त्र राज के समान करे ॥ ३-६ ॥

मन्त्रभेद के अनुसार ध्यान एवं पुरश्चरण

युवतीं च मदोद्रिक्तां पीताम्बरधरां शिवाम् ।
पीतभूषणभूषाङ्गीं समपीनपयोधराम् ॥ ७ ॥
मदिरामोदवदनां प्रवालसदृशाधराम् ।
पानपात्रं च शुद्धिं च विभ्रतीं वगलां स्मरेत् ॥ ८ ॥
एवं ध्यात्वा जपेत् पुत्र वगलाष्टाक्षरीमनुम् ।
ध्यानेनैव जपं कुर्याद् ध्यायेदाद्यन्तयोस्तथा ॥ ९ ॥
अशोकमूले निवसन् मधुरारससंयुतम् ।
हरिद्रामालिकाभिश्च वर्णलक्षं जपेन्मनुम् ॥ १० ॥
अष्टायुतं तर्पणं च हेतुसम्मिश्रवारिणा ।
तद्दशांशं हुनेत् पुत्र अन्नेन च समं मधु ॥ ११ ॥
योगिनीं पूजयेत् पश्चाद् गर्भकौलागमक्रमात्(मैः) ।
ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाच्छतं वाष्टशतं तु वा ॥ १२ ॥

देवी बगला तरुणी मद्य के नशे में मत्त है । पीताम्बर पहने हुई है । उनका शरीर पीला और आभूषण भी पीले हैं । मद्यपान से प्रमुदित मुख है । मूँगों के समान लाल लाल ओठ हैं । एक हाँथ में पान पात्र हैं और दूसरे हाँथ में मुद्रा शुद्धि है ।

इस प्रकार का ध्यान करके बगला अष्टाक्षर मन्त्र का जप करे । ध्यान करते हुए जप करे । जप के पहले और बाद में ध्यान करे । अशोक के मूल में

बैठकर हल्दी की माला से वर्ण लक्ष अर्थात् आठ लाख जप करे । मदिरा मिश्रित जल से अस्सी हजार तर्पण करे । आठ हजार हवन बराबर-बराबर गोघृत और मधु मिला कर करे । इसके बाद योगिनी की पूजा गर्भ कौल आगम के क्रम से करे । तब एक सौ या एक सौ आठ ब्राह्मणों को भोजन करावे ।

कर्म भेद से वेल आदि विविध वृक्ष के मूल में बैठकर जप करने से नाना कार्यों की सिद्धि

एतन्मन्त्रस्य माहात्म्यं शिवो जानाति नान्यथा ।
विल्वमूले जपेन्मन्त्रमयुतं ध्यानपूर्वकम् ॥ १३ ॥
लक्ष्मीवान् जायते पुत्र दरिद्रस्तु न संशयः ।
अश्वत्थमूले प्रजपेदयुतं पूर्ववन्नरः ॥ १४ ॥
अश्रुतानां च शास्त्राणां व्याख्याता भवति ध्रुवम् ।
शमीमूले जपेन्मन्त्रमयुतं पूर्ववन्नरः ॥ १५ ॥
भ्रष्टराज्यं लभेत्पुत्र अनायासेन निश्चितम् ।
वदरीमूलमाश्रित्य अयुतं पूर्ववज्जपेत् ॥ १६ ॥
वशीकरणसम्मोहौ जाय(ये)ते नात्र संशयः ।
उदुम्बरतरोर्मूले पूर्ववज्जपमाचरेत् ॥ १७ ॥
कुबेरसदृशः श्रीमान् जायते नात्र संशयः ।
कदलीमूलमाश्रित्य पूर्वज्जपमाचरेत् ॥ १८ ॥
प्रयोगादीनि सर्वाणि सर्वसिद्धिर्भवेत्सुत ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'बगलाअष्टाक्षरीमन्त्रवर्णनं' नाम त्रिंशः पटलः ॥ ३० ॥
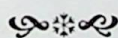
ध्यान में उक्त देवी चर्म चक्षुओं से दिखायी देती हैं । इस मन्त्र के इस माहात्म्य को केवल शिव ही जानते हैं और कोई नहीं । वेल के मूल में बैठकर ध्यानपूर्वक दश हजार मन्त्र जप करे । इससे दरिद्र भी धनवान् हो जाता है, इसमें संशय नहीं है । पीपल के मूल में बैठकर पूर्ववत् दश हजार जप करने से साधक अज्ञात शास्त्रों की व्याख्या करने लगता है ।

शमी वृक्ष के मूल में जितेन्द्रिय बैठकर दश हजार जप करे तो खोया हुआ राज्य अनायास ही मिल जाता है । वेर वृक्ष के मूल के निकट बैठकर पूर्ववत् दश हजार जप करे तो वशीकरण और मोहन होता है । गूलर वृक्ष के मूल में बैठकर पूर्ववत् दश हजार जप करने से वह साधक कुबेर के समान धनवान् हो

जाता है । केले की जड़ के निकट बैठकर पूर्ववत् दश हजार जप करे तो वांच्छित भोग और शिवत्व प्राप्त होते हैं । सोपारी वन में बैठकर पूर्ववत् दश हजार जप करे तो एक महीने में पुत्र पैदा होता है । जम्बीरी नीबू के मूल में बैठकर पूर्ववत् दश हजार जप करे तो राजा भी वश में होकर अपना सर्वस्व दे देता है । उद्यान या वन में बैठकर पूर्ववत् दश हजार जप करे तो जिस-जिस पदार्थ को पाना चाहता है, वे सब उसे मिलते हैं । पुष्पवाटिका में बैठकर दश हजार जप पूर्ववत् करे तो उस साधक को राज्य प्राप्त होता है। नदी के किनारे बैठकर पूर्ववत् दश हजार जप करने से साधक पुत्रवान् होकर धन-धान्य से युक्त होता है । इस प्रकार जहाँ बैठकर साधक जप करे उन स्थानों के जप का फल साधक को मिलता है । यह अष्टाक्षरी-मन्त्र सभी मन्त्रों में उत्तम कहा गया है । साधक सभी प्रयोगों को पूर्ववत् करे । इसी क्रम की विधि अष्टाक्षरी मन्त्र की भी बतलायी गयी है ।

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'बगलाअष्टाक्षरीमन्त्रवर्णन' नामक त्रिंश पटल समाप्त ॥ ३० ॥

...൭❀൭...

अथ एकत्रिंशः पटलः

अष्टाक्षरीमन्त्रप्रयोगकथनम्

भक्त चिन्तामणि बगला का ध्यान

विराट्स्वरूपिणीं देवीं विविधानन्ददायिनीम् ।
भजेऽहं वगलां देवी भक्तचिन्तामणिं शुभाम् ॥ १ ॥

भक्तचिन्तामणि शुभा बगला देवी को मैं भजता हूँ जिनका स्वरूप विराट् है और जो नाना प्रकार के आनन्दों को प्रदान करती हैं ॥ १ ॥

बगला अष्टाक्षरी-मन्त्र-प्रयोग जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच--

चन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रादिसंनुतः सर्वमङ्गला (ल) ।
बगलाष्टाक्षरीमन्त्रं(न्त्र) प्रयोगान् वद शङ्कर ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा--इन्द्र, विष्णु और महेन्द्र आदि देवताओं के द्वारा वन्दित हे शङ्कर! आप कृपया सर्वमङ्गल बगला अष्टाक्षरी-मन्त्र के प्रयोगों को कहिये ॥ २ ॥

पुत्तली प्रयोग

ईश्वर उवाच--

सर्षपं लवणं चैव चिताभस्म समं समम् ।
अर्कक्षीरेण खल्वेन मर्द्दयेत् सूक्ष्मतोऽनघ ॥ ३ ॥
अङ्गुष्ठमात्रां कृत्वा तु पुत्तलीं पूर्ववत् सुत ।
बदरीकण्टकं चैव सर्वाङ्गे तस्य लेपयेत् ॥ ४ ॥
आरनालस्य भाण्डे तु अधोमुखीं विनिक्षिपेत् ।
अङ्गारवासरे पूज्या पुनस्तत्रैव निक्षिपेत् ॥ ५ ॥

एवं मासत्रयं कृत्वा जिह्वास्तम्भं भवेद् रिपोः ।
रवौ रात्रौ च संगृह्य चिताभस्म समादरात् ॥ ६ ॥

ईश्वर ने कहा—सरसों, नमक और चिताभस्म बराबर-बराबर लेकर अकवन के दूध के साथ खल में महीन कूटे । अङ्गूठे के बराबर पुत्तली बनाकर उसके सभी अङ्गों में बैर के काँटों को गाड़ दे । आरनाल के भाण्ड में उलटा लटका दे । मङ्गलवार को उसे निकालकर पूजा करे और फिर लटका दे । तीन महीनों तक ऐसा करने से शत्रु की जीभ स्तम्भित हो जाती है ॥ ३-६ ॥

नाना द्रव्य प्रयोग से जिह्वा स्तम्भनादि करने के लिये भस्म पूर्ण भक्षण आदि अनेक प्रयोग

वगलाष्टाक्षरीमन्त्रं अयुतं मन्त्रयेत् सुत ।
खाने पाने च तद्भस्म दातव्यं वैरिणस्तथा ॥ ७ ॥
जिह्वां मुखं च कर्णाक्षिपादादिस्तम्भनं भवेत् ।
तेनैव म्रियते शत्रुर्मासान्मण्डलमात्रतः ॥ ८ ॥
आरनालेन तद्भस्म रहस्येन विनिक्षिपेत् ।
तदन्नभक्षणेनैव बुद्धिभ्रंशोऽपि जायते ॥ ९ ॥
तद्भस्म तिलतैलेन शिरोभ्यङ्गं समाचरेत् ।
तेनैव तत्क्षणात् पुत्र चित्तचाञ्चल्यवान् भवेत् ॥ १० ॥
तद्भस्म चूर्णमिश्रं कृत्वा चूलं च वर्णकम् ।
तेन शत्रुस्तत्क्षणाच्च बुद्धिजाड्यो भवेद् ध्रुवम् ॥ ११ ॥

रविवार की रात में आदरपूर्वक चिता का भस्म लाकर बगला अष्टाक्षरी मन्त्र के दश हजार जप से उसे मन्त्रित करे । शत्रु के खान-पान में उस भस्म को डाल दे । इससे बैरी के मुख, जीभ, कान, आँख, पैरों आदि का स्तम्भन होता है और शत्रु उसी से एक महीने या चालिस दिनों में मर जाता है । उस भस्म को चुपके से आरनाल में डाल दे तो उस अन्न को खाने से शत्रु की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है । उस भस्म को तिल तेल में डालकर शिर में लगा दे तो तत्क्षण चित्त चञ्चल हो जाता है । उस भस्म को पान में डालकर खिलाने से शत्रु की बुद्धि जड़ हो जाती है ॥ ७-११ ॥

पशु-पक्षी आदि के अङ्ग-अवयवों को स्थान विशेष में फेकने से शत्रु मारण आदि प्रयोग

विप्रचाण्डाल्योः शत्यं(सत्यं) प्रेतवस्त्रेण वेष्टयेत् ।
वगलाष्टाक्षरीमन्त्रं मन्त्रयित्वा सहस्रकम् ॥ १२ ॥

रवौ रात्रौ शत्रुगेहे ईशान्ये नैव(चैव) निक्षिपेत् ।
मण्डलांतद्गु(तगृं) हस्थोऽपि म्रियते नात्र संशयः ॥ १३ ॥
कण्टकं पुरपक्षस्य त्रिसहस्त्रं तु मन्त्रयेत् ।
निक्षिपेच्छत्रुसदने नित्यं क(ल)हमाप्नुयात् ॥ १४ ॥
काकोलूकदलं चैव भौमे वा रविवासरे ।
संग्रहेत् प्रेतवस्त्रेण वेष्टयेद् रविवासरे ॥ १५ ॥
निक्षिपेद् रविवारे तु रिपु(पो)र्गेहे तु बुद्धिमान् ।
ग्र(गृ)हविद्वेषणं सद्यो जायते नात्र संशयः ॥ १६ ॥
सर्ष(र्प) मण्डूकयोः शल्यं प्रेतरज्वा तु वेष्टयेत् ।
निक्षिपेच्छत्रुसदने स श(त्रु)रवशिष्यति ॥ १७ ॥

विप्र चाण्डाल के घाव पर प्रेतवस्त्र लपेट कर पुनः लेकर बगला अष्टाक्षरीमन्त्र के एक हजार जप से मन्त्रित करे । रविवार की रात में शत्रु गृह के ईशान भाग में फेंक दे तो चालिस दिनों में उस घर में रहने वाले मर जाते हैं । पुरपक्ष के काँटों को तीन हजार मन्त्र जप से मन्त्रित करके शत्रु के घर में फेंक दे तो उस घर में नित्य कलह होता रहता है । कौआ और उल्लू के मांस खण्डों को मङ्गलवार या रविवार में लेकर उसे प्रेतवस्त्र में लपेट दे रविवार में उसे शत्रु के घर में फेंक दे तो उस घर में परस्पर कलह होने लगता है। सरसो और मेढ़क के मांस को प्रेतवस्त्र में बाँधकर शत्रु घर में फेंक दे तो शत्रु बच जाता है ॥ १२-१७ ॥

नाना वस्त्र संयोगज धूप वासनादि प्रयोग

मार्जारबालरोमाञ्च(णि) रवौ रात्रौ च संग्रहेत् ।
प्रेतवस्त्रं रवौ ग्राह्यं शिवनिर्माल्यमेव च ॥ १८ ॥
रवौ रात्रौ च संग्राह्य नरास्थि च समं समम् ।
चूर्ण(र्णी) कृतं तु तत्सर्वं मन्त्रयेदयुतं तथा ॥ १९ ॥
धूपयेच्छत्रुसदने तस्य सञ्चारयो(ण) स्थले ।
तद्धूपवासने शत्रुर्मूकी भवति तत्क्षणात् ॥ २० ॥
तच्चूर्णं देवतागारे भृगुवारे च धूपयेत् ।
पलायते च तन्मन्त्री शिवस्य वचनं यथा ॥ २१ ॥
गजाश्ववृषभोलूकमहिषोरगकुक्कुटम् ।
तच्चूर्णं धूपयोगेन सर्वं तृणजलादिकम् ॥ २२ ॥
म्रियते सप्तरात्रेण स्वेदजाण्डजपिण्डजाः ।

१२ सांख्या.

एतच्चूर्णं वृक्षमूले धूपयेच्च कुमारक ॥ २३ ॥
फलितं पुष्पितं वाथ स्थूलवृक्षमथापि वा ।
सप्ताहात् शुष्कतां याति सिद्धियोगः कुमारकः ॥ २४ ॥
मृगाणां चैव शत्रूणां खाने पाने प्रयत्नतः ।
बुद्धिनाशो भवेश्छत्रु(त्रो) स्त्रिदिनं भक्षणात् सुत ॥ २५ ॥
प्रजां बुद्धिं श्रियं चैव ऐश्वर्यं हरते नृणाम् ।
एतच्चूर्णप्रयोगं च ऋषीणामपि दुर्ल्लभम् ॥ २६ ॥
चिताभस्म रवौ रात्रौ संग्रहेच्च तदर्भक ।
अयुतं मन्त्रयित्वा तु रिपुमूर्ध्नि विनिक्षिपेत् ॥ २७ ॥
काकवद् भ्रमते शत्रुर्महि(ही)मामरणान्तिकम् ।
शिलामामलकं प्रस्थं सहस्त्रं संग्रहेद् बुधः ॥ २८ ॥
अर्कवारे तु संध्यायां मन्त्रेणैकेन मन्त्रये(त्) ।
मन्त्रितं निक्षिपेद् दूरे (द्वारे) दक्षिणाभिमुखेन च ॥ २९ ॥
नित्यं चैव सहस्त्रं तु निक्षिपेद् दशवासरे ।
उच्चाटनं भवेच्छत्रोर्नान्यथा शिवभाषणम् ॥ ३० ॥

रविवार की रात में बिलाव के बाल और 'रोम' को एकत्रित करे रविवार में प्रेतवस्त्र शिवनिर्माल्य को एकत्रित करे । रविवार की रात में मनुष्य की हड्डी को ले आये । बिलाव के बाल रोम प्रेतवस्त्र, शिव निर्मालय, मनुष्य की हड्डी को समभाग में मिलाकर कूटकर चूर्ण बनावे । इस चूर्ण को दश हजार मन्त्र जप से मन्त्रित करे । शत्रु घर के आने- जाने के द्वार पर इस चूर्ण को जलावे। इस धूप-दान से शत्रु गूँगा हो जाता है । शुक्रवार में देवालय में इस चूर्ण का धूप देने से मूर्ति गायब हो जाती है। इस चूर्ण के धूप से हाँथी, घोड़े, बैल-उल्लू, भैंसे सर्प, मुर्गे सभी घास, जल आदि के जन्तु स्वेदज, अण्डज, पिण्डज सभी की मृत्यु हो जाती है । इस चूर्ण से पेड़ की जड़ में धूप देने से फलित, पुष्पित या स्थूल वृक्ष एक सप्ताह में सूख जाता है, यह सिद्धि योग है । जानवरों और शत्रुओं के खान-पान में इस चूर्ण को मिला देने से उनकी मृत्यु हो जाती है । खान-पान में इस चूर्ण को खाने से तीन दिनों में शत्रु मर जाता है । इससे मनुष्यों की प्रज्ञा, बुद्धि, श्री और सम्पदा का नाश हो जाता है । इस चूर्ण का प्रयोग ऋषियों को भी दुर्लभ है । रविवार की रात में चिता भस्म लाकर दश हजार जप से मन्त्रित करे और शत्रु के मस्तक पर डाल दे तो वह आमरण कौए के समान पृथ्वी पर भटकता रहता है । शिला, आमला, शटालू के एक हजार मूलों को एकत्रित करे । रविवार की संन्ध्या में एक हजार

मन्त्र से मन्त्रित करे । एक हजार मन्त्रित मूलों को शत्रु के द्वार पर दक्षिण मुख होकर फेंक दे । दश दिनों तक प्रत्येक दिन एक-एक हजार मन्त्रित मूलों को शत्रु द्वार पर फेंके । इससे शत्रु का उच्चाटन हो जाता है ॥ १८-३० ॥

धत्तूरपत्रमादाय सहस्रं मन्त्रयेन्निशि ।
प्रेतवस्त्रेण संवेष्ट्य भौमे शत्रुनिकेतने ॥ ३१ ॥
निक्षिपेद् द्वारदेशे तु मूको भवति तद्रिपुः ।
तन्मार्गे सञ्चरेद् यस्तु तत्सर्वेऽप्यरिमन्दिरे ॥ ३२ ॥
खरबालं च रोमं च प्रेतरज्जुस्तथैव च ।
मन्त्रयेदयुतं मन्त्रं निक्षिपेच्छत्रुमन्दिरे ॥ ३३ ॥
पक्षाद् वा मासयोगेन स शत्रुर्बान्धवैः सदा ।
म्रियते नात्र सन्देहो नात्र कार्या विचारणा ॥ ३४ ॥
एतच्च बगलामन्त्रप्रयोगं भुवि दुर्ल्लभम् ।
गुरुपुत्राय दातव्यं न दद्याद् यस्य कस्यचित् ॥ ३५ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'अष्टाक्षरीमन्त्रप्रयोगकथनम्' नाम एकत्रिंशत्पटलः ॥ ३१ ॥
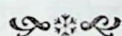
धत्तूर के पत्तों को लाकर रात में एक हजार मन्त्र जप से मन्त्रित करे । उसे प्रेत वस्त्र से वेष्टित करके मङ्गलवार में शत्रु के घर के द्वार पर फेंक दे तो शत्रु गूँगा हो जाता है । उस मार्ग से जो भी जाते हैं वे सभी मन्द बुद्धि हो जाते हैं । गदहे के बाल रोमों और प्रेतवस्त्र के धागों को दश हजार जप से मन्त्रित करके शत्रु के घर में फेंक दे तो एक पक्ष या महीने में बान्धवों सहित शत्रु की मृत्यु हो जाती है । ये बगलामन्त्र प्रयोग संसार में दुर्लभ है । गुरु अपने पुत्र को दे सकता है और किसी को न दे ॥ ३१-३५ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'अष्टाक्षरीमन्त्रप्रयोगकथन' नामक एकत्रिंश पटल समाप्त ॥ ३१ ॥
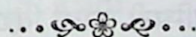
अथ द्वात्रिंशत्पटलः

बगला-उपसंहार-विद्यावर्णनम्

प्रेतासनस्था बगला का ध्यान

मन्त्रादौ तव बीजपूर्वकम् क्लीं ब्लूं म्लूं सौं ग्लौं जप(न्)
ताव(द्)ध्यानपराय(णः) प्रतिदिनं पीत्ता(ता)क्षमालाधरः ।
साध्याकर्षणवश्यमाशु बगले साध्यस्य शीघ्रं भवेत्
प्रेताढ्यासनपूर्विके विवसने तत्प्रेमभूमौ निशि ॥ १ ॥

प्रेतासनस्था विवसने बगले! मन्त्र के पहले तुम्हारे बीज क्लीं ब्लूं क्लूं सौं ग्लौं लगाकर ध्यानपूर्वक प्रतिदिन हल्दी की माला से जप करने से प्रेत भूमि में साध्य का आकर्षण तुरन्त होता है ॥ १ ॥

बगलास्त्र उपसंहार विद्या की जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

नमः पापविदूराय नमस्ते चन्द्रशेखर ।
वगलां चोपसंहारविद्यां वद सुपावनी(म्) ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—पाप विनाशक को प्रणाम है । चन्द्रशेखर को नमस्कार है । हे शङ्कर! बगलास्त्र उपसंहार विद्या को कहिये ॥ २ ॥

ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी काली विद्या मन्त्रोद्धार

ईश्वर उवाच—

ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी काली विद्या चास्त्रसुपावनी ।
तस्यास्तत्स्मरणादेव वगला शान्तिमाप्नुयात् ॥ ३ ॥
तद्विद्यां च प्रवक्ष्यामि शान्तौ तच्छृणु षणमुख ।
उच्चरेच्छक्तिवाराहं वाराहं तदनन्तरम् ॥ ४ ॥

वाग्बीजं च ततो (थो)च्चार्यभुवनेशीं ततः परम् ।
महामायां ततो(थो)च्चार्य श्रीबीजं तदनन्तरम् ॥ ५ ॥
कालीशब्दद्वयं चोक्ता(क्त्वा) महाकालीपदं वदेत् ।
एहि शब्दद्वयं चोक्त्वा कालरात्री (त्रि)पदं वदेत् ॥ ६ ॥
स्फुरद्वयं समुच्चार्य्यं प्रस्फुरद्वितयं लिखेत् ॥ ७ ॥
स्तम्भनास्त्रपदं चोक्त्वा शमनीपदमुच्चरेत् ।
हुं फट् स्वाहा समायुक्तं मन्त्रमेवं समुद्धरेत् ॥ ८ ॥
पञ्चाशदर्दूर्ध्वं मन्त्रस्य वर्णत्रयविभूषितम् ।
ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनीकालीमन्त्रमेतन्न संशयः ॥ ९ ॥

ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी काली विद्यास्त्र सुपावनी के स्मरण-मात्र से ही बगलास्त्र शान्त हो जाता है । उस विद्या को कहता हूँ । कार्तिकेय शान्त चित्त से उसे सुनो ।

४-८ श्लोकों का उद्धार करने पर ५९ उनसठ अक्षरों का बगलोपसंहार विद्या इस प्रकार का होता है—ग्लौं हुं ऐं क्रीं श्रीं कालि कालि महाकालि एहि एहि कालरात्रि आवेशय आवेशय महा मोहे स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर स्तम्भनास्त्र शमनि हुं फट् स्वाहा ।

यह यन्त्र पचास से ऊपर नव अधिक वर्णों से विभूषित है । यह ब्रह्मास्त्र स्तम्भिनी काली विद्या मन्त्र है, संशय नहीं है ॥ ३-९ ॥

विद्या मन्त्र पुरश्चरण विधि

पलाशमूलमाश्रित्य लक्षमेकं जपे(त्)स्मयः ।
तर्प्ययेत्तद्दशांशेन कर्पूरमिश्रितं जलैः ॥ १० ॥
पलाशपुष्पैर्जुहुयाच्चतुरस्त्रे च कुण्डले (के) ।
ब्राह्मणान् भोजयेत् पुत्र सहस्त्रं शतमेव वा ॥ ११ ॥
मन्त्रसिद्धिमवाप्नोति देवता च प्रसीदति ।
ब्रह्मा ऋषिश्च छन्दोऽयं(स्य) गायत्री समुदाहृतम् ॥ १२ ॥
देवता कालिका नाम स्तम्भनास्त्रविभेदिनी ।
ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि मन्त्रभेदेन पुत्रक ॥ १३ ॥

पलाश पेड़ की जड़ के निकट बैठकर साधक एक लाख जप करे । जप का दशांश १०००० तर्पण कपूर मिश्रित जल से करे । चतुरस्त्र कुण्ड में पलाश के फूलों से हवन करे । एक हजार या एक सौ ब्राह्मणों को भोजन करावे । इससे मन्त्र सिद्ध हो जाता है और देवता प्रसन्न हो जाते हैं ।

ऋष्यादि—अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि:, गायत्री छन्द:, देवता कालिका स्तम्भनास्त्र विभेदिनी । इसके बाद मन्त्र-भेद से ध्यान कहता हूँ ।। १०-१३ ।।

कालीं करालवदनां कलाधरधरां शिवाम् ।
स्तम्भनास्त्रैकसंहारीं ज्ञानमुद्रासमन्विताम् ॥ १४ ॥
वीणापुस्तकसंयुक्तां कालरात्रिं नमाम्यहम् ।
वगलास्त्रोपसंहारीदेवतां विश्वतोमुखीम् ॥ १५ ॥
भजेऽहं कालिकां देवीं जगद्वशकरां शिवाम् ।
एवं ध्यात्वातु मन्त्रज्ञः प्रजेच्छुब्धि (द्ध) मानसः ॥ १६ ॥

काली का मुख भयानक है । शिवा के शिर पर चन्द्रमा हैं । स्तम्भनास्त्र का संहार करने वाली ज्ञान मुद्रा समन्वित है । वीणापुस्तके धारिणी कालरात्रि तुम्हे प्रणाम करता हूँ । बङ्गलास्त्रोपसंहारी देवता विश्वमुखी जगत् वशकारिणी शिवा कालिका देवी को हम भजते हैं । इस प्रकार ध्यान करके मन्त्रज्ञ शुद्ध मन से जप करे ।। १४-१६ ।।

बगलास्त्र का उपसंहार क्रम, जिह्वा स्तम्भन आदि अभिचार शान्ति प्रयोग

वक्ष्येऽहं चोपसंहारक्रमं लोकोपकारकम् ।
जम्बीरफलमादाय मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥ १७ ॥
भक्षयेत् प्रातरुत्थाय निद्रान्ते च कुमारक ।
एवं चार्कदिनं कृत्वा जिह्वास्तम्भादिकृत्रिमम् ॥ १८ ॥
सद्यो नैर्मा(मं) ल्यमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ।

अब लोकोपकारक उपसंहार को कहता हूँ । सर्वप्रथम जम्वीर फल लाकर एक सौ मन्त्र जप से मन्त्रित करे । प्रात:काल निद्रा का त्यागकर सर्वप्रथम उठकर उसे खा जाय ।

इस प्रकार की क्रिया निरन्तर बारह दिनों तक करने से कृत्रिम जीभ का स्तम्भन वैसे ही समाप्त हो जाता है जैसे सूर्योदय होने पर अन्धकार समाप्त हो जाता है ।। १७-१८ ।।

रवौ श्वेतवचा ग्राह्यं मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥ १९ ॥
प्रात:काले भक्षयित्वा त्रिसहस्त्रं मनुं जपेत् ।
वाचं मुखं पदं चैव जिह्वां बुद्धीन्द्रियाणि च ॥ २० ॥
स्तम्भितं मन्त्रयोगेन तत्सर्वं शान्तिमाप्नुयात् ।

रविवार में श्वेत वच लेकर सौमन्त्र जप से मन्त्रित करे । प्रात:काल में खाकर तीन हजार मन्त्र जप करे ।

तब मन्त्र योग से स्तम्भित वाचं, मुखं, पदं, जिह्वा, बुद्धि और इन्द्रियों का स्तम्भन समाप्त हो जाता है ॥ १९-२० ॥

ताम्रपात्रे समादाय नदीजलमकल्मषम् ॥ २१ ॥
शतवारं मन्त्रयित्वा प्राशयेच्छान्तिमाप्नुयात् ।

ताम्र पात्र में नदी जल का फेन लाकर उसे सौ जप से मन्त्रित करके खिलावे तो शान्ति हो जाती है ॥ २१ ॥

गोमूत्रं चैव संगृह्य मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥ २२ ॥
एवं कृत्वा जपेन्मन्त्रं उन्माद शान्तिमाप्नुयात् ।

गोमूत्र को सौ जप से मन्त्रित करके छह महीनों तक पिलाये तो उन्माद शान्त हो जाता है ॥ २२ ॥

मन्त्रयेदारनालं च प्रातः प्रातः पिबेन्नरः ॥ २३ ॥
मण्डलज्वररोगं च नाशमाप्नोति निश्चितम् ।

प्रातःकाल में आरनाल को मन्त्रित करके पीने से चालिस दिनों में बुखार लगना बन्द हो जाता है ॥ २३ ॥

अष्टोत्तरं मन्त्रयित्वा धारोलम्बं पिबेन्नरः ॥ २४ ॥
गर्भस्तम्भनदोषं च मण्डलाच्छान्तिमाप्नुयात् ।

एक सौ आठ जप से मन्त्रित धारोष्ण दूध चालिस दिनों तक पीने से गर्भ स्तम्भन दोष समाप्त हो जाता है ॥ २४ ॥

भस्म च मन्त्रयेत् प्रातः त्रिसप्त त्रिंशतेन वा ॥ २५ ॥
तक्रेण सहितं पीत्वा त्रिसहस्त्रं दिने दिने ।
बगलामन्त्रयोगेन एतत्प्राणसमुद्भवः ॥ २६ ॥
नाशयेदाशु तत्सर्वं तूलराशिमिवानलः ।

प्रातःकाल में यदि एकइस या तीन सौ मन्त्र जप द्वारा मन्त्रित करके मट्ठा में मिलाकर प्रतिदिन पीने से; बगला मन्त्र-योग से, प्राण-सम्बन्धी रोगों का नाश वैसे ही हो जाता है जैसे अग्नि में रूई ॥ २५-२६ ॥

यक्षधूपं समानीता मन्त्रयेच्छतमादरात् ॥ २७ ॥
धूपयेत्तेन सर्वाङ्गे दशरात्रं कुमारक ।
यक्षधूपोद्भवं चैव प्रयोगं चैव कृत्रिमम् ॥ २८ ॥
तत्क्षणान्नाशमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।

वृक्ष धूप को सौ जप से मन्त्रित करके पूरे शरीर को दश रातों तक धूपित

करे । वृक्ष धूपोद्भूत प्रयोग से कृत्रिम रोग तत्क्षण नष्ट हो जाते हैं । इसमें विचार अनावश्यक है ॥ २७-२८ ॥

रवौ ब्राह्मीं समादाय छायाशुष्कं समाचरेत् ॥ २९ ॥
मन्त्रयेत् त्रिसहस्त्रं तु भक्षयेत् प्रातरेव च ।
एतद्विद्यां जपेन्नित्यं त्रिसहस्त्रं कुमारक ॥ ३० ॥
बगलास्त्रकृतं यद्यत् प्रयोगं दुर्ल्लभम् भुवि ।
तत्सर्वं नाशमाप्नोति मासं मण्डलमात्रतः ॥ ३१ ॥

रविवार में ब्राह्मी बूटी को लाकर छाया में सुखावे । उसे तीन हजार जप से मन्त्रित करके प्रातःकाल में खा जाय । इस विद्या का तीन हजार जप प्रति दिन करता रहे । इससे बगलास्त्र आदि सभी दुर्लभ प्रयोग एक महीने में या चालिस दिनों में नष्ट हो जाते हैं ॥ २९-३१ ॥

ब्राह्मीरसं समादाय मन्त्रयेच्छतधा पुनः ।
शर्करासहितं पीत्वा सहस्त्रं जपमाचरेत् ॥ ३२ ॥
नानाकृत्त्रिमदोषं च बगलामन्त्रतः कृतम् ।
अमङ्गल्यो(द्)भवं नाथ भूतले यदि दुर्लभम् ॥ ३३ ॥

ब्राह्मी बूटी के रस को एक सौ जप से मन्त्रित करके चीनी मिलाकर पी जाये । एक हजार जप करे । तब बगला मन्त्र के प्रयोग से उत्पन्न दुर्लभ प्रयोग भी चालिस दिनों में नष्ट हो जाते हैं ॥ ३२-३३ ॥

मण्डलान्नाशमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ।
एतद्विद्या साम्प्रदायं गुरूक्तान् लब्धमन्त्रवान् ॥ ३४ ॥
लक्षमेकं जपेन्मन्त्री प्रयोगं नाशमाप्नुयात् ।

इस मन्त्र की दीक्षा गुरु से लेकर एक लाख जप करे तो प्रयोग वैसे ही नष्ट हो जाते हैं जैसे सूर्योदय के बाद अन्धकार का नाश हो जाता है ॥३४॥

अशक्तश्च स्वयं पुत्र कुर्वते ब्राह्मणानपि ॥ ३५ ॥
द्विगुणां जपमाप्नोति तमः सूर्योदये यथा ।
एतद्विद्यां सम्प्रदायं वद्वये ब्राह्मणानपि ॥ ३६ ॥
द्विगुणं जपमात्रेण सर्वशान्तिमवाप्नुयात् ।

स्वयं अशक्त होने पर ब्राह्मण से जप करवावे । ब्राह्मणों से जप दुगुना करवाने पर फल मिलता है। इस विद्या को सम्प्रदाय के ब्राह्मणों से दुगुना जप करवाने पर सभी की शान्ति होती है ॥ ३५-३६ ॥

एतद्विद्यां विना पुत्र कलौ च बगलामुखि(खी) ॥ ३७ ॥

प्रयोगशान्तिर्न भवे(न्) मन्त्रयन्त्रौषधादिभिः ।
सप्तकोटिमहामन्त्रप्रयोगेषु च पुत्रक ॥ ३८ ॥
एतद्विद्यापुरश्चर्य्या नाशयेदाशु निश्चयम् ।
नमः श्रीकालिकादेव्यै कालरात्र्यै नमो नमः ॥ ३९ ॥
उपसंहाररूपिण्यै देव्यै नित्यं नमो नमः ॥ ४० ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'बगला-उपसंहार-विद्यावर्णनम्' नाम द्वात्रिंशत्पटलः ॥ ३२ ॥
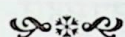
हे कार्तिकेय! कलियुग में इस बगलामुखी विद्या के बिना प्रयोग की शान्ति किसी अन्य मन्त्र, यन्त्र या औषधि से नहीं होती । सात करोड़ मन्त्रों के प्रयोगों का नाश इस विद्या के पुरश्चरण से होता है । श्री कालिका देवी को नमस्कार है कालरात्रि को बार-बार प्रणाम है, उपसंहाररूपिणी देवी को नित्य बार-बार प्रणाम है ॥ ३७-४० ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'बगला-उपसंहार-विद्यावर्णन' नामक द्वात्रिंश पटल समाप्त ॥ ३२ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशत्पटल:

लोकोपकारक-उपसंहार-यन्त्रकथनम्

श्री बगला देवी का ध्यान

पीनोत्तुङ्गजटाकलापविलसद्भालेन्दुसच्छेखराम्
बिभ्राणां शितशान्तकुम्भमुकुटां(टं) नेत्रत्रयालंकृताम् ।
शब्दब्रह्ममयीं त्रिलोकजननीं शक्तिं परां शाम्भवीं
देवीश्रीबगलां सुरासुरवरैरभ्यर्चितां भावयेत् ॥ १ ॥

शब्द ब्रह्ममयी, त्रिलोकजननी, पराशक्ति, शाम्भवी श्रेष्ठ, देव-दैत्यों से पूजित ऐसी बगला देवी का ध्यान हम करते हैं। इनके जटा-कलाप और पीन उतुङ्ग हैं। इनके शिखर पर चन्द्रमा के विराजमान् होने से ललाट चमक रहा है। कुम्भाकार मुकुट इनके शिर पर सुशोभित है। इनके सुन्दर तीन नेत्र हैं ॥ १ ॥

बगलोपसंहार यन्त्र की जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

नमः शिवाय साम्बाय ब्रह्मणेऽनन्तमूर्त्तये ।
वद मे चोपसंहारं यन्त्रं लोकोपकारकम् ॥ २ ॥

श्री कौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—हे ब्रह्मणेऽनन्तमूर्तये साम्बशिव! आपको नमस्कार है। आप मुझे लोकोपकारक उपसंहार यन्त्रों को बतलाइये ॥ २ ॥

कपिला नवनीत से लेपित केले के पत्ते पर मन्त्रसहित यन्त्र-लेखन का क्रम

ईश्वर उवाच—

कपिलानवनीतं च कदलीपत्रमध्यतः ।
लिप्त्वा मन्त्रं लिखेत्तत्र कृत्वा पूजां च साधकः ॥ ३ ॥
षट्कोणं चाष्टकोणं च वृत्तं भूपुरमेव च ।
षट्कोणकर्णिकायां व(च) षट्बीजानि मनोलि(खे)त् ॥ ४ ॥

शिष्टाक्षराणि कोणेषु ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनीमनुः ।
अष्टपत्रे लिखेन्मन्त्रं तार्क्ष्यमालामनुस्तथा ॥ ५ ॥

कपिला नवनीत से लेपित केले के पत्र पर यन्त्र लिखकर साधक पूजा करे। पहले षट्कोण बनाकर उसके बाहर अष्टकोण, अष्टकोण के बाहर वृत्त और वृत्त के बाहर भूपुर बनावे ।
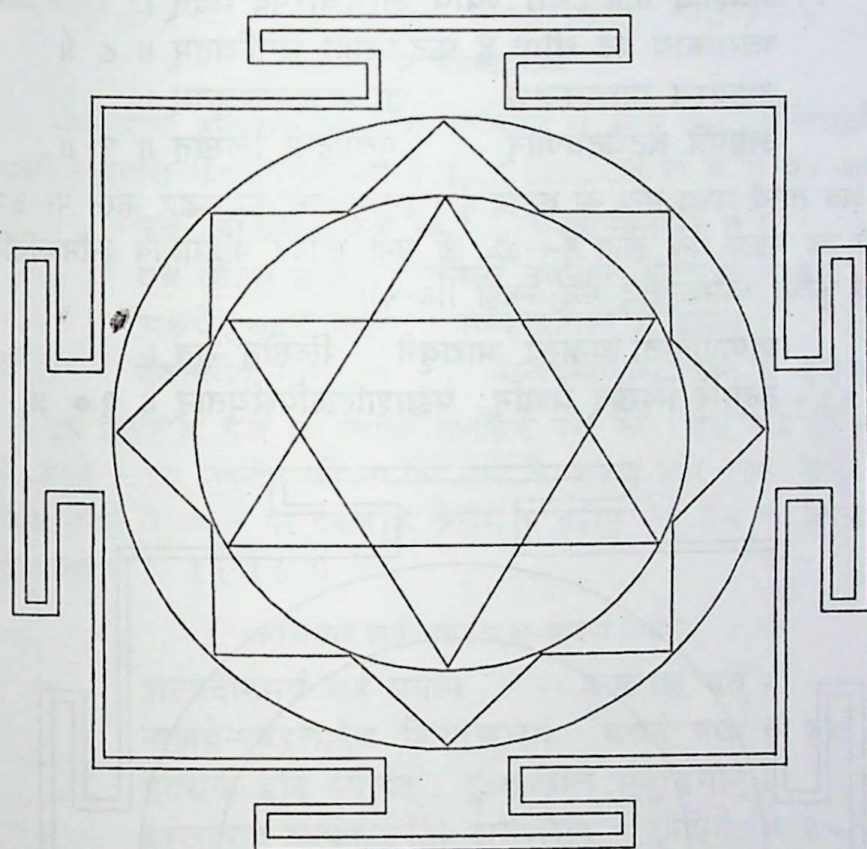
षट्कोण की कर्णिका में श्री बगला उपसंहार विद्या के पाँच बीज ग्लौं हुं ऐं क्रीं श्रीं लिखे । षट्कोण के कोनो में बगला उपसंहार के ५४ वर्णों को नव नव के क्रम में लिखें । जैसे—कालि, काले महाकालि ए, हि एहि काल रात्रि आवे, शय आवेशय महामो, हे महा मोहे स्फुर स्फुर, प्रस्फुर प्रस्फुर स्तम्भना, स्त्रशमनि हुं फट् स्वाहा । चार अष्टपत्र में तार्क्ष्य माला मन्त्र के ३२ अक्षरों में से प्रत्येक पत्र में चार-चार अक्षरों को लिखे । जैसे—ॐ क्षीं नमो, भगवते, पक्षिराजा, यअभिचा, रादिसक, ल कृत्रिम, ध्वंसकाय, हुं फट् स्वाहा । यन्त्र के अष्टदलों में तार्क्ष्य मालामन्त्र लेखन निर्देश है ॥ ३-५ ॥

ताक्ष्र्य माला मन्त्र का उद्धार

कोऽयंस्ताक्ष्र्यमनुश्चेति वक्ष्येऽहं मन्त्रनायकम् ।
आद्यवर्णं समुच्चार्य्य ताक्ष्र्यबीजं ततः परम् ॥ ६ ॥
ॐ नमो पदमुच्चार्य्य पश्चाद् भगवते पदम् ।
ताक्ष्र्यबीजं पक्षिराजायोक्त्वा ताक्ष्र्य ततः परम् ॥ ७ ॥
सर्वशब्दं ततो (थो) च्चार्य अभिचारपदं वदेत् ।
ध्वंसकाय पदं क्षीमों हुँ फट्स्वाहा समन्वितम् ॥ ८ ॥
ताक्ष्र्यस्य मालामन्त्रश्च द्वात्रिंशद्वर्णसंयुतम् ।
अष्टपत्रे वेदवेदवर्णान् पूर्वादितो लिखेत् ॥ ९ ॥

अब ताक्ष्र्य माला मन्त्र को कहता हूँ । इन श्लोकों का उद्धार करने पर ३२ अक्षरों का माला मन्त्र होता है—ॐ क्षीं नमो भगवते पक्षिराजाय अभिचारादि सकल कृत्रिम ध्वंसकाय हुं फट् स्वाहा ॥६-९॥

प्राणप्रतिष्ठां यन्त्रस्य आद्यवृत्ते लिखेत् सुत ।
तदुपरि लिखेद् वर्णान् पञ्चाशल्लिपिसंयुतान् ॥ १० ॥
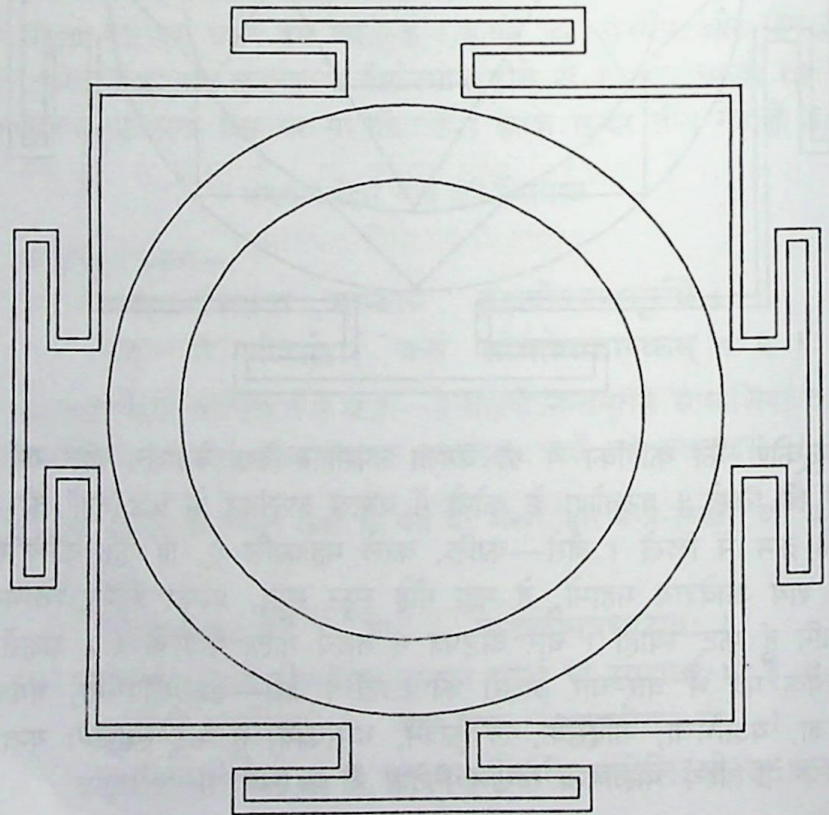
पाशाङ्कुशं च विलिखेद् भूपुरेषु यथाक्रमम् ।
अष्टकोणे लिखेद् वर्णान् वज्रान्ते वर्म फट् तथा ॥ ११ ॥

यन्त्र प्राण-प्रतिष्ठा पूजा-विधि

पहले वृत्त में प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र लिखे । उसके बाहर वाले वृत्त में पचास मातृकाओं को लिखे । भूपुर में आं क्रों लिखे । भूपुर के आठों कोनो में मं हुं फट् लिखे ।

प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र

अस्यै प्राण: प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा: अरन्तु च अस्य दैवतअर्चायैभामर्हीत च कश्चन । पचाश मातृकाएँ अं आं इं ईं.................क्षं लं क्षं ॥ १०-११ ॥

एवं लिखित्वा यन्त्रं च पूजयेन्मानसेन तु ।
एवं कृत्वा तु तत्सर्वं नवनीतं कुमारक ॥ १२ ॥
भक्षयेद् बदरीमात्रं सायं प्रातस्तु बुद्धिमान् ।
देवतावेशमतुलं मन्त्रयन्त्रादिकृत्रिमैः ॥ १३ ॥

इस प्रकार के यन्त्र को बनाकर मानसिक पूजा करे । इस मन्त्र को नवनीत से बनावे । इस नवनीत को बेर के फल के बराबर सवेरे शाम खाये । इस प्रकार करने से अतुल पर देवता के आवेश से कृत्रिम मन्त्र यन्त्र का प्रभाव खत्म हो जाता है ॥ १२-१३ ॥

अभिचार शान्तिकर यन्त्र-धारण प्रयोग

शल्यदारुमयं तत्र प्रयोगं बगलाश्च यत् ।
नाशयेन्मण्डलादेव शिव(व)स्यं वचनं यथा ॥ १४ ॥
एतद्यन्त्रं हृदि ध्यायेद् दुःखकाले सुबुद्धिमान् ।
दशरात्राद् व्यपोहतुं(ति) दारुणैरपि कृत्रिमैः ॥ १५ ॥
रौप्ये वा स्वर्णपट्टे वा लिखेद् यन्त्रमिमं बुधः ।
पूजयेद् रक्तपुष्पेण षोडशैरुपचारकैः ॥ १६ ॥
कण्ठे वा बाहुमूले वा शिखायां वा कुमारक ।
बन्धयित्वा वाभिचारं नाशमाप्नोति निश्चितम् ॥ १७ ॥

दारुमयशल्य के प्रयोग से बगला मन्त्र द्वारा किये गये अभिचार-प्रयोग चालिस दिनों में नष्ट हो जाते हैं । इस यन्त्र का ध्यान हृदय में करने से दश रात में दारुण कृत्रिमों का नाश हो जाता है । सोने या चाँदी के पत्र पर इस

यन्त्र को लिखकर लाल फूलों से षोडशोपचार पूजा करे । कण्ठ में या बाहुमूल में या शिखा में बाँधने से अभिचार का नाश हो जाता है ॥ १४-१७ ॥

विविध व्याधि विनाशक ताम्बूल चर्वण प्रयोग

नागवल्लीदलेनैव एतद्यन्त्रं कुमारक ।
चूर्णेन विलिखेत् सम्यक् पूर्वं ताम्बूलचर्वणम् ॥ १८ ॥
एवं कुर्यात् प्रातरेव तद्वत् सायं समाचरेत् ।
मासत्रयं चरेदेवं कृत्रिमं हरते नृणाम् ॥ १९ ॥
कुर्यात् कृत्रिमरोगेण पीडिताय कुमारक ।
तत्कार्यगौरवं चैव लाघवं चावलोकयेत् ॥ २० ॥
पक्षं वाथ त्रिसप्ताहं मासं वा मण्डलं तथा ।
यथा याधित्रियुक्तं च तावत्कालं कुमारक ॥ २१ ॥
अनेन (नया) विद्यया पुत्र मार्जनं मुनिसंमतम् ।
अथवा मन्त्रितं तोयं सद्यः कृत्रिमनाशनम् ॥ २२ ॥

पान के पत्ते पर चूर्ण से इस यन्त्र को बनावे । निरन्तर सवेरे शाम खाये। तीन महीनों तक ऐसा करने से पीड़ित के कृत्रिम रोग का नाश होता है । कृत्रिम रोग से पीड़ित के लिये प्रयोग करते समय उसकी गुरुता और लघुता पर विचार करे । पन्द्रह दिन, इक्कीस दिन या चालिस दिनों तक अथवा व्याधि विमुक्त होने तक इस विद्या से मुनिसम्मत मार्जन करे अथवा अभिमन्त्रित जलपान से कृत्रिम रोगों का नाश होता है ॥ १८-२२ ॥

धारण-यन्त्र का उद्धार उसकी प्राण-प्रतिष्ठा और अर्चन प्रयोग

भूपुरं वृत्तयुग्मं च तन्मध्ये च कुमारक ।
पञ्चकोणं लिखेत् सम्यक् तन्मध्ये चन्द्रमण्डलम् ॥ २३ ॥
इन्द्रमध्ये लिखेद् विद्यां कृत्रिमघ्नीं च कालिकाम्।
मनुरेव लिखेत् सम्यक् स्पष्टवर्णेन संयुतम् ॥ २४ ॥
पञ्चकोणे लिखेन्मन्त्रं पञ्च ब्रह्माख्यमेव च ।
आद्यपत्रे लिखेन्मन्त्रं प्राणस्थापनकं तथा ॥ २५ ॥
द्वितीये विलिखेत् सम्यक् पञ्चाशद्वर्णमादरात् ।
पाशाङ्कुशं विलिखेद् भूपुरेषु च यथाक्रमम् ॥ २६ ॥
एतद्यन्त्रं लिखेद् भूर्ये कसूर्या(स्तूर्या) क्रौञ्चभेदन।
यन्त्रे प्राणान् प्रतिष्ठाप्य पञ्च ब्रह्ममनुं जपेत् ॥ २७ ॥
त्रिसहस्त्रं सहस्त्रं वा त्रिशतं शतमेव च ।

ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाद् वित्तशाठ्यं न कारयेत् ॥ २८ ॥
तद्यन्त्रधारणादेव कृत्रिमादिरनेकशः ।
तत्क्षणान्नाशमाप्नोति जीवेद् वर्षशतं तथा ॥ २९ ॥

भूपुर के अन्दर दो वृत्त बनावे । वृत्त के मध्य में पञ्चकोण बनावे । पञ्चकोण के मध्य वृत्त बनावे ।
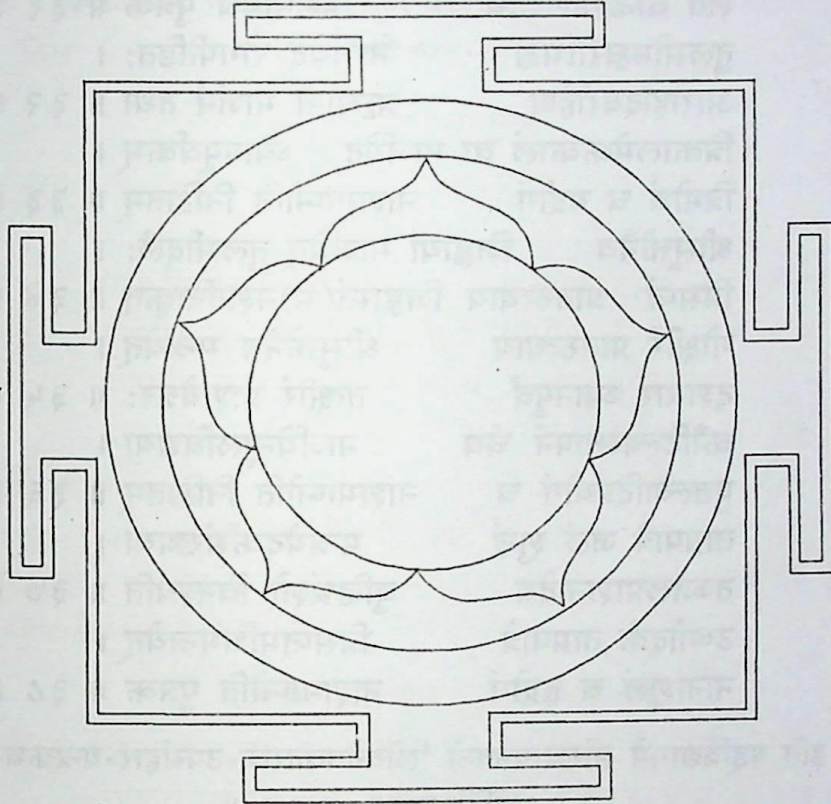
मध्य वृत्त में कृत्रिमघ्नी कालिका मन्त्र के उनसठ (५९) अक्षरों को साफ-साफ अष्ट वर्ग के साथ लिखे । पञ्चकोण में पञ्च ब्रह्ममन्त्र लिखे । आद्यपत्र में प्राण-प्रतिष्ठा मन्त्र लिखे । दूसरे पत्र में पचास वर्णो को लिखे । भूपुर में आं क्रों यथा विधि लिखे ।

इस यन्त्र को भोजपत्र पर कस्तूरी से लिखे । यन्त्र में प्राण-प्रतिष्ठा करे । पञ्च ब्रह्ममन्त्र में सद्योजात, वामदेव, तत्पुरुष, अघोर और ईशान मन्त्र आते हैं। तीन हजार या एक हजार या तीन सौ या एक सौ ब्राह्मणों को भोजन करावे। वित्तशाठ्य नहीं करना चाहिए । यन्त्र को धारण करने से कृत्रिम आदि अनेक रोग तत्क्षण नष्ट हो जाते हैं और धारणकर्त्ता साधक एक सौ वर्ष तक जीवित रहता है ॥ २३-२९ ॥

विविध कृत्रिम रोगादि के नाश के लिये उस यन्त्र का धारण, मार्जन, प्राशन एवं पान प्रयोग

एतद्यन्त्रं हृदि ध्यात्वा मानसेनैव पूजयेत् ।
त्रिसप्तदिनमात्रेण नानाकृत्त्रिमनाशनम् ॥ ३० ॥
ताम्रपात्रे जलं ग्राह्यं श्रीसूक्तेनैव मन्त्रयेत् ।
शतं वार्द्धशतं वाथ त्रिसप्तमथ पुत्रक ॥ ३१ ॥
तुलसीमञ्जरीभिश्च नार्जयेद् रोगपीडितः ।
आरोहादवरोहेण ऋचान्ते मार्जनं तथा ॥ ३२ ॥
त्रिकालमेककालं वा मार्जयेद् ध्यानपूर्वकम् ।
त्रिमोथं च यद्रोगं नाशमाप्नोति निश्चितम् ॥ ३३ ॥
श्रीसूक्तेनैव जिह्वायां मार्जयेत् तुलसीदलैः ।
त्रिसप्तं प्रातरुत्थाय जिह्वास्तं(भ)नशान्तिकृत् ॥ ३४ ॥
गोक्षीरं प्रातरुत्थाय श्रीसूक्तेनैव मन्त्रयेत् ।
दशवारं ध्यानपूर्वं तत्क्षीरं प्राशयेन्नरः ॥ ३५ ॥
कौटिल्यस्थापनं चैव मार्जयेन्मूलविद्यया ।
पुत्तल्यादिप्रयोगं च नाशमाप्नोति निश्चितम् ॥ ३६ ॥
ताम्रपात्रे जलं शुद्धं मन्त्रयेदर्कसंख्यया ।
तज्जलप्राशनादेव बुद्धिभ्रंशो विनश्यति ॥ ३७ ॥
उष्णोदकं ताम्रपात्रे त्रिसप्तमभिमन्त्रयेत् ।
नानाशूलं च हृद्रोगं नाशमाप्नोति पुत्रक ॥ ३८ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'लोकोपकारक-उपसंहार-यन्त्रकथनम्' नाम त्रयत्रिंशत्पटलः ॥ ३३ ॥
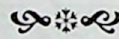
इस यन्त्र को हृदय में ध्यान करके मानसिक पूजा करे तो २१ दिनों में नाना परकृत पीड़ाओं का नाश होता है ।

ताम्बे के लोटे में जल भरकर श्रीसूक्त पाठ से मन्त्रित करे । तुलसी मञ्जरी में सौ या पचास या एकइस बार रोगी का मार्जन करे । तीनों समय या एक समय ध्यानपूर्वक मार्जन करे तो कृत्रिम रोग नष्ट हो जाते हैं । श्रीसूक्त का पाठ करते हुए तुलसी दलों से जीभ का मार्जन प्रातःकाल में करे तो जीभ का स्तम्भन खत्म हो जाता है । प्रातः उठकर गोदुग्ध को श्रीसूक्त के दश पाठ से मन्त्रित करे और उसे पी जाय । कौटिल्य स्थापन करके मूल विद्या से मार्जन

करे। ऐसा करने से पुत्तलि आदि का प्रयोग नष्ट हो जाता है। ताम्बे के लोटा में जल भरकर उसे बारह मन्त्र जप से मन्त्रित करे। उस जल को पीने से बुद्धि भ्रंशता का नाश हो जाता है। ताम्बे के लोटा में जल भरकर एकइस जप से मन्त्रित करके पीने से नाना शूल हृदय रोग नष्ट हो जाता है।

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'लोकोपकारक-उपसंहार-यन्त्रकथन' नामक त्रयस्त्रिंश पटल समाप्त ॥ ३३ ॥

अथ चतुस्त्रिंशः पटलः

सर्वोपद्रवनाशनप्रयोग कथनम्

बगला का ध्यान

विश्वेश्वरी विश्ववन्द्या विश्वानन्द स्वरूपिणी ।
पीतवस्त्रादिसन्तुष्टा पीतद्रुमनिवासिनी ॥ १ ॥

विश्व की स्वामिनी, विश्ववन्दनीया, विश्वआनन्दस्वरुपिणी, पीताम्बर वस्त्रधारिणी, पीले पेड़ पर निवास करने वाली बगला देवी का हम ध्यान करते हैं ॥ १ ॥

समस्त कर्म सर्वोपद्रवादि नाशन जिज्ञासा में कृत्यावेश स्तम्भन प्रयोग का वर्णन

क्रौञ्चभेदन उवाच—

विश्वाराध्य भवानीश विश्वोत्पत्तिविधायक ।
ब्रूहि मे कृपया तात सकलागमकोविद ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—हे विश्व के आराध्य भवानीपति! इस संसार को उत्पन्न करने वाले मुझे सभी उपद्रवों की शान्ति के उपाय बतलाइये ॥ २ ॥

सभी उपद्रव शान्ति के प्रयोग

ईश्वर उवाच—

समस्तकर्म्मणां ध्वंसे सर्वोपद्रवनाशने ।
जातिस्तम्भे मनःस्तम्भे क्रूरकर्मनिवारणे ॥ ३ ॥
अष्टवेतालशमने सर्वभैरवनाशने ।
मातृणां शान्तिजनकं स्तम्भनं जलरक्षसाम् ॥ ४ ॥
देवदान दैत्यारीन्(रि)शमने भ्रमनाशने ।
समस्तोपद्रवध्वंसे पूतनादिविनाशने ॥ ५ ॥
कपटादिविनाशार्थे प्राप्ते प्राणस्य सङ्कटे ।

विंशन्मनुविनाशार्थे षट्त्रिंशद्रोगनाशने ॥ ६ ॥
सूचिप्रयोगविध्वंसे महाशस्त्रास्त्रपातने ।
गतिस्तम्भे मतिस्तम्भे सूर्य्याग्निस्तम्भनेषु च ॥ ७ ॥
नानारोगविनाशार्थे नानाक्लेशनिवारणे ।
रणे राजकुले शान्तौ प्रयोगनाशनेऽपि च ॥ ८ ॥
परप्रयोगविध्वंसे परकृत्यानिवारणे ।
कृत्यावेशस्तम्भनोऽयं प्रयोगं षणमुखाचर ॥ ९ ॥

ईश्वर ने कहा—हे कार्तिकेय! मैं सर्वयोगोत्तमोत्तम योग को कहता हूँ । जिसके करने से सभी उपद्रव शान्त हो जाते हैं । सभी कर्मो के नष्ट होने पर, सभी उपद्रवों के नाश के लिये, जाति स्तम्भ में, मन स्तम्भ में, परकृत्या निवारण में, अष्ट बेताल के शमन में, सभी भैरवों के विनाश के लिये, मातृका शान्तिजनक स्तम्भन, जलराक्षस, देव, दानव, दैत्यारि शमन में, भ्रम-नाश के लिये, सभी उपद्रवों के नाश के लिये, पूजनादि के नाश के लिये, कष्ट आदि के विनाश के लिये, प्राणों पर सङ्कट होने पर विष-विनाश के लिये, छत्तीस प्रकार के रोगों के नाश के लिये, सूचि प्रयोग विध्वस के लिये, महाशस्त्रास्त्र पातन में, गति स्तम्भन में, मति स्तम्भन में, सूर्य अग्नि के स्तम्भन में, नाना रोगों के नाश के लिये, नाना क्लेश-निवारण के लिये, परम प्रयोग विध्वंस के लिये, परकृत्या निवारण के लिये एवं कृत्यावश के स्तम्भन के लिये यह प्रयोग करे । इस प्रयोग से सभी दोषों का निवारण होता है । हे कार्तिकेय! उस सर्वोत्तम योग का सुनो ॥ ३-९ ॥

ज्वालामुखी आदि पञ्चास्त्र प्रयोग विधि त्रैलोक्य विजयास्त्र प्रयोग और उसका फल कथन

अनेन योगवर्य्येण सर्वदोषनिवारणम् ।
श्रृणु षणमुख तद्योगं सर्वयोगोत्तमोत्तमम् ॥ १० ॥
पीतावरणभूषी च पीतवस्त्रद्वयान्वितः ।
पीतयज्ञोपवीतस्तु महापीताश (स)ने स्थितः ॥ ११ ॥
ज्वालामुख्यभिधं बाणं त्रिशतं प्रजपेत् सुत ।
हरिद्राक्षमणिं पीत सर्वकार्यं जपादिकम् ॥ १२ ॥
वडवानलनामानं बाणमादौ जपेच्छतम् ।
उल्कामुख्यभिधं बाणं द्विशतं प्रजपेत् सुत ॥ १३ ॥
ज्वालामुख्यभिधं बाणं त्रिशतं प्रजपेत् नरः ।
जातवेदमुखीबाणं वेदसंख्याशतं सुत ॥ १४ ॥

बृहद्भानुमुखीबाणं जपेत् पञ्चशतं सुत ।
य एकादि महाविद्यां कुल्लुकादिसमन्विताम् ॥ १५ ॥
नेत्रलक्षं जपेन्मन्त्रं क्रूरकर्मादिनाशने ।
हरिद्रायां चरेद्भौ(द्वौ)मं काम्यं गौरवमिच्छति ॥ १६ ॥

पीला आभूषणधारी, दो पीले वस्त्र से युक्त होकर और पीले यज्ञोपवीत को पहन कर एवं पीले आसन पर बैठकर जप करे, जपादि को हल्दी की माला से करे । पहले बड़वानल नामक वाण का एक सौ जप करे। तब उल्कामुखी नामक वाण का दो सौ जप करे । तब ज्वालामुखी नामक वाण का जप तीन सौ करे । तब जातवेदमुखी वाण का चार सौ जप करे। तब वृहदभानुमुखी वाण को पाँच सौ बार जपे । तब एकाक्षरी महाविद्या का जप कुल्लकादि के साथ क्रूर-कर्मो के नाश के लिये दो लाख करे । काम्य-गौरव के अनुसार हल्दी से हवन करे ॥ १०-१६ ॥

शतं त्रिशतकं पुत्र हुनेद्दशसहस्त्रकम् ।
हरिद्राघृतसंमिश्रैः क्रूरकर्मविनाशनम् ॥ १७ ॥
हरिद्राहोममात्रेण क्रूरकर्मण(वि)नाशनम् ।
तर्प्पणात्तालनीरेण हेतुना मार्जयेत् सुत ॥ १८ ॥
सुवासिनी ब्राह्मणांश्च वगलार्चा कुमारक ।
सौभाग्यार्चाक्रमेणैव ब्राह्मीमुद्रां च धारणात् ॥ १९ ॥
बन्धनं त्रिपुरश्चैव दीपिका तस्य योजनात् ।
कृत्यावश्यस्तम्भनाख्यो(ख्यं) योगं सर्वं भयापहम् ॥ २० ॥

क्रूर कर्म के विनाश के लिये घृतमिश्रित हल्दी से एक सौ, तीन सौ या दश हजार हवन करे । हल्दी से हवन करते ही क्रूरकर्मी का नाश हो जाता है। ताड़ की ताड़ी से तर्पण करे । मदिरा से मार्जन करे । सुवासिनी, ब्राह्मणों, भक्ता बाला और कुमारियों को भोजन कराने से सौभाग्य अर्चन क्रम से, ब्राह्मी वश्य स्तम्भन नामक सवों में भयानक योग होता है ॥ १७-२० ॥

त्रैलोक्यविजयं नाम विजयं मण्डलं तथा ।
पञ्चास्त्रमूलपठनाद् गारुडो जायते सुत ॥ २१ ॥
पीताशी पीतवाणी च पीतशय्यासमन्वितः ।
पीताम्बरादिसंयुक्तः पीतपूजापरायणः ॥ २२ ॥
पञ्चक्रमसमायुक्तां (क्तः) सिद्धयोगी नरः सुत ।
ग्रसिनी सर्वविद्यानां रक्षणी सकलापदाम् ॥ २३ ॥
मर्दिनी सर्वशत्रूणां नाशिनी सर्वरक्षसाम् ।

उपसंहारयोगेषु योगोऽयं भवति ध्रुवम् ॥ २४ ॥

त्रैलोक्य विजय नामक कवच पाठ, पञ्चास्त्र मूल पाठ से गारुड़ी होता है । पीला भोजन, पीली वाणी, पीली शय्या पीला वस्त्र धारण, पीले उपचारो से पूजा परायण, पञ्च कर्म समासक्तसाधक सिद्ध योगी होता है । उपसंहार योगों में यह योग विद्या सभी विद्याओं की ग्रसिनी, सभी आपदाओं की रक्षिणी, सभी शत्रुओं की भेदिनी । सभी राक्षसों की नाशिनी होती है ॥ २१-२४ ॥

अन्ययोगसमारम्भं कृतं सिद्ध्यति वा न वा ।
योगमेवं समासाध्य सिद्धभोगी नरः कलौ ॥ २५ ॥
अघोराश्च पाशुपती संहारो मोहिनीपि (ति) च ।
षट्त्रिंशदस्त्रसंस्तम्भः पञ्चास्त्रेण प्रजायते ॥ २६ ॥

दूसरे योगों के करने से सिद्धि मिले या न मिले पर इस योग को करने से कलियुग में मनुष्य सिद्धि का भागी हो जाता है । अघोर, पाशुपति, संहार मोहिनी आदि छत्तीस अस्त्रों का स्तम्भन पञ्चास्त्र से होता है ॥ २५-२६ ॥

पञ्चास्त्रशस्त्रविज्ञानी पाञ्चभौतिकसिद्धियुक् ।
आद्यस्तु रणबाणास्त्रं रणादिस्तम्भने जपेत् ॥ २७ ॥

पञ्चास्त्र शस्त्र विज्ञानी पाँच भौतिक सिद्धि युक्त साधक पहला रण वाणास्त्र का जप युद्धादि के स्तम्भन में करे ॥ २७ ॥

उल्कामुखीद्वितीयास्त्रं स्तम्भनं भुवनत्रये ।
ज्वालामुखीतृतीयास्त्रं स्तम्भनं ऋषिदैवतैः ॥ २८ ॥
जातवेदमुखीबाणो ब्रह्मविष्णवादिरक्षणे ।
सर्वकर्मस्तम्भने च चतुर्थं प्रजपेत् सुत ॥ २९ ॥
बृहद्भानुमुखीबाणं पञ्चमं परिकीर्त्तितम् ।
षट्पञ्चकोटिचामुण्डा कालीकोटिशतं सुत ॥ ३० ॥
सपादकोटित्रिपुरा पञ्चाशत्कोटिभैरवाः ।
नारसिंहा यातुधानाः पूतनाः कोटिचेटकाः ॥ ३१ ॥
समस्तस्तम्भनं पुत्र पञ्चमेन प्रजायते ।
हस्ते सम्पाद्य पञ्चास्त्रं शासनास्त्रं स्मरेन्मुखे ॥ ३२ ॥
स कल्पमुखभागी स्यान्नात्र कार्या विचारणा ।
त्रैलोक्यविजयाख्यं च स्मरेदस्त्रेन्द्रमुत्तमम् ॥ ३३ ॥

द्वितीयास्त्र उल्कामुखी से तीनों लोकों का स्तम्भन होता है । तृतीयास्त्र ज्वालामुखी से ऋषि देवताओं का स्तम्भन होता है । चतुर्थ जातवेदमुखी वाण का

जप सर्वकर्म स्तम्भन में करे । पञ्चम वृहदभानुमुखी वाण के जप से छप्पन करोड़ चामुण्डा, सौ करोड़ काली, सवा करोड़ त्रिपुरा, पचास करोड़ भैरव नारसिंहा, यातुधान पूतना, एक करोड़ चेटक आदि सभी का स्तम्भन हो जाता है । हाँथ में धारण करके पञ्चास्त्र शासनास्त्र का जप मुख से करे तो वह कल्पसुख का भागी होता है । इसमें विचार अनावश्यक है । त्रैलोक्यविजय अस्त्रेन्द्र का भी स्मरण करे ॥ २८-३३ ॥

हवन एवं तर्पण प्रयोग

यथोक्तकुण्डेषु हुनेद् वेदिकायां विशेषतः ।
चुल्ल्यां शक्ट्यां प्रेताग्नौ पञ्चस्थाने हुनेदपि ॥ ३४ ॥
चत्वरे सर्वकार्यार्थं होमयेदुक्तमार्गतः ।
सकूर्चं स्रुक्स्रुवौ चैव तद्धश्चि(वि)श्च इति क्रमात् ॥ ३५ ॥
प्रणि(णी)ता प्रोक्षणीपात्रमाज्यस्थाली च षण्मुख।
सकलं पूर्णपात्रं च ब्रह्मचर्येण योगतः ॥ ३६ ॥
क्रमात् सर्वं तु सम्पाद्य होमं कुर्यात् प्रयत्नतः ।
क्रूरकर्माणि नश्यन्ति तालकेन हुनेत् सुत ॥ ३७ ॥
पीतपुष्पैश्च जुहुयात् क्रूरकर्मविनाशने ।
क्रूरतर्पणयोगेन क्रूरविघ्ननिवारणम् ॥ ३८ ॥
इति संक्षेपतः पूर्वं किमन्यं श्रोतुमिच्छसि ।

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'सर्वोपद्रवनाशनप्रयोग कथनम्' नाम चतुस्त्रिंशत्पटलः ॥ ३४ ॥

यथोक्त कुण्ड में, वेदी में, चुल्हा में, शकट में और प्रेताग्नि—इन पाँच स्थानों में हवन करे । चतुरस्र में हवन सभी कार्यो की सिद्धि के लिये उक्त मार्ग से करे । कूर्च, स्रुक, स्रुवा, वरही प्रणीता प्रोक्षणी पात्र आज्यस्थाली, कलश, पूर्णपात्र आदि को ब्रह्मचर्य रहकर एकत्रित करके हवन करे। तालक से हवन करने पर क्रूर कर्मो का नाश होता है । क्रूर कर्मो के नाश के लिये पीले फूलों से हवन करना चाहिए । क्रूर तर्पण योग से क्रूर विघ्ननिवारण होता है । इस प्रकार संक्षेप में सब कुछ कहा गया । अब क्या सुनने की इच्छा है?

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'सर्वोपद्रवनाशनप्रयोग कथनम्' नामक चतुस्त्रिंश पटल समाप्त ॥ ३४ ॥
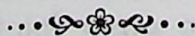
अथ पञ्चत्रिंशः पटलः

बीजभेदवर्णनम्

बगला का ध्यान

योषिदाकर्षणासक्तां फुल्लचम्पकसन्निभाम् ।
दुष्टस्तम्भनमासक्तां वगलां स्तम्मिनीं भजे ॥ १ ॥

स्त्रियों के आकर्षण में आसक्त, विकसित चम्पा के वर्ण की, दुष्टों के स्तम्भन में आसक्त स्तम्भिनी बगला को हम भजते हैं ॥ १ ॥

वीज-भेद जिज्ञासा तथा बगला-मन्त्र निर्णय

क्रौञ्चभेदन उवाच—

नमस्ते सर्वसर्वेश कर्पूरद्युतिसन्निभ ।
योगिन् सर्वादिसर्वज्ञ बीजभेदं वद प्रभो ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—सर्वसर्वेश को नमस्कार है । कपूर के समान गौर वर्ण, हे योगी! सबों के आदि सर्वज्ञ! हे प्रभो! अब बीज-भेद कहिये ॥ २ ॥

छत्तीस अक्षरी विद्या के ऋष्यादि का विचार और सांख्यायन, ब्रह्मयामल, जयद्रथयामल एवं हारिद्र संहिता के मत

ईश्वर उवाच—

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि वगलामन्त्रनिर्णयम् ।
षट्त्रिंशदक्षरी विद्या त्रिपुरे चैव तिष्ठति ॥ ३ ॥
सांख्यायनमते देव्या नारायण ऋषिः स्मृतः ।
गायत्रीछन्द उद्दिष्टं देवता वगलाह्वया ॥ ४ ॥
सांख्यायनमते देवि वामाचारविधिर्मतः ।
ब्रह्मयामलसम्मत्या ब्रह्मा चास्य ऋषिः स्मृतः ॥ ५ ॥

गायत्री छन्द आदिष्टं देवता सैव कीर्त्तिता।
जयद्रथाख्ययामले तु ऋषिर्नारद एव हि ॥ ६ ॥
छन्दादिकं पूर्ववत् स्यादिति संक्षेपतो मतम्।
हारिद्रसंहितायां तु ऋषिर्नारायणो मतः ॥ ७ ॥
अनुष्टुप्छन्द आख्यातं देवता वगलामुखी।
सांख्यायनमतं देवो(वि) कलौजागर्त्ति केवलम् ॥ ८ ॥

ईश्वर ने कहा—अब मैं बगला मन्त्र निर्णय कहता हूँ। यह त्रिपुरा बगला देवी छत्तीस अक्षरों के मन्त्र में रहती हैं। सांख्यायन के मत से इसके ऋषि नारायण, गायत्री छन्द, देवता बगलामुखी हैं। सांख्यायन के मत से इनकी उपासना वामाचार विधि से करनी चाहिये। ब्रह्मयामल के अनुसार इसके ऋषि ब्रह्मा, गायत्री छन्द, बगला देवता हैं। जयद्रथयामल के अनुसार इसके ऋषि नारद और छन्दादि पूर्ववत् है। हरिद्रासंहिता के अनुसार इसके ऋषि नारायण है। छन्द अनुष्टुप् देवता बगलामुखी हैं। सांख्यायन मत के अनुसार कलियुग में केवल बगला ही जागृत हैं ॥ ३-८ ॥

बगला विद्या जप के पहले मृत्युञ्जय मन्त्र का जप

मृत्युञ्जयजपं कृत्वा ततो विद्यां जपेत् सुत।
मृत्युञ्जयं विना देवी वगला नहि सिद्ध्यति ॥ ९ ॥

बगला विद्या जप के पहले मृत्युञ्जय मन्त्र का जप करे इसके बिना सिद्धि नहीं मिलती—

मृत्युञ्जय जप के बाद ही बगला विद्या का जप करे। मृत्युञ्जय जप के बिना देवी बगला सिद्ध नहीं होती ॥ ९ ॥

सांख्यायनोक्त बीजों में स्थिर मायाबीज का उद्धार

ऋषिच्छन्दत्रितयकं मतभेदात् प्रदर्शितम्।
बीजसंज्ञा प्रवक्ष्यामि सांख्यायनमुखोद्भवाम् ॥ १० ॥
शिवबीजं वह्नियुक्तं रतिबिन्दुसमन्वितम्।
वह्निशिवान्तराले तु भूबीजं योजयेत्(पेत्) सुत ॥ ११ ॥
स्थिरमाया इति प्रोक्ता विद्या त्वेकाक्षरी शुभा।
अनया विद्यया देवि किन्न सिद्ध्यति भूतले ॥ १२ ॥

अब तक ऋषि छन्द के तीन भेदों को बतलाया गया। अब बीजों के सांख्यायन मुख से उद्भूत हुए नामों को कहता हूँ। शिव बीज 'ह', वह्नि र युक्त, रति ई बिन्दु युक्त, वह्नि र शिव छह के अन्तराल में भूबीज ल के योग

से स्थिर माया ह्लीं बीज बनता है । इसे एकाक्षरी विद्या कहते हैं । इस विद्या से संसार में क्या नहीं प्राप्त हो सकता है ।। १०-१२ ।।

पीतवासा मत में स्थिर बीज के लक्षण और उसका उद्धार

पीतवासामते पुत्र स्थिरमायां श्रृणु प्रिये ।
स्थिरमायासमायुक्तं स्थिरं बीजमितीरितम् ॥ १३ ॥
तदुद्धारं श्रृणु प्राज्ञ गगनार्द्धं समुद्धरेत् ।
स्थिरबीजं समुद्धृत्य रतिबिन्दुसमन्वितम् ॥ १४ ॥
स्थिरमाया द्वितीयां तु इन्द्रस्तं चन्द्रभूषितम् ।
इयं शप्ता महाविद्या कीलिता स्तम्भिता शिवे ॥ १५ ॥

पीतवासा के मत से स्थिर माया को, प्रिये देवि, सुनो । स्थिर कन्या जो माया है उसी को स्थिर माया कहते हैं । उसका उद्धार सुनो । हे प्राज्ञे! गगनार्ण ह स्थिर बीज, ई बिन्दु युक्त ल चन्द्रभूषित के संयोग से निर्मित ह्लीं महाविद्या कीलित शप्त स्तम्भित है ।। १३-१५ ।।

रेफ युक्त स्थिर माया के जप से सभी सिद्धियों की प्राप्ति

रेफयोगान्महेशानि निश्शप्ता फलदायिनी ।
रेफयुक्तां जपेद्विद्यां फलसिद्धिर्न संशयः ॥ १६ ॥
रेफहीनां जपेद्विद्यां कोटिजाप्यं न सिद्ध्यति ।
तस्माद्रेफेण संयुक्तं स्थिरदा परमेश्वरि ॥ १७ ॥

हे महेशानि! रेफ युक्त विद्या शापरहित फलदायिनी है । इसलिये रेफयुक्त ह्लीं के जप से फल सिद्धि होती है, इसमें संशय नहीं है । रेफहीना 'ह्लीं' विद्या करोड़ों जप से भी सिद्ध नहीं होती है । इसलिये रेफ जोड़कर स्थिर माया का जप करे ।। १६-१७।।

लघु षोढ़ा और महष्षोढादिन्यास के बाद जप का प्रतिपादन

सञ्जपेच्च ततः पुत्र तस्य सिद्धिर्भविष्यति ।
लघुषोढां महाषोढां पञ्जरं न्यासमेव हि ॥ १८ ॥
वगलामातृकान्यासं कुल्लुकां च विचिन्त्य वै ।
सेत्वादिकामराजान्तं न्यासमृत्युञ्जयं जपेत् ॥ १९ ॥

लघुषोढा महाषोढा और पञ्जर न्यास करके जो जप करता है उसी को सिद्धि मिलती है । बगला मातृका-न्यास करके कुल्लुका का चिन्तन सेतु से कामराज का न्यास करके मृत्युञ्जय मन्त्र जप करे ।। १८-१९ ।।

पीतवासा के मत से बगला ध्यान निरूपण

ततो वै प्रजपेद्विद्यां सदा जाग्रत्स्वरूपिणीम् ।
पीतवासामते देवि पञ्चप्रेतगतां स्मरेत् ॥ २० ॥
चतुर्भुजां वा द्विभुजां पीतार्णवनिवासिनीम् ।
सुधार्णवसमसीनां मणिमण्डपमध्यगाम् ॥ २१ ॥

पीतवासा के मत से पञ्च प्रेतासना जाग्रत् स्वरूपिणी देवी का ध्यान करके विद्या का जप करे । अमृत के सागर में, मणिमण्डप में, सिंहासन पर बैठी चार भुजा या दो भुजा वाली पीतार्णव निवासिनी का ध्यान करके जप करे ॥ २०-२१ ॥

सांख्यायन के मत से पश्चिमाम्नाय और उत्तराम्नाय भेद से बगला पूजा का निर्देश

सांख्यायनमते देवि संस्मरेद् यत्नतः शिवे ।
सुन्दर्याः पश्चिमाम्नाये बगला परितिष्ठति ॥ २२ ॥
श्रीकाल्यामु (उ)तराम्नाये वगला पूज्यतां सुत ।

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'बीजभेदवर्णनम्' नाम पञ्चस्त्रिंशत्पटलः ॥ ३५ ॥

सांख्यायन मत में देवी का ध्यान यत्न से करना चाहिए । महात्रिपुरसुन्दरी के पश्चिमाम्नाय में बगला रहती है । श्रीकाली के उत्तराम्नाय से बगला की पूजा करे ॥ २२ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'बीजभेदवर्णनम्' नामक पञ्चस्त्रिंश पटल समाप्त ॥ ३५ ॥

अथ षट्त्रिंशः पटलः

महादिव्यप्रयोगवर्णनम्

बगला का ध्यान

योगिनीकोटिसहितां पीताहारोपचञ्चलाम् ।
वगलां परमां वन्दे परब्रह्मस्वरूपिणीम् ॥ १ ॥

परब्रह्मस्वरूपिणी परमा बगला को नमस्कार है । ये करोड़ों योगिनियों से घिरी पीताहारो चञ्चला है ॥ १ ॥

सारस्वरूपा सभी कार्मण नाश के उपाय की जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

चिदानन्दघनावास वरमन्यं च मां वद ।
सर्व्वातीत परेशान सर्वभूतरहिते रत ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—चिदानन्द धन स्वामी! सर्वातीत पर ईशान! सभी भूतों की भलाई करने वाले कुछ अन्य सार रूप कहिये ॥ २ ॥

मन्त्र कवच मन्त्रात्मक सर्वकार्मण निर्णाशिन नामक प्रथम योग

ईश्वर उवाच—

अथ स्कन्द प्रवक्ष्यामि सर्वकर्माणि नाशनम् ।
किं केन तामसं प्राप्तं किं केन शान्तिकारणम् ॥ ३ ॥
कारणं तत्र केन स्यात् तत्सर्वं कथ्यते श्रृणु ।
आदौ मन्त्रं जपेत् पुत्र त्रिसहस्त्रमतन्द्रितः ॥ ४ ॥
ततः कवचमालम्ब्य पुनर्म्मन्त्रं जपेत् तथा ।
षट्त्रिंशद्वारमावर्त्य पुरश्चरणमुच्यते ॥ ५ ॥
सर्वकर्माणि निर्नाशे योगोऽयं परिकीर्त्तितः ।
अनुलोमविलोमेन द्वितीयो योग ईरितः ॥ ६ ॥

ईश्वर ने कहा—हे पुत्र स्कन्द! अब मैं सभी कार्मता दोषों का नाश करने वाले उपाय कहता हूँ। किसको किससे तामस प्राप्त होता है और कौन किस शान्ति का कारण है। वह कारण किसके द्वारा उत्पन्न होता है इन सबों को मैं कहता हूँ, सुनो। हे पुत्र! पहले आलस्यरहित होकर तीन हजार मन्त्र जप करे और तब तक कवच का पाठ करके पुनः मन्त्र जप करे। छत्तीस वर्णो के मन्त्र जप से पुरश्चरण होता है। यह योग सभी कर्मो का निर्णाश करता है। अनुलोम-विलोम जप से द्वितीय योग होता है ॥ ३-६ ॥

क्षुद्र कार्मण निर्णाश नामक योग

त्रिशतं च शतं चापि अष्टोत्तरसहस्रकम्।
अष्टोत्तरशतं वापि कवचं पूर्ववद् भजेत् ॥ ७ ॥
क्षुद्रकर्मणि निर्नाशे योगोऽयं परिकीर्त्तितः।

तीन सौ या एक सौ या एक हजार आठ या एक सौ आठ बार कवच का जप पूर्ववत् करे। इस योग को क्षुद्रकर्मों का विनाशक कहते हैं ॥ ७ ॥

कवच स्तोत्र मन्त्रात्मक क्रूर कार्मण निर्णाशन योग

अनुलोमविलोमेन योगो वसुविधः स्मृतः ॥ ८ ॥
षट्त्रिंशद्वारमावर्त्य भवेदेवं विधिः सुत।
कवचं प्रपठेदादौ मध्ये स्तोत्रं तु उच्चरेत् ॥ ९ ॥
शतावर्त्तनमात्रेण क्रूरकर्मणनाशनम्।
अनुलोमविलोमेन द्वितीयो योग ईरितः ॥ १० ॥

अनुलोम-विलोम से यह योग आठ प्रकार का होता है। पहला योग छत्तीस आवर्तन से होता है। दूसरे योग में पहले कवच पाठ और तब स्तोत्र पाठ फिर कवच पाठ होता है। सौ आवर्तन में क्रूर कार्मण का नाश होता है ॥ ८-१० ॥

गायत्री कवच मन्त्र स्तोत्रात्मक सर्वकार्मणनाशन योग

गायत्रीं कवचं पुत्र मन्त्रं स्तोत्रं पुनश्च सा।
षड्विंशद्वारमावर्त्य षट्त्रिंशावर्त्तनं चरेत् ॥ ११ ॥
अनेन क्रमयोगेन सर्वकर्मविनाशनम्।

गायत्री कवच मन्त्र स्तोत्र क्रम से छत्तीस बार पाठ करने से सर्वकर्मविनाशन योग होता है ॥ ११॥

तारा, काली, छिन्नमस्ता मन्त्रात्मक सर्वदोष निवारण योग

तारायां कालिकायां च छिन्नायामेवमेव तु ॥ १२ ॥

अनुक्रमेण सर्वत्र कुर्यादावर्त्तनं बुधः ।
मन्त्रमात्रकार्यमेतत् सर्वदोषनिवारणम् ॥ १३ ॥

पहले तारामन्त्र, तब कालीमन्त्र, तब छिन्नमस्तामन्त्र जप के छत्तीस आवर्तन से सभी दोषों का निवारण होता है ॥ १२-१३ ॥

कवच वाणात्मक सर्व दोष निवारण योग

कवचं प्रथमं बाणः कवचं च द्वितीयकम् ।
कवचं च तृतीयं स्यात् कवचं च चतुर्थकम् ॥ १४ ॥
कवचं पञ्चमं बाणः कवचं प्रपठेत् कृती ।
अनुलोमविलोमेन द्वितीयो योग ईरितः ॥ १५ ॥

कवच प्रथम, वाणकवच द्वितीय, कवच चतुर्थ, कवच पञ्चम, तब वाण कवच का पाठ करे । अनुलोम विलोम क्रम से इसे द्वितीय योग कहते हैं ॥ १४-१५ ॥

युद्ध स्तम्भ, प्राण रक्षा और दिव्य रक्षाकारक शताक्षरी मन्त्र
कवच हृदयात्मक योग

रणस्तम्भे सर्वकर्मान्नाशने मृत्युस्तम्भने ।
प्राणरक्षादिव्यरक्षादेव्यो रक्षणकर्मणि ॥ १६ ॥
योगोऽयं कथितं पुत्र वगलामन्त्र ईरितः ।
शताक्षरीं जपेदादौ कवचं हृदयं तथा ॥ १७ ॥

युद्ध स्ताम्भ में, सभी कर्मनाशन में, मृत्यु-स्तम्भन में, प्राण रक्षा, दिव्य रक्षा, देवी के रक्षाकर्म में इस योग का प्रयोग होता है । इसे बगलामन्त्र का प्रयोग कहते हैं । पहले शताक्षरी-मन्त्र जप, तब कवच-हृदय का पाठ करे ॥ १६-१७ ॥

कवच, चतुरक्षरी मन्त्रात्मक कवच, चन्द्र वर्णात्मक योग

कवचं वेदवर्णं च कवचं चन्द्रवर्णकम् ।
अनेन क्रमयोगेन योगः कर्मणनाशनः ॥ १८ ॥

कवच पाठ करके चतुरक्षरी मन्त्र जप करे, तब षड्वर्णक कवच का पाठ करने से कर्मनाशन योग होता है ॥ १८ ॥

एकाक्षरी, चतुरक्षरी, छत्तीस अक्षरी, कवचात्मक महाब्रह्मास्त्रं योग

एकाक्षरीं जपेदादौ कवचं प्रपठेद् यतः ।
वेदाक्षरीं जपेदादौ कवचं प्रपठेत्तथा ॥ १९ ॥
वेदाक्षरी ततो जाप्यः कवचं तदनन्तरम् ।

षट्त्रिंशदक्षरी जाप्यः कवचं तदनन्तरम् ॥ २० ॥
वेदाक्षरीमनुपुरं कवचं प्रथमं तथा ।
कवचं च द्वितीयः स्यात् कवचं च तृतीयकः ॥ २१ ॥
कवचं च चतुर्थः स्यात् कवचं पञ्चमस्तथा ।
कवचं हृदयं वाचं कवचं शतवर्णकम् ॥ २२ ॥
कवचात् कीलनं योगः त्रैलोक्यरक्षणाकरः ।
अनेन क्रमयोगेन त्रैलोक्यस्तम्भनं भवेत् ॥ २३ ॥
इन्द्रादिपदसंस्तम्भे समुद्रस्तम्भनेऽपि च ।
महाविद्यास्तम्भनं च सत्यं ब्रह्मास्त्रस्तम्भनम् ॥ २४ ॥
महापाशुपतादीनां स्तम्भने मृत्युपातने ।
महाब्रह्मास्त्रयोगो हि गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ २५ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे 'महादिव्यप्रयोगवर्णनम्' नामक षट्त्रिंशत्पटलः ॥ ३६ ॥
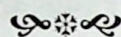
पहले एकाक्षरी 'ह्रीं' का जप करे तब कवच का पाठ करे । पहले चतुरक्षरी ॐ ओं ह्रीं क्रों का जप करे, तब कवच का पाठ करे, तब पुनः चतुरक्षरी का जप करके कवच का पाठ करे । पहले छत्तीस अक्षरी का जप करे, तब कवच का पाठ करे । पहले चतुरक्षरी जप करे, तब कवच प्रथम, तब कवच द्वितीय, तब कवच तृतीय, तब कवच चतुर्थ, तब कवच पञ्चम, तब कवच और हृदय दोनों का पाठ करके शताक्षरी मन्त्र का जप करे । कवच से कीलन योग तीनों लोकों का रक्षाकारक है । इस क्रम योग से त्रैलोक्यस्तम्भन, महाविद्यास्तम्भन और सचमुच में ब्रह्मास्त्र का स्तम्भन होता है । महापाशुपतास्त्र का स्तम्भन मृत्युपातन में होता है । यह ब्रह्मास्त्रयोग यत्न से गोपनीय है ॥ १९-२५ ॥

॥ षड्विद्या आगम के सांख्यायनतन्त्र में 'महादिव्यप्रयोगवर्णनम्' नामक षट्त्रिंश पटल समाप्त ॥ ३६ ॥
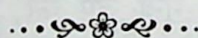
(अतिरिक्त)

अथ पञ्चत्रिंशः पटलः

(इस पटल को पूर्वोक्त पैंतिसवाँ पटल के साथ ही छापने से एक ही पैंतिसवाँ पटल होगा । इसमें कोई आपत्तिजनक बात नहीं है । क्योंकि सांख्यायन तन्त्र का सर्व प्रमाणित संस्करण अभी प्राप्त नहीं है ।

कल्याण मन्दिर प्रयाग से प्रकाशित तन्त्र के ३१ से ३६ तक के पटल इससे भिन्न है । इस प्रकाशन के सांख्यायन तन्त्र के पटलों में श्लोकों की संख्या भी अधिक है ।

इस जोधपुर संस्करण को भी जिन पाण्डुलिपियों के आधार पर सम्पादन किया गया है उन पाण्डुलिपियों के पटलों में व्युत्क्रम और भेद है । अतः इस अतिरिक्त पैतीसवाँ पटल को पूर्व पैतीसवाँ पटल के साथ छापने में कोई हानि नहीं ।)

पीताम्बरा का ध्यान

पीतवर्णसमासीनां पीतगन्धानुलेपनाम् ।
पीतोपहाररसिकां भजे पीताम्बरां पराम् ॥ १ ॥

मैं परा देवी पीताम्बरा को भजता हूँ । जो पीले वर्ण की है । उनके गन्ध और अनुलेप पीले वर्ण के हैं । उन्हें पीले उपहार अच्छे लगते हैं ।। १ ।।

रहस्य जिज्ञासा

क्रौञ्चभेदन उवाच—

स्वामिन् सिद्धगु(ग)णाध्यक्ष समस्तगणपारग ।
रहस्यं सूचितं पूर्व किन्न मह्यं प्रदर्शितम् ॥ २ ॥

क्रौंचभेदन कार्तिकेय ने कहा—हे स्वामी! आप सिद्धगणों के अध्यक्ष समस्तगण पारग हैं । आपने पूर्वसूचित रहस्य को क्यों नहीं कहा। मैं आपका पुत्र हूँ इसलिये तत्व कहिये ।। २ ।।

ब्रह्मास्त्र योग फल की प्रशंसा

ईश्वर उवाच—

तत्त्वं पदं महादेव यदि पुत्रोऽस्मि ते वद ।
रहस्यातिरहस्यं च कथ्यते श्रृणु पुत्रक ॥ ३ ॥
अमात्यानां च दुष्टानां दूषकानां दूरात्मनाम् ।
क्षुद्रग्रहादिजातीनां सैन्यानामपि पुत्रक ॥ ४ ॥

ईश्वर ने कहा—हे पुत्र! सुनो मैं रहस्यों के रहस्य को कहता हूँ । इस महायोग से निम्नलिखित कार्य सम्भव होते हैं । अमात्यो, दुष्टों, निन्दकों, दुष्टात्माओं एवं क्षुद्र-ग्रहादि, जातियों और सेनाओं से रक्षा होती है ॥ ३-४ ॥

क्रूरग्रहविनाशाय सर्वशान्त्यर्थमेव च ।
पराभिचारशान्त्यर्थं रक्षार्थे च विशेषतः ॥ ५ ॥

क्रूर ग्रहों के विनाश के लिये, सभी प्रकार की शान्ति के लिये, पराये अभिचार की शान्ति के लिये, विशेषत: आत्मरक्षा के लिये इस प्रयोग को करना चाहिये ॥ ५ ॥

अपमृत्युविनाशार्थं रोगशान्त्यर्थमेव च ।
परसेनाविनाशाय स्वसेनारक्षणाय च ॥ ६ ॥
आत्मार्थं च परार्थं च विजयार्थं च षण्मुख ।
वेतालाश्च विनाशार्थे भैरवादिप्रशान्तये ॥ ७ ॥

अपमृत्यु विनाश के लिये, रोगों की शान्ति के लिये, शत्रु सेना के विनाश के लिये, अपनी सेना की रक्षा के लिये इसे करना चाहिये ।

हे षण्मुख! अपने लिये, दूसरों के लिये, विजय के लिये, वेताल के विनाश के लिये, भैरवाद के शान्ति के लिये यह प्रयोग करे ॥ ६-७ ॥

समस्तविषनिर्नाशे मुष्टिकुक्षिविधावपि ।
शस्त्रास्त्रबाणसंधाने संहारास्त्रादिनाशने ॥ ८ ॥

सभी प्रकार के जहरों के नाश के लिये, मुष्टि-कुक्षि विद्या में शस्त्रास्त्र वाण-सन्धान में संहार आदि अस्त्रों के नाश के लिये इस प्रयोग को करे ॥ ८ ॥

शस्त्रास्त्रस्तम्भने पुत्र तद्वच्छवि (व) विधावपि ।
स्तब्धीकरणनिर्नाशे(र्णाशे) मृतकोत्थापनेऽपि च ॥ ९ ॥
देशोपद्रवनाशार्थे राष्ट्रभङ्गे समागते ।
कोटिकृत्याविनाशार्थे स्वेष्टरक्षणकर्मणि ॥ १० ॥

शस्त्रास्त्र स्तम्भन में तदवत् शवविद्या में, स्तब्धीकरण के नाश में, मृतक को जीवित करने में, इसे पूरे देश में उपद्रव के नाश के लिये, राष्ट्रभङ्ग का समय आ जाने पर, करोड़ों कृत्याओं के विनाश के लिये और अपनी रक्षा के लिये इसे करे ॥ ९-१० ॥

हतनष्टप्रणष्टादिवारुणाग्नेयजातिषु ।
पत्रपुष्पफलं शाखाजटात्वक्क्षीरनीरके ॥ ११ ॥
महाविषे तैजसे तु विण्मूत्रविजरकृते ।
उद्भ्रान्तधूलिनाशार्थे घटकृत्याविनाशने ॥ १२ ॥

हत नष्ट, प्रेतादि जलीय आग्नेय जीत में, पत्र पुष्प फल शाखा जटा छाल दूध पानी महाविष में, तैजस में, मल-मूत्र रुकने पर, उद्भ्रान्त धूलिनाश के लिये और घटकृत्या विनाशक लिये यह प्रयोग करे ॥ ११-१२ ॥

जलकृत्याविनाशार्थे स्थलकृत्याविनाशने ।
वृक्षकृत्याविनाशार्थे गन्धकृत्याविधावपी (पि) ॥ १३ ॥

जल कृत्या विनाश के लिये, स्थल कृत्या विनाश के लिये, वृक्षा कृत्या नाश के लिये, गन्ध कृत्या विद्या में इस योग का प्रयोग करे ॥ १३ ॥

महेन्द्रपदनिर्नाशे विरूंडानाशनेऽपि च ।
भेरूंडनाशनार्थे च रिक्तधावेशभैरवे ॥ १४ ॥
सस्यस्तम्भे दारुनाशे मन्त्रमण्डलरोगहृत् ।
सप्तब्रह्मास्त्रयोगोऽयं सर्वथा चलति ध्रुवम् ॥ १५ ॥
अमोघमृत्युनाशाय समाश्चर्यकमाय(प)दि ।
तं प्रयोगमहायोगं शृणु सावहितो भव ॥ १६ ॥

महेन्द्रादि पद विनाश में, रिक्त धावश भैरव में, खेती स्तम्भन में पड़े लकड़ी नाश में यह योग मन्त्र मण्डल रोग हृत है ।

सप्त ब्रह्मास्त्र योग सर्वथा चलता रहता है । अमोघ मृत्युनाश के लिये आश्चर्यकर आपदा में जो प्रयोग होता है उसे सुनो ॥ १४-१६ ॥

हवन योग प्रयोगोपसंहार वर्णन

कुण्डे वा स्थण्डिले वेद्यां चत्वरे पितृकानने ।
चुल्यां सकटया(शकट्यां) वा देवि होतव्यं सर्वकर्मणि ॥ १७ ॥
शुभऋक्षादियोगे तु प्रयोगमादरे(त्) सुत ।
स्वस्तिवाचनमासाद्य द्विजानां वरणं चरेत् ॥ १८ ॥

१४ सांख्या.

चतुरस्त्र कुण्ड या वेदी के स्थण्डिल में, पितृकानन में, चूल्ही में या शकट आदि में, हवन सभी कर्मों में अवश्य करे। शुभ नक्षत्र और योग में ही प्रयोग करे । ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराकर उनका वरण करे ॥ १७-१८ ॥

वगलास्त्रं मध्यमागे करे निष्ठुरबन्धनम् ।
पञ्चास्त्रं दश(क्षि)णांशे च मूलास्त्रं होमकर्मणि ॥ १९ ॥
त्रैलोक्यविजयास्त्रं च स्मरेदस्त्रेन्द्रमुत्तमम् ।
निष्ठुरांश्चालयेदेव दीपकास्त्रं प्रयोजयेत् ॥ २० ॥

बगलास्त्र मन्त्र के बीच में निष्ठुर बन्धन करे । पञ्चास्त्र के दक्षिण अंश में मूल अस्त्र से हवन करे । उत्तम अस्त्रेन्द्र त्रैलोक्य विजयास्त्र का स्मरण करके निष्ठुर वन्धन का चालन करे । इसमें दीपकास्त्र का प्रयोग करे ॥ १९-२० ॥

पूर्वभागे तु पञ्चास्त्रमुत्तरे मुण्डमुत्तमम् ।
महोग्रविजयं दक्षे विजयास्त्रं प्रयोजितम् ॥ २१ ॥
हेलाक्कर्का चन्दला तूर्या तथा पञ्चाङ्गुली प्रिया ।
पश्चिमे कीर्त्तिता विद्या बन्धद्वयपुरस्सरम् ॥ २२ ॥

पूर्वभाग में पञ्चास्त्र, उत्तर में उतम मुण्ड, महाग्र विजय दक्षिण में विजयास्त्र का प्रयोग के हेलाकर्का चंदला तूर्या और पञ्चाङ्गुलिप्रिया से दो बन्धन पश्चिम में लगावे ॥ २१-२२ ॥

आदौ गणपतिं पूज्य द्वारपूजादिसंयुतम् ।
विप्राणां वरणं कृत्वा वगलादीपमाचरेत् ॥ २३ ॥
मण्डले वगलादीपो (पः) कवचे मूलदीपकः ।
पीताश(शी) पीतवस्त्राढ्यां(ढ्यः) पीतयज्ञोपवीतवान् ॥ २४ ॥
पीताशनी पीतभक्षो पीतशय्यापरायणः ।
हरिद्राक्षेण मणिना सर्वं कार्यं जपादिकम् ॥ २५ ॥

द्वार पूजा करके पहले गणपति की पूजा करो । विप्रो का वरण करके बगला दीप जलावे । मण्डल में बगला दीप कवच में मूल दीपक जलावे ।

पीले पदार्थों का भोजन करे । पीलावस्त्र पहने । पीला यज्ञापवीत धारण करे। पीले आसन पर बैठे । पीला भोजन करे । पीले बिछावन पर शयन करे। हल्दी की अक्षमाला से जप करे ॥ २३-२५ ॥

हरिद्राभिः सुरक्ताभिः रोचनाघृतमिश्रितैः ।
बिल्वप्रसूनैर्जुहुयात् सर्वोत्पातनिवारणम् ॥ २६ ॥

हल्दी, सुरक्ता, गोरोचन और घी को एक में मिलाकर वेल फूलों के साथ हवन करे । इससे सभी उत्पातों का नाश हो जाता है ॥ २६ ॥

अथवा पीतपुष्पैस्तु हरिद्रामधुयोजनम् ।
हरिद्रया दरिद्राणि नश्यन्त्येव न संशयः ॥ २७ ॥

अथवा पीले फूलों में हल्दी और मधु मिलाकर हवन करे । हल्दी से हवन करने पर दरिद्रता का नाश होता है ॥ २७ ॥

अनेन योगच(व)र्येण सर्वोत्पातनिवारणम् ।
पीताभरणभूषाढ्यं(ढ्यः) पीतशालानिवासकृत् ॥ २८ ॥
शतमष्टोत्तरशतं त्रिशतं च सहस्त्रकम् ।
त्रिसहस्त्रं पञ्च तथा दिग्विंशत्यादिरेव च ॥ २९ ॥
पञ्चविंशच्च पञ्चाशत् सहस्त्रं लक्षमानकम् ।
लक्षोपरि महेशानि न होमोऽस्ति महीतले ॥ ३० ॥

इस प्रयोग से सभी उत्पातो का निवारण होता है । पीले वस्त्र आमरण धारण करके पीले रंग के घर में एक सौ आठ या एक सौ या तीन सौ या एक हजार, या तीन हजार या पाँच हजार या दश हजार या पचीस हजार या पचास हजार या एक लाख से अधिक हवन होता है ॥ २८-३० ॥

सुन्दर्यां कलिकायां च वैदिके कोटिमात्रकम् ।
होमस्य तु दशांशेन तर्पणं मार्ज्जनं तथा ॥ ३१ ॥
सुरयो तर्प्पणं पुत्र तेन मार्ज्जनमाचरेत् ।
अभिषेको विप्रभोज्यं साङ्गयोगं प्रसिद्ध्यति ॥ ३२ ॥
नातः परतरो योगो विद्यते भुवि मण्डले ।
सर्वकर्म्मविनाशार्थं विषनाशार्थमद्भुतम् ॥ ३३ ॥

महात्रिपुरसुन्दरी और काली का वैदिक रीति से एक करोड़ हवन होता है । हवन का दशांश तर्पण मार्जन होता है ।

मदिरा से हवन और उसी से मार्जन होता है । तब अभिषेक और ब्राह्मण भोजन साङ्ग करने से सिद्धि मिलती है ।

संसार में इससे श्रेष्ठ कोई योग नहीं है । सभी कर्मो के नाश के लिये और विष नाश के लिये यह योग अद्भुत है ॥ ३१-३३ ॥

गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ।
रहस्यातिरहस्यं च रहस्यातिरहस्यकम् ॥ ३४ ॥

इति संक्षेपतः प्रोक्तं तोषयेद्दक्षिणादिना ।
प्रयोगस्योपसंहार (रः) कर्त्तव्यः सिद्धिमिच्छता ॥ ३५ ॥

॥ इति षड्विद्यागमे सांख्यायनतन्त्रे पञ्चत्रिंशत् (चतुस्त्रिंशत्) पटलः ॥ ३५ ॥
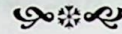
इस यत्न से जापनीय रखे । यह रहस्यों का रहस्य अति रहस्य है । संक्षेप में कहा गया है । ब्राह्मणों को दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट करके प्रयोग का उपसंहार सिद्धि कामियों को करना चाहिये ॥ ३४-३५ ॥

॥ श्रीषड्विद्यागम के सांख्यायनतन्त्र में पञ्चत्रिशत्
(चतुस्त्रिंशत्) पटल समाप्त ॥ ३५ ॥

परिशिष्टम् (क)

ऋष्यादिन्यासध्यानादियुताः
॥ सांख्यायनतन्त्रगता मन्त्राः ॥

१. एकाक्षरीबगलामन्त्रः—ह्लीं ।

ॐ अस्य श्रीबगलामुख्येकाक्षरीमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दः श्रीबगलामुखी देवता लँ बीजं, ह्लीं शक्तिः, ईं[1] कीलकं श्रीबगलामुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—ब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलामुखीदेवतायै नमो हृदि, लँ बीजाय नमो गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः पादयोः, रँ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्लाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लूँ मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां हुम्, ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्लाँ हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लूँ शिखायै वषट्, ॐ ह्लैं कवचाय हुम्, ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लः अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति,
क्रोधी शान्तति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रिणा यन्त्रितः,
श्रीनित्यै बगलामुखि प्रतिदिन कल्याणि तुभ्यं नमः ॥(पञ्चमः पटलः)

२. श्रीबगलाषट्त्रिंशदक्षरीविद्यामन्त्रः—ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीषट्त्रिंशदक्षरीविद्यामहामन्त्रस्य श्रीनारदऋषिः, बृहतीछन्दः,[2] श्रीबगलामुखीदेवता, लँ बीजं, हँ शक्तिः, ईं[3] कीलकं, श्रीबगलामुखीदेवताप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

---

१. 'रं' इत्यन्यत्र। २. 'अनुष्टुप्छन्दः' इत्यन्यत्र दृश्यते । ३. 'रं' इत्यन्यत्र ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीनारदर्षये नमः शिरसि, बृहतीछन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, लँ बीजाय नमो गुह्ये, हँ शक्तये नमः पादयोः, ईं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुं, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुं, ॐ ह्लीं जिह्वा कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्— चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम् ।
त्रिशूलं पानपात्रं च गदां जिह्वां च बिभ्रतीम् ॥
विम्बोष्ठीं कम्बुकण्ठीं च समपीनपयोधराम् ।
पीताम्बरां मदाघूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्त्रदेवताम् ॥(सप्तमः पटलः)

३. श्रीबगलामुखीगायत्रीमन्त्रः—ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भनबाणाय धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात् ।

ॐ अस्य श्रीबगलागायत्रीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, ब्रह्मास्त्रबगलादेवता, ॐ बीज, ह्रीं[1] शक्तिः, विद्महे कीलकं, श्रीबगलामुखीदेवताप्रसादसिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीब्रह्मास्त्रबगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः पादयोः, विद्महे कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, स्तम्भनबाणाय धीमहि तर्जनीभ्यां स्वाहा, तन्नो बगला प्रचोदयात् मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे अनामिकाभ्यां हुम्, स्तम्भनबाणाय धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, तन्नो बगला प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय विद्महे हृदयाय नमः, स्तम्भनबाणाय धीमहि शिरसे स्वाहा, तन्नो बगला प्रचोदयात् शिखायै वषट्, ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्राय

---

१. 'ह्रीं' इत्यपि पाठः ।

विद्महे कवचाय हुम्, स्तम्भनबाणाय धीमहि नेत्रत्रयाय वौषट्, तन्नो बगला प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ।

ध्यानं पूर्ववत् । (द्वादशः पटलः)

४. पञ्चपञ्चाशदक्षरो बगलामुखीपञ्चास्त्रमन्त्रः—ॐ ह्लीं हूं ग्लौं बगलामुखि ह्लाँ ह्लीं ह्लूं सर्वदुष्टानां ह्लैं ह्लौं ह्लः वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ह्लः ह्लौं ह्लैं जिह्वां कीलय ह्लूँ ह्लीं ह्लाँ बुद्धिं विनाशय ग्लौं हूँ ह्लीं ॐ स्वाहा[१] ।

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीपञ्चास्त्रमहामन्त्रस्य वसिष्ठऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, रण-स्तम्भनकारिणी बगलामुखी देवता, लँ बीजं, ह्लीं शक्तिः, रं कीलकं श्रीबगलामुखीदेवताम्बा-प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीनारदऋषये नमः शिरसि, श्रीबगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, लँ बीजाय नमो गुह्ये, हँ शक्तये नमः पादयोः ईं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम्, ॐ ह्लीं जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लीं बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । एवं हृदयादिन्यासः ।

ध्यानम्— पीताम्बरधरां देवीं द्विसहस्रभुजान्विताम् ।
सान्द्रजिह्वां गदां चास्त्रं धारयन्तीं शिवां भजेत् ॥ (पञ्चदशः पटलः)

५. अष्टपञ्चाशदक्षर उल्कामुख्यस्त्रमन्त्रः—ॐ ह्लीं ग्लौं बगलामुखि ॐ ह्लीं ग्लौं सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं ग्लौं वाचं मुखं पदं ॐ ह्लीं ग्लौं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं ग्लौं जिह्वां कीलय ॐ ह्लीं ग्लौं बुद्धिं विनाशय ॐ ह्लीं ग्लौं ह्लीं ॐ स्वाहा ।[२]

ॐ अस्य श्रीउल्कामुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीअग्निवराह[३] ऋषिः, ककुप्[४] छन्दः, श्रीउल्कामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ग्लौं कीलकं, जगत्स्तम्भनकारिणी श्रीउल्कामुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

---

१. "ॐ ह्लीं हूँ ग्लौं बगलामुखि ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ सर्वदुष्टानां ह्लं ह्लौं ह्लः वाचं मुखं पदं स्तम्भय ह्लः ह्लें ह्लैं जिह्वां कीलय ह्लाँ ह्लौं ह्लाँ बुद्धिं विनाशय ह्लाँ ह्लीं ह्लाँ ग्लौं हूँ ह्लीँ ॐ स्वाहा" इत्येवंविधो मन्त्रोऽप्यन्यत्र दृश्यते ।

२. "ॐ ह्लीं ग्लौं बगलामुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं ग्लौं वाचं मुखं पदं ॐ ह्लीं ग्लौं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं ग्लौं जिह्वां कीलय कीलय ॐ ह्लीं ग्लौं बुद्धिं नाशय नाशय ॐ ह्लीं ग्लौं स्वाहा" इत्यपि मन्त्रभेदो दृश्यतेऽन्यत्र।

३. 'यज्ञवाराह' इत्यपि पाठः । ४. 'अनुष्टुप्' इत्यन्यत्र ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीवराहर्षये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, श्रीउल्कामुखीदेवतायै नमो हृदि, ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये, स्वाहाशक्तये नमः पादयोः, ग्लौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

मूलमन्त्रवत्करषडङ्गन्यासाः ।

ध्यानम्— विलयानलसङ्काशां वीरां वेदसमन्विताम् ।
विराणमयीं महादेवीं स्तम्भनार्थं भजाम्यहम् ।। (पञ्चदशः पटलः)

६. षष्टिवर्णात्मकः श्रीजातवेदमुख्यस्त्रमन्त्रः—ॐ ह्रीं ह्सौं ह्लीं ॐ बगलामुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्लीं ह्सौं ह्लीं ॐ बुद्धिं नाशय नाशय ॐ ह्लीं ह्सौं ॐ स्वाहा ।[१]

ॐ अस्य श्रीजातवेदमुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीकालाग्निरुद्र ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीजातवेदमुखी देवता, ॐ बीजं, ह्लीं[२] शक्तिः, हँ कीलकम्, मम श्रीजातवेदमुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीकालाग्निरुद्रर्षये नमः शिरसि, पंक्तिच्छन्दसे नमो मुखे, श्रीजातवेदमुखीदेवतायै नमो हृदये, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, ह्लीँ शक्तये नमः पादयोः, हँ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

मूलमन्त्रवत्करषडङ्गन्यासाः ।

ध्यानम्—जातवेदमुखीं देवीं देवतां प्राणरूपिणीम् ।
भजेऽहं स्तम्भनार्थं च स्तम्भिनीं[३] विश्वरूपिणीम् ।। (षोडशः पटलः)

७. विंशोत्तरशतवर्णात्मको ज्वालामुख्यस्त्रमन्त्रः—ॐ ह्लीं राँ रीं रूँ रैं रौँ प्रस्फुर प्रस्फुर बगलामुखि[४] ॐ ह्लीं राँ रीं रूँ रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर सर्वदुष्टानां

---

१. मन्त्रोऽयं सूत्रानुसारेण तु द्वाषष्टिवर्णात्मको जायते किन्त्वन्यत्र निम्नोद्धृतरीत्या दृश्यते षष्टिवर्णः—

"ॐ ह्लीं हौं ह्लों बगलामुखि सर्वदुष्टानां ॐ ह्लीं हौं ह्लीं ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं हौं ह्लीं ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्लीं हौं ह्लीं ॐ बुद्धिं नाशय नाशय ॐ ह्लीं हौं ह्लीं ॐ स्वाहा ।।

२. 'ह्रीं' इत्यपि पाठः । ३. चिन्मयीमिति पाठः क्वचित् ।

४. एतत्पदस्थाने 'ज्वालामुखि' पदं सूत्रे वर्त्तते किन्त्वस्य ग्रहणान्मन्त्रे एकाक्षरन्यूनता स्यादतस्तत्पदमेवात्र संगृहीतम् ।

ॐ ह्लीं राँ रीं रूँ रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं राँ रीं रूँ रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर जिह्वां कीलय कीलय ॐ ह्लीं रां रीं रूँ रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर बुद्धिं विनाशय विनाशय ॐ ह्लीं रां रीं रूँ रैं रौं प्रस्फुर प्रस्फुर स्वाहा ।[१]

ॐ अस्य श्रीज्वालामुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीअत्रि ऋषिर्गायत्री छन्दः, श्रीज्वालामुखी देवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः, हँ कीलक श्रीज्वालामुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्री अत्रिऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीज्वालामुखीदेवतायै नमो हृदि, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, हँ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

मूलमन्त्रवत्करषडङ्गन्यासाः ।

ध्यानम्— ज्वलत्पद्मासनायुक्तां कालानलसमप्रभाम् ।
चिन्मयीं स्तम्भिनीं देवीं भजेऽहं विधिपूर्वकम् ।। (षोडशः पटलः)

८. षडुत्तरशताधिकवर्णात्मकः श्रीबृहद्भानुमुख्यस्त्रमन्त्रः—ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ बगलामुखि ॐ ह्लाँ ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लाँ ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ जिह्वां कीलय ॐ ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ बुद्धिं नाशय ॐ ह्लाँ ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ॐ ह्लीं ॐ स्वाहा ।[२]

ॐ अस्य श्रीबृहद्भानुमुख्यस्त्रमन्त्रस्य श्रीसविता ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीबृहद्भानुमुखी देवता, ह्लीं बीजं, ह्लीं शक्तिः, ॐ कीलकं, श्रीबृहद्भानुमुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्री सवित्यृषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे,

---

१. सूत्रे तु 'वह्निबीजं च पञ्चकं' इति दर्शनात्त्वत्र 'रँ रँ रँ रँ रँ' इति बीजानि ग्राह्याणि किन्तूपर्युक्तबीजानामन्यत्रापि व्यवहारादत्रापि स्वीकृतानीत्यूह्यानि ।

२. अन्यत्रैष मन्त्रश्चतुरुत्तरशतवर्णात्मकोऽपि दृश्यते यथा—ॐ ह्लाँ ह्लीं ह्लू ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लः ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लीं ह्लौं ह्लूँ बगलामुखि ॐ ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लः ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लूँ सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लौं ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लः ह्लाँ ह्लैं ह्लूँ ह्लीं ह्लौं ह्लूँ जिह्वां कीलय ॐ ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लः ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लूँ बुद्धिं नाशय ॐ ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लौं ह्लः ह्लः ह्लाँ ह्लीं ह्लूँ ह्लैं ह्लीं ह्लूँ ॐ ह्लीं ॐ स्वाहा ।

श्रीबृहद्भानुमुखीदेवतायै नमो हृदये, ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

मूलमन्त्रवत्करषडङ्गन्यासाः ।

ध्यानम्— कालानलनिभां देवीं ज्वलत्पुञ्जशिरोरुहाम् ।
कोटिबाहुसमायुक्तां वैरिजिह्वासमन्विताम् ॥ १ ॥
स्तम्भनास्त्रमयीं देवीं दृढपीनपयोधराम् ।
मदिरामदसंयुक्तां बृहद्भानुमुखीं भजे ॥ २ ॥ (सप्तदशः पटलः)

९. श्रीबगलामुखीशताक्षरीमहामन्त्रः—ह्लीं ऐं ह्रीँ क्लीं श्रीं ग्लौं ह्लीं बगलामुखि स्फुर स्फुर सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय प्रस्फुर प्रस्फुर विकटाङ्गि घोररूपि जिह्वां कीलय महाभ्रमकरि बुद्धिं नाशय विराण्मयि[1] सर्वप्रज्ञामयि प्रज्ञां नाशय उन्मादीकुरु[2] कुरु मनोपहारिणि ह्लीं ग्लौं श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ह्लीं स्वाहा ॥

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीशताक्षरीमहामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, जगत्स्तम्भनकारिणी श्रीबगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकं, जगत्स्तम्भनकारिणी श्रीबगलामुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

मूलमन्त्रवत्करषडङ्गन्यासाः ।

ध्यानम्— पीताम्बरधरां सौम्यां पीतभूषणभूषिताम् ।
स्वर्णसिंहासनस्थां च मूले कल्पतरोरधः ॥ १ ॥
वैरिजिह्वाभेदनार्थं छुरिकां[3] बिभ्रतीं शिवाम् ।
पानपात्रं गदां पाशं धारयन्तीं भजाम्यहम् ॥ २ ॥ (सप्तदशः पटलः)

१०. अष्टाविंशत्युत्तरैकशताक्षरः श्रीबगलामुखीपरविद्याभेदनमन्त्रः[4]—ॐ ह्लीं श्रीं ह्रीं 'ग्लौं ऐं क्लीं हुँ क्षीं'[5] बगलामुखि परप्रयोगं ग्रस ग्रस ॐ ह्लीं श्रीं ह्रीं ग्लौं ऐं क्लीं हुँ क्षीं ब्रह्मास्त्ररूपिणि परविद्याग्रसिनि भक्षय भक्षय ॐ ह्लीं श्रीं ह्रीं ग्लौं ऐं क्लीं हुँ क्षीं परप्रज्ञाहारिणि प्रज्ञां भ्रंशय भ्रंशय ॐ ह्लीं श्रीं ह्रीं ग्लौं ऐं क्लीं हुँ क्षीं स्तम्भनास्त्ररूपिणि बुद्धिं नाशय नाशय पञ्चेन्द्रियज्ञानं भक्ष भक्ष ॐ ह्लीं श्रीं ह्रीं ग्लौं ऐं क्लीं हुँ क्षीं बगलामुखि हुँ फट् स्वाहा ।

---

१. 'विरामय' इत्यपि पाठः।

२. 'उष्मायं कुरु' इति पाठोऽपि दृश्यते ।

३. 'क्षुरिका' इति पाठोऽन्यत्र।

४. सूत्रानुसारेण वर्णोद्धारादयं मन्त्रः सप्तविंशोत्तरशताक्षर एव भवति।

५. 'ग्लौं हूँ ऐं क्लीं क्षीं' तथा 'युं एं क्लीं हूँ क्ष्मीं' इति पाठभेदौ क्वचिद्दृश्येते ।

ॐ अस्य श्रीपरविद्याभेदिनीबगलामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, परविद्याभक्षिणी श्रीबगलामुखी देवता, आँ बीज, ह्लीं शक्तिः क्रों कीलकं, श्रीबगलादेवीप्रसादसिद्धिद्वारा परविद्याभेदनार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, परविद्याभक्षिणीश्रीबगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, आं बीजाय नमो गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः पादयोः, क्रों कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—आँ ह्लीं क्रों अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, वद वद तर्जनीभ्यां स्वाहा, वाग्वादिनि मध्यमाभ्यां वषट्, स्वाहा अनामिकाभ्यां हुं, ऐं क्लीं सौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ह्लीँ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—आँ ह्लीं क्रों हृदयाय नमः, वद वद शिरसे स्वाहा, वाग्वादिनि शिखायै वषट्, स्वाहा कवचाय हुं, ऐं क्लीं सौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्लीं अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्— सर्वमन्त्रमयीं देवीं सर्वाकर्षणकारिणीम् ।
सर्वविद्याभक्षिणीं च भजेऽहं विधिपूर्वकम्।। (विंशः पटलः)

११. त्रिचत्वारिंशदक्षरो बगलास्त्रमन्त्रः—ॐ[१] ह्लीं हुं ग्लौं ह्लीं बगलामुखि मम शत्रून् ग्रस ग्रस खाहि खाहि भक्ष भक्ष शोणितं पिब पिब बगलामुखि ह्लीं ग्लौं हुं 'फट् स्वाहा'[२] ।

ॐ अस्य श्रीबगलास्त्रमन्त्रस्य श्रीदुर्वासा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, अस्त्ररूपिणी-श्रीबगलामुखी देवता, ग्लौं बीजं, ह्लीं शक्तिः, फट् कीलकं श्रीअस्त्ररूपिणीबगलाम्बा-प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीदुर्वाससे ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, अस्त्ररूपिण्यै श्रीबगलादेवतायै नमो हृदये, ग्लौं बीजाय नमो गुह्ये, ह्लीं शक्तये नमः पादयोः, फट् कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्, वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुं, जिह्वां

---

१. यद्यपि पुस्तके तु 'ॐ' शब्दस्योपयोगो नावलोक्यते, न चैतादृश एव 'स्वाहा' शब्दव्यवहारस्तथापि शब्दद्वयी अत्यावश्यकी संभाव्या वर्णसंख्यानुपूरकत्वात्।

२. र. कृ. पुस्तके 'फट् स्वाहा' स्थाने 'ह्लीं स्वाहा' इति दृश्यते । अत्र पुस्तकेऽप्ययं मन्त्रो द्विचत्वारिंशदक्षरात्मक एव गृहीतः किन्त्वसौ ऋष्यादिन्यासे 'फट् कीलक' मिति ग्रहणावसाधुरेव प्रतीयते ।

कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, बगलामुखि शिरसे स्वाहा, सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुँ, जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्— चतुर्भुजां त्रिनयनां पीनोन्नतपयोधराम् ।
जिह्वां खड्गं पानपात्रं गदां धारयन्तीं पराम्[1] ॥ १ ॥
पीताम्बरधरां देवीं पीतपुष्पैरलङ्कृताम् ।
बिम्बोष्ठीं चारुवदनां मदाघूर्णितलोचनाम् ॥ २ ॥
सर्वविद्याकर्षिणीं च सर्वप्रज्ञापहारिणीम् ।
भजेऽहं चास्त्रबगलां सर्वाकर्षणकर्मसु ॥ ३ ॥(द्वाविंशः पटलः)

१२. श्रीबगलाचतुरक्षरीमन्त्रः—ॐ आँ ह्लीं क्रों । ॐ अस्य श्रीबगलाचतुरक्षरीमन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, श्रीबगला देवता, ह्लीं बीजं, आँ शक्तिः, क्रों कीलकं श्रीबगलामुखीदेवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलादेवतायै नमो हृदये, ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये, आं शक्तये नमः पादयोः, क्रों कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लूँ मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लः अस्त्राय फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्लां हृदयाय नमः, ह्लीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लूं शिखायै वषट्, ॐ ह्लैं कवचाय हुँ, ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लः अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्— कुटिलालकसंयुक्तां मदाघूर्णितलोचनाम् ।
मदिरामोदवदनां प्रवालसदृशाधराम् ॥ १ ॥
सुवर्णशैलसुप्रख्यकठिनस्तनमण्डलाम्[2] ।
दक्षिणावर्त्तसन्नाभिसूक्ष्ममध्यमसंयुताम् ॥ २ ॥
रम्भोरुपादपद्मां तां पीतवस्त्रसमावृताम् । (पञ्चविंशः पटलः)

---

१. '-' गदामस्त्रं च बिभ्रतीं' तथा च 'गदां षारयन्ती शिवान्' इति पाठभेदौ क्वचित्।

२. सुवर्णशैलविलसत्० इत्यपि क्वचित् ।

१३. अशीत्यक्षरात्मकः श्रीबगलाहृदयमन्त्रः—ॐ[1] आं ह्लीं क्रों ग्लौं[2] हुं ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं बगलामुखि आवेशय आवेशय आं ह्लीं क्रों ब्रह्मास्त्ररूपिणि एहि एहि आं ह्लीं क्रों मम हृदये आवाहय आवाहय सन्निधिं[3] कुरु कुरु आं ह्लीं क्रों मम हृदये चिरं तिष्ठ तिष्ठ आं ह्लीं क्रों हुँ फट् स्वाहा ।

अस्य मन्त्रस्य ऋष्यादिन्यास-ध्यानादयो नैवोल्लिखिताः पुस्तके । (अष्टाविंशः पटलः)

१४. श्रीबगलाष्टाक्षरात्मको मन्त्रः—ॐ आं ह्लीं क्रों हुँ फट् स्वाहा ।

ॐ अस्य श्रीबगलाष्टाक्षरात्मकमन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, ॐ बीजं, ह्रीँ शक्तिः, क्रोँ कीलकं श्रीबगलादेवताम्बाप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलामुखीदेवतायै नमो हृदि, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, क्रोँ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ ह्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्लूँ मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्लां हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लूं शिखायै वषट् ॐ ह्लैं कवचाय हुँ, ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लः अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—युवतीं[4] च मदोद्रिक्तां[5] पीताम्बरधरां शिवाम् ।
पीतभूषणभूषाङ्गीं समपीनपयोधराम् ॥ १ ॥
मदिरामोदवदनां प्रवालसदृशाधराम् ।
'पानपात्रं च शुद्धिं च'[6] बिभ्रतीं बगलां स्मरेत् ॥ २ ॥ (त्रिंशः पटलः)

---

१. यद्यपीदं सूत्रे नैव सूत्रितं किन्त्वनेन विनाऽयं मन्त्रः एकोनाशीत्यक्षरात्मक स्यादत एवात्र स्वीकृतम् ।

२. 'ग्लौं' इति शक्तिवाराहबीजस्थाने रा० पुस्तके भूवाराहबीजं 'ह्लूं' इति वर्त्तते।

३. 'सान्निध्य' मपीति पाठोऽन्यत्र ।

४. 'यौवना' मित्यन्यत्र ।

५. 'मदोन्मत्ता' मित्यपि पाठः ।

६. 'वैरिजिह्वां पानपात्रं' इति पाठोऽपि दृश्यते ।

१५. एकोनषष्टिवर्णात्मकः श्रीबगलोपसंहारविद्यामन्त्रः—ग्लौं हुँ ऐं ह्रीं[१] श्रीं कालि कालि महाकालि एहि एहि कालरात्रि आवेशय आवेशय महामोहे महामोहे स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर स्तभनास्त्रशमनि हुँ फट् स्वाहा ।[२]

ॐ अस्य श्रीबगलास्त्रोपसंहारविद्यामन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछन्दः, स्तम्भनास्त्रविभेदिनी श्रीकालिका देवता, क्रीं बीजं, फट् शक्तिः, स्वाहा कीलकं श्रीबगलाप्रसादसिद्धिद्वारा ब्रह्मास्त्रोपसंहारार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—श्रीब्रह्मर्षये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, स्तम्भनास्त्रविभेदिनीश्रीकालिकादेवतायै नमो हृदये, क्रीं बीजाय नमो गुह्ये, फट्शक्तये नमः पादयोः, स्वाहा कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यासः—ॐ क्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ क्रूँ मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां हूँ, ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ॐ क्राँ हृदयाय नमः, ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्रूँ शिखायै वषट्, ॐ क्रैं कवचाय हूँ, ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ क्रः अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्— कालीं करालवदनां कलाधरधरां शिवाम् ।
स्तम्भनास्त्रैकसंहारीं ज्ञानमुद्रासमन्विताम् ॥ १ ॥
वीणापुस्तकसंयुक्तां कालरात्रिं नमाम्यहम् ।
बगलास्त्रोपसंहारीदेवतां विश्वतोमुखीम् ॥ २ ॥
भजेऽहं कालिकां देवीं जगद्वशकरां शिवाम् । (द्वात्रिंशः पटलः)

१६. द्वात्रिंशद्वर्णात्मकस्ताक्ष्र्यमालामन्त्रः[३]—ॐ क्षीं नमो भगवते क्षीं पक्षिराजाय सर्वाभिचारध्वंसकाय क्षीमों फट् स्वाहा ।

(बगलोत्कीलनविधिः)—

---

१. 'क्रों' इत्यन्यत्र ।

२. एष मन्त्रस्तु रा० पुस्तकधृतसूत्रोद्धारस्वरूपः। पुस्तकरयसूत्रात्तु त्रिपञ्चाशद्वर्णात्मक एष मन्त्रो जायते 'कालरात्रि' पदान्ते 'आवेशय आवेशय' इति पदद्वयविरहात् ।

३. अयं मन्त्रः पुस्तके द्वात्रिंशाक्षर एवोद्घोषितः किन्तूद्धारात्त्रिंशाक्षर एवं सम्भवति स चोपरि प्रदर्शित एव। रा० पुस्तके चैष एव मन्त्रः षड्विंशाक्षर एव स्वीकृतोऽस्ति यथा—'ॐ क्षीं ॐ नमो भगवते पक्षिराजाय अभिचारध्वंसकाय हूँ फट् स्वाहा।'

प्रणवं पूर्वमुच्चार्य कूर्चयुग्मं समुच्चरेत्।
कामत्रयं वाग्भवं च लज्जाषट्कं समुच्चरेत्॥ १ ॥
क्रींकाराष्टकमुच्चार्य बगलाशापमुच्चरेत्।
उत्कीलनपदद्वन्द्वं अग्निजायां समुद्धरेत् ॥ २ ॥
शापोद्धारप्रकारोऽयं तन्त्रराजे प्रकीर्त्तितः ।
उत्कीलिता ब्रह्मविद्या मन्त्रेनानेन सिद्ध्यति ॥ ३ ॥

स्पष्टार्थः—ॐ हूँ हूँ क्लीं क्लीं क्लीं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं बगलाशापमुत्कीलय उत्कीलय स्वाहा ॥

...∞❀∞...

परिशिष्टम् (ख)

॥ अथ वज्रपञ्जरकवचस्तोत्रम् ॥

ध्यात्वा मनसा सम्पूज्य मुद्राः प्रदर्श्य पञ्जरं न्यसेत्—

शिव उवाच—

पञ्जरं तत्प्रवक्ष्यामि देव्याः पापप्रणाशनम् ।
यं प्रविश्य न बाधन्ते बाणैरपि नरा भुवि ॥ १ ॥
ॐऐंह्रींश्रीं श्रीमत्पीताम्बरा देवी बगला बुद्धिवर्द्धिनी ।
पातु मामनिशं साक्षात् सहस्त्रार्कयुतद्युतिः ॥ २ ॥
शिखादिपादपर्य्यन्तं वज्रपञ्जरधारिणी ।
श्रीब्रह्मास्त्रविद्या या पीताम्बरविभूषिता ॥ ३ ॥
बगला मामवत्वत्र मूर्द्धभागं महेश्वरी ।
कामाङ्कुशा कला पातु बगला शास्त्रबोधिनी ॥ ४ ॥
पीताम्बरा सहस्त्राक्षी ललाटे कामितार्थदा ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं श्रीः(मे)पातु पीताम्बरसुधारिणी ॥ ५ ॥
कर्णयोश्चैव युगपदतिरत्नप्रपूजिता ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला नासिकां मे गुणाकरा ॥ ६ ॥
पीतपुष्पैः पीतवस्त्रैः पूजिता वेददायिनी ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला ब्रह्मविष्ण्वादिसेविता ॥ ७ ॥
पीताम्बरा प्रसन्नास्या नेत्रयोर्युगपद्भ्रुवोः ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला बलदा पीतवस्त्रधृक् ॥ ८ ॥
अधरोष्ठौ तथा दन्तान् जिह्वां च मुखगा मम ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरसुधारिणी ॥ ९ ॥
गले हस्ते तथा बाहौ युगपद्बुद्धिदा सताम् ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीतवस्त्रावृता घना ॥ १० ॥
जङ्घायां च तथा चोरौ गुल्फयोश्चातिवेगिनी ।
अनुक्तमपि यत्स्थानं त्वक्केशनखलोम मे ॥ ११ ॥

असृग्मांसं तथास्थीनि सन्धयश्चाति मे परा ।

श्रीशिव उचाव—

इत्येतद्वरदं गोप्यं कलावपि विशेषतः ॥ १२ ॥
पञ्जरं बगलादेव्या दीर्घदारिद्र्यनाशनम् ।
पञ्जरं यः पठेद्भक्त्या स विघ्नैर्नाभिभूयते ॥ १३ ॥
अव्याहतगतिश्चापि ब्रह्मविष्ण्वादिसत्पुरे ।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले नारयस्तं कदाचन ॥ १४ ॥
प्रबाधन्ते नरं व्याघ्राः पञ्जरस्थं कदाचन ।
अतो भक्तैः कौलिकैश्च स्वरक्षार्थं सदैव हि ॥ १५ ॥
पठनीयं प्रयत्नेन सर्वानर्थविनाशनम् ।
महादारिद्र्यशमनं सर्वमाङ्गल्यवर्द्धनम् ॥ १६ ॥
विद्याविनयसत्सौख्यं महासिद्धिकरं परम् ।
इदं ब्रह्मास्त्रविद्यायाः पञ्जरं साधु गोपितम् ॥ १७ ॥
पठेत् स्मरेद् ध्यानसंस्थः स जीयान्मरणं नरः ।
यः पञ्जरं प्रविश्यैवं मन्त्रं जपति वै भुवि ॥ १८ ॥
कौलिको वा कौशिको वा व्यासवद् विचरेद् भुवि ।
चन्द्रसूर्यप्रभुर्भूत्वा वसेत् कल्पायुतं दिवि ॥ १९ ॥

सूत उवाच—

इति कथितमशेषं श्रेयसामादिबीजं,
भवशतदुरितघ्नं ध्वस्तमोहान्धकारम्।
स्मरणमतिशयेन प्रातरेवात्र मर्त्यो,
यदि विशति सदा यः पञ्जरं पण्डितः स्यात्॥ २० ॥

इति श्रीपरमरहस्यातिरहस्ये श्रीपीताम्बरायाः पञ्जरं सम्पूर्णम् ॥
श्रीप्रसन्नास्तु ॥ श्रीबगलामुखी प्रीयतां मिति पौष सुदि १३, संवत् १९२२
लिखितं काश्यां दुर्गाबाई इदं पुस्तकम् ॥
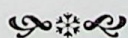
ध्यान करके मनसा पूजन के बाद मुद्रा दिखाकर पञ्जरन्यास करे । यह भी पूर्ववत् गोप्य है कला से भी विशेष श्रोप्य है । बगला देवी का यह पञ्जर स्तोत्र दीर्घ दरिद्रता का नाशक है । जो इस पञ्जर का पाठ भक्ति से करता है । उसे विघ्न नहीं होते । ब्रह्मा विष्णु के लोकों में ऐसे साधक की गति विना रुकावट के होती है । स्वर्गलोक, पृथ्वीलोक और पाताललोक में भी रुकावट नहीं होती ।

पञ्जरार्थ मनुष्य को व्याघ्र आदि की बाधा भी कभी नहीं होती । अतः भक्त कौलिकों को अपनी रक्षा के लिये और सभी अनर्थों का विनाश के लिये इसका पाठ यत्नपूर्वक करना चाहिये । यह स्तोत्र महादारिद्र्य का विनाश करके सभी प्रकार के कल्याण करता है । ब्रह्मास्त्र विद्या को यह पञ्जर साधु गोपित है । इसका पाठ करे और स्मरण एवं कर्म ध्यान में रहे तो मृत्यु को जीत लेता है। पञ्जर में प्रवेश करके जो मन्त्र जप करता है वह कौलिकेन्द्र या कौशिक व्यास के समान संसार में विचरण करता है । वह चन्द्र सूर्य का स्वामी होकर दश हजार कल्पों तक जीवित रहता है ।

सूतजी ने कहा कि इस समादि बीज का पूर्णरूपेण किया गया पाठ संसार के सैकड़ों पापों का विनाशक एवं मोह अन्धकार का नाश करने वाला है जो मनुष्य प्रातःकाल में अतिशय स्मरण करता है वह यदि वैश्य भी हो तो पण्डित हो जाता है ।

...✿...
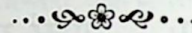
परिशिष्टम् (ग)

॥ अथ बगलामुखीत्रैलोक्यविजयं नाम कवचम् ॥

श्रीभैरव उवाच—

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्वरहस्यं च कामदम् ।
श्रुत्वा गुप्ततमं गोप्यं कुरु गुप्तं सुरेश्वरि ॥ १ ॥
कवचं बगलामुख्याः सकलेष्टप्रदं कलौ ।
यत्सर्वं च परं गुह्यं गुप्तं च शरजन्मनः ॥ २ ॥
त्रैलोक्यविजयं नाम कवचेशं मनोरमम् ।
मन्त्रगर्भं मन्त्ररूपं सर्वसिद्धिविनायकम् ॥ ३ ॥
रहस्यं परमं ज्ञेयं साक्षादमृतरूपिणम् ।
ब्रह्मविद्यामयं वर्म दुर्लभं प्राणिनां कलौ ॥ ४ ॥
पूर्णमेकोनपञ्चाशद्वर्णैर्मन्त्रमयैर्युतम् ।
त्वद्भक्त्या वच्मि देवेशि गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ५ ॥

श्री भैरव ने कहा—देवी सुनिए, अपने कामद रहस्य को कहता हूँ । हे सुरेश्वरि। इस गुप्ततम गोप्य को सुनकर गुप्त रखना चाहिए । कलियुग में बगलामुखी का कवच सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला है । जो सब परम गुह्य एवं गोप्त है वह त्रैलोक्य विजय नामक कवच मनोरम है । यह कवच मन्त्र गर्भ मन्त्र रूप सर्व सिद्धि विनायक है । यह ज्ञेय परम रहस्य साक्षात् अमृत रूप हैं। कलियुग में यह ब्रह्म विद्यामय कवच मनुष्यों को दुर्लभ है । यह पूरे उनचास वर्ण के मन्त्र से युक्त है । तुम्हारी भक्ति के कारण देवेशि तुमसे कहता हूँ । यह योनि के समान गोपनीय है ॥ १-५ ॥

श्रीदेव्युवाच—

भगवन् करुणासागर विश्वनाथ सुरेश्वर ।
कर्मणा मनसा वाच्यं न वच्म्यग्निभुवोऽपि च ॥ ६ ॥

श्री देवी ने कहा—भगवन्, करुणासागर, विश्वनाथ, सुरेश्वर, कर्म मन वचन से मैं किसी को इसे नहीं बतलाऊँगी ॥ ६ ॥

भैरव उवाच—

त्रैलोक्यविजयाख्यस्य कवचस्यास्य पार्वति ।
मन्त्रगर्भस्य मु(सू?)क्तस्य ऋषिर्देवस्तु भैरवः ॥ ७ ॥
उष्णिक् छन्दः समाख्यातं देवी क्लीं(च?)बगलामुखी ।
बीजं क्लीं ओं च शक्तिः स्यात् स्वाहा कीलकमुच्यते॥ ८ ॥
विनियोगः समाख्यातस्त्रिवर्गफलसाधने ।
देवीं ध्यात्वा पठेद्वर्म मन्त्रगर्भं सुरेश्वरि ॥ ९ ॥
विना ध्यानेन नो सिद्धिः सत्यं जानीहि पार्वति ।
चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजां रिपुरसां मुण्डाक्षमालाकरां,
बगलां पीतस्त्रगुज्वलां मधुमदारक्तां जटाजूटिनीम् ।
शत्रुस्तम्भनकारिणीं शशिमुखीं पीताम्बरोद्भासितां,
प्रेतस्थां बगलामुखीं भगवतीं कारुण्यरूपां भजे ॥ १० ॥

भैरव ने कहा—ऋष्यादि विना पाठ नहीं करना चाहिये ।

१. ऋष्यादि न्यास—अस्य त्रैलोक्य विजयाख्य कवचस्य मन्त्र गर्भ सूक्तश्च ऋषि भैरवः । उष्णिक् छन्दः । देवता बगलामुखी, बीज क्लीं, शक्ते ॐ, स्वाहा कीलकं, त्रिवर्ग फलसाधने विनियोगः ।

देवी का ध्यान करके इस मन्त्र गर्भ कवच का पाठ करे । हे पार्वति! विना ध्यान के सिद्धि नहीं मिलती यह सत्य है । श्लोक-१० ध्यान है ॥ ७-१० ॥

कवचम्

ॐ क्लीं मम शिरसि पातु देवी ह्लीं बगलामुखी ।
ॐ क्लीं पातु मे भाले देवी स्तम्भनकारिणी ॥ ११ ॥
ॐ अँ ईं हं भ्रुवौ पातु बगला क्लेशहारिणी ।
ॐ हं क्षं पातु मे नेत्रे नारसिंही शुभङ्करी ॥ १२ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे जङ्घे अं आं इं भुवनेश्वरी ।
ॐ क्लीं सः मे श्रुती पातु ईं उं ऊं ऋं मुखेश्वरी ॥ १३ ॥
ॐ ह्रीं क्रीं ह्रीं सदाव्यान्मे नासां ॠं लृं सरस्वती ।
ॐ ह्रीं ह्राँ मे मुखं पातु ॡं एं ऐं छिन्नमस्तका ॥ १४ ॥
ॐ श्रीं मे अधरौ पातु ओं औं दक्षिणकालिका ।
ॐ ह्रीं ह्रूं मे दन्तान् पातु अं अः मे भद्रकालिका ॥ १५ ॥
ॐ क्रीं श्रीं रसनां पातु कं खं गं घं चरात्मिका ।

ॐ ऐं सौः मे हनौ पातु ङं चं छं जं च जानकी ॥ १६ ॥
ॐ श्रीं ग्रीं (क्ली) मे गलं पातु झं ञं टं ठं गणेश्वरी ।
ॐ ह्रीं स्कन्धौ सदाव्यान्मे डं ढं णं चैव तोतला ॥ १७ ॥
ॐ ह्रीं मे भुजौ पातु तं थं दं वरवर्णिनी ।
ॐ क्लीं सौः मे स्तनौ पातु धं नं पं परमेश्वरी ॥ १८ ॥
ॐ जूं क्रों मे रक्ष वक्षः फं बं भं भगवासिनी ।
ॐ क्राँ ह्राँ पातु मे कुक्षिं मं यं रं चक्रिवल्लभा ॥ १९ ॥
ॐ श्रीं ह्रूं पातु मे पार्श्वौ लं वं लम्बोदरप्रसूः ।
ॐ श्रीं ह्रूं पातु मे नाभिं शं षं षण्मुखपालिनी ॥ २० ॥
ॐ ऐं सौः पातु मे पृष्ठं सं हं हाटकरूपिणी ।
ॐ क्लीं ऐं पातु मे शिश्नं ळं क्षं हं तत्वरूपिणी ॥ २१ ॥
ॐ क्लीं ह्रूं मे कटिं पातु पञ्चाशद्वर्णमातृका ।
ॐ ऐं क्लीं पातु मे गुह्यं अं आं कं गुह्यकेश्वरी ॥ २२ ॥
ॐ श्रीं ऊरू सदाव्यान्मे इं ईं खं रंगगामिनी ।
ॐ जूं सः पातु मे जानू उं ऊं गं गणवल्लभा ॥ २३ ॥
ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे जङ्घे ऋं ॠं घं च महारिणी ।
ॐ श्रीं सः पातु मे गुल्फौ ऌं ॡं ङं चं च कालिका ॥ २४ ॥
ॐ ऐं ह्रीं पातु मे सन्धी एं ऐं छं जं जगत्प्रिया ।
ॐ श्रीं क्लीं पातु मे पादौ ओं औं झं ञं भगादरी ॥ २५ ॥
ॐ ह्रीं मे सर्ववपुः पातु अं अः ह्रीं त्रिपुरेश्वरी ।
ॐ श्रीं पूर्वे सदाव्यान्मां अं आँ टं ठं शिखामुखी ॥ २६ ॥
ॐ ह्रीं याम्यां सदाव्यान्मां इं डं ढं णं च तारिणी ।
ॐ ह्रीं मां पातु वारुण्यां ईं तं थं दं च खेश्वरी ॥ २७ ॥
ॐ यं मां पातु कौबेर्यां उं धं नं पं पिलंपिला ।
ॐ श्रीं पातु चैशान्यां ऊं फं बं वैन्दवेश्वरी ॥ २८ ॥
ॐ श्रीं मां पातु चाग्नेय्यां ऋं भं मं यं च योगिनी ।
ॐ ऐं मां पातु नैर्ऋत्यां ॠं रं राजेश्वरी सदा ॥ २९ ॥
ॐ श्रीं मां पातु वायव्यां ऌं लं लम्बितकेशिनी ।
ॐ प्रभाते च मां पातु ॡं वं वागीश्वरी सदा ॥ ३० ॥
ॐ मध्याह्ने च मां पातु एं शं शङ्करवल्लभा ।
ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं पातु मां सायं ऐं षं शाबरी सदा ॥ ३१ ॥

ह्लीं निशादौ च मां पातु ओं सं सागरशायिनी ।
क्लीं निशीथे च मां पातु औं हं हरिहरेश्वरी ॥ ३२ ॥
क्लीं ब्राह्मे मां मुहूर्त्तेऽव्यादं ळं त्रिपुरसुन्दरी ।
विस्मारितं च यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ॥ ३३ ॥
ह्लीं तन्मे सकलं पातु अःक्षः क्लीं बगलामुखी।
इतीदं कवचं गुह्यं मन्त्राक्षरमयं परम् ॥ ३४ ॥

माहात्म्यम्

त्रैलोक्यविजयं नाम सर्ववर्णमयं स्मृतम् ।
अप्रकाश्यमदातव्यं न श्रोतव्यमवाचकम् ॥ ३५ ॥
दुर्जनायाकुलीनाय दीक्षाहीनाय पार्वति ।
न दातव्यं न दातव्यमित्याज्ञा परमेश्वरि ॥ ३६ ॥
अदीक्षित उपाध्यायविहीनः शक्तिभक्तिमान् ।
कवचस्यास्य पठनात् साधको दीक्षितो भवेत् ॥ ३७ ॥
कवचेशमिदं गोप्यं सिद्धविद्यामयं परम् ।
ब्रह्मविद्यामयमिदं यथाभीष्टफलप्रदम् ॥ ३८ ॥
न कस्य कथितं चैतत् त्रैलोक्यविजयेश्वरी ।
यस्य स्मरणमात्रेण देवी सद्यो वशीभवेत् ॥ ३९ ॥
पठनाद्धारणाच्चास्य कवचेशस्य साधकः ।
कलौ विचरते वीरो यथा ह्लीं बगलामुखी ॥ ४० ॥

माहात्म्य—यह त्रैलोक्य विजय नामक कवचं सर्व वर्णमय है । अप्रकाश्य अदातव्य है । किसी को पढ़ कर न सुनावे । दुर्जन, अकुलीन दीक्षा हीन को इसे नहीं बतलाना चाहिये । यह आदेश, अदीक्षित, उपाध्याय विहीन शक्ति का भक्त इस कवच के पाठ से दीक्षित हो जाता है । यह कवचेश गोप्य सिद्ध, विद्यामय, परम, ब्रह्म विद्यामय और इच्छित फल देने वाला है । इसे किसी से नहीं कहना चाहिये क्योंकि त्रैलोक्य विजयेश्वरी इसके स्मरण मात्र से तुरन्त वश में होती है । इस कवचेश का पाठ करने से या धारण करने से वीर साधक कलियुग में बगलामुखी के समान विचरण करता है ॥ ३५-५५ ॥

इमं मन्त्रं स्मरन्मन्त्री संग्रामं प्रविशद् यथा ।
त्रिः पठेत् कवचेशन्तु युयुत्सुः साधकोत्तमः ॥ ४१ ॥
शत्रून् कालसमानान् तु जित्वा स्वगृहमेष्यति ।
मूर्घ्नि धृत्वा तु कवच मन्त्रगर्भं तु साधकः ॥ ४२ ॥

ब्रह्माद्यानमरान् सर्वान् सहसा वशमानयेत् ।
धृत्वा गले तु कवचं साधकस्य महेश्वरि ॥ ४३ ॥
वशमायान्ति सहसा रम्भाद्यप्सरसां गणाः ।
उत्पातेषु च घोरेषु भयेषु विविधेषु च ॥ ४४ ॥
रोगेषु कवचेशं च मन्त्रगर्भं पठेन्नरः ।
कर्मणा मनसा वाचां तद्भयं शान्तिमेष्यति ॥ ४५ ॥
श्रीदेव्या बगलामुख्याः कवचेशं मया स्मृतम् ।
त्रैलोक्यविजयं नाम पुत्रपौत्रधनप्रदम् ॥ ४६ ॥
ऋणहर्त्तारमेतत्स्याल्लक्ष्मीभोगविवर्द्धनम् ।
वन्ध्या धारयते कुक्षौ पुत्रं पश्यति नान्यथा ॥ ४७ ॥
मृतवत्सा च विभृत्याथ कवचं बगले सदा ।
दीर्घायुर्व्याधिहीनस्तु तत्पुत्रस्तु भविष्यति ॥ ४८ ॥

इस मन्त्र का स्मरण करके यदि युद्ध में जाये और युयुत्सु तीन पाठ करे तो काल के समान शत्रु को भी जीतकर सकुशल घर लौट आता है। इस मन्त्र, गर्भ-कवच को मूर्धा पर धारण करके साधक ब्रह्मादि देवताओं को सहसा ही वश में कर लेता है। इस कवच को गले में धारण करके साधक रम्भा आदि अप्सरा को सहसा वश में कर लेता है। उत्पातों में, घोर भय में, विविध प्रकार के रोगों में, इस मन्त्र गर्भ कवच का पाठ जो मनुष्य मन, वचन एवं कर्म से करता है उसका भय शान्त हो जाता है। श्री देवी बगलामुखी के इस त्रैलोक्य विजय नामक कवच को जो मैंने कहा है यह पुत्र पौत्र प्रदायक है। यह ऋणहर्ता और लक्ष्मी भोगवर्द्धक है। वन्ध्या स्त्री धारण करे तो उसे पुत्र होता है। मृत्वत्सा यदि विभूति के साथ बगला कवच को धारण करे तो उसे दीर्घायु रोग रहित पुत्र होता है ॥ ४१-४८ ॥

इतीदं बगलामुख्याः कवचेशं सुदुर्लभम् ।
त्रैलोक्यविजयं नाम न देयं यस्य कस्यचित् ॥ ४९ ॥
अकुलीनाय मूढाय भक्तिहीनाय देहिने ।
लोभयुक्ताय देवेशि न दातव्यं कदाचन ॥ ५० ॥
शिष्याय भक्तियुक्ताय गुरुभक्तिपराय च ।
लोभदन्तविहीनाय कवचेशं प्रदीयताम् ॥ ५१ ॥
अभक्तेभ्यो विपुत्रेभ्यो दत्वा कुष्ठी भवेन्नरः ।
फलं गृहं न चाप्नोति परं च नरकं व्रजेत् ॥ ५२ ॥
दीपमुज्ज्वाल्य मूलेन पठेद्वर्मेदमुत्तमम् ।

प्राप्ते कन्यार्कवारे च राजा तद्गृहमेष्यति ॥ ५३ ॥
मण्डलेशो महेशानि सत्यं सत्यं न संशयः ।
इदं तु कवचेशं तु मया दिव्यं नगात्मने ॥ ५४ ॥
पूजनात् पठनाच्चास्य चतुर्व्वर्गफलप्रदम् ।
गोप्यं गुप्ततरं देवि गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ५५ ॥

॥ इति रुद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे बगलामुखीत्रैलोक्यविजयं नाम कवचं सम्पूर्णम् श्रीजगदम्बार्पणमस्तु । मिति माघकृष्ण ५ संवत् १९२२ ईदं दुर्गायाः ।

बगलामुखी का दुर्लभ त्रैलोक्य विजय नामक कवच जिस-तिस को नहीं देना चाहिये । अकुलीन मूर्ख भक्ति हीन, लोभी को नहीं देना चाहिये । भक्ति युक्त गुरुभक्ति में संलग्न लोभ दन्त विहीन शिष्य को देना चाहिये । अभक्त पुत्र को देने से कोढ़ी होता है । उसे फल नहीं मिलता वह नरक जाता है । दीपक जला कर इस उत्तम कवच को मूल मन्त्र के साथ रविवार में कन्या राशि होने पर इसके पाठ में राजा उसके घर पर आता है । मण्डलेश भी उसके पास आता है । इसमें संशय नहीं है, यह सत्य है । हे पार्वती! इस दिव्य कवचेश के पूजन और पाठ से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है । यह गोप्य, गुप्ततर अपनी योनि के समान गोपनीय है ॥ ४९-५५ ॥

॥ श्री बगलामुखी का त्रैलोक्यविजय नामक कवच समाप्त ॥

परिशिष्टम् (घ)

॥ अथ श्रीपीताम्बरारत्नावलीस्तोत्रम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीपीताम्बरायै नमः ॥

ओङ्कारद्वयसम्पुटान्तरपुटं मायास्थिराद्वन्द्वितं,
तन्मध्ये बगलामुखीति विमलं सम्बोधनं सर्वं च ।
दुष्टानामथ वाचमाशु च मुखं[1] सस्तम्भयेत्यक्षरं,
जिह्वां कीलय कीलयेति च[2] लिखेद्बुद्धि तथा नाशय ॥ १ ॥
ब्रह्मास्त्रं सकलार्थसिद्धिजनकं षट्त्रिंशदर्णात्मक-
म्प्रोक्तं पद्मभुवां हिताय जगतां यन्नारदाग्रे पुरा ।
जीवन्मुक्तपदे विभान्ति सुधियो येषां मुखे भासते,
निर्द्वन्द्वामृतसागरेन्दुकिरणाहाराश्चकोरास्तु ते ॥ २ ॥
ओमित्यादिस्वरूपं[3] जपति तव शिवे शब्दतन्मात्रगर्भा-[4]
वाचो यस्मात् परार्थप्रकटितपटवो वर्णरूपा निरीयुः ।
ब्रह्माद्यैः पञ्चतत्वैः परिवृतमनघं चित्प्रबोधाधिगम्यं,
दुर्ज्ञेयं योगयुक्तैः कथमपि मनसा[5] योगिभिर्गृह्यमाणम् ॥ ३ ॥
ह्लीं[6]बीज 'हृदियस्य'[7]भाति विमलं लक्ष्मीः स्थिरा तद्गृहे,
धैर्यं तस्य कलेवरेऽपि विशते[8] दीर्घायुषो भूतले ।
कल्पान्तेष्वपि वृद्धिमेति विमला तद्वंशवल्ली परा,[9]
शौर्यं स्थैर्यमुपैति तस्य पुरतस्त्रस्यन्ति वादीश्वराः ॥ ४ ॥
बद्धुं वारिधिमुद्यतो जनकजानाथोऽपि पीताम्बरे!
त्वां ध्यात्वाऽर्णवशोषणे कृतमतिः सेतुं प्रचक्रे द्रुतम् ।
जित्वा रावणमुग्रशत्रुमबलान् बन्दीन् विमुच्याऽमरान्,
कीर्त्तिं लोकसुखोदयां व्यरचयत् कल्पस्थिरामम्बिके ॥ ५ ॥

---

१. श० पदं । २. वि । ३. ख. ओमित्याद्यं ।
४. ०गर्भ । ५. तपसा । ६. भू ।
७. हृदये वि । ८. भजते । ९. ततिः ।

गर्वी खर्वति रङ्कति क्षितिपतिर्मूकायते वाक्पति-
र्वह्निः शीतति दुर्जनः सुजनते पुष्पायते वासुकिः ।
श्रीनित्ये बगले तवाक्षरपदैर्यन्त्रीकृता[1] यन्त्रिताः,
के के नो निपतन्ति[2]स्रस्तमुकुटाश्चन्द्रार्कतुल्या अपि ॥ ६ ॥
लावण्यामृतपूरिते तव कृपापाङ्गे निमग्ना नरा
[3]ब्रह्मेशादिदिगीशवृन्दमपि ते जानन्ति गुञ्जोपमम् ।
येषां चेतसि संस्थिताऽसि बगले! ते विश्वरक्षाक्षमाः,
प्रारब्धं द्रढयन्ति सत्वरतरं विघ्नैरविघ्नीकृताः ॥ ७ ॥
मुख्यत्वं समुपैति संसदि तवाऽपाङ्गावलोके नरः,
किं तच्चित्रमहो स्वयं प्रभवते सृष्टिस्थितिध्वंसने ।
यश्चित्ते तव 'भातिमामक इति'[4]त्वद्दर्शनं यस्य वा,
तं सर्वा ह्यणिमादयोऽप्यतितरामाराधयन्ते ध्रुवम् ॥ ८ ॥
क्षीणानां[5]बलदायिनीं जलनिधौ 'पोतस्थितौ नाविकां,'[6]
तत्त्राणं[7]धनकुञ्जगह्वरगिरिव्याघ्रादिभीतेष्वपि[8] ।
त्वां पीताम्बरधारिणीं 'परशिवां चन्द्रार्द्धचूडां गदा-'[9]
हस्तां वामकरे[10]प्रतीपरसनामुन्मीलयन्तीं[11] भजे ॥ ९ ॥
स्वेच्छं[12]ये प्रणमन्ति पादयुगलं पीताम्बरे! तावकं,
ते वाञ्छाधिकमर्थमाप्य सकलां सिद्धिं भजन्ते पुनः ।
यद्यत्कर्त्तुमुरीकरोति बगले! त्वत्साधकोऽत्राधुना,
तत्सञ्जातमिवेक्षते तव कृपाऽपाङ्गावलोके क्षणात् ॥ १० ॥
वाणी[13] सूक्तिसुधारसद्रवमयी सालङ्कृतिस्तन्मुखे,
शापानुग्रहकारिणी कविजनानन्दैकसंवर्द्धिनी ।
व्याकर्तुं क्षमते विशालमतिमांस्त्वत्सेवको वाङ्मयं,[14]
किं चित्रं यदि सृष्टिमाशु रचते ब्रह्माण्डकोट्यायते[15] ॥ ११ ॥

---

१. ० ये नित्यतो । २. भ्रष्टमु० ।
३. ब्रह्मेन्द्रादिदिगीशभूतमपि । ४. ख. भक्तिमाशु कुरुते ।
५. खिन्नानां । ६. पोतस्थितानां गतिः ।
७. स्वं त्राणं । ८. ० सत्वेषवपि ।
९. परचमूविद्रावणोद्यद्गदा । १०. वामकरेण ।
११. शत्रुरसना० । १२. स्पृष्टं ।
१३. मुक्ति० । १४. ऽत्राधुना ।
१५. ०कोट्यालये ।

देवि! त्वद्भक्तदृष्ट्या तुहिनगिरिमुखाः पर्वताः पांसुतुल्या
ज्वालामालाश्च चन्द्रामृतकरसदृशाः पुष्पतां यान्ति नागाः ।
मूकत्वं वाक्पतीन्द्राः सरसि समतुलामाश्रयन्ते समुद्रा
राजानो रङ्कभावं रणभुवि रिपवो विद्रवन्ते विशस्त्राः ॥ १२ ॥
लेख्यं[1] तावकमन्त्रबीजममलं दुष्टौघसंस्तम्भन,
वश्याकर्षणमारणप्रमथनप्रक्षोभणोच्चाटने ।
व्यक्तं वज्रमिवापरं यदि मुखे जागर्त्ति तस्याग्रतः,
पादान्तः परिसञ्चरन्ति रिपवो ये सप्तद्वीपेश्वराः ॥ १३ ॥
नानारत्नविभूषितामलमणिद्वीपे सुधासागरे,
कल्पानोकहकाननान्तरगता या रत्नवेदी परा ।
तत्राकारितपञ्चप्रेतकमये सिंहासने संस्थितां,
ध्यायेऽहं करुणाकरां हरिहराराध्यामशेषार्थदाम् ॥ १४ ॥
वाग्देवी वदने वसत्यविरतं नेत्रे च लक्ष्मीः करे,
दानं दीनकृपालुता च हृदये वीरत्वमाजौ सदा ।
त्वद्भक्तस्य भवाब्धिपारतरणे तत्त्वोदयो जायते,
तेनेदं नलिनीदलोपरि जलाकारं जगद् भासते ॥ १५ ॥
चञ्चत्काञ्चनतुल्यपीतवसनां चन्द्रावतंसोज्ज्वलां,
केयूराङ्गदहारकुण्डलधरां भक्तोदयायोद्यताम् ।
त्वां ध्यायामि चतुर्भुजां त्रिनयनामुग्रारिजिह्वां करे,
कर्षन्तीमहमम्ब पाहि बगले! त्राणं त्वमेवासि मे ॥ १६ ॥
मातस्ते महिमानमुग्रमधिकं प्रोक्तं स्वयं मानवै-
र्वाक्यं सन्द्रियते[2]श्रमेण यदि वा शक्त्या गुणाम्भोनिधेः ।
नो निश्शेषतया सुरैरविदितप्रान्तस्य पद्मालये,
तस्मात् सर्वगता त्वमेव सदसद्रूपा सदा गीयते ॥ १७ ॥
खड्गं तार्क्ष्यसमोद्यमं[3] प्रकुरुते तार्क्ष्यं च खड्गाधिकं,
वान्तं[4]स्तम्भयते जलाग्निशमने याऽव्यक्तशक्तिः शिवे ।
तद्बीजं बगलेति मेऽस्तु रसनालग्नं सदैवामलं,
यद्ब्रह्मादिसुदुर्लभं भुवि नरैः सत्प्राक्तनैर्लभ्यते[5] ॥ १८ ॥

---

१. दृष्ट्वा । २. ख. 'संह्रियते' इत्यपि पाठः ।
३. 'तार्क्ष्यजयोद्यत' इति पाठः । ४. 'वासुं' क्वचित् ।
५. 'सत्प्राकृतैर्लभ्यते' इति पाठः ।

स्तम्भत्वं पवनोऽपि[१] याति भवती[२] भक्तस्य पीताम्बरे
क्रिं चित्रं यदि वारिधिः स्थलपदं मेरुस्तु माषोपमाम् ।
कल्पानोकहकामधेनुप्रमुखै रत्नैरलिन्दस्थितै[३]-
र्वञ्छार्थाधिकदानमाशु कुरुते दीनेष्वदीनेष्वपि ॥ १९ ॥

भाग्याद्यस्य मुखे विभाति विमला विद्या विशेषाधिका,
षट्त्रिंशद्भिरथोदिता बहुगुणैर्बीजैस्तु सर्वार्थदा ।
तं सर्वे प्रणमन्ति मानवममी[४] सेन्द्राः सुरा भूसुराः,
[५]क्रान्ताशेषमहोदयं स्वकलनाक्रान्तत्रिलोकालयम्[६] ॥ २० ॥

यत्किञ्चिद्भुवने विभाति विमलं रत्नं महानन्दनं,[७]
यां यां वृत्तिरुदारतां जनयते यद्यत्परं सुन्दरम् ।
यत्किञ्चिद्भुवनेऽथवा नु[८] महता शब्देन वा कीर्त्यते,[९]
तत्सर्वं तव रूपमेव बगले! संसारपारप्रदे ॥ २१ ॥

जाग्रत्पूर्णकृपामृतौघभरिते श्रीमत्कटाक्षेक्षणे,
सर्वार्थप्रतिपादकव्रतधरे ये ये निमग्ना नराः ।
तेषां भाग्यमतीन्द्रिय निगदितुं ब्रह्मादयो न क्षमा
ये सङ्कल्पविकल्पमात्ररचनाः प्राणात्यये हेतवः ॥ २२ ॥

हस्ते संगृह्य चापं [१०]शरधरनिकरैर्यत्किरातं महाजौ,
पार्थो ब्रह्मास्त्रविद्याभ्यसनपटुमतिर्द्वन्द्वयुद्धे तुतोष ।
तत्सर्वं देववृन्दैरथ रिपुनिवहैर्वीक्षितं सिद्धलोकै-
र्धैर्यं[११]शौर्यं च सर्वं[१२]तव वरजनितं भाति पीताम्बरेऽत्र ॥ २३ ॥

पीतां पीतजटाधरां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,
हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम् ।
हस्तैर्मुद्गरवज्रवैरिरसनां संबिभ्रतीमादरात्,
दीप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ॥ २४ ॥

कर्णालम्बितलोलकुण्डलयुगां श्वेतेन्दुमौलिं[१३]करैः,
केयूराङ्गदपाशमुद्गरगदावज्रादिकान् बिभ्रतीम् ।

---

१. परमोऽपि । २. पवनो । ३. रत्नैरनेकैः स्थितैः।
४. ०ममुं । ५. कान्ताशेष० । ६. स्वकलनाक्रान्त्या०।
७. महानन्ददम् । ८. ऽणु । ९. कीर्तिते ।
१०. शितशर० । ११. ख स्थैर्य । १२. समस्तं ।
१३. पीतेन्दु० ।

देवीं पीतविभूषणामरिकुलध्वंसोद्यतां ये नरा
ध्यायन्त्याशु लभन्ति सिद्धिमतुलां ते बालिशाः स्युः कथम् ॥ २५ ॥
लब्ध्वा मातरशेषकान्तिभरितानन्दं[1] कृपावीक्षणं,
वर्षीयानपि मोहितुं प्रभवति स्त्रीवृन्दमुन्मीलितुम् ।
किं तच्चित्रमनेकधा भ्रमयते दृष्ट्या त्रिलोकीमिमां,
सूर्येन्दुस्तनधारिणीमपि बलात् कन्दर्पदर्पाधिकः[2] ॥ २६ ॥
यन्त्रं जैत्रमनेकदुःखशमनं पीताम्बरे! तावक-
मोङ्कारद्वयसम्पुटेन पुटितं शिष्टैस्तथावेष्टितम् ।
तद्बाह्ये स्थिरमायया्ष्टपुटितं पाशाङ्कुशाद्यावृतं,
येषां चेतसि 'भाग्यतो निवसते ते विश्वसर्गक्षमाः'[3] ॥ २७ ॥
कर्पूरागुरुचन्दनैर्मृगमदैर्गोरोचनाकेशरै-
स्त्वत्पादाम्बुजमर्चयन्ति बगले![4] ये प्रत्यहं मानवाः ।
ते लब्ध्वा श्रियमद्भुतामपि चिरं भोगांश्च भुक्त्वाऽवनौ,
सायुज्यालयमाविशन्ति परमानन्दोऽस्ति यत्राधिकः ॥ २८ ॥
लब्ध्वा पादयुगे रतिं तव शिवे क्षुद्रोऽपि देवेन्द्रता-
मासाद्यामरसुन्दरीभिरमलैर्भोगैर्दिवि क्रीडति ।
ये हित्वा तव भक्तिमन्यभजनानन्दाश्चिरं ते नरा
भ्रष्टा धर्मपराङ्मुखा भ्रमधियो भारं वहन्ते भुवि ॥ २९ ॥
वामाराध्य हरो हरत्वमभजद् विष्णुस्तु विश्वात्मतां,
चक्रे सृष्टिमजोऽप्यवोचदखिलं वेदादिसद्वाङ्मयम् ।
ध्यात्वा ध्वान्तमशेषमाशु हरते सूर्योऽपि पीताम्बरे
तीव्रं तापमपाकरोति रजनीनाथोऽपि चूडाश्रितः ॥ ३० ॥
बुद्धिं नाशय कीलयाशु[5] रसनामङ्घ्र्योर्गतिं स्तम्भय,
दुष्टान् द्रावय मारयारिनिवहान् दासांश्चिरं पालय ।
इत्थं ये बगलामुखीं पदगतिं लब्ध्वा पठिष्यन्ति ते,
यन्त्रारूढमिवारिवृन्दमखिलं कर्त्तुं समर्थाः सदा ॥ ३१ ॥
ध्यात्वा त्वां बगले! पुरा गिरिसुता चक्रे शिवं स्वं वरं,
प्रोक्तं नार्पयितुं शिवेन गदिता सङ्कल्पनाग्नौ तदा ।

---

१. ०भरितं दिव्यं । २. ०दर्पाधिकाम् ।
३. '-' संस्थिताऽप्ति बगले ते विश्वरक्षाक्षमाः । ४. सततं ।
५. ख. कीलयारि ।

[१]त्यक्तामिर्गलितावलि गिरिसुतात् त्यक्त्वा गलस्तन्मुखात्,
तस्मात् त्वं बगलामुखी निगदिता नित्या परा योगिनी ॥ ३२ ॥
[२]नागेन्द्रैर्देवसिद्धैर्मुनिवरनिवहैर्दानवै राक्षसेन्द्रै-
र्दिक्पालैर्दिक्करीन्द्रैर्दिनकरप्रमुखैः सद्ग्रहैस्तारकाद्यैः ।
ब्रह्माद्यैः स्थूलसूक्ष्मैरविदितमुदिता त्वं परा चोन्मनी त्वं,
नित्या पीताम्बरा त्वं रिपुभयशमनी भक्तिचित्तासनस्था[४] ॥ ३३ ॥
[३]शम्भुर्यद्गुणगाननोद्यतमतिर्नाट्योत्सवैस्ताण्डवे,
चक्रे चन्द्रमयूखकम्पनकरां[४] नीराजनां[५] पादयोः ।
[६]हेमाम्भोजदलैर्जटाजलभरैरानन्दितैर्मौलिभिः[७],
पूजां प्रत्यहमातनोति नटयन् स्वैर्हस्ततालादिभिः ॥ ३४ ॥
यां दध्रे चतुराननोऽपि वदने चित्तारविन्दस्थितां,
यां वक्षःस्थलसंस्थितां हरिरजामालिङ्ग्य पीताम्बराम् ।
यद्देहार्धमुरीचकार पुरजित्[८] सौन्दर्यसाराधिकां,
षट्चक्राक्षररूपिणीं भज सखे! देवीं जगत्पालिकाम्[९] ॥ ३५ ॥
हस्ते भाति गदा सदार्त्तिशमनी रत्नावली त्वद्भुजे,
पादे नूपुरमीशमौलिमणिभिर्नीराजितं[१०] राजते ।
ताटङ्कं श्रवणे कुचोपरि सदा[११] कस्तूरिकालेपनं,
काश्मीरद्रवमङ्गरागमधिकां पीतच्छविं[१२] तन्वते ॥ ३६ ॥
ॐकारद्वयसम्पुटेन पुटितां 'विद्यागमे संस्थितां,'[१३]
षट्चक्राक्षरबीजसाररचितां षट्त्रिंशदर्णात्मिकाम्[१४] ।
'ये जानन्ति जपन्ति सन्ततमभिध्यायन्ति गायन्ति वा,
ते वन्द्या विबुधैश्चरन्ति भुवने सिद्धार्चिताः सिद्धये'[१५] ॥ ३७ ॥
स्वाहाशक्तिरुपासने तव ऋषिः श्रीनारदो देवता,
नित्या श्रीबगलामुखी निगदिता छन्दो भवेत् त्रिष्टुभम् ।

---

१. त्यक्त्वा० । २. नागेन्द्रैर्देवसंघैर्भुवि० ।
३. भक्त० । ४. ०गुणगानतत्परमतिनित्योत्सवे ।
५. ०कम्पनमिवा । नीराजनं । ६. हेमाम्भोजजलै० ।
७. नन्दिता मोलिभिः । ८. पुरभित् ।
९. जगद्व्यापिकाम् । १०. ०नीराजनं ।
११. लसत् । १२. पीतां छविं ।
१३. विद्यामजास्ये स्थितं । १४. सत्तस्ववर्णात्मिकाम् ।
१५. ख. पादद्वयं एकचत्वारिंशच्छ्लोकादनन्तर विद्यते ।

बीजं तु स्थिरमायया विरचितं नानाविधस्तम्भने,[1]
प्रोक्तं पद्मभुवाऽखिलाप्तिविनियोगोऽप्यच्युताकारता[2] ॥ ३८ ॥
हृद्यं सर्वसुरेश्वरैश्च ऋषिभिर्दुष्प्राप्यमेवाद्भुतं,
स्तोत्रं गोप्यतमं स्वभाग्यवशतः प्राप्तं[3]पठिष्यन्ति ये ।
सूक्त्या[4] देवगुरुं 'धनेन धनदं'[5] जित्वा चिरञ्जीवितां,
षण्मासात् सुखसागरे शिवसमाक्रीडां करिष्यन्ति ते ॥ ३९ ॥
देवी स्वप्नगता स्वयैव लिखितं मह्यं ददावद्भुतं,
दिव्यास्त्रं पुरतः पठस्व विमलं सिन्दूरवर्णैः करैः ।
रोमाञ्चाङ्कितहर्षमाप्य लुलितैरङ्गैः[6] पठन्तं नर-
प्राप्तोऽहं परमोदयप्रदमिदं ज्ञानं कवीन्द्रादिदम्[7] ॥ ४० ॥
प्राप्ता श्रीबगलामुखीवदनतः स्वप्ने सुविद्या मया,
षट्त्रिंशद्भिरिमैः सुवर्णनिचयैः सद्बीजरत्नावली ।
येषां कण्ठगता विभाति जगतीपीठे प्रयोगक्षमा,
वश्याकर्षणमोहमारणविधौ स्तम्भे तथोच्चाटने ॥ ४१ ॥
चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थलाम्,
लसत्कनकचम्पकद्युतिविराजिचन्द्राननाम् ।
गदाहतविपक्षकां कलितलोलजिह्वाञ्चलां,
स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मुखस्तम्भिनीम्[8] ॥ ४२ ॥

॥ श्रीपीताम्बरारत्नावलीस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥[9]

संवत् १८९० शाके १७५५ आषाढमासे शुक्लपक्षे ५ मंदवासरे लिखितं ब्रह्मचारिकाशिनाथेन ॥ श्रीगङ्गाविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥
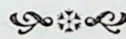
संवत् १८९० आषाढ़ माह शुक्ल पञ्चमी शनिवार में ब्रह्मचारी श्री काशीनाथ को स्वप्न में माँ बगलामुखी ने यह कवच दिया था । ऐसा कथन ब्रह्मचारी जी का श्लोक ४० में है । इस स्तोत्र में खाशियत यह है कि श्री बगला के छत्तीस अक्षरी मन्त्र के प्रत्येक अक्षर से प्रारम्भ करके शिवपञ्चाक्षरी स्तोत्र के समान ३६ श्लोकों को लिखा गया है। अतः पठनीय है ।

---

१. नानाविधि० । २. ०प्यसत्कारकः । ३. नित्यं ।
४. शक्त्या । ५. धनैर्धनपति । ६. ललितै० ।
७. कवीन्द्रार्चितम् । ८. ख. श्लोकोऽयं नास्ति ।
९. इति श्रीनारदोक्तं पीताम्बरादेवीस्तवराजस्तोत्रम् ।

श्लोक संख्या ३७-४२ के अनुसार दो ॐकार में सम्पुटित विद्या आगम में संस्थित षट्चक्राक्षर बीजों के सार से रचित छत्तीस अक्षरों के मन्त्र को जो जानते हैं। जपते हैं सर्वदा ध्यान करते हैं या जानते हैं। वे ज्ञानियों से वन्दित सिद्धों में अर्चित संसार में विचरण करते हैं।

इस स्तोत्र के ऋषि नारद, देवता नित्या बगलामुखी, छन्द त्रिष्टुभ बीज ह्लीं नाना विध स्तम्भन में ब्रह्मा से प्रोक्त अखिलाप्ति के लिये विनियोग होता है।

सभी सुरेश्वरों का हृद्य, ऋषियों को दुष्प्राप्य, अद्भुत, गोप्यतम स्तोत्र अपने भाग्य से प्राप्त होने पर जो पढ़ते हैं वे छह महीनों में शक्ति में बृहस्पति के समान, धन में कुबेर के समान दीर्घायु होकर सुख के समुद्र में शिव के समान क्रीड़ा करते हैं।

इस स्तोत्र को देवी ने स्वयं मुझे स्वप्न में लिखित रूप में दिव्यास्त्र पूर्वक सिन्दूर वर्ण के निर्मल हाँथों से दिया। रोमांचित हर्षित अङ्गों से ललित पाठ करते हुए मुझ मनुष्य को यह प्राप्त ज्ञान कवीन्द्र आदि को भी परम उदय देने वाला है।

श्री बगलामुखी के मुख से स्वप्न में प्राप्त विद्या छत्तीस सुन्दर बीजों का निचय सद् बीज रत्नों की अवली है। जिसके कण्ठ में यह रहती है। वह संसार में प्रयोग में सक्षम होकर वश्य, आकर्षण, मोहन, मारण, स्तम्भन, उच्चाटन प्रयोग कर सकता है।

वैरियों के मुख को स्तम्भित करने वाली बगलामुखी का स्मरण मैं करता हूँ। इनके कपोल स्वर्ण कुण्डल लोल से शोभित हैं। इनके चन्द्रमुख पर कनक चम्पा की द्युति दमक रही है। इनके एक हाँथ में गदा है और दूसरों हाँथ से ये विरोधी के जीभ को खींच रही है ॥ ३७-४२ ॥

॥ रत्नावली स्तोत्र सम्पूर्ण ॥

भार्गवतन्त्रम्

हिन्दी-व्याख्यासहितम्

हिन्दीभाष्यकार

कपिलदेव नारायण

वैदिक मार्ग के ज्ञान, कर्म, यज्ञ, तप के विरोध में बौद्ध धर्म और जैन धर्म का प्रचार-प्रसार बढ़ गया। ब्राह्मण धर्म का बहुत ह्रास हो गया। तब सातवीं, आठवीं ईस्वी शताब्दी में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन काल में नारद, गौतम, अगस्त्य आदि मनीषियों ने भक्ति मार्ग के लिए पाञ्चरात्र संहिताओं का प्रतिपादन किया। मन्त्र से देवताओं का ध्यान करना जन-साधारण के लिए सुगम-सरल नहीं था। इसलिए प्रतिमा निर्माण, मन्दिर निर्माण करके उनमें देव प्रतिमा के स्थापन, पूजन, अर्चन आदि से भक्ति मार्ग को सर्व साधारण के लिए सुगम, सरल बनाने के लिए पाञ्चरात्र ग्रन्थों का निर्माण हुआ। इस प्रकार 108पाञ्चरात्र ग्रन्थों का निर्माण हुआ। विष्णु के अवतार भार्गव परशुराम ने भार्गव संहिता का उपदेश अगस्त्य ऋषि को दिया।

₹ 225.00

ISBN : 978-81-218-0313-7 ₹ 175.00